केशव पण्डित

का 117 वाँ नया उपन्यास

शादी करूंगी यमराज से



केशव पण्डित के अब तक प्रकाशित 117 उपन्यास

1. सुहाग की हत्या
2. हत्यारा जज
3. खून से सनी वर्दी
4. कानून की दहशत
5. कानून किसी का बाप नहीं
6. सोलह साल का हिटलर
7. कब मिटेगी गुण्डागर्दी
8. नसीब वाला गुण्डा
9. डण्डे की दुनिया
10. केशव का चक्रव्यूह
11. गुण्डों की जंग
12. हिंसा भड़क उठी
13. वर्दी में भरा बारूद
14. मां टकरायेगी कानून से
15. दिमाग का जादूगर
16. धमाका करेगा रोटी
17. लाठी की आवाज
18. जंग का ऐलान
19. तबाही का तूफान
20. जज खड़ा कटहरे में
21. कोर्ट रूम
22. टाइम बम
23. टुकड़े कर दो कानून के
24. लाश पर सजा तिरंगा
25. कानून की लोमड़ी
26. मुंहतोड़ जवाब
27. खून बहा दे लाल मेरे
28. शेर की औलाद
29. मां करोड़ों हैं लाल तेरे
30. दुनिया मेरे कदमों में
31. हिटलर का अवतार
32. मत बेचो कानून को
33. मकड़ी का जाल
34. जिसकी लाठी उसकी भैंस
35. यमराज
36. तबाही मचायेगी किरन
37. नाच नचायेगा मदारी
38. कानून का खिलाड़ी
39. तिगनी का नाच
40. होली खेलेगा तिरंगा
41. छक्के छुड़ा दूंगा
42. दुल्हन लड़ेगी कानून से
43. खादी में लिपटा माफिया
44. जूता करेगा राज
45. आंचल में है बारूद
46. डाक बंगला
47. मां ललकारे शैतान को
48. चींटी लड़ेगी हाथी से
49. पगली भाई बोले जयहिन्द
50. तू लोमड़ी मैं चाणक्य
51. मास्टर माइंड
52. दस दिन का सिकन्दर
53. लड़ेगा भाई भगवान से
54. 48 इंच का हिटलर
55. दिमाग की जंग
56. शेर-चीते की लड़ाई
57. रिंग मास्टर
58. ढाई इंच का बाजीगर
59. चूहे-बिल्ली का खेल
60. बन जा बेटा भस्मासुर
61. अन्धा वकील गूंगा गवाह
62. गंगा बहेगी अदालत में
63. ढाई आने का वकील
64. कानून का जोकर
65. बच्चा-बच्चा है हिन्दुस्तानी
66. बावन गज का बौना
67. आया ऊंट पहाड़ के नीचे
68. जूता ऊंचा रहे हमारा
69. चवन्नी का हाथी
70. डकैती एक रुपये की
71. आंटी बड़ी शैतान है
72. गुरु-चेले की जंग
73. कानून की दुकान
74. तू पण्डित मैं कसाई
75. बब्बर शेर
76. चकमा
77. सास-बहू की जंग
78. ये देश है वीर जवानों का
79. मेरा रंग दे बसंती चोला
80. काला कातिल गोरी लाश
81. पचास करोड़ का भिखारी
82. सौ सुनार की एक लोहार की
83. छूमंतर
84. मर्डर मिस्ट्री
85. बालम का चक्रव्यूह
86. झटका 440 वोल्ट का
87. मुर्दा बड़ा बदमाश है
88. केकड़ा
89. बारात आयेगी पाकिस्तान
90. किन्नर बादशाह
91. हिमालय से ऊँचा है कानून
92. कातिल मिलेगा माचिस में
93. अन्धा नहीं है कानून
94. दीपावली मनायेंगे सरहद पर
95. दिमाग घूम जायेगा
96. फंस गया जादूगर
97. मर्डर स्पेशलिस्ट
98. तू सेर मैं सवा सेर
99. जिसका डंडा उसका कानून
100. केशव की शादी
101. अर्जुन एक कौरव 101
102. कंकर का जवाब गोली
103. दुल्हन एक रुपये की
104. देख तमाशा नागिन का
105. वो लाश खाने वाला
106. ये शहर है चूहों का
107. डेढ़ पसली का रावण
108. चिराग लड़ेगा तूफान से
109. सिकन्दर हारेगा दिमाग से
110. मेरी बीवी झांसी की रानी
111. बन जाओ सजना तानाशाह
112. शंख बजाऊंगा हाथी नचाऊंगा
113. कब आओगे कृष्ण कन्हैया
114. शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं
115. कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा
116. बच्चों की बनेगी बटालियन
117. शादी करूंगी यमराज से

118वां आगामी नया उपन्यास चिड़ियां लड़ाऊंगा बाज से

'शादी करूंगी यमराज से'

उपन्यास के प्रमुख किरदार

यमराज—वर्षों पूर्व उसने प्रतिज्ञा की थी कि जो औरत केशव पण्डित को कातिल साबित कर देगी, वो उसी के साथ शादी करेगा। आज वो दुनिया का सबसे अमीर और शक्तिशाली आदमी है, लेकिन केशव पण्डित से इन्तकाम लेने के लिये उसे एक करिश्माई औरत की दरकार है।

क्रान्ति—उसके हाथ-पैर कटे हुये हैं और वो कड़ी सुरक्षा वाली जेल में बन्द है। फिर भी वो दावा कर रही है कि वो केशव को अदालत में कातिल साबित करके यमराज से शादी करेगी।

माफिया डॉन—उसके इकलौते बेटे को केशव ने अदालत में कातिल साबित करके फांसी की सजा सुनवाई है। वो केशव से इन्तकाम लेने के लिये क्या करेगा?

माफिया चीफ—रहस्यमयी किरदार, जो कि हिन्दुस्तान में माफिया का मुखिया है। क्या केशव जान पायेगा कि वो कौन है?

अंगारा—दैत्य सरीखा, जो कि अपनी मालकिन का इतना वफादार है कि उसके लिये जान दे भी सकता है और ले भी सकता है। क्या वो अपनी मालकिन के लिये दिमाग के जादूगर केशव पण्डित से टकरायेगा?

और इन सभी के मुकाबले में सीना ताने खड़ा है

केशव पण्डित

बिल्कुल नये थीम पर लिखा गया उपन्यास

शादी करूंगी यमराज से



"उसकी और मेरी शादी होने वाली है। यमराज की बीवी बनने जा रही हूं मैं।"

"या तो तू बावली हो गई है, या फिर यमराज का भेजा घूम गया है। तेरे हाथ-पैर कटे हुये हैं। पूरा जिस्म तेजाब से झुलसकर बदसूरत हो चुका...।"

"यमराज को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। उसे तो बस उस औरत से शादी करनी है, जो उसकी शर्त पूरी कर देगी। जानता है कि क्या शर्त है उसकी? जो कोई भी केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित करके फांसी की सजा दिलवा देगी, यमराज उसी के साथ सात फेरे लेकर उसे अपनी धर्म-पत्नी बना लेगा, मैं इस शर्त को पूरा करूंगी पण्डित! एक महीने के भीतर तू अदालत में कातिल साबित होगा और जज तुझे फांसी की सजा सुनायेगा। ये चैलेंज है मेरा ओये दिमाग के जादूगर! जिस कानून का पुजारी है तू...वो कानून ही तुझे कातिल करार देकर फांसी के फन्दे पर चढ़ायेगा...।"

हाथों-पैरों से अपाहिज उस युवती ने दावा कर दिया है कि वो दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' को अदालत में कातिल साबित करके यमराज के साथ शादी करेगी।

उसके दिमाग में ऐसा कौन-सा प्लान है, जिसके दम पर वो इतना बड़ा दावा कर रही है?

एक बार फिर आपके 'फेवरिट' केशव पण्डित की लोह-लेखनी मनोरंजन के पन्नों पर अपने वो ही जादुई जलवे बिखेर रही है, जिन्होंने 'केशव पण्डित' को सफलता के 'माउन्ट एवरेस्ट' पर बिठाया हुआ है।

शादी करूंगी यमराज से



केशव पण्डित

"क्या आप जानते हैं कि दुनिया का सबसे अमीर और शक्तिशाली व्यक्ति कौन है? क्या कहा...बिल गेट्स? लक्ष्मी चन्द मित्तल? ब्रुनेई के सुल्तान? अम्बानी बन्धु? अजीम प्रेम जी? जी नहीं, इनमें से कोई भी नहीं। इन लोगों को अमीर तो कहा जा सकता है—लेकिन शक्तिशाली नहीं। हम बात कर रहे हैं उस हस्ती की...जो कि दुनिया का सबसे बड़ा धनवान भी है और शक्तिशाली भी है। सबसे मजे की बात ये कि खरबपति होने पर भी उस हस्ती ने कभी इन्कम-टैक्स नहीं दिया। किसी भी तरह का टैक्स नहीं दिया उसने। जबकि ये कहा जाता है कि उसके पास इतनी दौलत है कि वो चाहे तो विश्व के टॉप टेन अमीरों को भी खरीद सकता है।

आप अवश्य ही चौंके होंगे। आपका चौंकना स्वाभाविक भी है। क्योंकि ये बात विश्वास करने योग्य नहीं है कि कोई इन्सान दुनिया की सबसे अमीर हस्ती हो और वो किसी भी किस्म का टैक्स अदा ना करता हो! आप ये जानने के लिये उत्सुक हो चले होंगे कि आखिर ये इन्सान कौन है? आपके दिमाग में ये प्रश्न भी उभरा होगा कि ऐसा कौन व्यक्ति है, जो कि दुनिया का सबसे धनवान ही नहीं है, बल्कि सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी है? जी नहीं, हम अमेरिका के राष्ट्रपति की भी बात नहीं

कर रहे हैं। हालांकि अमेरिका दुनिया का सबसे शक्तिशाली मुल्क माना जाता है और वहां के राष्ट्रपति को दुनिया का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी माना जाता है—लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति नहीं हैं। जबकि हम जिस हस्ती की बात कर रहे हैं, वो अमेरिकी राष्ट्रपति से भी शक्तिशाली व्यक्ति माना जाता है।

मजे वाली बात ये है कि वो हस्ती अमेरिका में ही रहती है और मूल रूप से हिन्दुस्तानी है। नहीं, हमारा इरादा आपको ज्यादा देर तक सस्पेंस के भंवर में फंसाये रखने का कतई नहीं है। हम आपको बतलाने जा रहे हैं कि आखिर वो हस्ती कौन है। लेकिन एक छोटे से कमर्शियल ब्रेक के बाद! कहीं जाइयेगा मत। हम बहुत जल्द वापिस लौट रहे हैं और फिर आपको बतलायेंगे कि दुनिया की सबसे अमीर और शक्तिशाली हस्ती कौन है।"

और इसी के साथ टी० वी० स्क्रीन पर से न्यूज रीडर का खूबसूरत चेहरा विलुप्त हो गया और विज्ञापन दिखलाये जाने लगे।

"हद हो गई प्यारे दशरथ नन्दन।" छह फुटे, गोरे-चिट्टे व तन्दुरुस्त जिस्म पर डेनिम की नेवी ब्लू कलर की जींस और स्काई कलर की टी-शर्ट धारण किये हुये इन्टर नेशनल क्रिमिनल अलफांसे ट्रिपल फाइव की सिगरेट में कश मारकर बोला, "इन टी० वी० वालों ने अपने चैनल को एडवर्टीज चैनल बना दिया है। लोगों का स्वाद बदलने के लिये बीच-बीच में न्यूज भी दिखला देते हैं। कितना अहसान कर रहे हैं ये लोगों पर। बाजार में जाओ तो दुकानदार घटिया सामान को बढ़िया बतलाकर भेड़ देते हैं। धन्य हैं ये टी० वी० वाले—जो हमें जानकारी दे रहे हैं कि बढ़िया साबुन, वाशिंग पाउडर, टी० वी० और फ्रिज वगैरा किस कम्पनी के खरीदने चाहिये! आप ये सोच सकें कि कल मार्केट में जाकर कौन-सी आइटम खरीदनी है, न्यूज का एक टुकड़ा दिखला देते हैं। लोग मुफ्त में सस्पेंस को एन्जवाय कर सकें...इसीलिये न्यूज को बीच में लटका देते हैं। अब सोचते रहो कि दुनिया का सबसे अमीर और शक्तिशाली आदमी कौन है? दिमाग की कसरत!

कोई टॉनिक लेने की जरूरत नहीं—प्राणायाम करने की भी जरूरत नहीं है। कितना बड़ा अहसान कर रहे हैं हम पर! मनोरंजन का मनोरंजन और दिमाग की कसरत मुफ्त में...।"

अलफांसे की बात पर केशव, सोफिया, राजन, चांदनी, राजीव और बेड पर औंधा लेटा आशीर्वाद मुस्करा दिये।

"अंकल जी...!" सिर से लेकर पैरों तक पट्टियों से लिपटा हुआ था वह चौदह वर्षीय, गोरा-चिट्टा, हल्के सुनहरे व अर्ध-घुंघराले बालों, नीलम-सी नीली आंखों तथा छह फुट कद का लड़का, सिर्फ उसकी हथेलियां और चेहरा ही अनावृत थे।

केशव पण्डित के नियामित पाठक जानते हैं कि ए० सी० पी० सिकन्दर हयात अपने गैंगस्टर साढू रफीक लंगड़ा और दूसरे मुजरिमों से मोटी रकम वसूलकर उनके दुश्मनों को एनकाउन्टर के बहाने मार देता था और वाह-वाही लूटने के साथ-साथ मैडल और प्रमोशन भी हासिल कर रहा था। लेकिन केशव और आशीर्वाद के गुरु रमाकान्त की बेटी माधवी ने ए० सी० पी० सिकन्दर हयात का भान्डा फोड़ दिया था। जब सिकन्दर हयात ने एक व्यक्ति को एनकाउन्टर के बहाने मारा तो माधवी ने उसकी वीडियो फिल्म बना ली थी और अपने टी० वी० चैनल पर उस फिल्म का प्रसारण करा दिया था, जहां वो रिपोर्टर की नौकरी करती है।

सिकन्दर हयात को सस्पैंड करके उसकी गिरफ्तारी के ऑर्डर कर दिये गये थे लेकिन सिकन्दर हयात अपने साढू रफीक लंगड़ा का फोन आने पर अन्डर ग्राउन्ड हो गया था। बदला लेने के लिये सिकन्दर हयात ने अपने साढू रफीक लंगड़ा के गुन्डों को भेजकर माधवी का किडनेप करा लिया था। गुन्डों ने रमाकान्त को उसी के घर में बन्धक बनाकर उसके जिस्म पर शक्तिशाली बम भी बांध दिया था।

किडनेप हुई माधवी ने बहुत ही चालाकी से केशव तक मैसेज पहुंचा दिया था! केशव ने अपने बेटे आशीर्वाद और अपने ड्राइवर-कम-असिस्टेंट करतार सिंह को रमाकान्त को बचाने के लिये भेजा था, जबकि माधवी को बचाने की जिम्मेदारी स्वयं ली थी।

आशीर्वाद और करतार सिंह ने रमाकान्त को बम से मुक्त किया था, लेकिन बम को निष्क्रिय नहीं किया जा सकता था और उसके ब्लास्ट होने में चन्द मिनट ही शेष बची थीं। चारों तरफ घनी आबादी होने की वजह से बम के ब्लास्ट होने पर भारी तबाही मच जानी थी, अनेकों निर्दोष लोगों के परखच्चे उड़ जाने थे।

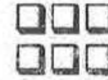
लेकिन दिमाग के जादूगर केशव पण्डित के दिमाग के चैम्पियन बेटे आशीर्वाद ने हिम्मत नहीं हारी और फुल स्पीड से दौड़ती कार से फुल स्पीड से दौड़ती ट्रेन पर सवार हुआ। ट्रेन की पॉवर फेल होने पर वह पैदल ही दौड़ा और बम को लेकर पानी वाले तालाब तक पहुंचा। बम को कीचड़ में दबाकर वह तालाब से बाहर निकलने को पलटा ही था कि बम ब्लास्ट हो गया था और सिर, गर्दन, पीठ, कमर व पैर अर्थात् जिस्म का पिछला हिस्सा बुरी तरह झुलस गया था। उसे करतार सिंह ने नर्सिंग होम में पहुंचाया था। वो अभी भी नर्सिंग होम में एडमिट था।

उपरोक्त वर्णन केशव पण्डित द्वारा लिखित 'कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा' नामक उपन्यास में सविस्तार से दिया गया है। जो कि इस उपन्यास का पार्ट नहीं है।

पट्टियों के ऊपर पहने लाल रंग के गाउन की जेब से भुने हुये चने के दाने निकालकर आधे लेटे आशीर्वाद ने मुंह में डाले और अलफांसे से मुखातिब होकर चंचलता भरी मुस्कान के साथ बोला—"आपका व्याकुल हो जाना नेचुरली है। दुनिया के सबसे अमीर आदमी का जिक्र हो रहा है। वो आपका शिकार हो सकता है। आप उसे बकरा बना सकते हैं।"

"ओये अयोध्यापति लंकेश...उजड़ी हुई रियासत के मालदार शहजादे...अन्डे से निकले शेर। वकील की तरह गूंगा हो जा...।" मुस्कराते हुये ही बोला अलफांसे, "क्यों जलेबी जैसे मुझ सीधे आदमी पर सच्ची तोहमत लगा रहा है? दौलत देखकर टाटा, बिरला, अम्बानी के मुंह में पानी आता है—मेरे लिये तो दौलत ऐसे ही है, जैसे किसी औरत के लिये सौतन होती है। मैं बगुला भगत हूं—मुझे मछलियों की इच्छा नहीं होती। भरी

दोपहरी में लालटेन लेकर भी निकलोगे तो मुझसा शरीफ बन्दा नहीं मिलेगा। बाकी जनरल नॉलेज की बढ़ोत्तरी के लिये मालूम तो होना चाहिये कि आखिर दुनिया का सबसे अमीर ये बन्दा कौन है?"



महिला जेल के भीतर एक हॉल में कलर टी० वी० पर 'मुगल-ए-आजम' फिल्म चल रही थी। पचास कैदी महिलायें पूरे चाव और तन्मयता से 'मूवी' का मजा ले रही थीं, लेकिन इक्यावनवी महिला कैदी को फिल्म से कोई सरोकार नहीं था।

वो कोने में बैठी हुई थी और उसकी गोद में न्यूज पेपर रखा हुआ था।

न्यूज पेपर पर केशव पण्डित का इन्टरव्यू के साथ-साथ उसकी कलर्ड फोटो भी छपी हुई थी।

फोटो को भस्म कर देने वाले भाव से घूरती आंखों में मानों लावा-सा भरा हुआ था।

उसके झुलसे चेहरे पर मानो सुर्ख रंग की चींटियों का झुन्ड इधर-उधर भागा-दौड़ी कर रहा था।

नथुनों से सांसों की बजाय नागिन की सी फुंफकारें फूट रही थीं और झुलसे हुये होठ आंधी में घिरी झोंपड़ी की मानिन्द ही कंपकंपा रहे थे।

"हरामजादे...कुत्ते...कमीने...!" केशव की फोटो को घूरती हुई वो फुंफकारी-सी—"मुस्करा रहा है। मेरा मखौल उड़ाने को मुस्करा रहा है साले। मुस्कराकर ये जताने की कोशिश कर रहा है कि क्रान्ति बेबस और अपाहिज हो गई है। हां, तेरी वजह से ही मैं अपाहिज हुई, तेरे वास्ते ही तेरे दोस्त अलफांसे ने मेरे हाथ काट डाले थे। तेरी वजह से ही मैं उस चाइल्ड-बम की चपेट में आई थी। मेरे पैरों का भुन्नास उड़ गया था। हरामजादे डॉक्टरों ने मेरे पैर काट दिये—ये बोले कि अगर मेरे पैर ना काटे गये तो मेरी मौत हो जायेगी। मौत ही तो चाहती थी मैं। बिना हाथ-पैरों के जीना भी कोई जीना है?

लेकिन तेरी शह पर ही डॉक्टरों ने मेरे पैर काट दिये और

मुझे चलने-फिरने से भी लाचार कर दिया। ये सब तेरी ही कारस्तानी है हरामी। तभी तो तूने मुझे सिर्फ उम्र कैद की सजा ही होने दी। मुझे फांसी की सजा नहीं होने दी तूने! हाईकोर्ट में अपील करके कहा कि मैं औरतजात हूं और ऊपर से अपाहिज भी हूं... आईन्दा कोई जुर्म तो क्या करूंगी...अपने जिस्म पर बैठी मक्खी भी नहीं उड़ा सकूंगी। बाथरूम या ट्वायलेट जाने के लिये, खाना खाने...पानी या चाय पीने के लिये भी मुझे दूसरों का मोहताज होना पड़ेगा। हो गई हूं मोहताज! बैरक में साले मच्छर भिन-भिन करते रहते हैं, लेकिन हरामजादों को उड़ा भी नहीं पाती हूं। हर काम के लिये साथी कैदियों या जेल की कर्मचारियों की मदद लेनी पड़ी है। उसकी मिन्नतें करनी पड़ती हैं, गिड़गिड़ाना पड़ता है।

क्या थी मैं, लेकिन क्या बना दिया तूने साले पण्डित! बला की खूबसूरत हुआ करती थी। जवान तो जवान, बूढ़े भी देखकर ठन्डी आहें भरा करते थे। बड़े घरानों के हीरो जैसे खूबसूरत लौंडे मेरे कदमों में दिल बिछा देते थे, अपनी जान भी न्योछावर करने को तैयार रहते थे। मैं जिस पर मेहरबान हो जाती थी, वो यूं खुश हो जाता कि कुबेर का खजाना मिल गया हो, मेरी खूबसूरती, मेरी जवानी, मेरा हुस्नो-शबाब और गजब का जिस्म कुबेर के खजाने से कम था भी नहीं। मेरे साथ बिस्तर पर पहुंचने वाला जन्नत की ही सैर किया करता था। तुझे देखा था तो रीझ गई थी। दिल ने कहा था कि ये बन्दा ही मेरे सपनों का शहजादा है—इसकी जीवन साथी बनकर धन्य हो जाऊंगी। तुझे कोहेनूर हीरा समझकर हासिल करना चाहा था। चाहती थी कि अपना सबकुछ तुझ पर लुटा दूं। लेकिन तुझ पर तो उस कुतिया सोफिया का रंग चढ़ा हुआ था। जैसे राम के लिये सीता थी, उसी तरह तेरे लिये सोफिया थी। तुझे हासिल करने के लिये क्या-क्या नहीं किया था मैंने। लेकिन तेरी अकड़ ढीली ना पड़ी। एक बार भी मुहब्बत भरी नजरों से नहीं देखा। मेरी चाहत का बदला नफरत से दिया। मैं तुझ पर अपनी जवानी की शराब उंडेल देना चाहती थी, लेकिन तूने मुझ पर तेजाब उंडेला और मुझे स्वर्ग की अप्सरा से नरक की चुड़ैल जैसी बदसूरत...भयानक बना दिया था...।"

"ऐ क्रान्ति! तू इदर कोने में बैठी क्या कर रेली है? लगता है कि तूने फिल्म नेई देखी! फन्ने खां फिल्म थी। दिलीप कुमार, मधुबाला ने क्या मस्त काम कियेला... ओह, केशव पण्डित की फोटू देख रेली है। हीरो है साला! देखके इच मुंह में पानी आ रेला है। तेरी बी राल टपक रेली है क्या...आह...ओ...!"

झुलसे जिस्म वाली, कोहनियों तक कटे हाथों वाली क्रान्ति ने उस चेचक के दानों वाली काली-कलूटी युवती को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा, फिर घुटनों तक कटे और पट्टियों से लिपटे पैरों को उठाकर उसकी जांघों पर जोर से पटकने पर हड़काई कुतिया की मानिन्द ही चीखकर बोली—"मेरे जख्मों पर नमक छिड़क रही है छिनाल कहीं की...काटकर रख दूंगी कुतिया...।"

"तू काटेगी...!" चेचक के दानों वाली उठ खड़ी हुई और जांघों को सहलाते हुये व्यंगपूर्ण लहजे में बोली—"हाथ और पैर कटे हुयेले हैं और बात करती है अपुन कू काटने की। अपाहिज है तू—इसी वास्ते माफ कर रेली है अपुन। तेरी जगह दूसरी कोई होती तो उसका भुर्ता बना देती अपुन। पन आईन्दा ख्याल रखना, अपुन से पंगा नेई लेने का। नेई तो गाजर-मूली की माफिक इच काट डालेगी तेरे कू। अपुन का नाम जयन्ती येड़ी...।"

और फिर जो हुआ, वो अप्रत्याशित तो था ही—साथ ही अविश्वसनीय भी था।

मानो मशहूर फुटबॉलर पेले ने फुटबाल को किक मारी हो—उसी अन्दाज में क्रान्ति का अपाहिज जिस्म हवा में उड़ा और चेचक के दानों वाली जयन्ती के जिस्म से टकराया...भड़ाक!

जयन्ती मुख से चीख निकालते हुये पीछे की तरफ उड़ी-सी और दीवार से टकराकर जोर से चिल्लाई।

उसके सिर का पिछला हिस्सा जोरों से दीवार से टकराया।

सिर को हथेलियों से दबोचे हुये वो धुत्त शराबी की मानिन्द ही झूमने-सी लगी, फिर भरभराकर फर्श पर गिर पड़ी।

बेहोश हो चुकी थी वह!

"धमकी देती है हरामजादी...क्रान्ति को धमकाती है!" वह हथिनी की मानिन्द ही चिंघाड़कर बोली—"क्या समझा है

मुझे? हाथ-पैर कट गये तो क्या शेरनी चुहिया बन जायेगी? दिमाग के जादूगर केशव पण्डित से टक्कर ले चुकी हूं। उससे जंग लड़ चुकी हूं मैं। हाथ-पैर ही कटे हैं, मेरे इरादे, हौंसले, क्रोध, खतरनाक इरादे...खूंखारता अपाहिज नहीं हुई है। इस हालत में भी दस-बीस को उड़ा सकती हूं। किसी भी कुतिया ने मुझसे पंगा लेने की जुर्रत की तो उसका बुरा हाल कर दूंगी।"

"ऐ लूली...टुन्डी...लंगड़ी।" एक काली-कलूटी युवती कुर्ते की आस्तीनें चढ़ाते हुये गुर्राकर बोली—"अपुन की बहन कू मारा तूने? अब्बी तेरी सारी हेकड़ी निकालती है अपुन...।"

तभी छह फुट कद की मोटी-ताजी महिला कैदी ने उठकर उस युवती को धकेलकर फर्श पर गिरा दिया और भारी-भरकम आवाज में बोली—"कोई बी क्रान्ति से पंगा नेई लेने कू सकती...ये अपुन के ग्रुप में है, अपुन की फ्रेन्ड है। अपुन कू इसकी अक्खा स्टोरी मालूम है। कब्बी ये सुरेन्द्र नगर की राजकुमारी होती थी। इसकी और इसके भाई बलदेव ठाकुर की तूती बोलती थी—राज चलता था। पन केशव पण्डित ने इसके भाई कू खल्लास कर दियेला। इसकू अपाहिज कर दियेला। फिर बी ये हिम्मत नहीं हारी। इसकी जगह दूसरी कोई औरत होती तो सदमें से इच मर-खप गई होती। ये अपाहिज है, पन शेरनी है। इसके तेवर शेरनी की माफिक इच हैं। खबरदार...कोई बी क्रान्ति से भिड़ने की जुर्रत नेई करे। वार्डन या जेलर से बी शिकायत नेई करने का...क्या...?"

अकड़कर आई युवती भीगी बिल्ली बनी चुपचाप बैठी रह गई।

गामा पहलवान की बहन लगने वाली अधेड़ कैदी क्रान्ति के पास बैठकर आत्मीयता के साथ बोली—"क्या बात है? तुम्हेरा मूड काय कू उखड़ेला है क्रान्ति?"

"कुछ नहीं शान्ता बहन...!" क्रान्ति कन्धों को उचकाकर बोली—"न्यूज पेपर में उस हरामजादे पण्डित की फोटो देखकर माइन्ड अतीत में चला गया था। मूड ऑफ था। ऊपर से इस कुतिया जयन्ती ने टोंट मार दिया तो अपसैट हो गई थी। क्या बीड़ी मिलेगी शान्ता बहन?"

"बीड़ी पीयें तुम्हारे दुश्मन... सिगरेट चलेगी... सिगरेट का पूरा कोटा मंगायेली अपुन। ऐ मंगती...दो सिगरेट सुलगा के देने का और टी० वी० का चैनल बी बदलने का, न्यूज पे लगाने का, देखने का है कि देश में क्या-क्या चल रेला है।"

मंगती नाम की कैदी महिला ने पहले रिमोट से टी० वी० का चैनल चेंज करके न्यूज चैनल पर लगा दिया, फिर लाइटर से विल्स की दो सिगरेट सुलगाकर शान्ता और क्रान्ति को दीं। क्रान्ति के हाथ-पैर तो थे नहीं, उसके झुलसे होठों के मध्य सिगरेट को फंसा दिया उसने।

क्रान्ति ने अभी दो कश ही मारे थे कि टी०वी० पर न्यूज रीडर दुनिया के सबसे अमीर व शक्तिशाली व्यक्ति के बारे में बतलाने लगी।

क्रान्ति की उत्सुकता जाग्रत हुई और वो 'हिप्स' के बल फर्श पर खिसकते हुये बला की फुर्ती के साथ टी० वी० की तरफ बढ़ने लगी।

❑❑❑
❑❑❑

केशव पण्डित—

उम्र—चालीस वर्ष!

कद-काठी-तन्दुरुस्त व गठीला जिस्म, जिसकी लम्बाई पांच फुट ग्यारह इंच है।

रूप-रंग ऐसा कि मानो दूध में हल्का-सा रूह-अफजा घोल दिया हो।

अन्डाकार चेहरा!

झील-सी नीली आंखें, जिनमें झांकने वाला सम्मोहित-सा हो चले।

लम्बी-पतली गोलाकर नासिकाओं वाली नाक और पतले-पतले गुलाबी होठ!

हल्के सुनहरे व अर्ध-धुंघराले बाल!

नेवी ब्लू कलर के सफारी सूट में बहुत ही जंचती हुई, जमती धांसू पर्सनलिटी।

सोफिया पण्डित—

उम्र—उनतालीस वर्ष!

कद-काठी—सांचे में ढला छत्तीस, चौबीस व छत्तीस की फीगर वाला पांच फुट छह इंच लम्बा जिस्म!

रंग-रूप—मानो मक्खन में गुलाब की पंखुड़ियों को घोट दिया गया हो।

हरे रंग की खूब बड़ी व मछली के से आकार की आंखें, जिनकी पलकें इतनी घनेरी कि झुकें तो शाम हो जाये और उठें तो सुबह अंगड़ाइयां लेने लगे, आंखों के ऊपर धुनषाकार भौहें।

कश्मीर के ताजा सेबों-से हल्के सुर्ख व चमकीले गाल, सुतवां नाक, सन्तरे की फांकों-से रस से भरे गुलाबी होठ।

राजहंस से सफेद व सच्चे मोती से चमकते-दमकते छोटे-छोटे दांत।

कोयल की कूक-सी मीठी बोली।

काले रंग की सुनहरी कढ़ाई वाली साड़ी में लिपटी वो स्वर्ग से उतर आई अप्सरा ही प्रतीत हो रही थी।

राजन शुक्ला—लगभग बत्तीस वर्षीय, गोरे रंग, तन्दुरुस्त जिस्म व पौने छह फुट कद वाला आकर्षक युवक—जो डेनिम की काली जींस और सफेद शर्ट में काफी आकर्षक लग रहा था। ये बतलाने की आवश्यकता तो नहीं कि राजन केशव का असिस्टेंट है और अपनी धर्मपत्नी चांदनी के साथ केशव के बंगले में ही फैमली मेम्बर की तरह रहता है?

चांदनी—तीस वर्षीय, गोरी-चिट्टी, बला की खूबसूरत और मासूम-से चेहरे वाली, जिसका कद पांच फुट तीन इंच है। बसन्ती रंग के सलवार-कुर्ते में बहुत ही प्यारी लग रही थी।

करतार सिंह—थोड़ा सांवले रंग का, हट्टा-कट्टा, छः फुटा, पटियाला का रहने वाला सरदार जी जो काले रंग का सूट, सफेद शर्ट, केसरिया रंग की नेकटाई और सिर पर भी केसरिया रंग की पगड़ी बान्धे हुये है।

करतार सिंह की शुरूआत केशव के यहां ड्राइवर की नौकरी से हुई थी, लेकिन फिर उसने केशव से मार्शल आर्ट, हथियार व बम वगैरा चलाने की ट्रेनिंग ली और साथ ही जासूसी के गुर भी सीख लिए। इन लोगों के साथ आशीर्वाद और अलफांसे भी

नर्सिंग होम के स्पेशल रूम में मौजूद थे और टी० वी० पर चलते एडवर्टीज के खत्म होने की प्रतीक्षा कर रहे थे—ताकि ये जान सकें कि दुनिया का सबसे अमीर व शक्तिशाली बन्दा कौन है?

❑❑❑
❑❑❑

"कमर्शियल ब्रेक के बाद एक बार फिर से आपका स्वागत है।" टी० वी० स्क्रीन पर स्टूडियो में उपस्थित खूबसूरत न्यूज रीडर मन्त्र-मुग्ध कर देने वाली मुस्कान के साथ बोल रही थी, "हां, तो...कमर्शियल ब्रेक पर जाने से पहले हम आपको उस हस्ती के बारे में बतला रहे थे, जो कि दुनिया का सबसे धनवान तो है ही—साथ ही दुनिया का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी माना जाता है। आप उसके बारे में जानने के लिये व्याकुल हो रहे हैं ना? हम आपके धैर्य की और परीक्षा नहीं लेंगे और आपको उस हस्ती के बारे में बतलाने जा रहे हैं। सबसे पहले दिखलाते हैं उसकी तस्वीर...ये रही उसकी तस्वीर...।"

और फिर टी० वी० स्क्रीन पर नजर आने लगी पैंतालीस वर्षीय गोरे-चिट्टे तथा लम्बे-चौड़े व्यक्ति की तस्वीर—जिसकी आंखें बिल्लौरी रंग की थीं और सिर के बाल महिलाओं की मानिन्द घने व दो फुट लम्बे थे।

साढ़े छह फुट लम्बा और जंगली भैंसे जैसा तन्दुरुस्त जिस्म काली पैन्ट व काले ओवर-कोट में पैक्ड था।

केशव उसे देखकर चौंका और बोला—"अरे! ये तो यमराज है।"

"हां, ये यमराज ही तो है!" सोफिया भी बोली, "पहले घनी दाढ़ी और बड़ी-बड़ी मूछें रखता था और अब क्लीन शेव्ड चेहरा कर लिया है। सिर के बाल बढ़ा लिये हैं कमम्बख्त ने।"

अलफांसे, राजन, चांदनी, करतार सिंह और आशीर्वाद टी० वी० पर से नजरें हटाकर केशव और सोफिया की तरफ देखने लगे।

"आप इसे जानते हैं डैडी जी...मम्मी जी...?"

"हां, जानती हूं...!" जवाब दिया कोयल-सी मीठी आवाज वाली सोफिया ने—"ये यमराज है।"

"यमराज...!" आशीर्वाद के साथ-साथ राजन, चांदनी, करतार सिंह और अलफांसे के मुंह से भी निकला।

"शीऽऽऽ!" केशव ने गुलाबी होठों पर पुखराज वाली अंगूठी पहने उंगली को रखकर सभी को शान्त रहने और टी० वी० देखने का इशारा किया।

सभी टी० वी० की तरफ देखने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

"ये तो हिन्दुस्तानी मालूम पड़ रेला है बाप...।"

"ऐ चुप कर...।" जंगली भैंसे जैसे काले-कलूटे व तन्दुरुस्त अंगारा ने बोलने वाले कैदी को डपटते हुए कहा—"चुपचाप रहकर सुनो कि ये कौन है।"

"ये व्यक्ति यमराज के नाम से जाना जाता है।" टी० वी० स्क्रीन पर न्यूज रीडर होठों पर मनमोहक मुस्कान सजाये हुये बोल रही थी, "वैसे मालूम हुआ है कि इसका वास्तविक नाम नागराज सिंह है और ये इन्डियन है...भारतीय है। वर्षों पहले नागराज उर्फ यमराज भारत में ही रहता था और बहुत ही खतरनाक मुजरिम माना जाता था। इसके खिलाफ देश के विभिन्न थानों में हत्याओं के ही पचास से ज्यादा केस दर्ज हैं। यानि इसने पचास से ज्यादा लोगों को खुले आम मारा था और तड़पा-तड़पा कर, बर्बर तरीके से मारा था। इसके हाथों मरने वालों में दो दर्जन तो पुलिसवाले ही हैं। ये हत्याएं तो वो हैं, जिनकी रिपोर्ट दर्ज हुई। यमराज ने और भी बहुत-सी हत्याएं की थीं, जिनकी रिपोर्ट या मुकदमा दर्ज नहीं हो पाया। थोक में लोगों की जान लेने के कारण ही नागराज सिंह का नाम यमराज पड़ गया था।

यमराज ने सिर्फ हत्याएं ही नहीं की थीं, बल्कि उसने कई डकैतियां, लूटपाट और अपहरण भी किये थे। ये अपहरण करने पर अपहृत व्यक्ति के परिजनों को सिर्फ एक बार ही आदेश देता था कि इसे कितनी रकम चाहिये और किस स्थान पर कितने बजे तक देनी है। अगर नियत समय पर रकम नहीं पहुंचती थी तो ये अपहृत व्यक्ति को निर्दयतापूर्वक मार दिया करता था।

यमराज के खिलाफ बलात्कार के भी दर्जनों मुकदमें दर्ज हुये थे। ऐसा नहीं कि ये कभी पकड़ा नहीं गया था। लेकिन इसके नाम का इतना आतंक था कि कोई भी इसके खिलाफ गवाही देने का साहस नहीं कर पाता था। जिन लोगों ने गवाह बनने का साहस दिखलाया था, उन्हें अदालत में गवाही देने से पहले ही मार दिया गया था।

एक बार यमराज कानून के शिकंजे में फंसा था और इसे फांसी की सजा भी सुनाई गई थी। लेकिन ये जेल में सुरंग बनाकर फरार हो गया था और फिर कभी कानून के हाथ नहीं आया। बाद में यमराज ने अमेरिका से संचालित और दुनिया के सबसे शक्तिशाली और खतरनाक माने जाने वाले अपराधिक संगठन माफिया को ज्वाइन कर लिया था और एक दिन मुम्बई का डॉन बन गया था। आज यही व्यक्ति दुनिया का सबसे शक्तिशाली और अमीर माना जाता है। क्योंकि ये माफिया किंग बन चुका है। जी हां, नागराज सिंह उर्फ यमराज अमेरिका स्थित माफिया के हैडक्वार्टर का सुप्रीम बॉस है। इसी की सुपरविजन में माफिया का संगठन दुनियाभर में संचालित हो रहा है।

आपको बतला दें कि माफिया इतना शक्तिशाली संगठन है कि ये कहा जाता है कि अमेरिका में माफिया की समानान्तर सरकार चलती है। एक बार को अमेरिकन सरकार फेल हो सकती है, लेकिन माफिया नहीं। माफिया की घुसपैठ अमेरिकी सरकार प्रशासन, पुलिस, मिलिट्री और खुफिया विभाग एफ० बी० आई० तक में है। दुनिया का चौधरी कहलाने वाला, परोक्ष रूप से कई देशों पर शासन करने वाला और इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान इत्यादि कई देशों में मिलिट्री कार्रवाई करने वाला अमेरिका कभी भी माफिया पर लगाम नहीं लगा सका।

अमेरिकी सरकार दावे और वादे तो करती है कि माफिया के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी, उसे जड़ से उखाड़कर फेंक दिया जायेगा—लेकिन आज तक माफिया के खिलाफ कुछ नहीं हो पाया। माफिया के छोटे-मोटे अड्डों पर रेड डाली जाती है और छोटे-मोटे ओहदेदारों की गिरफ्तारियां भी होती हैं। कुछ

को सजा भी होती है, वरना अधिकांश सबूत और गवाही के अभाव में छूट जाते हैं। पूरे विश्व में माफिया का जाल फैला हुआ है। शायद ही कोई ऐसा देश हो, जहां पर कि माफिया का असतित्व ना हो। गत दिनों अमेरिका की एक टी० वी० चैनल की रिपोर्टर ने माफिया किंग यमराज का इन्टरव्यू लिया। उस इन्टरव्यू की रिकॉर्डिंग सिर्फ हमारे चैनल के पास ही उपलब्ध है। हम आपको वह इन्टरव्यू दिखलायेंगे। हिन्दुस्तानी होने के नाते यमराज हिन्दी भाषा जानता है। कम पढ़ा-लिखा होने की वजह से वो इंगलिश नहीं बोल पाता है हां, इंग्लिश के कुछ शब्द या वाक्य जरूर बोल लेता है। उसका इन्टरव्यू लेने वाली भारतीय मूल की है और उसका नाम नताशा है। नताशा हिन्दी की जानकार है, इसलिये उसने ये साक्षात्कार हिन्दी में ही लिया। उस इन्टरव्यू की विडियो रिकॉर्डिंग दिखलाने से पहले हमें लेना पड़ा रहा है एक कमर्शियल ब्रेक! कहीं जाइयेगा मत। हम बस...वापिस लौटते हैं...।"

न्यूज रीडर का खूबसूरत व मुस्कराता चेहरा टी० वी० स्क्रीन पर विलुप्त हो गया और विज्ञापनों का दौर शुरू हो गया।

"सत्यानाश हो तुम्हारा...।" राक्षस सरीखा अंगारा बुरा-सा मुंह बनाकर बोला–"पहले फिल्मों में और सीरियालों में ही विज्ञापन दिखलाये जाते थे। अब तो न्यूज के बीच में भी विज्ञापन दिखलाने लगे हैं। एक न्यूज को भी कई हिस्सों में पूरा करते हैं। सिगरेट निकाल ओये मांगी...।"

मांगी नाम के जिस कैदी ने विल्स की डिब्बी व माचिस निकालकर दी, वो छह फुटा और हट्टा-कट्टा था, लेकिन अंगारा के सामने वो यूं ही लग रहा था कि जैसे भैंसे के सामने कोई हिरण।

अंगारा ने सिगरेट सुलगा ली और फिर कश लगाने लगा।

मांगी नामक कैदी ने आसपास बैठे कैदियों पर दृष्टिपात किया, फिर अंगारा के करीब सिर करके उसके कान के पास मुंह करके फुसफुसाया–"अपुन दोनों की इच फांसी का टेम करीब आ रेला है उस्ताद जी। इदर से निकलने का कोई बन्दोबस्त करने का–नेई तो फन्दे पे टांग दिये जायेंगे। मरना

नहीं चाहता अपुन। अब्बी अपुन की उमर इच कितनी है बाप...।"

"मरना कौन चाहता है बे...?" दूसरे कैदियों का और हॉल के गेट पर मौजूद चार हथियारबन्द सन्तरियों का ख्याल करके अंगारा भी फुसफुसाकर बोला, "लेकिन इस जेल की सिक्योरिटी बहुत टाइट है। जबसे वो पाकिस्तानी आतंकवादी इस जेल में आया है सिक्योरिटी को और भी टाइट कर दिया गया है। फोर्स बढ़ा दी गई है। यहां से भागने वाले को गोलियों से भून दिया जायेगा...ये पक्का है। रोतड़ी सूरत क्यों बनाता है भूतनी के? अभी फांसी नहीं लगने वाली, हमने सुप्रीम कोर्ट में अपील की है ना? अगर वहां भी कुछ नहीं हुआ तो फिर राष्ट्रपति के यहां रहम की अपील करेंगे। इसी में दो-तीन महीने तो लग ही जायेंगे। इतने वक्त में मैं यहां से फरार होने का कोई-ना-कोई रास्ता निकाल ही लूंगा।"

"पन अपुन कू अपनी बीवी की फिक्र हो रेली है। वो अपुन के बच्चे की मां बनने वाली है। मिलाई पे आती है तो रो-रोके बावली हो जाती है। वो अपुन की मौत बर्दाश्त नेई कर पायेगी बाप। उसकी बहोत फिक्र हो रेली है अपुन कू।"

"तुझे अपनी लुगाई की फिक्र हो रही है, जबकि मुझे मैडम जी की फिक्र सताती रही है।" यकायक ही गम्भीर व दुखी हो चला अंगारा और मानो कसमसाकर ही बोला–"हालांकि उन्हें फांसी की बजाय उम्रकैद की सजा हुई है। लेकिन उनके हाथ और पैर नहीं हैं। चलने, फिरने, उठने का कोई सवाल ही नहीं बनता। वो ट्वायलेट या बाथरूम कैसे जाती होंगी? खाना कैसे खाती होंगी? पानी, चाय, सिगरेट वगैरा कैसे पीती होंगी? अगर यहां से निकलने में कामयाब हो पाया तो सबसे पहले मैडम जी को ही जेल से निकालने का जुगाड़ करूंगा। सुना है कि आज-कल नकली हाथ-पैर लग जाते हैं।"

"ऐसा विदेशों में इच होता होयेंगा उस्ताद, पन खर्चा बहोत आता होयेंगा।"

"खर्चे की कोई टेंशन नहीं ओये मांगी! अपनी मैडम जी के वास्ते डकैती डालूंगा, किडनेप करूंगा। कुछ भी करके रकम

इकट्ठी करूंगा और मैडम जी को इलाज के वास्ते विदेश ले जाऊंगा। लेकिन उससे पहले सवाल तो ये है कि मैं इस जेल से फरार होने में कामयाब हो पाऊंगा भी कि नहीं?"

❑❑❑

❑❑❑

घुटनों से कटे और पट्टियों में लिपटे पैरों को फर्श पर फैलाये बैठी थी वो, जिसका नाम क्रान्ति था।

झुलसे होठों के मध्य सिगरेट फंसी हुई थी, जिसमें कश लगाते हुये वो नथुनों से कसैले धुऐं का रेला-सा छोड़े जा रही थी।

फिर आगे की तरफ झुककर उसने सिगरेट को फर्श पर छोड़ दिया और कोहनियों से कटे हाथों में से दायें हाथ के अगले सिरे से सिगरेट को यूं ही कुचलने लगी कि जैसे किसी दुश्मन का सिर कुचल रही हो।

"अरे! ये क्या करती हो क्रान्ति...?" उसकी बगल में ही बैठी पहलवान सरीखी शान्ता बाई उसके ठूठ जैसे हाथ को पकड़कर और उस पर लगी सिगरेट की गर्म राख को झाड़ते हुये बोली—"भैजा खिसक गयेला है क्या तुम्हेरा? हाथ काय कूं जला रेली थी?"

"इस सिगरेट में उस हरामजादे केशव पण्डित का सिर नजर आ रहा था मुझे...।" उसके कण्ठ के पिटारे में मानो कोई जहरीली नागिन आ बैठी हो—"इस सिगरेट की मामूली चिंगारी भला मेरा क्या बिगाड़ेगी? उस साले ने तो मुझे सिर से लेकर पैरों तक तेजाब से नहला दिया था। उस तेजाब की जलन और पीड़ा को बर्दाश्त कर गई थी मैं। उसके यार ने मेरे हाथ काट दिये थे...उस कुत्ते अलफांसे ने! फिर केशव पण्डित की वजह से बम धमाके में मेरे दोनों पैर उड़ गये। इतनी बड़ी-बड़ी तकलीफों को बर्दाश्त कर जाने वाली पर भला इस सुसरी सिगरेट की मामूली आग का क्या फर्क पड़ना है जिसने तीर और भालों के हमले झेले हों, उस पर सुई से भला क्या फर्क पड़ेगा?"

शान्ता बाई ने सिगरेट सुलगा ली और एक शुट्टा मारने

पर बोली—"अगर तुम बुरा नेई मानो तो एक सवाल करने का...क्या?"

"नही, शान्ता बहन! मैं तुम्हारी किसी भी बात का बुरा नहीं मान सकती। तुमने ही तो मुझे इस जेल में सहारा दिया है। तुम या तुम्हारी चेलियां ही ट्वायलेट में ले जाकर हेल्प करती हो। चाय, पानी तो इन कटे हाथों से पी लेती हूं। लेकिन खाना तुम या तुम्हारी चेलियां खिलाती हैं। बैरक से उठाकर बाहर लाना और बैरक में पहुंचाना, मेरा बिस्तर लगाना...और भी कई किस्म की मदद करती हो तुम। काश कि मुझे तुम्हारा अहसान उतारने का मौका...।"

"ऐसी बात नेई करने का क्रान्ति! दोस्ती में किसी पे अहसान नहीं किया जाता। मैं बरोबर बोली ना?"

"तुम मुझसे कुछ पूछना चाहती थी?"

"हां! मैं ये पूछना चाह रेली थी कि क्या तुम्हेरे भेजे में केशव पण्डित में बदला लेने की ख्वाहिश होती है?"

क्रान्ति का झुलसा चेहरा यूं ही लगने लगा कि मानो बुझ चले उपले पर जोर-जोर से फूंक मारी जा रही हो और वो हर फूंक के साथ सुलगा जा रहा हो।

सुर्ख हो चली आंखों से चिंगारियां-सी छूटने लगीं। जबड़े इस कदर सख्त होकर भिंच चले कि मानो गेहूंओं को पीसने के लिये चक्की के दोनों पाट एक-दूसरे पर कस गये हों।

"दिमाग में इन्तकाम का बारूद भरा हुआ है शान्ता बहन...।" मानो कोई मादा भेड़िया इन्सानी जुबान में गुर्रा उठी हो, "इतना बारूद कि सारी दुनिया को एक ही धमाके में उड़ाकर रख दे। दिल में इतना लावा भरा है कि समन्दर भी उसे अपने भीतर नहीं समा पायेगा। उस साले...कुत्ते की याद आते ही जिस्म में लंका दहन होने लगता है। ख्यालों...सोचों की सान पर इन्तकाम की तलवार को पैनी करती रहती हूं। लेकिन अपनी फूटी तकदीर का क्या करूं मैं? तकदीर ने हर बार मेरे साथ दगाबाजी की और उस सुसरे पण्डित का ही साथ दिया। उससे शादी करने के लिये बहुत ही शानदार प्लान तैयार किया था मैंने और उस पर अमल भी किया था। लेकिन तकदीर दगा कर

गई थीं और बाजी वो कमीना केशव पण्डित मार ले गया था। फिर भी हिम्मत नहीं हारी थी मैंने। उसके खासम-खास लोगों को उठवाकर उसे भी राजस्थान के रेगिस्तान में बुलवा लिया था। लेकिन तकदीर ने साथ दिया तो उस हरामी केशव पण्डित का। जीती हुई बाजी मेरी मुट्ठी से निकालकर केशव के हाथ में चली गई थी। ना सिर्फ मेरे हिस्से में शिकस्त आई थी, बल्कि केशव ने मुझे तेजाब से नहलाकर मेरी खूबसूरती भी छीन ली थी।"

अपनी जुबान को चुप्पी की डोरी से बांधकर वह मारे क्रोध के दमे के मरीज की मानिन्द ही जोर-जोर से सांसें उगलने लगी।

"शान्त रहने का...।" शान्ता बाई उसके कंपकंपाते कन्धे पर भारी-भरकम हथेली रखकर बोली—"गुस्सा नेई करने का...।"

"गुस्सा...?" जख्मी नागिन की मानिन्द बल खाकर फुंफकारी-सी क्रान्ति, "मेरे कलेजे में इन्तकाम की चिता जल रही है। फिलहाल तो उस चिता में मैं ही जल रही हूं काश...काश कि इस चिता में मैं अपने जानी दुश्मन को जलाकर राख कर पाती। अब मुमकिन नहीं लगता। जेल से निकलना ही मुमकिन नहीं है।"

"अगर किसी चमत्कार से निकल बी जाओ तो इन कटे हाथों-पैरों से कर बी क्या सकती हो तुम...?"

"करने को तो बहुत कुछ कर सकती हूं।"

"बिना हाथ-पैरों के?" शान्ता बाई ने भौंहे उठाकर और आंखें चौड़ाकर हैरानी जाहिर की।

"यूं हैरत में क्यों पड़ रही हो तुम शान्ता बहन...?"

"क्या ये हैरानी में पड़ने वाली बात नेई है?"

"नहीं...कतई नहीं...।" क्रान्ति मानों हरेक शब्द को हथौड़े से पीट-पीटकर ही बोली, "इन्तकाम लेने के लिये...अपने दुश्मन को नेस्तनाबूद करने के लिये हाथ-पैरों की जरूरत नहीं पड़ती। दिमाग के धनुष और योजनाओं के तीरों की जरूरत होती है। मेरे पास शक्तिशाली धनुष भी है और ढेर सारे तीर

भी हैं। अगर मेरे सामने से जेल की दीवार हट जाये तो केशव पण्डित को तीरों से बींधकर रख दूंगी।"

"विज्ञापन खत्म हो गयेले क्रान्ति। देखने का कि यमराज के बारे में क्या बतलाया जाता है।"

□□□
□□□

"कमर्शियल ब्रेक के बाद एक बार फिर से आप सभी दर्शकों का स्वागत है।" मोहनी सूरत व मुस्कान वाली न्यूज रीडर अपनी वाणी में रसगुल्ले वाली चाशनी घोलते हुये बोले जा रही थी, "हमने आपको नागराज सिंह उर्फ यमराज के बारे में बतलाया कि वो हिन्दुस्तानी है। वहां पर वो खतरनाक किस्म का अपराधी था। उसे फांसी की सजा भी सुनाई गई थी, लेकिन वो जेल से फरार हो गया था। वो मुम्बई का माफिया डॉन भी रहा और वर्तमान में माफिया किंग है। अमेरिका के वाशिंगटन स्थित माफिया के हैडक्वार्टर में रहता है। भारतीय मूल की और हिन्दी जानने वाली नताशा नाम की एक अमेरिकी न्यूज चैनल रिपोर्टर ने कुछ दिन पहले ही यमराज का इन्टरव्यू लिया था। उस इन्टरव्यू की रिकॉर्डिंग हम आपको दिखला रहे हैं। ये रहा वो इन्टरव्यू...।"

नर्सिंग होम के बेड पर औंधे लेटे नीलम-सी नीली आंखों वाले आशीर्वाद ने तकिये की बगल में रखे भुने हुये चने के चन्द दाने मुंह में डाले और 'कुटुर-कुटुर' की आवाज के साथ टी० वी० स्क्रीन की तरफ अपलक देखने लगा।

केशव, सोफिया, अलफांसे, राजन, चांदनी और करतार सिंह भी टी० वी० स्क्रीन पर नजरें गड़ाये हुये थे।

टी० वी० स्क्रीन पर बहुत ही खूबसूरत, बेशकीमती फानूस, पेन्टिंग्स, फर्नीचर, इलेक्ट्रिक व इलेक्ट्रोनिक सामानों से सजा-धजा कमरा दिखलाया गया।

शीशे के टॉप वाली मेज पर ढेर सारे लैन्ड लाइन व मोबाइल फोन के साथ निखालिस सोने का बना और हीरे-जवाहरातों से जड़ित लगभग पांच किलो वजन का हाथी और ऐश-ट्रे भी रखी

हुई थी। ऐश-ट्रे भी सोने की बनी हुई थी और कीमती नगीनों से जड़ी हुई थी।

रत्न जड़ित सोने का लाइटर और उसके साथ रखी हुई सिगरेट की डिब्बी, जो कि बाकी तमाम कीमती वस्तुओं को शर्मसार कर रही थी।

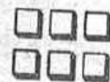
वो इन्डिया की सस्ती मानी जाने वाली रेड एंड व्हाइट नॉन फिल्टर वाली सिगरेट की डिब्बी थी।

मेज के पार शेर की खाल से मंढे सोफे पर बैठी एक तीस वर्षीय खूबसूरत तथा भारतीय चेहरे वाली युवती हाथ में 'सन टी० वी०' के मोनोग्राम वाल कार्डलैस माइक लिये बैठी थी। उसने लाइट येलो कलर की शर्ट व स्काई कलर की नेकटाई के साथ नेवी ब्लू कलर का सूट अर्थात पैन्ट-कोट पहना हुआ था।

बॉब-कट बाल और आंखों पर नजर का प्लास्टिक के फ्रेम तथा छोटे-छोटे लैंसेज वाला गॉगल...चश्मा!

"मैं इस वक्त माफिया किंग यमराज के साथ इस कमरे में मौजूद हूं। कई महीनों तक ट्राई और रिक्वेस्ट करने पर यमराज जी मेहरबान हुये और इस इन्टरव्यू के लिये राजी हुये। एक निश्चित किये गये स्थान पर पहुंचने पर मुझे और मेरे साथी कैमरामैन पीटर पार्कर को इंजेक्शन लगाकर बेहोश कर दिया गया था। होश आया तो आंखों पर काली पट्टी भी बंधी हुई थी। खैर, हमें इस कमरे तक पहुंचाया गया। हमारी कई जगह तलाशी ली गई और मैटल डिटेक्टर से चैकिंग भी की गई। चूंकि यमराज जी की शर्त थी कि इन्टरव्यू हिन्दी में ही होगा—इसलिये प्रसारण के वक्त इन्टरव्यू को अमेरिकन सिटीजन और बाकी इंग्लिश लेंग्वेज समझने वालों के लिये इस इन्टरव्यू की इंग्लिश में डबिंग कर दी जायेगी। अब मैं अपने साथी पीटर पार्कर से रिक्वेस्ट करूंगी कि कैमरे को इस एंगल में ले आये कि दर्शकों को मेरे साथ-साथ यमराज जी भी दिखलाई पड़ें।

कैमरा पीछे की तरफ हटा और फिर इस एंगल में कर दिया गया कि मेज की दूसरी साइड में सिंहासन-नुमा कुर्सी पर विराजमान यमराज भी कैमरे की जद में आ गया।



काली पैन्ट व काले ओवरकोट में था वो। खूब गोरा रंग। लम्बे-चौड़े जिस्म के अनुपात में ही चेहरा भी भारी-भरकम! चौड़ी नाक, मोटे-मोटे और सिगरेट के धुएं से रचित स्याह होठ।

जिस्म व चेहरे के अनुपात में बिल्लौरी आंखें छोटी-छोटी, लेकिन गिद्ध की मानिन्द तेज व पैनी।

ढाई फुट लम्बे बाल उसकी पीठ पर फैले हुये थे।

चौड़े माथे पर काले रंग का तिलक!

यूकलिप्टिस के तने सी मोटी गर्दन में सोने की खूब मोटी जंजीर, जिसमें शेर की मुखाकृति वाला लॉकेट पड़ा हुआ था।

खूब मोटी व घने बालों से आच्छादित कलाइयां, हाथी के कानों सी चौड़ी हथेलियां और मूली जैसी मोटी-मोटी उंगलियां।

दांयी कलाई पर सोने का रत्नजड़ित ब्रेसलेट और बायीं कलाई पर दुनिया की सबसे महंगी 'चौपार्ड सुपर आइस क्यूब' रिस्टवाच।

आठों उंगलियों में हीरे, नीलम, पुखराज जैसी कीमती रत्नों से जड़ित प्लेटीनम धातु की बनी अंगूठियां चमचमा रही थीं।

वह था नागराज सिंह उर्फ यमराज!

माफिया किंग—

माफिया का माई-बाप!

उसने पैनी धार वाली आंखों से नताशा को देख गला खंखारकर इशारा किया कि वो इन्टरव्यू शुरू करे।

नताशा ने गला खंखारने पर कहा—"सबसे पहले तो मैं आपका धन्यवाद अदा करती हूं कि आप इन्टरव्यू दे रहे हैं। कहा जाता है कि आप दुनिया के सबसे शक्तिशाली और धनवान व्यक्ति हैं?"

"भला इसमें संदेह वाली क्या बात है छोकरी?"

"कृपया बतलायेंगे कि आप दुनिया के सबसे शक्तिशाली और अमीर व्यक्ति कैसे हैं? मेरा मतलब है कि...।"

यमराज ने दाहिना हाथ उठाकर नताशा की बोलती बन्द कर दी। उसने रेड एन्ड व्हाइट की डिब्बी से एक सिगरेट

निकालकर मोटे होठों के बीच दबा ली और फिर लाइटर की नीली लौ से उसका अग्रिम सिरा सुलगा लिया।

मुंह व नथुनों से धुआं उगलने पर वो नताशा से मुखातिब होकर बोला—"पहले बात करते हैं शक्तिशाली होने की। दुनिया के अगर किसी एक व्यक्ति को लिया जाये, भले ही वो किसी मुल्क का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री ही क्यों ना हो—उनमें सबसे ताकतवर और पहुंच वाला बन्दा मैं हूं। दुनिया का शायद ही ऐसा कोई मुल्क हो, जहां पर माफिया का असतित्व ना हो...वजूद ना हो। माफिया हर तरह के जुर्म करती है और मोटी कमाई करती है। माफिया के छोटे-बड़े ओहदेदारों की गिनती लाखों में नहीं, बल्कि करोड़ों में है। सफेदपोश किस्म के मुजरिम भी माफिया के ओहदेदार हैं। उनमें मन्त्री, समाज सेवक, पुलिस सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के अफसर, धार्मिक नेता, धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाले, बिजनेसमैन, किसान, मजदूर, दुकानदार, ...हर वर्ग के लोग शामिल हैं। मुल्कों की बड़ी खुफिया एजेंसी या डिपार्टमेंट के लोग भी हमारे वास्ते काम करते हैं। बहुत बड़ा नेटवर्क है अपना! हमारे पास स्पेशल कमान्डोज होते हैं, जो कि थप्पड़ मारने से कत्ल करने का काम बखूबी अन्जाम देते हैं। वो भिखारी से लेकर किसी देश के प्रधामनंत्री, राष्ट्रपति तक को मारने में सक्षम होते हैं। वो हथियारों, गोला-बारूद, पोटेशियम सायनाइड जैसे घातक जहर से लैस रहते हैं। मैं चाहूं तो किसी भी देश को तबाह कर सकता हूं। मेरे पीछे करोड़ों कमान्डोज, शार्प शूटर्स की बड़ी फौज है, बटालियन है। इसलिये मैं दुनिया का सबसे शक्तिशाली आदमी हूं। कोई भी माई का लाल मेरे सामने नहीं टिक सकता। अमेरिका का राष्ट्रपति भी कुछ नहीं है मेरे सामने। मैं जो भी चाहूं...वो ही करा सकता हूं। इस युग का सिकन्दर भी हूं, हिटलर और यमराज हूं मैं...यमराज...।"

चुप होकर वो सिगरेट फूंकने लगा।

नताशा ने गला खंखारकर पूछा—"चूंकि लगभग हर देश में माफिया है। माफिया की मोटी कमाई होगी। इसीलिये आप दुनिया के सबसे अमीर, धनवान व्यक्ति माने जाते हैं?"

"माफिया की कमाई का अन्दाजा लगाना कोई आसान काम नहीं है छोकरी। माफिया की कमाई के मुख्य स्रोत ड्रग्स, गोल्ड, डायमंड, नकली करेंसी, हथियार, गोला-बारूद, शराब वगैरा की बिक्री और स्मगलिंग है। माफिया के होटल, रेस्टोरेन्ट, बार वगैरा भी हैं—जहां पर नशे का सामान बिकता है। हर तरह का जुआ खिलाया जाता है। डांस और जिस्मफरोशी होती है। बड़ी हस्तियों को किडनेप करके मोटी फिरौती वसूली जाती है। मोटी सुपारी मिलने पर बड़ी हस्ती को कत्ल कर दिया जाता है। राजनैतिक पार्टी की तरफ से मोटी रकम मिलने पर शहर, राज्य या पूरे देश में आतंकवादी घटनाओं और साम्प्रदायिक दंगों को अन्जाम दिया जाता है। नेताओं या मन्त्रियों, राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री वगैरा को उड़ा दिया जाता है। कुल मिलाकर हर वो काम किया जाता है, जिसके बदले में कमाई होती है।"

"उस कमाई का हिस्सा आपके पास आता होगा?"

यमराज ने सिगरेट के अवशेष को रत्न-जड़ित ऐश-ट्रे में ठूंस दिया और फिर भारी-भरकम आवाज में बोला—"हां, कमाई का बड़ा हिस्सा हैडक्वार्टर के खजाने में जमा होता है। लेकिन वो खजाना माफिया का है, मेरा नहीं।"

"क्या मतलब?" नताशा तनिक चौंककर बोली, "लेकिन आप तो माफिया के सुप्रीमो हैं, सर्वे-सर्वा हैं। क्या माफिया के खजाने या कमाई पर आपका हक नहीं है?"

"माफिया मेरी निजी कम्पनी नहीं है छोकरी। ये कोई प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी नहीं है। मैं माफिया का चीफ या बॉस हूं, मालिक नहीं हूं।"

"क्या मतलब? मैं कुछ समझी नहीं सर।"



"लम्बी-लम्बी छोड़ रहा है भूतनी का...।" कमर्शियल ब्रेक के लिये इन्टरव्यू को रोक दिये जाने पर अलफांसे ट्रिपल फाइव की सिगरेट में कश मारकर और धुआं उगलने पर बुरा-सा मुंह बनाकर बोला, "खुद को बीजापुर की तोप समझता है। खुद को दुनिया का सबसे ताकतवर आदमी बतला रहा है विधवा

का खसम। अगर मैं अपनी पर आ जाऊं तो इसका बैन्ड बजाकर रख दूं।"

"आप भी लम्बी फेंक रहे हैं अंकल जी।" बेड पर औंधा लेटा आशीर्वाद चने के दाने कुटकुटाते हुये बोला, "माना कि आप इन्टरनेशनल क्रिमिनल हैं। लेकिन यमराज भी माफिया किंग है। लगभग सभी मुल्कों में माफिया की ब्रांन्चेज हैं। अमेरिका की गवर्नमेंट सुप्रीम पावर मानी जाती है—लेकिन वो भी आज तक माफिया का बाल बांका नहीं कर पाई है। मैं नहीं समझता कि आप यमराज तक पहुंच भी सकेंगे।"

"ओये गूंगे रेडियो। बिना सूंड के हाथी। नीम के मीठे तेल! कड़वे रसगुल्ले। गर्म आइसक्रीम। ठन्डे अंगारे! अन्धेरा फैलाने वाले दीपक! रात के सूरज! रेत के भरे समन्दर! पानी के रेगिस्तान...", आंखें निकालकर अलफांसे कृत्रिम क्रोध को प्रदर्शित करते हुये ही बोला—"बिना डोर के आसमान में उड़ने वाली पतंग बनने की कोशिश मत कर। भरी महफिल में मेरी बेइज्जती का नाश कर रहा है। थप्पड़ खुद को मारूंगा और चेहरा तेरा घूमा जायेगा। वो क्या है कि तेरी आन्टी सलमा की चाहत की खिचड़ी खाकर ये शेर शाकाहारी हो गया है। वरना उस दो पैर वाले गधे को डिबिया में बन्द कर लाऊं और उसे तिगनी का नाच नचा दूं। दुनिया में ऐसा कोई माई का लाल नहीं है, जिसे अलफांसे काठ का उल्लू ना बना सके।"

"फेंकते रहिये! मैं लपेटना शुरू करता हूं।"

"इतनी लम्बी तो नहीं फेंक रहा हूं ओये खट्टे खजूर! चल, थोड़ा कम कर देता हूं। अगर अपना दशरथ नन्दन केशव अपनी पर आ जाये तो उस यमराज को बिन पंखों वाला कौव्वा बना सकता है। अगर हम दोनों मिल जायें तो उस कानखजूरे को हाथी की तरह मसलकर रख देंगे।"

"हाथी की तरह...या चींटी की तरह...?" कहने पर चांदनी खिलखिलाकर हंस पड़ी।

केशव, राजन, सोफिया, करतार सिंह व आशीर्वाद भी मुस्करा दिये।

जबकि अलफांसे सिर खुजलाते हुये बोला—"चींटी को तो

कोई बच्चा भी मसल दे। हाथी को मसलने वाला चूहा ही रुस्तमे-हिन्द जावेद जाफरी होता है।"

अलफांसे के कथन पर सभी खिलखिलाकर हंस दिये।

टी० वी० पर से कमर्शियल ब्रेक के खत्म होने पर विज्ञापनों का सीरियल समाप्त हुआ और फिर से यमराज का इन्टरव्यू दिखलाया जाने लगा।

सभी ध्यानपूर्वक टी०वी० स्क्रीन की तरफ देखने लगे। जबकि अलफांसे बड़बड़ाया—"ये यमराज मालदार आसामी है। क्या इसे अपना शिकार बनाया जा सकता है?"



राजा परीक्षित ने भी इतने मनोयोग से वेद व्यास जी के श्री मुख से महाभारत की कथा ना सुनी होगी, जितने मनोयोग से हाथ-पैर कटी क्रान्ति टी० वी० पर चल रहे यमराज के इन्टरव्यू को देख रही थी।

इन्टरव्यू को रोककर जब विज्ञापन दिखलाये जाने लगे तो उसकी दशा ऐसी हो चली कि मानो भूखे बच्चे के मुख से दूध की बोतल निकाल ली गई हो।

जी चाहा कि हथेली पर जोर से घूंसा मारे—लेकिन हथेली और घूंसा था ही कहां?

वो सिर्फ जबड़े भींचकर और ठूठ जैसे हाथों को हिलाकर ही रह गई।

"क्या एडवर्टीज दिखलाने जरूरी हैं?" कटखनी कुतिया-सी ही बोली वह—"हरामजादे एक बार में पूरा इन्टरव्यू भी नहीं दिखला सकते।"

गामा पहलवान की बहन शान्ता बाई हंसकर बोली—"मगर एडवरटाइज नेई दिखलायेंगे तो फिर इनकी रोजी-रोटी किदर से चलेगी? जानबूझ करके न्यूज को भी खूब दिलचस्प बना देंगे। तब्बी तो लोग बन्धकर बैठेंगे और एडवरटाइज भी देखेंगे। पन तुम इतनी खफा क्यूं हो रेली हो क्रान्ति बहन—क्या इन्टरव्यू में मजा आ रेला है?"

"वो दुनिया का सबसे बड़ा मुजरिम है। माफिया का सुप्रीमो है। दुनिया का सबसे शाक्तिशाली और अमीर आदमी है। अपनी लाइन का बन्दा है—इसलिये उसके बारे में दिलचस्पी पैदा हो गई है।"

"हलकान नेई होने का। अब्बी एडवरटाइज खत्म हो जायेंगे और इन्टरव्यू चालू हो जायेगा। अब्बी सिगरेट पी लेने का। ऐ मंगती...दो सिगरेट सुलगाके देने का...।"

मंगती नामक महिला कैदी ने दो सिगरेट सुलगाकर एक शान्ता को दी और दूसरी क्रान्ति के झुलसे होंठों के दरमियान फंसा दी।

सिगरेट का धुआं उड़ाती क्रान्ति की आंखें टी०वी० स्क्रीन पर भालों की नोक की मानिन्द गड़ी हुई थीं।

□□□

□□□

टी० वी० स्क्रीन पर यमराज और नताशा एक बार फिर मौजूद थे।

यमराज ने रेड एन्ड व्हाइट की सिगरेट सुलगा ली। कश लेकर धुआं नताशा के खूबसूरत चेहरे से कुछ इन्च ऊपर से छोड़ने पर बोला—"माफिया की स्थापना मैंने नहीं की छोकरी। इस क्राइम ऑर्गेनाइजेशन की स्थापना बहुत पहले हो चुकी थी। इसमें प्रमोशन होता है। ऊपर की पायदान खाली होने पर उससे नीचे की पायदान वाला वहां पहुंच जाता है। मुझसे पहले मिस्टर रोज डायर्स माफिया किंग थे। उन्हें ब्लड केंसर था। उन्होंने अपने जीते-जी ही मुझे माफिया किंग घोषित कर दिया था। उनके बाद मैं माफिया किंग बन गया था। मेरे बाद मेरे नीचे काम करने वाला माफिया किंग बन जायेगा।"

"लेकिन...खर्चा तो सभी को चाहिये। कमीशन या सेलरी के रूप में तो आपको रकम मिलती ही होगी?"

"हां! उसे सेलरी या तनख्वाह ही कहा जा सकता है। वो करोड़ों डॉलर में है। अमेरिका के राष्ट्रपति समेत दुनिया के किसी भी पदाधिकारी या किसी कम्पनी के प्रेसीडेन्ट या डायरेक्टर को

इतनी सेलरी नहीं मिलती। लेकिन इस सेलरी के दम पर मैं दुनिया का सबसे अमीर आदमी नहीं बना हूं।"

"तो फिर...?"

"एक स्थान पर प्राचीन जमाने का खजाना था। अपने दम पर मैंने वो खजाना हासिल किया था। उस खजाने में एक कुन्टल से ज्यादा तो बेशकीमती हीरे ही हैं। बाकी जवाहरात भी हैं और दो टन के करीब सोना भी है।"

"बाप रे! इसकी तो बहुत कीमत बैठेगी?"

मुस्कराया यमराज और नताशा की हैरत भरी आंखों में झांकते हुये बोला "कोई भी हीरा लाखों से कम कीमत का नहीं है छोकरी। अधिकांश हीरे करोड़ों की कीमत के हैं। हकीकत तो ये है कि उस खजाने का मूल्यांकन ही नहीं किया जा सकता। उसी खजाने ने मुझे दुनिया का सबसे अमीर आदमी बना दिया है। बस अब इन्टरव्यू खत्म...।"

"प्लीज सर! मैं आपके परिवार के बारे में जानना चाहती हूं।"

यमराज की छोटी-छोटी आंखों में खून-सा उतर आया। चेहरा लाल-भभूका हो चला।

मुट्ठियां भिंच चलीं।

यूं लगा कि उसके भीतर कोई चिता सुलग उठी थी—पुराने जख्म हरे हो गये हों।

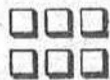
आंखें बन्द करके उसने नथुनों से तेज-तेज और जोर-जोर से सांसें छोड़ीं।

क्रोध को हजम करके वो नॉर्मल हुआ और संयत स्वर में बोला—"नहीं, कोई नहीं है। इस दुनिया में रिश्तों के नाम पर हम अकेले हैं।"

नताशा झिझकते हुये बोली—"क्या आपने शादी नहीं की...सर।"

"नहीं की...!"

"हालांकि ये आपका निजी मामला है सर! अगर आप बुरा ना मानें तो...आपने शादी क्यों नहीं की? क्या आपका शादी करने का इरादा नहीं है?"



ढेर सारे कश लगाकर ढेर सारा धुआं उगला यमराज ने—कुछ इस तरीके से ही कि मानों मन का गुब्बार निकाल रहा हो।

सिगरेट के अवशेष को रत्न जड़ित ऐश-ट्रे में ठूंसने पर वो बहुत ही गम्भीर होकर बोला—"ऐसा नहीं है कि मेरी शादी करने की इच्छा नहीं है। हर आदमी चाहता है कि उसकी शादी हो। उसकी गृहस्थी बसे। बाल-बच्चे हों। उसका वंश चलाने वाला हो। जब मैं हिन्दुस्तान में था तो...बल्कि मैं वहां का माफिया डॉन था तो ऐसा कुछ हो गया था कि मुझे एक प्रण करना पड़ गया था। एक कसम खा लेनी पड़ी थी। उसी प्रण या प्रतिज्ञा की वजह से ही मेरी शादी नहीं हो पाई। इतनी उम्र हो जाने पर भी अविवाहित हूं।"

"वो प्रतिज्ञा क्या थी सर?"

"मेरी एक शर्त है। उस शर्त को जो कोई भी लड़की या औरत पूरा करेगी, वो ही मेरी बीवी बनेगी—उसी के साथ शादी करूंगा मैं। उस शर्त को पूरा करने वाली औरत दुनिया के सबसे शक्तिशाली और धनवान आदमी की बीवी बन जायेगी। सबसे अमीर महिला हो जायेगी वो। मेरे पास 'पागानी जोंडा सी एस सेवन प्वाइंट थ्री कनवर्टिनल,' कोयनिग सैग सी आर आर, सालीन एस सेवन ट्विन टर्बो, पोर्श कैरेरा जीटी, मर्सिडीज बैंज एस एल आर मैक्लारेन, मवैक बासठ, रोल्स रायस फैंटम, स्पाइकर सी आठ डबल बारह एस, एस्टन मार्टिन वौंक्विश 'एस' डायनामिक, पागानी जोंडा, पोर्श कैरेरा जी० टी०, रोल्स रायस जैसी दुनिया की सबसे महंगी कारों का पूरा काफिला है। छोटे प्लेन और हेलीकॉप्टर्स हैं। एक अरब से ऊपर की कीमत के कई बंगले, कोठियां हैं। जो भी भाग्यशाली औरत मेरी बीवी बनेगी...उसके पास धन-दौलत, गहनों वगैरा की कोई कमी नहीं होगी। दुनिया की कोई भी रानी, महारानी, मलिका शानो-शौकत में उसका मुकाबला नहीं कर पायेगी।"

"कमाल की बात है सर...!" हाथ में माइक लिये नताशा

आश्चर्य के साथ बोली, "दुनिया में ऐसी महिलाओं की कमी नहीं, जो धन-दौलत के लिए कुछ भी कर जाती हैं। कई फिल्मी हस्तियों ने दौलमन्द लोगों के साथ शादी की है। आप तो दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति हैं। फिर कोई महिला सामने क्यों नहीं आई?"

मुस्कराया यमराज!

कमीनी किस्म की मुस्कान!

सकपकाकर बोली नताशा—"आप यूं क्यों मुस्करा रहे हैं सर? क्या मैं कोई गलत बयान कर गई हूं?"

"अरे नहीं! ऐसी कोई बात नहीं है छोकरी! खैर, मेरा ये आमन्त्रण, न्योता दुनिया की सभी युवतियों के लिये है। कोई भी मुझसे शादी करने का दावा कर सकती है। तुम भी।"

"मैं...मैं...!" नताशा पसीने-पसीने हो चली। थूक-सा सटका उसने!

"क्यों...क्या हुआ...?" यमराज उसकी बिगड़ी दशा का मजा लेते हुये बोला, "तुम घबरा क्यों गई? माना कि मैं माफिया किंग हूं, मुजरिम हूं—लेकिन अपनी बीवी के लिये तो मैं प्यार करने वाला पति ही रहूंगा। उसका हर तरह से ख्याल रखूंगा। उसको जरा-सी भी तकलीफ नहीं होने दूंगा। उसे पलकों पर बिठा कर रखूंगा। उसे दुनिया के तमाम ऐशो-आराम मुहैया होंगे। महारानी बनकर ही ऐश करेगी वो। बड़ी-से-बड़ी गलती भी करेगी तो उसे मुस्कराकर माफ कर दूंगा। क्या अब तुम मेरी बीवी बनना पसन्द करोगी?"

"मैं...मैं शादीशुदा हूं...सर! दो बच्चे भी हैं।"

"ओह...सॉरी! मैं मजाक कर रहा था। मैं जानता हूं कि तुम शादीशुदा हो। तुम्हारे पति का नाम जॉन है और वो बैंक मैनेजर है। तुम्हारे बेटे का नाम हैरी और बेटी का नाम देविका है। तुम्हारी लव मैरिज हुई थी। तुम हिन्दुस्तानी हो। शादी के बाद भी तुम हिन्दू धर्म मानती हो। मन्दिर जाती हो। व्रत रखती हो। सभी त्यौहार मनाती हो। बेटा हुआ तो तुमने उसका नाम हैरी रखा। जबकि बेटी हुई तो तुम्हारे पति जॉन ने उसका नाम देविका रखा। दोनों बच्चों को चर्च भी ले जाते हो और मन्दिर

भी ले जाते हो। दोनों को हिन्दू और ईसाई धर्म की शिक्षा दे रहे हो तुम लोग।"

"कमाल है सर! आप तो बहुत कुछ जानते...!"

"माफिया जैसी बड़ी ऑर्गेनाइजेशन चला रहा हूं छोकरी। हर किसी की जानकारी रखनी पड़ती है। खैर, ये जरूरी नहीं कि मुझसे शादी करने वाली खूबसूरत, मशहूर हस्ती या अमीर घराने की हो। वो गरीब हो, बदसूरत भी हो तो भी चलेगी।"

"तो फिर प्रॉब्लम क्या है सर? मुझे आश्चर्य हो रहा है कि अभी तक आपकी शादी नहीं हुई है।"

"क्योंकि मैंने आज से लगभग बारह साल पहले एक प्रतिज्ञा की थी—कसम खाई थी।"

"वो प्रतिज्ञा या कसम क्या थी सर?"

"मेरी एक शर्त है! जो कोई भी मेरी उस शर्त को पूरी कर देगी। वो ही मेरी बीवी बन जायेगी। उसी के साथ शादी कर लूंगा मैं।"

"आपकी वो शर्त क्या है?"

❑❑❑

❑❑❑

"फिर से ब्रेकिंग न्यूज...!" अलफांसे बुरा-सा मुंह बनाकर बोला—"तुम इन टी० वी० चैनल वालों पर केस नहीं कर सकते हो दशरथ नन्दन?"

"अगर एडवर्टीज नहीं दिखलायेंगे तो इनका कारोबार कैसे चलेगा अलफांसे भाई...!" मुस्कराकर बोला केशव, "इन्हें सरकार की तरफ से कोई सेलरी या एड तो मिलती नहीं! इन्कम का जरिया विज्ञापन ही तो है।"

"तुम तो नमक की तरह हलवाइयों का फेवर ले रहे हो। हां, लोगे क्यों नहीं प्यारे लाल! ये टी० वी० चैनल वाले तुम्हारे कारनामों का सत्यानाश करते हैं—तुम्हारे इन्टरव्यू दिखलाकर तुम्हें बदनाम करते रहते हैं ना...!"

खूब जोर से हंसी चांदनी—काफी देर तक हंसती रही! बामुश्किल हंसी रोकने पर अलफांसे से बोली—"आपका भी जवाब नहीं भाई साहब। आपके उदाहरण उल्टी गंगा बहाते हैं।

नमक को हलवाइयों से जोड़ दिया। ये भी बोल रहे हो कि चैनल वाले भाई साहब की बदनामी करते हैं और इनके कारनामों का सत्यानाश करते हैं। जबकि वो बेचारे भाई साहब की प्रशंसा करते हैं—इनकी महानता का गुणगान करते हैं।"

"लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं कि कोई नमक वाली सब्जी और मीठे रसगुल्ले खाये तो उसकी बुराई ना की जाये। केशव को इन चैनल वालों के खिलाफ कोर्ट में जाना चाहिये। बार-बार इन्टरव्यू के करेले खिलाकर बीच-बीच में विज्ञापनों की मिठाई परोस देते हैं।"

फिर हंसी चांदनी और बोली—"ये तो बढ़िया बात है कि वो आपको ज्यादा करेले नहीं खिला रहे हैं और बार-बार मिठाई खिला रहे हैं।"

"अजी काहे की बढ़िया बात है! दुनिया में शुगर के मरीजों की बहुत तादाद है। करेले के दम से डायबिटीज ठीक होती है—लेकिन मिठाई खाने से तो शुगर बढ़ जाती है।"

"क्या आपको भी डायबिटीज की बीमारी है अंकल जी?" छेड़ा केशव-पुत्र आशीर्वाद ने।

"चुप ओये कड़वे रस वाले गन्ने। ये मेरी तौहीन है, इन्सल्ट है। इन्टरनेशनल क्रिमिनल हूं...डायबिटीज जैसी मामूली बीमारी का होना मेरा अपमान है। बीमारी भी अपनी महानता के हिसाब से ही लूंगा। जुकाम से कम पर तो समझौता करूंगा ही नहीं।"

अलफांसे की बात पर इस बार चांदनी ही नहीं, बल्कि आशीर्वाद, राजन, करतार सिंह, सोफिया और केशव भी हंसे।

तभी खाने के दो टिफिन लिये हुये राजीव कमरे में प्रविष्ट हुआ और उसने शीश नवाकर अलफांसे का अभिवादन किया।

कौन राजीव?

केशव पण्डित द्वारा लिखित पूर्व उपन्यास 'बच्चों की बनेगी बटालियन' में राजीव अरोड़ा की एन्ट्री हुई थी।

केशव और आशीर्वाद के गुरु रमाकान्त के पास जालंधर से उसके ममेरे भाई राजेन्द्र सिंह का फोन आया था। राजेन्द्र ने रमाकान्त को कहा था कि उसका भतीजा राजीव एल० एल० बी० पास कर चुका है और उसे जासूसी का भी शौक है—वो

केशव पण्डित का जबरदस्त फैन है और केशव का शिष्य बनना चाहता है। रमाकान्त के हांमी भरने पर राजीव मुम्बई आ पहुंचा था।

पच्चीस वर्षीय, सांवले रंग का, जिस्म लम्बा और तन्दुरुस्त!

राजीव के मन में एक आशंका थी, जिस कारण वो एकदम से केशव के सामने जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। रमाकान्त और माधवी को भीतर भेजकर वो केशव के घर के बाहर ही रुक गया था—केशव के कहने पर माधवी ही उसे भीतर ले गई थी। दरअसल बात ये थी कि राजीव का पिता सुरजीत अरोड़ा किसी वक्त में पंजाब में आतंकवादी था और फिर पुलिस व सरकार की सख्ती होने पर वो पंजाब से भागकर मुम्बई आ गया था और उसके सम्बन्ध पाकिस्तानी संस्था आई० एस० आई० हो गये थे। जेल में बन्द आतंकवादियों को छुड़ाने के लिये सुरजीत अरोड़ा ने अपने पांच साथियों के साथ मिलकर एक स्कूल के बच्चों व टीचर्स को अपने कब्जे में लेकर और उन्हें मारने की धमकी देकर जेल में बन्द आतंकवादियों को छोड़ देने की मांग की थी। लेकिन केशव ने चालाकी व होशियारी के साथ स्कूल में दाखिल होकर सभी आतंकियों समेत सुरजीत अरोड़ा को भी मार दिया था।

इसके पश्चात् राजीव की परवरिश उसके ताऊ राजेन्द्र सिंह और ताई कुलजीत कौर ने ही की थी। वो दोनों सिख थे लेकिन राजीव को सिख नहीं बनाया था। दोनों ने राजीव को बेटे की तरह ही पाला और राजीव भी उन्हें मां-बाप मानता है, दोनों को मम्मी-पापा जी बोलता है। इसी के साथ वो अपने बाप सुरजीत अरोड़ा के नाम से भी नफरत करता है।

"आजा भाई विधवा के मंगल-सूत्र...!" अलफांसे अपनी ही टोन में बोला—"तेरा ही इन्तजार कर रहा था। मारे बदहजमी के बुरा हाल हो रहा था। केशव ने बतलाया कि तुम घर पर खाना लेने गये हो। सलमा की तबियत ठीक नहीं है। उसे बोल आया था कि वो अपने वास्ते मूंग की दाल की खिचड़ी बना ले और मेरे वास्ते खाना ना बनाये। यहीं पर खा लूंगा।"

"लेकिन बदहजमी में तो भूख नहीं लगती। बदहजमी में खाना नहीं खाना चाहिये।"

"ओये कीचड़ में खिले गुलाब!" अलफांसे आंखें तरेरकर बोला, "क्यों भूखे की पीठ पर लात मारता है? तेरा कल्याण हो जायेगा। मेरी बदरूह तुझे दुआ दे देगी तो स्वर्ग में पड़ा ऐश करता रहेगा। जल्दी से टिफिन खोल यार...नहीं, अभी नहीं। एक बेहूदा-सा इन्टरव्यू चल रहा है। उसमें हम सभी को मजा आ रहा है। पहले उसे देखेंगे। इस सदी के भीतर तो पूरा हो ही जायेगा। अगली सदी में खाना खा लेंगे।"

केशव, सोफिया, राजन, चांदनी, करतार सिंह, राजीव और आशीर्वाद मुस्करा दिये।

ट्रिपल फाइव की सिगरेट सुलगाकर और कश लगाकर नथुनों के रास्ते धुएं को सरकाते हुए अलफांसे केशव से सम्बोधित होकर बोला—"वैसे इन्टरव्यू काफी बोर है प्यारे दशरथनन्दन! उस गधे के सींग यमराज ने काफी उत्सुकता बढ़ा दी है। जब वो दुनिया का सबसे अमीर आदमी है तो उसकी शादी क्यों नहीं हो पाई? उसके चारों तरफ तो एक-से-एक लड़कियों को यूं जमावड़ा हो जाना चाहिये था जैसे गोबर पर मक्खियां भिनभिनाती हैं।"

"ऐसा नहीं है प्यारे कि लड़कियों ने उसकी धर्मपत्नी बनने की कोशिश नहीं की—लेकिन उनमें से कोई भी यमराज की शर्त पूरी नहीं कर पाई। इसीलिये यमराज की शादी नहीं हो पाई है।"

"आखिर ऐसी क्या शर्त हो सकती है? तुम तो दिमाग के शेखचिल्ली हो, आइडिया लगा सकते हो।"

"आइडिया लगाने की जरूरत नहीं। मुझे पता है कि यमराज की शर्त क्या है?"

"मालूम है?" अलफांसे चौंका।

राजन, चांदनी, आशीर्वाद व करतार सिंह भी चौंके। जबकि राजीव की समझ में नहीं आ रहा था कि किस यमराज की या कौन-से इन्टरव्यू की बात चल रही है।

मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला और अलफांसे की

हैरत भरी आंखों में झांकते हुये बोला—"बिल्कुल मालूम है कि यमराज की शर्त क्या है?"

"तुम तो सुई से रूमाल को फाड़कर धोती किये जा रहे हो दशरथनन्दन! बतलाओ कि यमराज की शर्त क्या है? अगर तुम्हारी बात ठीक निकली तो इनाम में चवन्नी दूंगा।"

केशव ने बतला दिया कि यमराज की शादी करने के लिये शर्त क्या है?

□□□

□□□

"रजीव...ओये रजीव...!"

बड़े मकान के बड़े आंगन की बड़ी-सी चारपाई पर बैठा साठ वर्षीय सिख जोर-जोर से बोलकर किसी को पुकारने लगा।

ऊपर एक कमरे से कोई पच्चीस वर्षीय, गोरा-चिट्टा, खूबसूरत युवक छज्जे पर आया और आंखों पर लगे नजर के चश्मे को दुरुस्त करके बोला—

"की गल है पापाजी?"

"ओये खाना तैयार है। थल्ले आकर खाना खा ले।"

"हुणे नी खा सकदा पापा जी।"

"ओये...क्यों नी खा सकदा? तुहाड्डी मम्मी गर्म-गर्म तन्दूर विच रोटियां सेंक रही है।"

"मुझे बहुत वड्डे वकील ने हुणे-हुणे अपना असिस्टेंट बणाया है पापा जी। उन्हों दे कौल मर्डर दा इक केस हैगा। उन्होंने मैनू केस दी फाइल दी सी। ओ बोले सी कि मैनू ऐश केस दी फाइल नू ध्यान तो पढ़ना है तो कल अपणी राय उन्हानूं देणी है। मैन्नू फाइल दी स्टडी करनी है।"

"इस्टडी-पिस्टडी बाद में हो जावांगी। पहले छेती तो थल्ले आके साढे नाल खाना खा। ऐ तुहाड्डे पापा दा हुक्म हैगा।"

चश्माधारी युवक अनिच्छा से नीचे आया। उसके चेहरे पर अप्रसन्नता के भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे थे।

कोई अट्ठावन वर्षीय तथा कुर्ते-सलवार वाली महिला दो थालियों में सरसों के साग के साथ मक्का की गरमा-गरम रोटियां,

छाछ या मट्ठा, ढेर सारा मक्खन और गुड़ के बड़े-बड़े टुकड़े ले आई।

दोनों थालियां चारपाई पर रखकर वो वापिस रसोई की तरफ चली गई।

"आपने मुम्बई वाले ताऊ जी तो गल नी कीती पापा जी...।" युवक शिकयती लहजे में बोला, "मुम्बई दे मशहूर वकील ते जासूस केशव पण्डित जी ताया जी दे शिष्य हैं। ताया जी पण्डित जी नूं दस्सांगे तो ओ मैन्नू अपना चेला बणा ले वांगे...।"

अधेड़ ने रोटी के टुकड़े को वापिस थाली में रख दिया और बेहद संजीदा होकर बोला—"तू गल नू समझदा क्यों नी है पुत्तर! अव्वल तो रमाकान्त प्राह जी ही राजी नी होवांगे। ओ राजी हो वी गये तो केशव पण्डित तो किसी बी कीमत तो तैनू अपणा चेला बनान वास्ते राजी नी होवेगा। ऐश कड़वी सच्चाई नू मत भूल राजीव कि तेरा बाप सुरजीत आतंकी सी। उस कंजर...मुल्क दे दुश्मन नू केशव पण्डित ने ही खत्म किया सी। तू गलत नी है। तू पक्का देशभक्त है। अपणे प्यो तो नफरत करदा है। लेकिन केशव पण्डित दी नजरां विच तो आतंकी दा पुत्तर ही रहेगा।"

"हिरण्यकश्यप राक्षस सी...पापा जी! ओहदा पुत्तर प्रहलाद पगवान दा पक्त सी। पगवान विष्णु ने नृसिंह दा अवतार लिया सी तो हिरण्यकश्यप नू मारा सी। उन्होंने प्रहलाद तो नफरत नी कीती। प्रहलाद नूं गोद विच बिठाकर लाड़-दुलार किया सी तो आशीर्वाद दीत्ता सी। मेरा बाप ही तो आतंकी सी। मैं तो नी हूं ना? पण्डित जी बहुत ही समझदार हैं...इन्टेलीजेंट हैं। ओ मेरी पावनाओं दी इज्जत करांगे ते मैन्नू अपना चेला बणा लेवांगे। तुस्सी इक बार रमाकान्त ताया जी तो गल करके तो वेखो।"

"हिम्मत नी पड़दी ओये राजीव! रमाकान्त प्राह जी मैन्नू डांट देवांगे।"

राजीव नामक युवक का चेहरा उतर गया।

वो दुखी हो चला!

सरदार राजेन्द्र सिंह ने उसके हाव-भाव नोट किये और फिर बोला—"तू दिल नू दुखी ना कर ओये राजीव। रमाकान्त प्राहजी दे फोन आन्दे रहन्दे हैं। ऐश बार उन्हा दा फोन आवांगा तो मैं हिम्मत करके उनसे तेरे बारे में गल करांगा। उन्हानू समझाने दी कोशिश करांगा।"

"सच...पापा जी?"

"इकदम सच! हुण तू खाना खा ते रब तो दुआ कर कि रमाकान्त प्राह जी मान जावें—फेर केशव पण्डित वी तैनू अपणा चेला बनाने दे वास्ते राजी हो जावें। वाहे गुरु ते पगवान नू सिमरन कर। ओ चाहवांगे तो तुहाड्डा कम बन जावांगा।"

❑❑❑
❑❑❑

गामा पहलवान की बहन सरीखी शान्ता बाई के साथ बैठी क्रान्ति लगातार दो सिगरेट फूंक गई। उसकी आंखें एक पल के लिये भी टी० वी० पर से नहीं हटी थीं।

टी० वी० पर चलते विज्ञापनों को सौतन की नजरों से ही देखा उसने।

विज्ञापन खत्म हुये और टी० वी० स्क्रीन पर नताशा व यमराज के दीदार होने पर क्रान्ति की आंखों में उत्सुकता के चिराग रोशन हो चले।

यमराज खामोशी का लबादा ओढ़े सिगरेट के धुऐं उड़ा रहा था।

हाथ में माइक पकड़े नताशा जवाब पाने को व्याकुल हुई जा रही थी, लेकिन यमराज की खामोशी तोड़ने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी।

यमराज ही बोला—"मेरा एक दुश्मन है छोकरी! काफी अर्सा हुआ—उसने मुझे जबरदस्त चोट दी थी। डिटेल नहीं बतालाऊंगा—लेकिन इतना जान ले कि मैंने अपने दुश्मन से कहा था कि उसको कोई औरतजात ही शिकस्त देगी। उसे अदालत में कातिल साबित करके फांसी की सजा दिलायेगी। इसी के साथ मैंने ये प्रण भी कर लिया था कि जो कोई भी शेर की बच्ची मेरे दुश्मन को कातिल साबित करके फांसी की सजा

दिलवायेगी—मैं उसी के साथ शादी करूंगा। अभी तक कोई भी औरत मेरी शर्त को पूरी नहीं कर पाई।"

"क्या आप बतलायेंगे कि आपका वो दुश्मन कौन है?"

"केशव पण्डित।"

❑❑❑
❑❑❑

"के...केशव पण्डित...?"

चिहुंक उठी क्रान्ति!

उसने खड़े होने की चेष्टा की—लेकिन ये भूल गई कि उसके हाथ और पैर कटे हुये हैं।

असन्तुलित होने के कारण वो गिर पड़ी।

शान्ता बाई उसे सम्भालने का उपक्रम कर ही रही थी कि वो अपने दम पर उठ बैठी और उत्तेजित भाव से बोली—"सुना शान्ता बहन! यमराज ने क्या बोला? इसने केशव पण्डित का ही नाम लिया है ना? या मेरे कान बज रहे हैं?"

"नहीं! इसने केशव पण्डित ही कहा। लेकिन ये नहीं कह सकती कि ये तुम्हारे दुश्मन केशव पण्डित की ही बात कर रहा है, या किसी दूसरे...।"

क्रान्ति ने झुलसे होठों पर उंगली रखकर शान्त रहने का इशारा किया तो शान्ता बाई ने होठ भींच लिये और टी० वी० की तरफ देखने लगी।

"केशव पण्डित...!" टी० वी० स्क्रीन पर नताशा ने पूछा, "ये कौन है सर?"

यमराज की आंखों में कुम्हार का अलाव-सा दहक उठा।

जबड़े प्रेशर-कुकर के ढक्कन की मानिन्द कस गये, भिंच गये और कनपटियों की नसें नन्हें-नन्हें संपोलों की मानिन्द ही खाल के नीचे छटपटाने सी लगीं।

चेहरा विकृत होकर कछुऐ से कोबरा के फन के आकार-सा हो चला।

उसका रौद्र रूप देख नताशा सहम उठी और बार-बार सूख चले होठों पर जिव्हा फिराने लगी।

"केशव पण्डित...!" यमराज के मुंह का पिटारा खुला और

उसमें कैद कोबरा इन्सानी भाषा में ही फुंफकारकर बोला—"वो हिन्दुस्तानी है...मुम्बई का रहने वाला है। वो वकील, इन्वेस्टीगेटर और राइटर है। नॉवल लिखता है। उसे 'दिमाग का जादूगर' के नाम से जाना-पहचाना जाता है। वो गरीबों और मजलूमों के लिये सखी हातिमताई है। किसी पर जुल्मो-सितम, नाइन्साफी हो जाये तो तुरन्त ही उसकी मदद को पहुंच जाता है। मुजरिमों को पकड़ता है और कानून के हाथों सजा दिलवाता है। कभी खुद ही मुजरिमों को सजा दे डालता है। उसके भीतर देशभक्ति के किटाणु भी बहुत हैं। देश के दुश्मनों, आतंकवादियों वगैरा के खिलाफ जंग लड़ता रहता है।"

"तो क्या केशव पण्डित ने आपको कोई नुकसान पहुंचाया था सर?"

"हां, पहुंचाया था।"

"क्या आप बतलायेंगे कि हुआ क्या था?"

यमराज ने इन्कार में सिर हिलाया और फिर रेड एंड व्हाइट की सिगरेट सुलगा ली।

"आप तो माफिया किंग हैं। दुनिया के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति। आपने केशव पण्डित से बदला नहीं लिया?"

"न...नहीं!" यमराज मानो अंगारों पर लोटते हुये ही बोला—"जोश और गुस्से में कह बैठा था कि कोई औरत या लड़की ही केशव पण्डित को कातिल साबित करके फांसी की सजा दिलवायेगी—या मैं किसी औरत के जरिये ही केशव पण्डित को कानून के शिकंजे में फंसाऊंगा। इस बात की कसम खा ली थी, प्रण कर लिया था, प्रतिज्ञा कर ली थी। क्या पता था कि कोई भी औरत मेरी शर्त को पूरा नहीं कर पायेगी। अगर मैंने ये प्रतिज्ञा ना की होती तो कभी का केशव पण्डित को उसकी औकात बतला देता। दुनिया से नामोनिशान मिटा देता उसका। वो मेरे सामने है ही क्या? उसकी औकात ही क्या है मेरे सामने?"

❑❑❑

❑❑❑

"ओये...चूहे के अन्डे से निकले कौव्वे...।" आपा खो बैठा अलफांसे और क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये

चिल्लाया—"सून्ड वाले पिल्ले! बेमतलब में ही चींटी की माफिक भौंक रहा है। होगा तू माफिया किंग। अपनी नजरों में ही होगा तू दुनिया का सबसे शक्तिशाली आदमी। अपने दशरथनन्दन के सामने तेरी औकात इतनी भी नहीं है, जितनी कि बब्बर शेर के सामने चूहें की होती है। अमेरिका में ही बैठा-बैठा कुत्ते की तरह म्याऊं-म्याऊं कर रहा है। अपनी मां का दूध पीया है तो हिन्दुस्तान अपनी पूरी सेना के साथ आ। लड़ अपने यार के साथ जंग। अगर तेरा बैण्ड ना बजा दिया तो कहना। साला...बुजदिल, बदला लेने का दम नहीं है। इसीलिये खुद को प्रतिज्ञा के खोल में बन्द किये बैठा है। अपना केशव तेरा सूप बनाकर कुओं के मेंढकों को पिला देगा।"

"रिलेक्स, अलफांसे।" केशव कुर्सी से उठा और अलफांसे के कंपकंपाते कन्धे को हथेली से दबाकर बोला—"इसमें नाराज होने वाली क्या बात है? वो माफिया किंग है। उसे अपना रुतबा तो बनाकर रखना ही होगा।"

"अजी काहे का रुतबा! जी चाहता है कि अभी दौड़कर अमेरिका जाऊं और हरामी की जिन्दगी का सारा रायता बिखेर आऊं। नाली के पानी में चप्पल भिगो-भिगोकर मारूंगा। मारूंगा कम और घसीटूंगा ज्यादा। खुद को ना जाने क्या समझता है। बिल्ली की तरह मिमियाकर और बकरी की तरह कूं...कूं करते हुये रहम की भीख ना मांगने लगे तो मेरा नाम भी अलफांसे दि ग्रेट नहीं। साले को कंगाल बैंक ऑफ उजड़ी रियासत का डायरेक्टर बना दूंगा। सारा माल झाडू मारकर समेट लाऊंगा। हरामी के लिये भीख मांगने के लिये कटोरा तक नहीं छोड़ूंगा।"

"फिर तो आपको जाना चाहिये अंकल जी...।" बेड पर औंधे लेटकर चने चबा रहा आशीर्वाद तपाक से बोला—"फिर आप दुनिया के सबसे अमीर आदमी बन जायेंगे। पतंग बनाने की फैक्ट्री लगा सकेंगे?"

केशव, सोफिया, राजन, चांदनी, करतार सिंह और राजीव इधर-उधर मुंह करके और होठों को बन्द कर गूंगी हंसी हंस दिये।

अलफांसे ने आशीर्वाद को घूरा और बोला—"ओये सुरीले

कौओे! अरबों-खरबों की दौलत हासिल करने पर भी मुझसे पतंग की फैक्ट्री लगवायेगा। तेरी जुबान गेहूं के दाने से भी लम्बी हो गई है—इसे इमली के पत्ते से कतर दूंगा तो फिर जिराफ की तरह राग भैरवी ही गायेगा। तू क्या समझता है कि मैं ये काम नहीं कर सकता? ये काम तो मेरे लिये ऐसे ही हैं, जैसे मेरठ की कैंची से कागज को काट दिया जाये।"

"तो फिर कब जा रहे हैं आप? पटियाले वाले अंकल जी बैलगाड़ी की टिकिट बुक करा देंगे।"

"आहो...जी...बन्दा हाजिर है।"

"चुप ओये सरदार...!" अलफांसे बनावटी गुस्से के साथ बोला—"कोयल की भद्दी आवाज के साथ सुर मिलाने की कोई जरूरत नहीं। मुझे बैलगाड़ी से अमेरिका भेजोगे। किसी बैलगाड़ी में बैल की बजाये कछुअे को जोड़ दो। वो पलक झपकते ही मुझे अमेरिका पहुंचा देगा। अगर सलमा ने मेरे सामने रावण-रेखा ना खींच दी होती तो अभी विभीषण की तरह उड़कर जाता और यमराज की लंका लूट ले आता। सलमा ने बोल दिया है कि मुझे अब कोई जुर्म नहीं करना है। सिर्फ शादी करनी है और शराफत की जिन्दगी जीनी है। अब मैं इमरती की तरह सीधा हो गया हूं। काश...काश कि सलमा मुझे इस यमराज के यहां हाथ मारने की इजाजत दे दे तो मौजा ही मौजा...।"

"कोई मौजा नहीं प्यारे...!" केशव बोला, "तुम्हारे पास इतना है कि सलमा भाभी के साथ शादी करके जिन्दगी-भर आराम से अपनी गृहस्थी की गाड़ी चलाते रहोगे। ओह...एक काम याद आ गया। मुझे तुरन्त ही जाना होगा।"

"लेकिन खाना तो खा लीजिये गुरुदेव।"

"अभी नहीं राजीव! बाद में देखूंगा...वो काम बहुत ही जरूरी है। घन्टेभर में लौट आऊंगा।"

"तुम तो इन्टरवल से ही फिल्म को छोड़कर जा रहे हो दशरथनन्दन...अभी फिल्म अधूरी है। ये तो बतलाओ कि तुम्हारा और यमराज का क्या चक्कर है? वो तुमसे इतनी खार खाये क्यों बैठा है?"

"लौटकर आऊंगा तो बतलाऊंगा अलफांसे भाई कि आज से बारह साल पहले मेरे और यमराज के बीच क्या हुआ था?"

❑❑❑
❑❑❑

"कोई औकात नहीं उसकी मेरे सामने।" टी० वी० स्क्रीन पर यमराज मानो गुर्राकर बोल रहा था, "अगर बारह साल पहले मैंने वो प्रतिज्ञा ना की होती तो आज केशव पण्डित जिन्दा नहीं होता। उसे कभी का यमलोक पहुंचा दिया जाता। इस प्रतिज्ञा ने मेरे हाथ-पैर बांध दिये हैं। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी है। उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा है। मुझे पूरा विश्वास है कि आज नहीं तो कल कोई औरत मेरी शर्त पूरी करेगी और मेरी बीवी बन जायेगी। मैं तुम्हें इन्टरव्यू देने के लिये इसीलिये तैयार हुआ कि मुझे तुम्हारे टी० वी० चैनल के जरिये अपना सन्देश उन औरतों तक पहुंचाना है, जो कि दिलेर होने के साथ-साथ दिमागदार भी हों। उनमें से कोई भी केशव पण्डित को कानून के जाल में फंसाये और मुझसे शादी करके दुनिया की सबसे अमीर और शक्तिशाली औरत बन जाये। बस, अब इन्टरव्यू बन्द करो। मुझे एक जरूरी काम से जाना है।"

इसी के साथ टी० वी० स्क्रीन पर से यमराज और नताशा के चेहरे विलुप्त हो गये और न्यूज रीडर का खूबसूरत व मुस्कराता चेहरा दिखलाई पड़ने लगा।

राक्षस सरीखे और लम्बी जटाओं वाले अंगारा ने सिगरेट में कश लगाकर धुअें के छल्ले उड़ाये, फिर मांगी नामक कैदी से सम्बोधित होकर बोला—

"ये मैडम जी का दुर्भाग्य नहीं है तो...और क्या है मांगी? उनके पैर घुटनों से काट दिये गये। ऊपर से वो जेल में कैद हैं। अगर वो जेल में नहीं होतीं तो यमराज की शर्त को पूरा कर देतीं।"

"क्या बात करते हो अंगारा भाई?" मांगी कौतूहलता में पड़ा हुआ बोला—"लगता है कि तुम केशव पण्डित के बारे में जानते नहीं हो। लोगों ने उसे यूं ही दिमाग का जादूगर का ओहदा नेई दियेला है। वो है...दिमाग का जादूगर है। उसने बड़े-बड़े

उलझे हुये केस चुटकी बजाके हल कर दियेले। कोई बी जुर्म होने पे अगर उसने जासूसी की जिम्मेदारी ली तो मुजरिम कूं यूं इच पकड़ लाया जैसे मक्खन से बाल निकाला हो। कानून के बड़े-बड़े सूरमाओं को अदालत में पटखनी दे चुकेला है वो। दिमाग के दम पे उसने बड़े-बड़े गैंगस्टरों की वाट लगा दी। जुर्म के बड़े-बड़े खिलाड़ियों कू उसने गर्दन से पकड़ के फांसी के फन्दे पे टांग दियेला। देश के दुश्मनों और आतंकवादियों कू मिट्टी में मिलाके रख दियेला। पाकिस्तान बी गयेला। उदर आई० एस० आई० और मिलिटरी वालों कू इच खल्लास नेई कियेला—उनके अड्डों कू बी मटियामेट कर दियेला। पाकिस्तानी उसका बाल भी बांका नेई कर सके...वो आंधी की माफिक गयेला और तूफान की माफिक इच लौट के आ गयेला। कानून का तो वो पीरिन्सीपल है। बहुत बड़ा खिलाड़ी है। भला उसकू कौन कातिल साबित करने कू सकता?"

"अपनी क्रान्ति मैडम जी कर सकती हैं।" आत्म-विश्वास से लबालब भरा अंगारा सिगरेट के टुकड़े को फर्श पर फेंककर एक-एक शब्द पर जोर डालते हुये ही बोला—"तुम नहीं जानते कि अपनी मैडम जी क्या चीज हैं। लोमड़ी से भी ज्यादा चन्ट हैं वो। शेरनी से भी ज्यादा ताकतवर और नागिन से भी ज्यादा खतरनाक हैं। ये तो नसीब ने उनका साथ नहीं दिया, वरना वो केशव पण्डित को मजा चखा देतीं। मैंने तुम्हें उनके बारे में सब कुछ बतलाया तो था यार।"

"हां, बतलाया तो था! उन्होंने केशव पण्डित से शादी करने के वास्ते बहोत डेंजरस चाल चली थी—पन वो चाल फ्लोप हो गयेली थी। फिर बी उन्होंने हिम्मत नेई हारी थी। केशव पण्डित कू राजस्थान के रेगिस्तान में आने को मजबूर कर दियेला था—पन उदर बी नसीब ने साथ नेई दियेला। पण्डित ने उनकू तेजाब से जला दियेला था। फिर क्रान्ति जी केशव पण्डित से बदला लेने के वास्ते आई० एस० आई० में भर्ती होयेली थी। उनकू कश्मीर की चीफ बनाया गयेला था। पन तब बी बाजी केशव पण्डित के हाथ इच लगी थी। केशव पण्डित ने क्रान्ति जी के हाथ कटवा दिये थे। फिर उन्होंने राजस्थान में छोटे-छोटे

बच्चों की बटालियन बनायेली। बहोत इच खतरनाक बटालियन थी वो। पन तुम ठीक बोले अंगारा उस्ताद। क्रान्ति जी का नसीब इच खराब था। केशव पण्डित ने उनकू फिर मात दियेली। बम धमाके में क्रान्ति जी के पैर उड़ गयेले—ऊपर से केशव पण्डित ने उनकू उम्रकैद की सजा कराके जेल में पहुंचा दियेला। मानता हूं कि क्रान्ति जी बहोत खतरनाक दिमाग वाली हैं। पन अब तो उनके हाथ और पैर बी नेई रहेले। अगर वो किसी जुगाड़ से जेल से बाहर बी निकल जायें तो क्या करने कू सकती हैं बाप?"

"अगर मैडम जी को जेल से छुटकारा मिल जाये तो वो हाथ-पैर कटे होने पर भी बहुत कुछ कर सकती हैं मांगी। वो अपने शातिर दिमाग के दम पर ऐसा कोई खेल, खेल सकती हैं कि केशव पण्डित कानून के शिकंजे में फंस सकता है।"

मांगी नामक कैदी बोला तो कुछ नहीं, लेकिन उसके चेहरे ने इस बात की चुगली खाई कि उसे कतई भी यकीन नहीं कि क्रान्ति केशव को फंसाने वाला चमत्कार करके दिखला सकती है।

❑❑❑
❑❑❑

"क्या बात है क्रान्ति बहन?"

"कुछ नहीं...!"

"नेई...कुछ तो...बरोबर है। अपुन देख रेली है कि तुम जब से टी० वी० वाले हॉल से इदर...कोठरी में आयेली हो...बहोत गुमसुम हो। कुछ बी नेई बोल रेली हो। कोई ना कोई बात तो जरूर है। अपुन कू बी नेई बताने का क्या?"

लोहे की सींखचों वाली बैरक के भीतर सीमेन्ट की चौकी पर लेटी क्रान्ति कटे हाथों के सहारे से उठ बैठी और शान्ता बाई से सम्बोधित होकर गम्भीर भाव से बोली—"ऐसा मत बोलो शान्ता बहन! एक तुम ही तो हो, जिसे इस जेल के भीतर मैं अपना बोल सकती हूं। सुख-दुख की बात कर सकती हूं। तुमने मेरी बहुत मदद की।"

"तो फिर बताने का कि तुम उदास काय कूं है?"

"नहीं...उदास नहीं हूं मैं...कतई भी नहीं। हां, सोच में जरूर डूबी हुई हूं। यमराज के इन्टरव्यू ने मेरे सोये हुये दिमाग को झिंझोड़कर जगा दिया है। मेरे दिमाग का अस्तबल खुला और सोचों के घोड़े चारों दिशाओं में दौड़ लगा रहे हैं। जब तक वो मन्जिल ढूंढकर वापिस नहीं लौटेंगे मेरा मूड ऐसा ही बना रहेगा।"

शान्ता बाई ने सूखे व उलझे बालों वाले सिर को खुजलाया और उलझन में पड़ी हुई बोली—"अपुन के भेजे में तुम्हेरी बात घुस नेई रेली है क्रान्ति बहन! अपुन का भेजा तुम्हारे भेजे की माफिक तेज नेई है। खुल के समझाने का...कौन-सा अस्तबल...कौन से घोड़ों की बात कर रेली हो तुम?"

"समझाती हूं। पहले एक सिगरेट तो पिलाओ।"

शान्ता बाई ने एक सिगरेट सुलगाकर क्रान्ति के झुलसे होठों के बीच लगा दी और फिर अपने लिये भी एक सिगरेट सुलगा ली।

कश लगाकर और नथुनों से धुआं उगलने पर क्रान्ति ने ठूठ जैसे कटे हाथों से सिगरेट को पकड़कर होठों से निकाला और फिर शान्ता बाई की कौतूहलता भरी आंखों में झांकते हुए बोली—"मैं सोच रही हूं कि यमराज की शर्त पूरी करके उसके साथ शादी कर लूं।"

❑❑❑
❑❑❑

मानो किसी मेंढकी को आलपिन चुभा दिया गया हो, कुछ इसी अन्दाज में चिहुंकी शान्ता बाई। उसने क्रान्ति को ऐसी ही नजरों से देखा कि मानो उसके मानसिक सन्तुलन पर संदेह कर रही हो।

"क्या हुआ?" क्रान्ति थोड़ा हैरानी के साथ बोली, "तुम्हारा ऐसा रिएक्शन क्यों शान्ता बहन? क्या कोई गलत बात बोल गई हूं?"

"समझ में नेई आ रेला कि तुम्हेरी बात कू क्या बोलने का है? बुरा नेई मानने का क्रान्ति बहन—पन तुम नामुमकिन

होने वाली बात कर रेली हो। कुछ ऐसे इच जैसे चींटी हिमालय पहाड़ कू हिलाने का दावा कर रेली हो।"

बुरा मानने की बजाये मुस्कराकर ही बोली क्रान्ति—"क्यों...मेरी बात नामुमकिन क्यों लगी तुम्हें?"

"नामुमकिन इच तो है। तुम केशव पण्डित कू कातिल साबित करने का दावा कर रेली हो। उस केशव पण्डित कू...जो कि कानून का महारथी है—जो काननू के मैदान का सबसे बड़ा खिलाड़ी है। पैली बात तो ये कि वो कोई गुनाह करेगा इच नेई। अगर किसी करिश्मे से उसकू गुनाह करने को मजबूर कर बी दियेला तो उसकू अदालत में मुजरिम साबित करना मुमकिन नेई होयगा। ऐसे ख्वाब नेई देखने का...जो पूरे नेई हों...।"

ठूठ जैसे हाथों में फंसी सिगरेट को झुलसे होठों से लगाकर कश मारा क्रान्ति ने और फिर सिगरेट फर्श पर फेंकने पर बोली—"तुम भी अपनी जगह ठीक ही हो शान्ता बहन! मैंने बात तो ऐसी ही की है कि मानो मेरा दिमाग खिसक गया हो। कोई भी हंस पड़ेगा मेरी बात पर। क्योंकि देखने पर मेरे कटे हुये हाथ और पैर ही नजर आते हैं। मेरा दिमाग, मेरी सोच, मेरे इरादे, मेरा हौंसला और आत्म-विश्वास तो नजर आयेगा नहीं। जबकि दिखलाई ना पड़ने वाली ये चीजें ही बहुत घातक और कारगर साबित होती हैं। मेरा जिस्म भले ही कट-फट कर कम वजन जरूर हो गया है, मेरे हाथ-पैर जरूर कटकर छोटे हो गये हैं, लेकिन दिमाग ना तो अपाहिज ही हुआ है और ना ही मेरे दिमाग का आकार और वजन कम ही हुआ है। मानती हूं कि केशव पण्डित भी कम नहीं है। वो भी दिमागवाला है। माइन्डेड, जीनियस, ब्रिलियंट है। दिमाग का जादूगर कहा जाता है उसे, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि दुनिया का सबसे दिमागदार वो ही है। उसे ये वरदान नहीं मिला हुआ है कि कोई उसे मात नहीं दे सकेगा। मैं दावे के साथ बोल रही हूं शान्ता बहन कि मैं केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित कर दूंगी। भले ही उसे फांसी की सजा ना मिलकर उम्रकैद की सजा मिले।"

"पन तुम्हेरा जेल से निकलना बी तो जरूरी है ना क्रान्ति बहन?"

हथेलियां तो थी नहीं—क्रान्ति ने ठूठ जैसे हाथों को आपस में टकराकर एक भद्दी गाली निकाली और फिर कसमसाकर, छटपटाकर बोली—"यहीं...यहीं आकर मजबूर हो गई हूं मैं शान्ता बहन। मेरा सबसे वफादार अंगारा भी तो जेल में है—उसे फांसी की सजा सुनाई गई है। वो अगर बाहर होता तो हर कीमत पर मुझे छुड़वा लेता। अगर किसी चमत्कार से मैं इस जेल से बाहर निकल जाऊं तो केशव पण्डित की जिन्दगी में हलचल पैदा कर दूंगी। भले ही कुछ भी करना पड़े—लेकिन अपने दिमाग के चक्रव्यूह में फंसाकर केशव पण्डित को उसके ही हथियार से मारूंगी...कानून से। वो जिस अदालत को मन्दिर समझता है, उसी मन्दिर में उसको मुजरिम साबित कर दूंगी।"

क्रान्ति के फूलते-पिचकते नथुनों से फुंफकारें-सी फूटने लगीं।

झुलसा हुआ चेहरा यूं ही लगने लगा कि मानो सुलगे हुये उपले पर जोर-जोर से फूंक मारी जा रही हो।

□□□

□□□

पांच फुट आठ इन्च कद वाली उस युवती को वीनस की जीती-जागती मूर्ति की उपाधि निसंकोच दी जा सकती थी।

मानो दुनिया के सबसे बड़े मूर्तिकार ने मिट्टी की बजाय मक्खन में चमेली और गुलाब के फूलों को गूंथकर खूबसूरत प्रतिमा घड़ डाली हो और ईश्वर से प्रार्थना करके उसमें प्राण डलवा दिये हों।

हल्के लाल रंग के घने व लम्बे रेशमी केश! सुराहीदार लम्बी गर्दन। नारियल से ठोस व बड़े उभारों वाला उन्नत वक्ष! पतली कमर! भारी व सुडौल कूल्हे! सून्डाकार लम्बी-लम्बी, केले के तने सी चिकनी टांगें।

हल्के लाल रंग के बालों वाली धुनषाकार व पतली-पतली भौंहे, लम्बी पलकों वाली लाल रंग की चमकीली व बड़ी-बड़ी

आंखें। कश्मीर सेबों जैसे गाल। सुतवां नाक। लाल गुलाब की पंखुड़ियों जैसे सुर्ख व मुलायम होठ।

मोतियों से चमकते-दमकते खूबसूरत दांत!

नीली डेनिम की बहुत छोटी निकर और पीले रंग की झीनी-सी शर्ट, जिसके निचले पल्लों को आपस में गांठ मार दी गई हो और ऊपर के दो बटन खुले होने के कारण सफ़ेद कपोत बाहर झांक रहे थे।

वह यमराज के शानदार, बेशकीमती फर्नीचर व साजो-सामान से सुसज्जित एयर कन्डीशनर वाले रूम में दाखिल हुई।

चेहरे पर नाराजगी के भाव स्पष्ट गोचर हो रहे थे।

बेड पर आलथी-पालथी मारकर बैठे यमराज के भीमकाय जिस्म पर सिर्फ अन्डर वियर ही था और हाथ में व्हिस्की से भरा सोने का गिलास था।

सामने मेज पर व्हिस्की की बोतल, मसालेदार तले हुये काजू, उबले हुये अन्डे, पनीर के टुकड़े, ऐशट्रे, लाइटर और रेड एंड व्हाइट की डिब्बी रखी हुई थी।

बड़े साइज के टी० वी० पर 'फैशन' चैनल लगा हुआ था, जिस पर अर्धनग्न युवतियां अपने जिस्म व अदाओं की नुमाईश कर रही थीं।

"कम इन मोनिका डार्लिंग।" भारी-भरकम व बेसुरे स्वर में बोला यमराज—"तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था जानेमन। शराब के साथ शबाब ना हो तो मजा नहीं आता। काउन्टर पर से खाली गिलास उठा लाओ और पैग बनाकर मेरी गोद में बैठ जाओ।"

"मुझे नहीं पीनी...।" कहने पर मोनिका मेज के पार रखे सोफे पर धप्प...से बैठ गई और क्रोधवश ना जाने क्या बड़बड़ाने लगी।

यमराज ने अमेरिकी मां और हिन्दुस्तानी पिता की बेटी मोनिका को ध्यान से देखा, फिर मुस्कराकर बोला—"क्या बात है डार्लिंग—तुम्हारा मूड उखड़ा हुआ क्यों है?"

"तुमने उस टी० वी० इन्टरव्यू में क्या कहा?"

"क्या कहा?"

"यही कि जो कोई भी लड़की या औरत केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित कर देगी—तुम उसी के साथ शादी कर लोगे।"

"हां, ये तो कहा मैंने...!" व्हिस्की की घूंट भरकर बोला यमराज—"हालांकि ये काम नामुमकिन सा ही है। इसीलिये मैंने इस तरफ से ध्यान ही हटा लिया था। लेकिन अपने जानी दुश्मन को नहीं भूल पाया हूं मैं—जिसका नाम केशव पण्डित है। जब उस टी० वी० रिपोर्टर ने इन्टरव्यू के लिये बार-बार रिक्वेस्ट की तो मेरे दिमाग में ये बात आई कि इस इन्टरव्यू के जरिये अपनी प्रतिज्ञा या कसम के बारे में भी बोल दूंगा। आज की तारीख में मेरा रुतबा है। शौहरत और बेशुमार दौलत है। माफिया का चीफ होने की वजह से ताकत और पहुंच भी है। शायद कोई लोमड़ी जैसे दिमागवाली मेरे से शादी करने के लालच में कोशिश करे और वो अपनी कोशिश में कामयाब भी हो जाये—यानि वो केशव पण्डित को कातिल साबित कर दे।"

"अगर किसी ने ऐसा कर दिया तो तुम उसके साथ शादी कर लोगे?"

"हां, बिल्कुल! क्योंकि मैंने प्रतिज्ञा की हुई...अरे...ये क्या? तुम तो रोने लगीं?"

"रोऊं नहीं तो क्या करूं...?" मोनिका रोते-सुबकते हुये बोली—"तुमसे सच्ची मुहब्बत की मैंने। अपना तन-मन...सब कुछ तुम पर न्योछावर कर दिया है मैंने। तुमने प्रतिज्ञा वाली बात तो बतलाई नहीं थी—लेकिन ये कहा था कि किसी मजबूरी की वजह से तुम शादी नहीं कर पाओगे। मैंने जरा-सा भी फील नहीं किया। ये तय कर लिया था कि बिना शादी ही तुम्हारे साथ सारी जिन्दगी गुजार दूंगी। ले...लेकिन तुमने तो मेरा दिल ही तोड़ दिया। अगर किसी लड़की ने तुम्हारी शर्त पूरी कर दी तो तुम उसके साथ शादी कर लोगे और मुझे दूध में गिरी मक्खी की तरह ही निकालकर फेंक दोगे।"

गिलास मेज पर रखकर उठा यमराज।

रोती-सुबकती मोनिका के करीब पहुंचा।

उसे पकड़कर खड़ी किया। मोटी-मोटी उंगलियों से उसके आंसू पोंछे, फिर उसके गुलाब के फूल से चेहरे को हथेलियों में भरकर बोला—"पगली! नाहक ही जी छोटा कर रही हो।"

"मैं...मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह पाऊंगी...।"

"तो मैं ही तुम्हारे बिना कहां रह पाऊंगा?"

"ले...लेकिन जब तुम किसी के साथ शादी कर लोगे तो...।"

"अव्वल तो मुझे लगता नहीं कि कोई माई की लाल मेरी शर्त को पूरा कर पायेगी।"

"अगर किसी ने शर्त पूरी कर दी तो?"

"तो मैं उसके साथ शादी कर लूंगा—लेकिन इसका मतलब ये कतई नहीं कि तुम्हारी अहमियत कम हो जायेगी। मेरी कसम पूरी हो जायेगी तो फिर मैं अपनी प्रतिज्ञा से मुक्त हो जाऊंगा। एक नहीं...दो शादी करूंगा। तुम्हारे साथ भी शादी कर लूंगा। तुम्हारी हैसियत महारानियों वाली होगी। शर्त पूरी करने वाली औरत तो सिर्फ नाम की ही बीवी होगी। असली बीवी तुम ही होगी। मेरे दिल की मल्लिका तुम ही रहोगी। मेरा सबकुछ तुम्हारा ही होगा। शर्त पूरी करने वाली को भी थोड़ा-बहुत दे दूंगा। लेकिन मेरा वारिस तुम्हारी कोख से पैदा होने वाली सन्तान ही होगी।"

"ले...लेकिन बच्चे तो दूसरी वाली को भी होंगे। उनमें भी तुम्हारा ही खून होगा।"

"उसे बच्चे नहीं होंगे।"

"भला वो कैसे?"

"उसको किसी बहाने बेहोश करके उसका आप्रेशन करा दूंगा—या फिर उसको ऐसी दवाई दी जायेगी कि वो गर्भवती ही ना होने पाये! मैंने शर्त पूरी करने वाली के साथ शादी करने का वादा किया है। ये तो नहीं कहा कि वो जिन्दगीभर मेरी बीवी रहेगी। दो-चार महीने बाद उसका मर्डर भी करा सकता हूं। बल्कि ठीक यही रहेगा कि मैं उसके साथ शादी करूंगा और फिर एक-दो महीने बाद ही उसका खात्मा कर दूंगा। फिर हम दोनों शादी कर लेंगे।"

"स...सच? तुम सच बोल रहे हो यमराज?"

"हां, तुम्हारी कसम...।"

"ओह... यमराज...!" मोनिका ने यमराज की कोहली भर ली। पन्जों के बल उठकर यमराज के स्याह व मोटे होठों को चूमकर बोली—"आई लव यू! तुम कितने अच्छे हो!"

□□□

□□□

शानदार, आलीशान...खूबसूरत, विशालकाय गुलाबी रंग की कोठी।

कोठी के बाहर हरी व मुलायम घास वाला काफी बड़ा लॉन था, जिसमें दरियों के ऊपर सफेद रंग के कपड़े भी बिछे हुये थे।

हजारों की संख्या में लोग बैठे हुये थे। एक तरफ पुरुष तो दूसरी तरफ महिलायें। अधिकांश लोग सफेद रंग की पोशाक में थे। महिलाओं ने भी सफेद रंग या फिर हल्के रंग की पोशाक धारण की हुई थी और मेकअप भी नहीं किया हुआ था—या बहुत ही हल्का मेकअप किया हुआ था। ढेर सारे खादी की पोशाक व टोपी वाले नेता टाइप के लोग भी भीड़ में शामिल थे।

एक मेज पर लगभग इक्कीस, वर्षीय खूबसूरत युवती की फ्रेम में जड़ी तस्वीर रखी हुई थी। तस्वीर के समक्ष देशी घी का दीया, धूपबत्ती और अगरबत्तियां सुलग रही थीं।

तस्वीरों पर गुलाब के फूलों का ताजा हार चढ़ा हुआ था।

यूं तो हर कोई शोक संतप्त दिखलाई पड़ रहा था, लेकिन मेज के करीब बैठे सफेद कुर्ते-पाजामे वाले अधेड़ के चेहरे पर दुख का रेगिस्तान-सा दिखलाई पड़ रहा था और उसकी आंखों में गम व पीड़ा के समुन्द्र ठाठे मार रहे थे।

उसकी सुर्ख आंखें और सूजे हुये पपोटे इस बात की चुगली खा रहे थे कि वो बहुत ज्यादा रोया था—इतना ज्यादा कि आंसुओं का आकाल ही पड़ चुका था।

वह दशरथ सिंह था।

मुम्बई के एक इलाके का विधायक और विधान सभा में विपक्ष का नेता। इससे पूर्व जब उसकी पार्टी की राज्य में सरकार

थी तो वह गृहमन्त्री था। बेहद ईमानदार और हर किसी के सुख-दुख में काम आने वाला।

परसो शाम उसकी बेटी सुरभि अपने होन्डा स्कूटर पर सवार होकर अपनी बीमार सहेली को देखने के लिये नर्सिंग होम के लिये गई थी—लेकिन वो नर्सिंग होम तक नहीं पहुंची थी।

डिनर का टाइम होने पर दशरथ सिंह ने फोन पर कॉन्टेक्ट करना चाहा तो फोन का स्विच ऑफ था। फिर नर्सिंग होम में एडमिट सुरभि की सहेली करिश्मा को फोन किया तो उसने ये बतलाकर दशरथ सिंह के हाथ-पैर फूला दिये थे कि सुरभि नर्सिंग होम पहुंची ही नहीं थी।

दशरथ सिंह ने अपने ड्राइवर को बोलकर कार निकलवाई और बेटी की तलाश में निकल पड़ा।

एक निर्जन स्थान पर कब्रिस्तान के करीब और सड़क के किनारे होन्डा स्कूटर पड़ा मिला, लेकिन आस-पास सुरभि नहीं थी।

चिन्तित व आशंकित दशरथ सिंह ने तुरन्त ही पुलिस स्टेशन पहुंचकर इन्सपेक्टर अनिल यादव को सारी बात बतलाकर एफ० आई० आर० दर्ज कराई और फिर पुलिस कमिश्नर से भी जाकर मिला।

अनिल यादव ने एक साथ पुलिस की कई टीमें बनाकर सुरभि की तलाश में दौड़ा दीं—वह स्वयं भी सुरभि की तलाश में निकल पड़ा।

कब्रिस्तान के भीतर सुरभि मिली—एकदम निःवस्त्र।

उसके तमाम फटे हुये वस्त्र और वस्त्रों के टुकड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

बेजान जिस्म पर नोंचने-खरोंचने के निशानों के साथ दांतों के भी निशान थे।

इन्सपेक्टर अनिल यादव को समझने में जरा-सी भी देरी नहीं हुई कि सुरभि के साथ किसी वहशी दरिन्दे ने बर्बरतापूर्वक बलात्कार किया था और फिर उसके ही दुपट्टे से उसका गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी थी।

गले में दुपट्टे का फन्दा कसा हुआ था।

खबर लगते ही दशरथ सिंह कोठी पर मौजूद रिश्तेदारों, पड़ोसियों व पार्टी के कुछ नेताओं के साथ कब्रिस्तान पहुंचा। इकलौती व बिन मां की बेटी की लाश को देख वो चीख मारकर बेहोश हो गया था और उसे तुरन्त ही हॉस्पिटल पहुंचाया गया था,

पोस्टमार्टम के पश्चात् कल शाम सुरभि का अन्तिम संस्कार कर दिया गया था।

हालांकि छानबीन या इन्वेस्टीगेशन का काम पुलिस का, उस इलाके के थाना इन्चार्ज अनिल यादव का था, लेकिन केशव ने स्वयं ही दिलचस्पी ली—क्योंकि मामला कत्ल के साथ बलात्कार का भी था और वो चाहता था कि मुजरिम को जल्द-से-जल्द पकड़कर कानून के हाथों सजा दिलवाये।

सो उसने राजन शुक्ला, करतार सिंह और नये चेले राजीव अरोड़ा के साथ घटनास्थल पर जाकर छानबीन की थी।

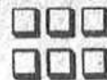
दुर्भाग्य से कोई आई विटनेस यानि प्रत्यक्षदर्शी तो नहीं मिल पाया लेकिन केशव ने वहां मिले निशानों के आधार पर ये खुलासा किया कि कब्रिस्तान के बाहर कार ने सुरभि के स्कूटर को ओवरटेक किया था और कार से टेन फोर्स ब्रान्ड के दस नम्बर के जूतों वाला मुजरिम बाहर निकला, जो कि शायद रिवॉल्वर लिये हुये था। वो सुरभि को डरा-धमकाकर कब्रिस्तान के भीतर ले गया था। क्योंकि दस नम्बर वाले जूतों के निशान के साथ सुरभि की सैन्डलों के भी निशान भी कब्रिस्तान के भीतर तक गये थे। कब्रिस्तान के भीतर मुजरिम ने सुरभि को रेप किया था और उसके दुपट्टे से ही गला घोंटकर वापिस चला गया था। मुजरिम गोल्ड फ्लैक की सिगरेट पीता था, लेकिन वो माचिस की बजाय लाइटर का इस्तेमाल करता है। क्योंकि कब्रिस्तान में सिगरेट के टोंटे तो मिले थे, लेकिन माचिस की तीलियां नहीं मिली थीं। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के मुताबिक बलात्कारी का सीमेन ग्रुप ओ निगेटिव था, यानि उसका ब्लड ग्रुप भी ओ निगेटिव था।

खैर, आज सुबह ही दशरथ सिंह का फोन आया था और

उसने केशव से रिक्वेस्ट की थी कि चार बजे उसकी कोठी पर आने का कष्ट करे, उससे बेहद जरूरी बात करनी है।

केशव ठीक चार बजे ही पहुंच गया।

दशरथ सिंह ने उठकर केशव के अभिवादन का हाथ जोड़कर ही जवाब दिया और फिर शोक व्यक्त करने आये लोगों से सम्बोधित होकर बोला—"आप सभी से क्षमा चाहूंगा। एक आवश्यक काम है। मुझे पण्डित जी के साथ थोड़ी देर के लिये भीतर जाना होगा। आइये पण्डित जी।"



मोनिका कमरे में दाखिल हुई तो कोई चौबीस वर्षीय युवक बीयर का मग हाथ में लिये हुये लपककर उसके करीब आया और उत्सुकता व जिज्ञासा भरे भाव से बोला—"यमराज से बात हुई सिस्टर?"

"हां, हुई ब्रदर...!" मोनिका ने उससे मग ले लिया और बीयर पीने लगी।

"क...क्या बात हुई? जल्दी से बतलाओ सिस्टर।"

"यमराज अपनी इस बात पर कायम है कि जो कोई भी उसकी शर्त पूरी करेगी...वो उसी के साथ शादी करेगा।"

"ओ नो...!" मोनिका का बड़ा भाई ज्वैल हथेली पर घूंसा मारकर हताश भाव से बोला—"ये तो बहुत गलत हो जायेगा मोनिका सिस्टर। हालांकि सुनने में आया है कि केशव पण्डित बहुत ही डेन्जर मैन है। वो ब्रिलियंट माइन्डेड है। कानून का एक्सपर्ट है वो। उसको कानून के जाल में फंसाना और कातिल साबित करना आसान नहीं है। लेकिन कोई लड़की केशव से भी ज्यादा माइन्डेड हो सकती है। यमराज की बीवी बनने के लिये वो केशव पण्डित को कानून के जाल में फंसा सकती है। अगर वो अपने मकसद में कामयाब हो गई तो यमराज उसके साथ शादी कर लेगा। फिर तुम्हारा क्या होगा? तुम यमराज को लव करती हो। तुमने फाइनल डिसीजन लिया हुआ है कि शादी करोगी तो सिर्फ यमराज के साथ ही करोगी। ये तो बहुत बुरा हो जायेगा।"

"डोन्ट वरी ब्रदर! यमराज भी मुझे लव करता है।"

"लेकिन जब वो किसी दूसरी लड़की के साथ शादी कर लेगा तो फिर उसी को लव करने लगेगा। उसके बच्चे भी होंगे और वो ही उसके वारिस बनेंगे।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा ब्रदर। यमराज ने कसम खाई हुई है, इसलिये उसकी मजबूरी है कि उसकी शर्त को पूरा करने वाली ही उसकी बीवी बनेगी। लेकिन यमराज ने मुझसे प्रॉमिस किया है कि वो शादी करने पर अपनी बीवी को मार देगा। फिर वो मुझसे शादी कर लेगा। इसीलिये मैं टेंशन फ्री होकर लौटी हूं। तुम्हें भी टेंशन फ्री हो जाना चाहिये।"

लेकिन ज्वैल टेंशन फ्री नहीं हुआ।

सोफे पर बैठकर उसने बियर की बोतल उठा ली और गट-गट करके सारी बीयर पी गया। खाली बोतल को मेज पर पटककर वो चिन्तित भाव से बोला—"तुम बहुत भोली हो सिस्टर! तुम हालात को समझ नहीं पा रही हो। ये ठीक है कि यमराज तुमसे मुहब्बत करता है। लेकिन उसकी शादी ऐसी किसी लड़की के साथ हो सकती है, जो कि तुमसे भी ज्यादा खूबसूरत हो। जो लड़की केशव पण्डित जैसे माइन्डेड आदमी को कानून के जाल में फंसाकर यमराज की बीवी बनेगी, वो बेहद चालाक तो होगी ही। वो अपनी चालाकी से यमराज के दिल में जगह बना सकती है। उस पर जादू कर सकती है, उसे अपनी मुट्ठी में कर सकती है। अगर वो खूबसूरत भी हुई तो यमराज को लगेगा कि माफिया को चलाने के लिये उसे बीवी के रूप में बढ़िया एडवाइजर मिल गई है। तब वो तुम्हें दूध में गिरी मक्खी की तरह अपनी जिन्दगी से निकालकर फेंक सकता है।"

"नहीं...ऐसा नहीं हो सकता।" मोनिका ने भले ही अपने भाई का विरोध किया, लेकिन वो आशंकित व चिन्तित हो चली।

"क्यों नहीं हो सकता? मर्दों का कोई भरोसा नहीं होता। अगर कोई खूबसूरत और अपने मतलब की लड़की मिल जाये तो पहले वाली को बुरे ख्वाब की तरह भुला देते हैं। यमराज अगर शादी के बाद तुम्हें अपने महल से धक्के देकर निकाल

दे तो तुम क्या कर लोगी? मैं ही क्या कर लूंगा? हम उसके साथ जबरदस्ती तो नहीं कर सकते मेरी बहन।"

परेशान हो चली मोनिका ज्वैल के सामने सोफे पर जा बैठी और उसने लक्की स्ट्राइक की डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर लाइटर से सुलगा ली।

सोचपूर्ण भाव से आंखों को सिकोड़े हुये आधी सिगरेट सूंत गई, फिर कसमसाते हुये बोली—"अगर ऐसा हो गया तो मैं कहीं की नहीं रहूंगी। जीते-जी मर जाऊंगी ब्रदर। तुम्हारी बातों ने मुझे जबरदस्त टेंशन में डाल दिया है। क्या करना चाहिये मुझे? कुछ तो एडवाइज दो मुझे।"

ज्वैल ने भी एक सिगरेट सुलगा ली और फिर मोनिका की लाल पुतलियों वाली आंखों में झांकते हुये बोला—"तुम्हारे आने से पहले मैं इसी बारे में सोच रहा था—दिमाग खपा रहा था। यमराज के इन्टरव्यू के बाद ही मुझे तुम्हारी चिन्ता होने लगी थी। मेरे दिमाग में तो एक ही बात आती है।"

"वो क्या?"

"तुम यमराज से केशव पण्डित के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी हासिल करो। ये भी मालूम करो कि उसकी केशव के साथ दुश्मनी क्या है? केशव पण्डित ने यमराज के खिलाफ ऐसा क्या किया था कि यमराज को ऐसी कसम खानी पड़ी?"

"ये तो मैं मालूम कर लूंगी। लेकिन इससे होगा क्या? ये जानकारी निकलने से मेरी प्रॉब्लम कैसे सॉल्व हो जायेगी?"

"दिमाग के मामले में तुम कौन-सी कम हो सिस्टर! तुम माइन्डेड हो—तभी तो यमराज ने तुम्हें अपनी एडवाजर...सलाहकार बनाया हुआ है। कोई भी काम करने से पहले वो तुमसे सलाह जरूर लेता है। मीटिंग में वो मुझे भी शामिल कर लेता है। ऊपर वाले की दया से मैं भी अच्छा दिमाग रखता हूं। मैं ये सोच रहा था कि क...क्यों ना तुम ही यमराज की शर्त पूरी कर दो?"




दशरथ सिंह केशव को कोठी के भीतर बहुत ही बड़े व

शानदार हॉल रूम में ले गया और आदर के साथ उसे सोफे पर बिठाकर स्वयं भी उसके सामने सोफे पर बैठ गया।

केशव ने उससे परमिशन लेकर चारमीनार मार्का वाली धूम्रपान दन्डिका सुलगा ली और बोला–"अब बतायें नेता जी...क्या बात है?"

"बतलाऊंगा पण्डित जी। लेकिन पहले चाय-पानी...!"

"नहीं...कुछ नहीं, प्लीज! आप बतलाइये कि क्या बात है?"

"सुबह-सवेरे ही किसी औरत का फोन आया था पण्डित जी! पूछने पर भी उसने अपना नाम नहीं बतलाया। लेकिन उसने ये बतलाया कि उसके पति ने उस मुजरिम को देखा है, जिसने मेरी बेटी को रेप करके मारा था।"

"क...क्या...?" चौंका केशव!

"जी, पण्डित जी! उस औरत ने बतलाया कि पन्द्रह दिन पहले उसके दो साल के बेटे की डेंगू बुखार से मौत हो गई थी। बेटे की मौत ने उसे और उसके पति को बुरी तरह तोड़कर रख दिया है। उस रात को उसके पति को बेटे की याद आई तो वह चुपचाप उठकर कब्रिस्तान पहुंच गया था। तब मुजरिम दुपट्टे से सुरभि का गला घोंट रहा था और करीब ही एक कब्र के ऊपर रिवॉल्वर रखी हुई थी। उस औरत का पति घबराकर एक पेड़ की ओट में छिप गया था। फिर वो भागकर घर आ गया था।"

"क्या उस औरत ने मुजरिम का नाम बताया?"

"नहीं! वो बोली कि उसका पति गूंगा है और मुजरिम उसके लिये अन्जान था! लेकिन उसका पति बहुत अच्छा पेन्टर है। उसने उस मुजरिम की तस्वीर मैमोरी के आधार पर बनाई है। लेकिन वो दोनों डरे हुये हैं। क्योंकि वो नहीं चाहते कि उन्हें पुलिस स्टेशन और अदालत के चक्कर काटने पड़ें। दोनों को ये भी डर है कि मुजरिम उन्हें मार सकता है—फिर उनकी पांच वर्षीय बेटी का क्या होगा? मैंने उस औरत की खुशामद की। ये कहा कि अगर मुजरिम को सजा नहीं मिली तो मेरी बच्ची की आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी। मुंहमांगी रकम देने का

लालच भी दिया और कहा कि उन्हें मोटी रकम मिलेगी तो अपनी बेटी की बढ़िया से परवरिश करके उसकी शानदार तरीके से शादी कर सकेंगे। लेकिन वो औरत बोली कि वो कोई खतरा नहीं लेना चाहती। वो किसी बच्चे के हाथों उस मुजरिम की तस्वीर भिजवा देगी। फिर मैंने आपका नाम लिया पण्डित जी। उससे कहा कि इस केस को आप हैन्डल कर रहे हैं और आपके होते हुये वो मुजरिम उन लोगों का बाल भी बांका नहीं कर पायेगा। आपका नाम सुनते ही उसके सुर बदल गये। बोली कि अगर पण्डित जी हमारे साथ होंगे तो हम खतरा उठाने को तैयार हैं। वो बोली कि वो अपने पति के साथ चार-सवा चार बजे तक आ जायेगी। लेकिन वो नहीं चाहती कि अभी कोई उसे या उसके शौहर को देखे। मैंने कहा कि वो मेरी कोठी के पीछे वाले गेट पर आयें—वहां से मेरा वफादार नौकर उन्हें चुपचाप कोठी के भीतर ले आयेगा। मैंने ये भी कहा था कि आप भी यहां पर मौजूद होंगे।"

"ये तो आपने समझदारी से काम लिया है नेता जी! वो दोनों आ जायें तो मुजरिम के बारे में मालूम पड़ जायेगा। मैं उसे पकड़कर कानून के जरिये फांसी की सजा दिलवाऊंगा—ये मेरा वादा रहा! अब देखना ये है कि वो औरत और उसका चश्मदीद गवाह पति यहां आते हैं कि नहीं?"

❑❑❑
❑❑❑

ज्वैल ने मानो अचानक ही ढेर सारे बिच्छू, कान्न-खजूरे व संपोलिये ऊपर फेंक दिये हों—कुछ इसी अन्दाज में ही चिहुंकी मोनिका।

"अरे! क्या हुआ? तुम इतनी जोर से क्यों चौंकी? तुम्हारे होठों से सिगरेट भी गिर पड़ी।" कहने पर ज्वैल ने मेज पर जा गिरी सिगरेट उठा ली और कश मारने लगा।

"जानते हो ब्रदर कि तुम क्या बोले हो?"

"हां, यही बोला कि तुम यमराज की शर्त पूरी कर दो।" ज्वैल यूं ही बोला कि मानो उसके लिये यमराज की शर्त कोई मायने ही नहीं रखती थी।

"बोल तो ऐसे रहे हो कि जैसे यमराज ने पेड़ पर चढ़कर आम तोड़कर लाने की शर्त रखी हुई हो—और मैं पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ लाऊंगी। इतना आसान समझा है क्या? पिछले साल ही केशव पण्डित को दुनिया का सबसे बड़ा जासूस यानि इन्वेस्टीगेटर चुना गया था। तब उसका इन्टरव्यू भी दिखलाया गया था और उसके बारे में बहुत-सी बातें भी बतलाई गई थीं। केशव पण्डित को वन्डरमैन भी कहा जाये तो गलत नहीं होगा। वकील वो, इन्वेस्टीगेटर वो, फाइटर वो, जान की परवाह किये बगैर वो कई खतरनाक मिशन कम्पलीट कर चुका है। कई मुजरिमों, गैंगस्टर्स, टेररिस्ट ऑर्गेनाइजेशंस को खत्म कर चुका है वो। अकेला ही पाकिस्तान गया। वहां आई० एस० आई० और मिलिट्री के हैडक्वार्टर्स उड़ा दिये। पूरा देश उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाया। वो सही-सलामत वापिस अपने देश लौट आया था। उसे वन मैन ऑफ आर्मी भी कहा जा सकता है, आल इन वन या आल राउन्डर भी कहा जा सकता है। कानून का तो वो महारथी है, एक्सपर्ट...स्पेशलिस्ट है। उसकी नसों में मानो खून की बजाय कानून दौड़ता है। जिस तरह इन्डिया का सचिन तेन्दुलकर क्रिकेट का बेताज बादशाह माना जाता है—उसी तरह केशव भी कानून का बेताज बादशाह है।"

"हां, सिस्टर! मैं मानता हूं कि केशव पण्डित बहुत बड़ा खिलाड़ी है। तभी तो अभी तक यमराज की प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो पाई और उसकी शादी भी नहीं हो सकी।"

"तो फिर मैं केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित कैसे कर सकती हूं? ये काम तो ऐसे है, जैसे हिमालय को धकेलकर पीछे हटाना, समुन्द्र को पानी से खाली कर देना और सूरज से फुटबॉल की तरह खेलना। सोचा भी कैसे जा सकता है कि केशव को अदालत में कातिल साबित किया जा सकता है?"

"हम दोनों इन्डिया चलेंगे ना। दोनों बहन-भाई सिर-खपाई करेंगे। मिलकर कोई वैल प्लान तैयार करेंगे और उस पर अमल करेंगे। भले ही कुछ भी करना पड़े हमें—लेकिन अपने मकसद में कामयाब होकर ही लौटेंगे। फिर तुम्हारी और यमराज की

शादी बड़ी ही धूमधाम के साथ होगी। तुम दुनिया के सबसे अमीर और शक्तिशाली आदमी की बीवी बनोगी और मैं उसका साला...ब्रदर इन लॉ। एक तरह से माफिया अपनी मुट्ठी में होगी। यमराज के बाद हमें ही माफिया की राजगद्दी मिलेगी। उसकी खरबों की नगदी और प्रोपर्टी हमारी होगी। इतना सब पाने के लिये यमराज की शर्त को तो पूरा करना ही होगा। तुम चिन्ता ना करो...मैं तुम्हारे साथ...।"

तभी मेज पर रखा इन्टरकॉम बज उठा।

मोनिका ने उसका बटन दबा दिया और बोली—"हां, बोलो यमराज डियर...!"

"जल्दी से तैयार हो जाओ डार्लिंग...!" यमराज की आवाज उभरी—"हमें होटल डिसिल्वा जाना है।"

"होटल! लेकिन क्यों?"

"दुनिया के सबसे बड़े आतंकी संगठन का लीडर आया हुआ है। उसके साथ अपनी मीटिंग है। वो हमसे कोई खास काम कराना चाहता है। पूरे पचास अरब का ऑफर है।"

"प...पचास अरब...?" मोनिका की आंखें फैल चलीं।

"यस...डार्लिंग! तुरन्त ही बन-संवर कर चली आओ जानेमन! आ रही हो ना?"

❑❑❑
❑❑❑

नौकर चालीस वर्षीय आदमी और काले बुर्केवाली को हॉल रूम में छोड़कर वापिस चला गया।

मर्द सफेद रंग के कुर्ते-पायजामे में था और उसने सिर-दाढ़ी-मूंछ के बालों को मेहन्दी से रंग कर लाल किया हुआ था।

उसने और बुर्केवाली ने हाथ जोड़कर केशव व दशरथ सिंह का अभिवादन किया और इसी के साथ महिला ने बुर्के का नकाब उठाकर सिर पर पलट दिया।

वह सांवले रंग की, लेकिन तीखे नैन-नक्श वाली आकर्षक युवती थी।

"आप दोनों बैठ जाइये।" केशव विनम्रता के साथ बोला,

"डरने या फिक्र करने की कतई भी जरूरत नहीं है। तुम दोनों या तुम्हारी बेटी का कोई भी माई का लाल बाल बांका नहीं कर पायेगा।"

दोनों के चेहरों पर छाया खौफ का कोहरा छंटता चला गया।

आंखों में छप्पक...छप्पक करते आशंका के मेंढक विलुप्त हो गये।

दोनों सोफे पर बैठ गये।

"तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया...!" दशरथ सिंह दोनों से कृतज्ञता भरे भाव में बोला—"तुम दोनों ने यहां आकर मुझ पर बहुत बड़ा अहसान किया है। सुरभि मेरी इकलौती बेटी थी। बहुत ही प्यारी बच्ची थी वो! पढ़ी-लिखी और समझदार। अपनी स्वर्गीय मां की तरह ही संस्कारों और धार्मिक विचारों वाली। किसी को भी दुखी देख वो तड़प उठती थी। गरीबों और जरूरतमन्दों की मदद करती थी। कॉलेज में वो कई गरीब स्टूडेन्ट्स की पढ़ाई का खर्चा उठा रही थी। सोमवार को व्रत रखती थी और भगवान शिव के मन्दिर जाकर गरीबों को दान देती थी, कपड़े और खाना बांटती थी। मेरी बेटी ही नहीं थी, बल्कि दोस्त और मां भी थी। हार्ट और शुगर की बीमारी होने की वजह से डॉक्टर ने स्मोकिंग और मीठे पर पाबन्दी लगा दी थी! सिगरेट पीने और मीठा खाने या वक्त पर दवा ना लेने पर मां की तरह ही डांट देती थी। सुख-दुख में दोस्त की तरह ही साथ देती थी, सलाह-मशविरा देती थी। सोचा भी नहीं था कि वो इतनी जल्दी दुनिया से चली जायेगी। जाने का वक्त तो मेरा था।"

दशरथ सिंह की आंखें भर आईं। रुलाई रोकने की चेष्टा में चेहरा यूं ही बनने और बिगड़ने लगा कि मानो कुम्हार की चाक पर कोई छोटा बच्चा बैठकर मिट्टी का बर्तन बनाने की चेष्टा कर रहा हो।

"क्या मैं तुम दोनों के नाम जान सकता हूं?" केशव अपनी जगह से उठकर दशरथ सिंह के पास बैठा। उसके कन्धे को

हौले से दबाकर मूक सांत्वना दी और सामने बैठे मियां-बीवी से सवाल किया।

"जी मेरा नाम परवीन है और इनका नाम रियाजुद्दीन हैं...।" बुर्के वाली ने जवाब दिया, "लेकिन लोग इन्हें राजू कहते हैं। ये सुन तो लेते हैं, लेकिन बोल नहीं पाते। ये इन्टर पास हैं और बहुत अच्छे आर्टिस्ट हैं, पेन्टर हैं। राजू आर्टस् के नाम से पेन्टरी करते हैं। पेन्टिंग और सीनरी भी बनाते हैं। लोगों का बढ़िया पोट्रेट तैयार करते हैं ये। आप इनसे कुछ पूछना चाहें तो ये लिखकर जवाब दे देंगे।"

"कागज और पेन मंगवाइये नेता जी।"

तभी नौकर ट्रे में ठन्डे पानी से भरे चार गिलास ले आया।

"रघु...एक डायरी या कॉपी ले आओ। पेन तो मेरे पास है ही। चाय और नाश्ता भी ले आना।"

अधेड़ नौकर ट्रे मेज पर रखकर वापिस गया। तभी रियाजुद्दीन उर्फ राजू ने कुर्ते की जेब से एक तहशुदा कागज निकालकर उसकी तहें खोलीं और फिर उसे मेज पर रख दिया।

"इन्होंने मैमोरी की बिनाह पर उस दरिन्दे का पोट्रेट बनाया है।" बोली परवीन, "जिसने सुरभि को बे-आबरू करके मार दिया।"

"ये...ये...!" चौंका दशरथ सिंह, उसकी आंखें आश्चर्य व अविश्वास से फैलने लगीं—"मुकेश है। सांसद बलवन्त सेठ का बेटा—और सत्ताधारी पार्टी की युवा शाखा का प्रदेश अध्यक्ष! इस...इस कमीने ने मेरी बच्ची की इज्जत लूटी। उसका गला घोंटकर हत्या की।"

"हां! ये मुकेश सेठ ही है...नेता जी।"

"क्या इसे सजा हो पायेगी पण्डित जी?"

"क्यों नहीं होगी नेता जी?"

"ये सत्ताधारी पार्टी का नेता है और इसका बाप भी सत्ताधारी पार्टी का एम० पी० है।"

"तो क्या हुआ...?" केशव सपाट लहजे में बोला, "ये देश के प्रधानमन्त्री का बेटा भी होता। कानून हर किसी के लिये बराबर है।"

"ले...लेकिन बलवन्त सेठ की पहुंच राज्य सरकार के साथ-साथ केन्द्र सरकार तक है। मुकेश भी केन्द्र और राज्य में शासन कर रही पार्टी का लीडर है। वैसे भी ये मुख्यमन्त्री के बेटे का दोस्त है।"

"आप नाहक ही हलकान हो रहे हैं नेताजी।" केशव आत्म-विश्वास से भरा हुआ बोला, "कानून की चाबुक से कोई नहीं बच सकता। रहा सवाल राजनीति का...तो चीफ मिनिस्टर और प्रधानमंत्री तक मेरी भी पहुंच है। आप निश्चिंत रहिये। मुकेश कोई भी जुगाड़ कर ले, लेकिन बच नहीं पायेगा। मैं अभी चीफ मिनिस्टर साहब से जाकर मिलता हूं। वहीं पर स्टेट के होममिनिस्टर और पुलिस के अधिकारियों को बुला लूंगा। मुकेश की गिरफ्तारी होगी और उसके खिलाफ एफ० आई० आर० भी दर्ज होगी। उसके खिलाफ दफा तीन सौ छियत्तर और तीन सौ दो के अन्तर्गत केस दर्ज होगा और अदालत में मुकदमा चलेगा। अगर आप कहेंगे तो मैं आपकी तरफ से ये केस लड़ूंगा और मुकेश को फांसी की सजा...।"

"मैं किसी दूसरे वकील का ख्याल भी नहीं कर सकता हूं पण्डित जी! मेरी तरफ से आप ही वकील होंगे। आप ही मुझे इन्साफ और उस दुष्ट मुकेश को सजा दिला सकते हैं। अरे, आप उठ खड़े क्यों हुये? चाय आ...।"

"नहीं, अब कुछ नहीं...!" केशव नेवी ब्लू कलर के कोट की जेब से चारमीनार की डिब्बी और गोल्डन कलर का लाइटर निकालकर बोला, "मुझे तुरन्त ही चीफ मिनिस्टर साहब से मिलना है और मुकेश को गिरफ्तार करवाना है। क्या तुम दोनों का दूसरा कोई ठिकाना भी है?" केशव रियाजुद्दीन व परवीन से मुखातिब होकर बोला, "मेरा मतलब ऐसे किसी रिश्तेदार या जान-पहचान वाले से है, जिसके घर के बारे में तुम्हारे अड़ोसी-पड़ोसियों को भी जानकारी ना हो?"

"जी...कल्याण में मेरे खालू की लड़की है। उसके शौहर पहले सऊदी अरब में सर्विस करते थे। वो तीन महीने पहले ही लौटे और मकान खरीदकर रह रहे हैं। हमारे आस-पड़ोस वालों को उनके बारे में कोई जानकारी नहीं है।"

"तो फिर तुम लोग कुछ दिनों के लिये वहीं चले जाओ। जब तक मुकेश को सजा नहीं हो जाती—तुम लोगों को वहीं रहना होगा। मुझे अपनी मौसी की बेटी और उसके शौहर के नामों के साथ उनका एड्रेस भी बतला दो। फोन नम्बर भी दे देना—ताकि जरूरत पड़ने पर तुम लोगों से कॉन्टेक्ट कर सकूं।"

इतने में ही नौकर एक डायरी ले आया।

दशरथ सिंह ने जेब से पेन निकालकर मेज पर रख दिया।

गूंगे राजू ने पेन उठाकर डायरी के पन्ने पर परवीन की मौसेरी बहन और उसके शौहर के नामों के साथ उनके घर का पता और उनका फोन नम्बर भी लिख दिया। इसी के साथ उसने अपने मोबाइल फोन का नम्बर भी लिख दिया।

केशव ने डायरी से उस पेज को फाड़कर और उसकी तह करके पैन्ट की जेब में रख लिया और राजू व परवीन से बोला—"तुम दोनों अभी जाओ। अपनी बेटी को लेकर कल्याण चले जाओ। आस-पड़ोस वालों को यही बतलाना कि तुम लोग रिश्तेदारी में नासिक जा रहे हो। मैं शाम को ही तुमसे मिलने आऊंगा। राजू भाई से और जरूरी पूछताछ करूंगा।"

राजू व परवीन भी उठ खड़े हुये।

केशव ने पहले सिगरेट सुलगाई और फिर दशरथ सिंह से बोला—"इन दोनों को पीछे वाले गेट से ही भिजवा दीजिये। जबकि हम दोनों बाहर शोक सभा में चलेंगे। मैं थोड़ी देर बैठने पर चीफ मिनिस्टर साहब से मिलने चला जाऊंगा।"

❑❑❑
❑❑❑

"एक बात पूछूं मुकेश बाबू?"

अट्ठाईस वर्षीय, सांवली रंगत तथा क्लीन शेव्ड चेहरे वाले मुकेश ने बेड की बगल में रखे स्टूल पर रखी ऐश-ट्रे में सिगरेट का टुकड़ा ठूंसा और फिर बगल में कम्बल के भीतर लेटी सांवली, लेकिन तीखे नैन-नक्श वाली युवती की तरफ करवट लेकर और उसके निःवस्त्र जिस्म को बाहों में भरकर बोला—"क्या पूछना चाहती हो स्वीटी डार्लिंग?"

स्वीटी उसके चौड़े सीने पर उगे घने बालों पर पतली-पतली

उंगलियां फिराते हुये बोली—"आपकी बीवी बला की खूबसूरत है। उसके मुकाबले मैं तो कुछ भी नहीं हूं। फिर भी आप दूसरे-तीसरे दिन मेरे पास आते रहते हैं।"

मुकेश ने उसके स्याह रंग के थोड़ा मोटे, गुदाज व रसीले होठों को चूमकर कहा—"इसमें कोई शक नहीं कि सुगन्धा बेहद खूबसूरत है। लेकिन वो दूध की तरह है। जबकि तुम शराब की तरह हो...नशीली और गरम! तुम प्यार के ढेरों तरीके जानती हो। मर्द को खुश करने में महारथ हासिल है तुम्हें। किसी को भी अपना दीवाना बना सकती हो तुम स्वीटी। वैसे भी घर की मुर्गी दाल बराबर होती है। मेरा एक औरत से गुजारा चलने वाला नहीं है। मुझे टेस्ट बदलने की पुरानी आदत है।"

कलाई पर बंधी रिस्टवाच से नन्हीं-सी सुई निकलकर बार-बार कलाई पर चुभने लगी तो मुकेश मन-ही-मन चौंका लेकिन ऊपर से सामान्य बने हुये वो बोला—"मैं बाथरूम होकर आता हूं स्वीटी डार्लिंग। तब तक तुम एक-एक लार्ज पैग तैयार करो।"

कम्बल हटाकर वो बिना कोई कपड़ा पहने ही कमरे से अटैच्ड बाथरूम में पहुंचा।

भीतर से दरवाजा बन्द कर लेने पर उसने अंगूठे व तर्जनी उंगली के नाखूनों से एक बटन को पकड़कर उससे जुड़े सुई जैसे एन्टीने को बाहर खींचा, फिर कलाई समेत घड़ी को मुंह के करीब लाकर धीमी आवाज में बोला—"एम० एस० नम्बर हन्ड्रेड वन स्पीकिंग...ओवर!"

"एम० सी० दिस साइड!" महीन-सी महिला की सी आवाज रिस्टवाच के नन्हें से स्पीकर से निकली।

"गुड इवनिंग...एम० सी० साहब...हुक्म दीजिये! ओवर...!"

"तुमने दशरथ सिंह की बेटी सुरभि को बलात्कार करके गला घोंटकर मार दिया था—ये बात खुल चुकी है।"

"व्हाटऽऽऽ?" मुकेश यूं ही चिहुंका कि मानो उसके पैर के पंजे पर किसी नाग ने फुंफकारते हुये अपना फन पटक दिया हो।

पसीने-पसीने हो चला वो और हैरान-परेशान सा होकर बोला—"ले...लेकिन ऐसा कैसे हो गया एम० सी० साहब? मैंने तो पूरी सावधानी बरती थी। इस बात का पूरा ख्याल रखा था कि कोई मुझे सुरभि को रेप और कत्ल करते हुये देख ना सके।"

"दिमाग के जादूगर केशव पण्डित ने घटनास्थल पर जाकर इन्वेस्टीगेशन की थी। वो शुरू से ही इस केस में इन्ट्रेस्ट ले रहा है।" रिस्टवाच से निकलने वाली वो आवाज एम० सी० अर्थात् माफिया चीफ की थी, जो कि इन्डिया के सभी माफिया डॉन का चीफ था और जिसके बारे में कोई भी नहीं जानता था कि वो कौन है। वह धारा प्रवाह बोले जा रहा था, "कुछ देर पहले केशव पण्डित चीफ मिनिस्टर के पास पहुंचा था। उससे पहले चीफ मिनिस्टर के पास दिल्ली से प्राइम मिनिस्टर का फोन भी आ चुका था कि केशव पण्डित उससे मिलने आ रहा है और वो केशव पण्डित को 'को-ऑपरेट' करे। केशव ने चीफ मिनिस्टर से मिलने पर पहले होम मिनिस्टर और आई० जी०, डी० आई० जी० और पुलिस कमिश्नर को बुला लेने को कहा। जब सभी लोग सी० एम० हाउस पहुंच गये तो केशव ने ये खुलासा किया कि विपक्ष के नेता और एम० एल० ए० दशरथ सिंह की बेटी को रेप करके मारने वाले तुम हो। उसने मांग की कि तुरन्त ही तुम्हारे खिलाफ अरेस्ट वारन्ट जारी करके तुम्हें अरेस्ट किया जाये। केशव ने ये दावा भी किया कि उसके पास एक आई विटनेस भी है। सो तुम तुरन्त ही अन्डर ग्राउन्ड हो जाओ। घर पर हो तो वहां से तुरन्त ही निकल जाओ। अगर एक बार केशव पण्डित के हत्थे चढ़ गये तो वो तुम्हारे हलक में हाथ डालकर जुर्म को कबूलवा लेगा। जबकि तुम उसके या पुलिस के हत्थे ना चढ़े तो तुम्हारे बचने के चान्सेज रहेंगे। चूंकि तुम माफिया के मेम्बर हो—इसलिये तुम्हें बचाने की कोशिश की जायेगी। हम मुम्बई डॉन को बोल देंगे। वो तुम्हारे बचने का रास्ता निकालेगा। वो अपने वकील के जरिये ऐसे बन्दोबस्त भी करायेगा कि तुम्हारे गिरफ्तार होने की सूरत में अदालत में तुम्हें मुजरिम साबित ना किया जा सके। हम मुम्बई डॉन से बात करेंगे। वो तुमसे कॉन्टेक्ट बनाये रखेगा। अभी तो तुम अन्डर

ग्राउन्ड हो जाओ एम० एस० हन्ड्रेड वन! ओवर एंड ऑल आल।"

इसी के साथ दूसरी तरफ से माफिया चीफ ने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया।

"ये...ये क्या हो गया...?" मुकेश चिन्तित भाव से बुदबुदाया, "ना जाने वो हरामजादा चश्मदीद गवाह कौन है? केशव पण्डित तो ऐसे ही चालाक वकील और इन्वेस्टीगेटर है। वो मेरे खिलाफ सबूत भी जुटा लेगा। अगर मैं गिरफ्तार हो गया तो मेरा बचना मुश्किल हो जायेगा। माफिया का वकील भी केशव पण्डित के सामने टिक नहीं पायेगा। मुझे अन्डर ग्राउन्ड होना पड़ेगा। लेकिन सवाल तो ये है कि छिपने के लिये मैं जाऊं तो कहां जाऊं?"



अमेरिका के सबसे बड़े शानदार और महंगे सेवन स्टार होटल का एक शानदार रूम!

उस रूम में क्लीन शेव्ड चेहरे वाले अधेड़ व्यक्ति ने सफेद रंग का सूट पहना हुआ था। सिर पर सफेद हैट तो पैरों में भी सफेद जूते।

हवाना के बने सिगार में कश लगा रहे उस शख्स को देख कोई सोच भी नहीं सकता था, अन्दजा नहीं लगा सकता था कि वो शख्स दुनिया के सबसे बड़े और खतरनाक आतंकी संगठन 'जिहाद-ए-तालिबान' का मुखिया मुल्ला नसरूदीन ही होगा।

माफिया किंग नागराज सिंह उर्फ यमराज अपनी प्रेयसी व सेक्रेटरी मोनिका के साथ भीतर प्रविष्ट हुआ।

मोनिका ने लाल रंग की फ्रॉक जैसी पोशाक पहनी हुई थी, जिसके खुले गले से भारी-भरकम सफेद कबूतर ताका-झांकी कर रहे थे।

सून्डकार, केले के तने-सी चिकनी, पुष्ट व चमकती टांगें किसी की भी नीयत की किश्ती को डांवा-डोल कर सकती थीं।

"खुशामदीद...वेलकम...!" मुल्ला नसरूदीन ने उठकर

यमराज को बांहों में भर लिया और उसके दोनों गाल चूमकर बोला—"तुमसे मिलकर बहुत खुशी हो रही है मियां यमराज! मैं तहे दिल से तुम्हारा इस्तकबाल करता हूं।"

"नहीं, तुम हमारे मेहमान जनाब। इसलिये तुम्हारा स्वागत और मेहमान नवाजी करने का फर्ज तो हमारा बनता है। होटल वालों को बोल दिया गया है कि सारा खर्चा माफिया उठायेगी और तुम्हारी मेहमान नवाजी, खातिरदारी में कोई कमी ना हो न पाये। इनसे मिलो, ये है मेरी जानेमन...मेरी सेक्रेटरी मोनिका।"

"आफरीन...!" मुल्ला नसरूद्दीन ने मोनिका की गोरी व गुदाज हथेली को पकड़कर चूमा और बोला—"माशाअल्लाह! तुम कुदरत का करिश्मा हो। तुम्हें देख जन्नत की हूर भी शर्मसार हो जायेगी—हैरत में पड़ जायेगी कि इतनी हसीन हूर जमीन पर कहां से आ गई?"

"हैरान तो मैं भी हूं मुल्ला जी! टी० वी० पर और अखबारों में आपकी तस्वीरें देखीं। आप तो बिल्कुल ही बदल गये। वो मुल्ला नसरूद्दीन लग ही नहीं रहे हैं।"

वह 'हो-हो-हो' करके हंसा और फिर बोला—"मैं दुनिया का सबसे बड़ा मोस्ट वान्टेड हूं। इस मुल्क अमेरिका का सबसे बड़ा दुश्मन। अमेरिकी सरकार ने मुझ पर पचास करोड़ डालर का इनाम डिक्लेयर किया हुआ है। इसलिये यहां आने के वास्ते अपनी पोशाक के साथ सिर के बाल और दाढ़ी भी अपने ठिकाने पर छोड़ देनी पड़ी। मुल्ला नसरूद्दीन से सुन्दर भाई बाटली वाला बनकर यहां आना पड़ा। मेरे ख्याल से हमें तशरीफ रखनी चाहिये—बैठ जाना चाहिये।"

तीनों बैठ गये।

यमराज और मोनिका एक साथ सोफे पर बैठे तो मुल्ला नसरुद्दीन उनके सामने वाले सोफे पर। बीच में रखी मेज पर ताजे फल, ड्राई फ्रूट, अमेरिकन व्हिस्की की बोतल, सोडा साइफन, पनीर के टुकड़े, मसालेदार काजू, उबले व कटे हुये अन्डे, सींक-कबाब, सिगार की डिब्बी, लाइटर, ऐश-ट्रे वगैरा सामान रखे हुये थे।

यमराज के इशारे पर मोनिका ने तीन लार्ज पैग तैयार किये।

"चियर्स" की आवाज के साथ तीनों जाम आपस में टकराये।

तीनों ने एक-एक सिप लेकर गिलास मेज पर रख दिये। फिर यमराज ने काजू का पीस उठाकर मुंह में सरकाया और मुल्ला नसरुद्दीन से सम्बोधित होकर बोला—"मीडिएटर ने सिर्फ ये ही बतलाया था कि तुम हमसे यानि माफिया से कोई काम कराना चाहते हो, जिसके बदले में हमें पचास अरब डालर की रकम दोगे।"

"दुरुस्त फरमाया यमराज भाई। आधी रकम पेशगी यानि एडवांस में एक हफ्ते के भीतर ही मिल जायेगी।"

"रकम अच्छी-खासी है तो जाहिर है कि काम भी काफी बड़ा और खतरनाक होगा।"

"बिल्कुल...भला इसमें क्या शक है? उस काम के वास्ते तभी तो मुझे माफिया की मदद लेनी पड़ रही है। उस काम को मैंने 'मिशन फिफ्टी' नाम दिया है।"

"मिशन फिफ्टी...!" मोनिका ने गिलास उठाकर व्हिस्की की घूंट भरी और फिर गिलास मेज पर वापिस रखकर पूछा—"क्या आप बतलायेंगे कि आखिर ये मिशन फिफ्टी क्या बला है?"

झिझका मुल्ला नसरुद्दीन, फिर गला खंखारकर बोला—"माफी चाहूंगा मोहतरमा! मिशन मेरे वास्ते...दूसरे कुछ और लोगों के वास्ते भी बहुत अहम है। हम हर कीमत पर उसकी कामयाबी चाहते हैं और नहीं चाहते कि इस मिशन का प्लान कहीं भी लीक हो जाये। मैं अकेले में...तन्हाई में यमराज भाई से गुफ्तगू करूंगा और तभी उस मिशन का खुलासा...।"

मोनिका के खूबसूरत चेहरे पर नाराजगी के भाव उभरते देख यमराज खुश्क व सपाट लहजे में बोला—"मोनिका और मुझमें कोई फर्क नहीं है मुल्ला। हम दोनों के बीच कोई पर्दा नहीं रहता। मोनिका की सलाह के बिना कोई भी काम नहीं करता हूं मैं। मिशन फिफ्टी भी मोनिका की सलाह से ही

कम्पलीट होगा। इसलिये तुम्हें मेरी जानेमन के सामने ही बतलाना होगा कि मिशन फिफ्टी क्या है?"



इधर दशरथ सिंह ने पुलिस स्टेशन जाकर मुकेश सेठ के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई और इसके तुरन्त बाद ही पुलिस ने मुकेश को गिरफ्तार करने के लिये वारन्ट के साथ सत्ताधारी पार्टी के सांसद बलवन्त सेठ के बंगले पर धावा बोल दिया।

बंगले पर बलवन्त सेठ, मुकेश की बीवी सुगन्धा, तीन वर्षीय बेटा सौभाग्य तो थे, लेकिन मुकेश नहीं था। बलवन्त और सुगन्धा ने बतलाया कि मुकेश सुबह ही बिना कुछ बतलाये चला गया था और फिर वापिस नहीं लौटा था।

बंगले की तलाशी के पश्चात् पुलिस कमिश्नर जगमोहन गुप्ता ने कुछ पुलिसवालों को बंगले पर तैनात कर दिया और पुलिस की कई टीम गठित करके मुकेश की तलाश में इधर-उधर दौड़ा दी।

आसन्न चुनावों को देखते हुये पार्टी ने मुकेश को निष्कासित कर दिया।

मीडिया से रू-ब-रू होते हुये मुख्यमन्त्री हरिमोहन ने कहा—"मुकेश के पिता बलवन्त सेठ की छवि ईमानदार और जुझारू नेता की है। उन पर कभी कोई लांछन या आरोप नहीं लगा। उन्होंने पहली बार सांसद बनने पर अपने इलाके का विकास किया था। सांसद निधि को ईमानदारी के साथ खर्च किया था और संसद में अपने इलाके के साथ-साथ पूरी मुम्बई और प्रदेश की समस्याओं को भी उठाया था। इसीलिये पार्टी ने उन्हें दोबारा टिकिट दिया। और वे तीन लाख वोटों के भारी अन्तर से जीते। उनकी छवि देखकर ही हमारी पार्टी ने उनके बेटे मुकेश को प्रदेश पार्टी के युवा मोर्चा का अध्यक्ष बनाया था और आगामी विधान सभा के चुनाव में एम० एल० ए० का चुनाव लड़ाने का भी विचार किया था। क्या पता था कि वो इतनी नीच हरकत कर डालेगा। उसे पार्टी से निष्कासित कर

दिया गया है। आप सभी जानते हैं कि मैं कानून और न्याय का कितना बड़ा पक्षधर हूं। मेरे सगे भतीजे ने एक हत्या कर दी थी तो मैंने उसे अपने बंगले पर बुलाकर पुलिस के हाथों गिरफ्तार करा दिया था। उसको फांसी की सजा मिली थी। पुलिस को बोल दिया है मैंने कि मुकेश को जल्द-से-जल्द गिरफ्तार करके और उसके खिलाफ चार्ज शीट तैयार करके उसको कड़ी-से-कड़ी सजा दिलवाये।"

"क्या पार्टी मुकेश के पिता को भी निष्कासित करेगी सी० एम० साहब?" एक टी० वी० चैनल के रिपोर्टर ने प्रश्न किया।

पैंसठ वर्षीय हरि-मोहन ने प्रश्न-कर्ता को देखा और गम्भीर भाव से उत्तर दिया—"बेटा अगर नालायक निकल जाये तो उसमें पिता का भला क्या दोष है श्रीमानजी? बलवन्त सेठ जी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। समाजसेवी हैं। चौबीसों घण्टे जरूरतमन्दों की मदद के लिये तैयार रहते हैं। उनके इलाके की जनता उनको चाहती है—उनका सम्मान करती है। क्या प्रभु राम ने रावण के पिता विश्रवा को और कृष्ण जी ने कंस के पिता उग्रसेन को सजा दी थी? नहीं दी थी। क्योंकि वो दोनों अच्छे इन्सान थे और अपने बेटों के कुकृत्यों का विरोध ही करते रहे थे। इसी तरह बलवन्त सेठ जी भी कानून और न्याय का सम्मान करने वाले हैं और जुर्म व भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ते रहे हैं। इसलिये उनके खिलाफ कार्रवाई करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।"

"लेकिन बलवन्त सेठ अपने इकलौते बेटे को बचाने की चेष्टा तो करेंगे ही।"

"जहां तक मैं बलवन्त सेठ को जानता हूं, वो अपने बेटे के कुकृत्य से दुखी होंगे और वो मुकेश का बचाव नहीं करेंगे।"

"अगर वो मुकेश का बचाव करते हैं तो?"

"तो फिर पार्टी उनके खिलाफ भी कार्रवाई करेगी। मैं पार्टी हाई कमान को पत्र लिखकर बलवन्त सेठ को पार्टी से निष्कासित करने की सिफारिश करूंगा। वैसे मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसी नौबत नहीं आयेगी।" इतना बोलकर मुख्यमन्त्री हरिमोहन उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर मीडिया वालों का अभिवादन करके वहां से चला गया।



कोई सत्तर वर्षीय, लम्बे कद का और लम्बूतरे चेहरे वाला बलवन्त सेठ अपने बंगले के बाहर लॉन में मीडिया वालों के सामने उपस्थित था।

गेरूए रंग की पैन्ट व बन्द गले के कोट के साथ उसी रंग की टोपी और जूते पहने हुये था वह।

चेहरे पर मातमी भाव थे।

यूं लगता था कि किसी भी पल रो देगा।

जंगल में विचरण करने वाले शेर को अगर पकड़कर पिंजरे में बन्द कर दिया जाये और कई दिनों तक भूखा-प्यासा भी रखा जाये तो उसकी जो दशा होगी—ठीक वो ही दशा बलन्त सेठ की नजर आ रही थी। मीडिया वालों के सवालों के जवाब देती उसकी वाणी थकी हुई, कमजोर व बीमार मालूम पड़ रही थी—

"इस जन्म में तो कोई पाप या गुनाह नहीं किया है मैंने। बचपन में कोई शरारत कर दी हो तो...याद नहीं। लेकिन होश सम्भालने के बाद कोई गलत काम नहीं किया। कभी किसी का दिल नहीं दुखाया! माताजी और पिताजी...दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। बचपन से ही पूजा-पाठ वाला वातावरण मिला। गायत्री मन्त्र, रामायण की चौपाइयां सुनने को मिली और लगभग सभी आरतियों के साथ कंठस्थ हो गई थीं। दादा जी स्वतन्त्रता सेनानी थे—सो उनसे देशभक्तों, स्वतन्त्रता सेनानियों, क्रान्तिकारियों के किस्से ही सुनने को मिले। राष्ट्रीयगान और वन्दे मातरम् बचपन में ही कंठस्थ हो गया था। वो ही माहौल...वातावरण मुकेश को देने की चेष्टा की, लेकिन...।"

वह दांतों से निचला होठ चबाने लगा।

चेहरा बनने-बिगड़ने लगा—जैसे कोई अबोध बच्चा आटे की लोई से चिड़िया बनाने का प्रयास कर रहा हो।

आंखें भर आई उसकी और गला रुंध गया—

"शायद पिछले जन्म में कोई गलत काम या पाप कर दिया होगा—तभी ये दिन देखना पड़ रहा है। काश...काश कि ऐसा होने से पहले ही मुझे मौत आ गई होती। उस कम्बख्त से ऐसी

नीच हरकत की कतई भी उम्मीद नहीं थी। ऐसा करने से पहले मेरी इज्जत का तो ख्याल कर लिया होता उसने।"

"सेठ जी...!" इन्डिया टी० वी० चैनल की रिपोर्टर, केशव और आशीर्वाद के गुरु रमाकान्त की बेटी माधवी चोपड़ा ने सवाल किया, "क्या आपको ये विश्वास है कि आपके बेटे मुकेश ने सुरभि को रेप करके उसकी हत्या की होगी?"

बलवन्त सेठ ने कोट की जेब से रूमाल निकालकर आंखों में भर आये आंसुओं को पोंछा, फिर रूमाल को वापिस जेब में ठूंसने पर भर्राये से स्वर में बोला—"कोई दूसरा कहता तो विश्वास नहीं करता बेटी। क्योंकि इससे पहले कभी भी मुकेश की तरफ से कोई भी शिकायत नहीं मिली। शराब तो दूर रही, वो स्मोकिंग और पान-गुटखे से भी दूर रहा है। प्रतिदिन पूजा-पाठ करता रहा है। लेकिन इस बात का खुलासा पण्डित जी ने किया है। वो पण्डित जी, जो कि कानून के बेटे हैं। मजलूमों को इन्साफ और मुजरिमों को सजा दिलवाने वाले हैं। वो देशभक्त हैं। कामयाब वकील और इन्वेस्टीगेटर भी हैं। बिना किसी ठोस सबूत के तो उन्होंने मुकेश पर आरोप नहीं लगाया होगा। अगर पण्डित जी बोल रहे हैं तो निश्चित ही उस कमीने मुकेश ने दशरथ सिंह जी की बिटिया के साथ मुंह काला किया होगा और स्वयं को कानून से बचाने के लिये उसका गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी होगी।"

"ऐसे में आप क्या करेंगे?"

"अब तो जो भी करना है, कानून को ही करना है।"

"एक पिता होने के नाते क्या आप मुकेश को बचाने की कोशिश नहीं करेंगे?" निःसंकोच भाव से बोल रही थी माधवी—"क्या किसी वकील को हायर नहीं करेंगे?"

बलवन्त सेठ ने माधवी को यूं ही देखा कि मानो उसने उसे भला-बुरा कह दिया हो, फिर वो सामान्य होकर, एक सर्द आह-सी भरकर बोला—"अगर वो मेरे सामने आ गया तो अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर की तमाम गोलियां उसके नापाक जिस्म में उतार दूंगा मैं। भले ही इसके बदले कानून मुझे फांसी पर ही क्यों ना चढ़ा दे। मैंने तो पुलिस के यहां से जाने के बाद खुदकुशी

करने का मन भी बना लिया था। लेकिन बहू और पोते का ख्याल आया गया। देवी सरीखी है मेरी बहू! पूजा-पाठ वाली...धार्मिक विचारों वाली। पोता सौभाग्य सिर्फ तीन वर्ष का ही है। मैं आत्महत्या कर लेता तो उन दोनों का ध्यान कौन रखता? उनकी देखभाल कौन करता?

ना चाहते हुये भी मुझे जीना होगा। उस कपूत के दिये बदनामी के हलाहल को पीकर भी जीना होगा। लेकिन ये सोचना भी मत कि मैं मुकेश के बचाने की चेष्टा करूंगा। मैं तो भगवान से ये प्रार्थना करता हूं कि पुलिस उसे गिरफ्तार करने के बदले एनकाउन्टर के नाम पर गोलियों से छलनी-छलनी कर डाले। अगर वो गिरफ्तार होता है तो मैं केशव पण्डित जी के पास जाकर रिक्वेस्ट करूंगा कि वो मुकेश के खिलाफ केस लड़ें। उसको अदालत में मुजरिम साबित करके फांसी की सजा दिलवायें। मैं स्वयं भी अदालत में पहुंचकर जज साहब से हाथ जोड़कर विनती करूंगा कि मुकेश पर जरा-सी भी दया ना की जाये और उसे फांसी की सजा सुना दी जाये। मेरी बहू सुगन्धा विधवा होती है तो हो जाये। मेरे पोते सौभाग्य के सिर पर से बाप का साया हटता है तो हट जाये। कोई उन्हें ये ताना तो नहीं मारेगा कि वो एक बलात्कारी और हत्यारे की बीवी और बेटे हैं। मेरी तबियत खराब है। डॉक्टर ने दवा लेकर आराम करने को बोला है। दवा लेने का वक्त हो गया है। इसलिये इजाजत चाहूंगा। आप लोग भी ईश्वर से प्रार्थना कीजिये कि मुकेश गिरफ्तार होने की बजाय पुलिस की गोलियों का शिकार हो जाये। आप लोग ये प्रार्थना करेंगे ना?"

❑❑❑
❑❑❑

"विधायक और विधान सभा में विपक्ष के नेता दशरथ सिंह की बेटी सुरभि के बलात्कारी और हत्यारे मुकेश सेठ को पुलिस अभी तक गिरफ्तार नहीं कर पाई है। जबकि राज्य के होम मिनिस्टर श्री रोशन जावाड़ेकर का कहना है कि पुलिस पूरी सरगर्मी के साथ मुकेश सेठ की तलाश में लगी है। मुम्बई की सीमाओं को सील कर दिया गया है। जगह-जगह छापे मारे जा

रहे हैं। प्रत्येक चैकपोस्ट पर वाहनों को भी चैक किया जा रहा है। ऐसा लगता है कि अपनी गिरफ्तारी की भनक लगते ही मुकेश सेठ मुम्बई छोड़कर भाग गया—शायद वो मुम्बई में है ही नहीं। सबसे चौंका देने वाली खबर ये है कि मुकेश सेठ के पिता सांसद श्री बलवन्त सेठ ने ऐलान किया है कि जो कोई भी मुकेश को पकड़वायेगा, या पुलिस को उसकी जानकारी देगा उसे वो बतौर इनाम पांच लाख रुपये देंगे।"

टी० वी० स्क्रीन पर से न्यूज रीडर का लुभावना चेहरा विलुप्त और बलवन्त सेठ का मातमी चेहरा प्रकट हुआ। वो कैमरे या दर्शकों की तरफ देखते हुये टी०बी० के मरीज की मानिन्द ही मरियल-सी आवाज में बोला—"जैसा कि आप जानते ही हैं कि मेरे नीच, कमीने, दुष्ट बेटे मुकेश ने सुरभि नाम की बच्ची की इज्जत लूटी और फिर उसका गला घोंटकर हत्या कर दी। मैं शर्मिन्दा भी हूं और श्री दशरथ सिंह के दुख में सम्मलित भी हूं। मैं समझ सकता हूं कि किसी की बेटी के साथ ऐसा हो जाये तो उसके दिल पर कैसी बीतती है। उस कमीने मुकेश ने मेरे नाम को बट्टा लगाया है, मेरी इज्जत और रुतबे को कलंकित कर दिया। मैं चाहूंगा कि वो जल्द-से-जल्द गिरफ्तार हो और उसे फांसी की सजा मिले। मैं आप सभी से प्रार्थना करूंगा कि उस दुष्ट मुकेश को पकड़वाने में कानून की मदद करें। जो कोई भी मुकेश को पकड़वायेगा, या उसके बारे में पुलिस को जानकारी देगा—उसको मेरी तरफ से पांच लाख रुपये का नगद इनाम दिया जायेगा।"

"तो ये थे श्री बलवन्त सेठ...!" टी० वी० पर खूबसूरत न्यूज रीडर नमूदार होकर बोली, "आपने भी महसूस किया होगा कि बेटे की करतूत से वो कितना दुखी हैं। थोड़ी देर पहले हमें जो समाचार मिला है, उससे तो बलवन्त सेठ के दुख में और भी बढ़ोतरी हो गई होगी। उनके पोते और मुजरिम मुकेश के तीन वर्षीय बेटे सौभाग्य का एक्सीडेन्ट हो गया है। वो फुटबॉल खेल रहा था। फुटबॉल के सड़क पर जाने पर वो उठाने गया तो कार की चपेट में आ गया। उसे टाटा हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया है। बतलाया जा रहा है कि बच्चे की हालत बहुत

गम्भीर है और डॉक्टर्स उसकी जान बचाने की कोशिश कर रहे हैं।"

स्वीटी के साथ सोफे पर बैठे मुकेश की बायें हाथ की उंगलियों से सिगरेट निकलकर फर्श पर जा गिरी और दायीं हथेली से शराब का भरा गिलास भी छूटकर फर्श पर गिरा—

छनाक...की आवाज के साथ टूटा और शराब फर्श पर बिखर गई।

कुछ पलों के लिये वो बुत बना रह गया—मानो समूचे जिस्म को लकवा मार गया हो।

मानों यमदूतों ने उसके प्राण का अपहरण कर लिया हो, लेकिन फिर कुछ सोचकर प्राण को वापिस जिस्म में छोड़ दिया हो—

"न...नहीं...!" उसकी आवाज मानो मुख की बजाय पेट से निकली हो—"नहीं...ये नहीं हो सकता...मेरे बेटे को कुछ नहीं हो सकता। वो मेरी जान है। पापाजी का लाड़ला और सुगन्धा का दुलारा है। सौभाग्य को कुछ हो गया तो हम लोग जीते-जी मर जायेंगे। सुगन्धा तो पागल ही हो जायेगी...या उसका हार्टफेल हो जायेगा। मु...मुझे जाना होगा। हॉस्पिटल जाना होगा।"

"न...नहीं...ये क्या कह रहे हो तुम? क्या जानते नहीं कि पुलिस तुम्हारी तलाश में है? अगर तुम यहां से बाहर निकले तो अरेस्ट हो जाओगे।"

"न...नहीं मुझे जाना ही होगा।" सोफे से उठकर व्याकुल भाव से बोला मुकेश—"मेरा बच्चा जिन्दगी और मौत के बीच झूल रहा है। डैडी और सुगन्धा बुरी तरह घबराये हुये होंगे। उन्हें मेरी जरूरत है। मुझे अपने बच्चे को देखना।"

"क्या ये जरूरी है कि तुम्हारे बेटे का एक्सीडेन्ट हुआ ही हो?"

"क्या मतलब?" चौंककर मुकेश प्रश्न-सूचक दृष्टि से स्वीटी के सांवले चेहरे को देखने लगा।

स्वीटी उसकी आंखों में झांकते हुये अर्थपूर्ण भाव से बोली—"मत भूलो कि इस केस में केशव पण्डित भी इन्ट्रेस्ट ले

रहा है। बहुत चन्ट आदमी है वो। हो सकता है कि तुम्हें सामने लाने के लिये उसी ने ये चाल चली हो। टी० वी० पर तुम्हारे बेटे के एक्सीडेन्ट की झूठी न्यूज टेलीकास्ट करा दी हो।"

मुकेश की आंखें सिकुड़ चलीं।

सिगरेट सुलगाकर उसने चहलकदमी-सी करते हुये जल्दी-जल्दी तगड़े-तगड़े कई कश लगाये और फिर स्वीटी की तरफ पलटकर बोला—"तुमने तो कन्फ्यूज कर दिया डार्लिंग। क्या टी० वी० वाले झूठी न्यूज दे सकते हैं?"

"कानून की मदद के नाम पर दे भी सकते हैं। बाद में बोल देंगे कि मुजरिम को पकड़वाने के लिये और कानून की मदद करने के लिये ही झूठी न्यूज दी थी।"

"तुम्हारी बात ठीक निकल जाये स्वीटी। सौभाग्य का एक्सीडेन्ट ना हुआ हो। लेकिन मुझे क्या करना चाहिये?"

"अपने घर फोन करो। अपने डैडी से बात करो। हकीकत मालूम पड़ जायेगी। पता चल जायेगा कि तुम्हारे बेटे का एक्सीडेन्ट हुआ है कि नहीं।"

❑❑❑

❑❑❑

बलवन्त सेठ अपने घर पर ही था और हॉल रूम में बैठा चाय पीते हुये टी० वी० देख रहा था।

उसकी बहू सुगन्धा भी वहीं मौजूद थी और वो भी चाय की चुसकियां ले रही थी।

समाचारों में जब सौभाग्य के एक्सीडेंट के बारे में बतलाया गया तो बलवन्त सेठ और सुगन्धा यूं ही चिहुंके कि मानों सोफे में अचानक ही नागफनी के पौधे उग आये हों।

"ये...ये न्यूज रीडर क्या बकवास कर रही है डैडी जी?" बौखलाई-सी बोली सुगन्धा—"अपना सौभाग्य तो ऊपर सोया हुआ है। जबकि न्यूज रीडर कह रही है कि उसका एक्सीडेन्ट हो गया और वो टाटा हॉस्पिटल में एडमिट है। ये क्या गोरखधन्धा है पापा जी?"

"समझ में नहीं आ रहा है बहू कि टी० वी० पर झूठी खबर क्यों दी जा रही है?"

"मैं बतलाता हूं एम० पी० साहब।"

उक्त आवाज ने बलवन्त सेठ और सुगन्धा को चौंका दिया।

दोनों ने आवाज की दिशा में देखा तो राजन, करतार सिंह, राजीव के साथ केशव के भी दर्शन हुये।

"आ...आप...!" हड़बड़ाकर उठा बलवन्त सेठ और फिर हाथ जोड़कर बोला—"न...नमस्कार! आइये...।"

"नमस्ते...!" सुगन्धा ने भी हाथ जोड़कर कहा।

"हां, अब तो आ ही गये हैं।" केशव आगे बढ़ा और हाथ जोड़े हुये बोला—"नमस्कार...नमस्ते! आप दोनों टी० वी० पर चल रही न्यूज को सुनकर परेशानी में पड़ गये।"

"हां, पण्डित जी! मेरा पोता ठीक-ठाक है और वो घर पर ही है। आराम से सो रहा है। लेकिन टी० वी० पर बतलाया जा रहा है कि...।"

"सौभाग्य का एक्सीडेन्ट हो गया है।" केशव बलवन्त की बात काटकर बोला—"वो फुटबॉल उठाने सड़क पर गया और कार की चपेट में आ गया था। टाटा हॉस्पिटल में एडमिट है और उसकी हालत सीरियस है।"

"हां, पण्डित जी! समझ में नहीं आ रहा है कि टी० वी० वाले झूठी न्यूज क्यों...?"

"मेरे कहने पर...!"

"क...क्या...?" बलवन्त भी चौंका और सकपकाकर बोला, "आ...आपने? क...क्या मतलब? मैं कुछ समझा नहीं पण्डित जी।"

"समझाता हूं।" केशव उसकी कौतूहलता भरी आंखों में झांकते हुये बोला—"मुकेश अन्डर ग्राउन्ड है। जाहिर है कि आपको और आपकी बहूरानी को नहीं मालूम होगा कि वो कहां पर छिपा हुआ है।"

"न...नहीं...हां...हमें नहीं पता कि वो कम्बख्त कहां पर मर-खप रहा है। उसका फोन भी बन्द है। अगर हमें मालूम होता कि वो कहां पर है तो तुरन्त ही पुलिस को बतलाकर उस नीच को गिरफ्तार करा देते।"

"कोई बात नहीं। उसे पकड़ने का बन्दोबस्त मैंने कर लिया है।" लापरवाही भरे लहजे में ही बोला झील-सी नीली आंखों वाला—"जिस तरह राजकुमार और जादूगर वाली कहानी में जादूगर की जान एक तोते में कैद थी—उसी तरह आपके साहबजादे की जान अपने बेटे सौभाग्य में अटकी हुई है। तभी ये चक्कर चलाया है मैंने। टी० वी० पर सौभाग्य के एक्सीडेन्ट की झूठी न्यूज प्रसारित करा दी है। वो जहां कहीं भी होगा...उस तक ये खबर पहुंच जायेगी। फिर जैसे बरसात के मौसम में मेंढक जमीन के भीतर से बाहर निकल आते हैं...मुकेश भी टर्र-टर्र करता हुआ आ जायेगा।"

सुगन्धा के चेहरे पर घबराहट के बादल घुमड़ने लगे। आंखों के पोखरों में चिन्ता की छोटी-छोटी किश्तियां डोलने लगीं। उसने अपने ससुर की तरफ देखा। उसके कंपकंपाते हुये गुलाबी होठ इस बात की चुगली खा रहे थे कि वो कुछ कहना तो चाहती थी, लेकिन केशव एंड पार्टी के कारण उसने मुंह पर विवशता का साइलेंसर लगा लिया था।

जबकि ससुर जी बहू की तरफ देख ही नहीं रहे थे, वो केशव से सम्बोधित होकर बोल रहे थे—"ये...ये तो आपने बहुत ही उम्दा तरकीब इस्तेमाल की पण्डित जी। इसीलिये तो लोग आपको दिमाग का जादूगर कहते हैं। मैं भी चाहता हूं कि वो नालायक जल्द-से-जल्द पकड़ा जाये और उसको सजा मिले। फांसी से कम सजा नहीं होनी चाहिये कमीने को। उसने ना सिर्फ एक निर्दोष बच्ची की इज्जत लूटी, बल्कि उसकी जान भी ले ली। बेचारे दशरथ सिंह के दिल पर क्या गुजर रही होगी? मारे शर्मिन्दगी के मैं तो उसके पास शोक व्यक्त करने भी नहीं जा सका।"

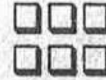
तभी बलवन्त सेठ के कोट की जेब में पड़ा फोन गुनगुनाने लगा।

उसने जेब में हाथ डाला और फोन निकाला ही था कि केशव ने बांसुरी वाले कन्हैया की मानिन्द मन्द-मन्द मुस्कराते हुये उससे फोन ले लिया और फोन की स्क्रीन पर दृष्टिपात करके

बोला—"उसी का ही है। औलाद की चाहत ने अच्छों-अच्छों की लुटिया डुबवा दी। अब इसकी भी डूबेगी।"

बलवन्त ने केशव से फोन लेने के लिये हाथ बढ़ाया, लेकिन फिर वापिस खींच भी लिया।

मानो किसी भिखारी के हाथ सोने का आभूषण लगा हो, लेकिन किसी ने छीन लिया हो, कुछ ऐसे ही भाव परिलक्षित हो रहे थे उसके चेहरे पर।



"तुम लोग इनके पास रहोगे...।" राजन, करतार सिंह व राजीव से सम्बोधित होकर बोला केशव, "इनसे रिक्वेस्ट करना कि ये आराम से सोफे पर बैठ जायें और परेशान ना हों। मैं अभी आता हूं।"

कहने पर केशव लपकते हुये हॉल रूम से अटैच्ड एक कमरे में प्रविष्ट हुआ और भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया।

कमरा साउन्ड-प्रूफ था—

भीतर की आवाज बाहर नहीं जानी थी और बाहर की आवाज भीतर नहीं आनी थी।

रिसीव वाला बटन अंगूठे से दबाने पर फोन कान पर लगाया केशव ने और भर्राई-सी आवाज में बोला—"है...हैलो...!"

"डै...डैडी जी...!" मुकेश की घबराई हुई आवाज उभरी, "ये टी० वी० पर सौभाग्य के बारे में कैसी न्यूज...?"

"मु...मुकेश...!" मानो केशव नहीं, बलवन्त सेठ ही रोते हुये बोल रहा था, "अनर्थ हो गया। अपने सौभाग्य का एक्सीडेन्ट...उसके सिर में बहुत चोट आई है...उसे टाटा हॉस्पिटल में लाये हैं।"

"न...नहीं...ये...नहीं हो सकता! कैसा है सौभाग्य?"

"वो ऑपरेशन थियेटर में है। डॉक्टरों ने उसकी हालत देखी थी तो उनके हाथ-पैर फूल गये थे। मैंने बार-बार पूछा कि सौभाग्य बच तो जायेगा ना? ले...लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं...मैंने उन्हें बोल दिया कि भले ही कितना भी खर्चा हो जाये, महंगी-से-महंगी दवाइयां मंगवा लें और मुम्बई

के किसी भी बड़े सर्जन को क्यों ना बुलवाना पड़े...लेकिन सौभाग्य को कुछ भी नहीं होना चाहिये...।"

"न...नहीं...अपने सौभाग्य को कुछ नहीं होगा डैडी जी। सु...सुगन्धा कहां है?"

"वो...! है तो यहीं पर...लेकिन...!"

"लेकिन? लेकिन क्या डैडी जी?"

"वो बेहोश है...और आ...आई...सी...यू में एडमिट...।"

"ओ...नो! आ...आप घबराना मत डैडी जी। मैं...मैं वहां पहुंच रहा...।"

"न...नहीं...तुम मत आना। पुलिस पकड़ सकती है।"

"ऐसी की तैसी पुलिस की। मैं काले रंग का बुर्का ओढ़कर आऊंगा, नीचे भी लेडीज ड्रेस पहन लूंगा। सैन्डल भी लेडीज ही होगी। आवाज बदलनी आती ही है मुझे। लेडीज आवाज में ही बात करूंगा मैं। आप पुलिस की तरफ से जरा-सी भी चिन्ता ना करें। मैं आधे घण्टे के भीतर हॉस्पिटल पहुंच रहा हूं।"

इसी के साथ दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया। मुस्करा दिया झील-सी नीली आंखों वाला।

तीर ठीक निशाने पर लगा था।

□□□

□□□

चारमीनार की सिगरेट फूंकते हुये केशव दरवाजा खोलकर कमरे से बाहर निकला तो पाया कि सुगन्धा और बलवन्त सेठ व्याकुलता के साथ चहलकदमी कर रहे थे।

उनकी चिन्ता का पैमाना था कि छलका जा रहा था।

केशव को देख सुगन्धा ने आंखों की जुबान से अपने ससुर जी को कुछ कहने की चेष्टा की।

बलवन्त लपकते हुये केशव के करीब पहुंचा और स्वयं को सामान्य दर्शाने की भरसक चेष्टा करते हुये बोला—"किसका फोन था, पण्डित जी? मु...मुकेश का तो नहीं होगा।"

"उसी का था!"

"उ...उसी का था...?" बलवन्त का चेहरा फुलाकर छोड़

दिये कई दिन पुराने गुब्बारे की मानिन्द ही ढीला पड़ गया और आवाज को भी लकवा-सा मार गया, "क...क्या कह रहा था वो? उसने आपको बतला दिया कि वो कहां पर है?"

"नहीं बतलाया...।"

बलवन्त के चेहरे पर राहत की तितली आकर बैठी ही थी कि केशव के आगामी शब्दों ने उसे उड़ा दिया—

"क्योंकि मैंने उससे पूछा ही नहीं कि वो कहां पर छिपा हुआ है।"

"पूछा नहीं...!" गहन अचरज के साथ ही बोला बलवन्त सेठ, "आपने मुकेश से पूछा ही नहीं कि वो कहां पर है?"

"हां, नहीं पूछा।"

"ले...लेकिन आप तो उसे पकड़ने की फिराक में हैं। मेरा मतलब है कि उसका पकड़ा जाना जरूरी है।"

"हां वो पकड़ा जायेगा।"

"प...पकड़ा जायेगा? ले...लेकिन आपने तो उससे पूछा ही नहीं कि...ओह...ओह—समझा—आपकी आवाज सुनते ही उसने फोन काट दिया होगा।"

"नहीं...ऐसा कुछ नहीं हुआ।" केशव सिगरेट में कश मारकर और नथुनों से धुआं छोड़कर बोला—"ऊपरवाले की अनुकम्पा से मैं किसी की भी आवाज की हू-ब-हू नकल कर लेता हूं...आपकी भी...।"

"मे...मेरी भी...?"

"हां! तभी तो मुकेश को अपने जाल में फांस लिया मैंने।"

"वो...वो कैसे?"

"मैंने आपकी आवाज में बात की। आवाज भी ऐसी बनाई कि जैसे बहुत दुखी, चिन्तित हूं और रो रहा हूं। मुकेश को यकीन दिलाया कि उसके बेटे का एक्सीडेन्ट हुआ है और वो टाटा हॉस्पिटल में एडमिट है। मुकेश ने जब वहां आने के लिये कहा तो मैंने आपकी तरफ से कहा कि उसे पुलिस पकड़ लेगी। तब वो बोला कि वो काले बुर्के में आयेगा। मैंने ठीक किया ना? किसी मुजरिम को पकड़ने के लिये ऐसी चाल चलने में कोई

बुराई तो नहीं है ना सेठ जी?"

"………" सेठ जी की बोलती पर तो प्रेशर-कुकर का ढक्कन लग गया।

"मैं…मैं अभी आती हूं…डैडी जी…।" कहने पर सुगन्धा ऊपर जाने के लिये सीढ़ियों की तरफ बढ़ी ही थी कि करतार सिंह हिमालय पर्वत की मानिन्द रास्ता रोककर खड़ा हो गया। और बोला—"नहीं पहणा! किथे बी नी जाणा है…।"

"क…क्या मतलब? मेरा बेटा जाग चुका होगा। उसे जागते ही दूध चाहिये।"

"वो जागेगा तो आवाज मार लेगा…तुहान्नु पुकार लेगा जा थल्ले आ जायेगा।"

"ले…लेकिन आप मुझे ऊपर क्यों नहीं जाने दे रहे हैं सरदार जी?"

"क्योंकि तुम अपने हसबैंड नूं फोन कर सकदी हो।"

सकपकाई सुगन्धा! रंगे हाथों पकड़ी गई चोरनी की सी शक्ल हो गई उसकी।

ऐसा ही कुछ हाल बलवन्त सेठ का था।

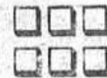
केशव ने उसका फोन राजन को दिया और बोला—"मैं हॉस्पिटल जा रहा हूं। फोन करके अनिल यादव को भी बुला लूंगा। जब मुकेश पकड़ा जायेगा तो तुम्हें फोन कर दूंगा। यहां से चलते बनना। लेकिन मेरा फोन आने तक तीनों यहीं पर अंगद के पैर की तरह जमे रहना और इस बात का ख्याल रखना कि ये लोग…" वह बलवन्त और सुगन्धा की तरफ इशारा करके बोला—"…कोई फोन ना करने पायें। ना ही कोई फोन रिसीव करने पायें। कोई फोन आने पर तुम्हें ही रिसीव करना है राजन।"

"जी…गुरुवर!"

"किसकी आवाज में रिसीव करोगे?"

"एम० पी० साहब की आवाज में ही करूंगा।"

"गुड…समझदार हो गये हो…।" कहने पर केशव ने राजन के बायें गाल पर प्यार भरी हल्की-सी चपत लगाई और फिर वहां से चलता बना।



"आदाब अर्ज है मोहतरमा…!" काले बुर्के में छिपी शख्सियत का रास्ता रोककर केशव चंचल किस्म की मुस्कान के साथ बोला—"आप ही का इन्तजार कर रहा था मैं। नकाब आप हटायेंगी—या ये कष्ट मुझी को करना होगा?"

"शर्म नहीं आती मिस्टर। एक पर्देवाली महिला के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है? शोर मचाकर पुलिस को बुला लूंगी।"

"पुलिस भी हाजिर है मोहतरमा…।" कहने पर केशव ने अंगूठे व तर्जनी उंगली से दो मर्तबा चुटकी बजाई—चुट…चुट!

इधर-उधर से पुलिसवाले निकले और बुर्केवाली को घेर लिया—उनमें इन्सपेक्टर अनिल यादव भी था जो कि पुलिसिया लहजे में ही बोला—"बुर्का उतार दो।"

"ये…ये क्या हो रहा है? अरे लोगों…देख रहे हो कि ये लोग मेरे साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं? मुझसे बुर्का उतारने को कह रहे हैं। हंगामा खड़ा हो जायेगा। तमाम मुम्बई के मुसलमान सड़कों पर उतर आयेंगे। हिन्दू-मुस्लिम दंगे भी हो सकते हैं।"

केशव ने नकबा उलट दी और मुकेश के गाल पर ऐसा झन्नाटेदार थप्पड़ रसीद किया कि वो घुटी-घुटी-सी चीख के साथ दूर जाकर गिरा।

हॉस्पिटल के गलियारे में उपस्थित लोग बुर्के में एक मर्द को देखकर हैरत में पड़ गये।

अनिल यादव ने बुर्का खींचकर हवा में उछाल दिया और पीछे से हतप्रभ-से मुकेश का कॉलर पकड़कर उसे खड़ा कर दिया।

"अरे! ये तो मुकेश है…बलवन्त सेठ का लड़का।"

एक नर्स चिल्लाकर बोली, "इसी ने तो दशरथ सिंह की बेटी की इज्जत लूटी और उसका कत्ल कर दिया। ये बुर्का ओढ़कर यहां क्यों आया?"

लुटा-पिटा-सा मुकेश स्वयं को पुलिसवालों से घिरा पाकर

सामने खड़े केशव से बोला—"मे...मेरे बेटे का एक्सीडेन्ट हो गया। वो आई० सी० यू० में है। मुझे उससे मिलना है। उसकी जान खतरे में...!"

पीछे से बिल्लौरी आंखों वाला अनिल यादव हंसकर बोला—"तेरे बेटे का कोई एक्सीडेन्ट नहीं हुआ है। वो ठीक-ठाक है और घर पर...।"

"नहीं! वो इस हॉस्पिटल में है और आई० सी० यू० में...।"

"वो घर पर है बेवकूफ!"

"नहीं! टी० वी० पर न्यूज में बतलाया गया है कि...।"

"वो न्यूज झूठी थी।"

"झू...झूठी! क...क्या मतलब?"

"तुझे कानून के शिकंजे में जकड़ने के लिये पण्डित जी ने ही टी० वी० पर तेरे बेटे की बाबत झूठी न्यूज दिलवाई थी।"

"न...नहीं! मैंने फोन पर डैडी जी से बात की...।"

"क्या बात की थी तूने...?" बोला केशव, लेकिन उसके मुंह से आवाज बलवन्त सेठ की ही निकली, "यही कहा था कि...नहीं तुम मत आना। पुलिस पकड़ सकती है। फिर तू बोला था," अब केशव के मुंह से सेम-टू-सेम मुकेश की आवाज निकली, "ऐसी की तैसी पुलिस की। मैं काले रंग का बुर्का ओढ़कर आऊंगा।"

"ये...ये सब...!" बुरी तरह बौखलाकर बोला मुकेश, "तुमने पहले डैडी की आवाज निकाली और फिर मेरी आवाज भी निकाली। वो ही शब्द कहे, जो डैडी और मैंने बोले थे।"

"क्योंकि फोन पर तेरा डैडी नहीं, मैं था।"

"क...क्या...?"

"हां! मैं किसी की भी आवाज की कॉपी कर सकता हूं। टी० वी० पर तेरे बेटे के एक्सीडेन्ट की झूठी खबर दिलवाकर तेरे घर पहुंच गया था। तेरा फोन आया तो नेता जी की बजाय मैंने ही उनकी आवाज में रिसीव किया था।"

"ओह...ओह...!" मुकेश के दिमाग के मानो तमाम कपाट खुलते चले गये। सारा मामला समझ में आते ही उसने

हथेली पर घूंसा मारकर मानो अपनी बेवकूफी पर नाराजगी जाहिर की। फिर वो गिरगिट की ही मानिन्द कलर चेंज करके हिंसक लहजे में बोला—"तो ये तेरा बिछाया हुआ जाल था।"

"हां और तू फंस गया।"

मुकेश की आंखों में कोयले वाली भट्ठियां-सी दहक उठीं, जिनकी लाली उसके चेहरे पर भी फैल रही थी। वह मुट्ठियों को भींचकर जख्मी नाग-सा फुंफकारकर बोला—"ये...ये तूने ठीक नहीं किया पण्डित! मुझे पकड़कर तूने अपना सिर ओखली में डाल दिया है।"

"हां, यार...ये बात तो है।" केशव उसका मखौल उड़ाने वाले अन्दाज में बोला—"मुझे ना जाने क्यों ओखली में सिर डालने की आदत है। मैं ये भी नहीं सोचता कि सिर पर मूसल भी पड़ सकती है। लेकिन भगवान जी की कृपा से अभी तक मूसल नहीं पड़ी।"

"इस बार पड़ेगी!"

"लेकिन कौन मारेगा मूसल? तू तो गिरफ्तार है। तेरा फांसी पर लटकना भी तय है। फिर वो मूसल कौन मारेगा?"

"ये आने वाला वक्त बतला देगा। लेकिन तूने मुझसे पंगा लेकर ठीक नहीं किया पण्डित। इसे अपनी जीत ना समझ। मेरी पीठ पर जिस ताकत का हाथ है, वो मुझे कोई सजा नहीं होने देगी। अदालत में वकीलों की फौज खड़ी कर दी जायेगी। वो फौज मुझे निर्दोष साबित कर देगी और तुझे शिकस्त के तीरों से बींधकर रख देगी।"

यूं ही मुस्कराया वो झील-सी नीली आंखों वाला, मानो किसी नादान चींटी ने हाथी को ललकारकर एक ही फूंक में उड़ा देने का दावा कर दिया हो।

फिर वो मुकेश की सुलगती-सी, दहकती-सी आंखों में झांकते हुये प्रत्येक शब्द को मानो तराजू पर तौल-तौलकर ही बोला—"सिर्फ मुम्बई के ही नहीं, पूरे हिन्दुस्तान के वकीलों को इकट्ठा कर लेना। वो भी कम पड़ें तो विदेशों से भी वकीलों की बटालियन बुलवा लेना। उन सबके सामने मैं अकेला ही काफी हूं। तेरे उन वकीलों के पास नकली सबूतों के धनुष और

झूठी गवाहियों के ढेरों तीर होंगे। लेकिन मेरी एक ही नजर में उनके धनुष तिनकों की तरह ही टूट जायेंगे और उनके तीर झाड़ू की सींक भी साबित नहीं होंगे। मैं मानता हूं कि बहुत से ऐसे वकील हैं, जो नकली सबूतों, झूठे गवाहों के दम पर निर्दोष को अपराधी और अपराधी को निर्दोष साबित करा ले जाते हैं। लेकिन ऐसा तभी होता है, जब दूसरी तरफ का वकील कमजोर हो, या फिर बिका हुआ हो। मैं सदा ही सत्य और न्याय के लिये धर्मयुद्ध लड़ता रहा हूं। हालांकि मैं अर्जुन नहीं हूं, लेकिन तेरे काले कोट वाले कौरवों के लिये आफत ही साबित होऊंगा। वो शिकस्त के खच्चरों पर बैठकर भागेंगे और पलटकर देखेंगे भी नहीं। तूने लाज के पवित्र फूल को अपनी हवस के कदमों तले रौंदा है और फिर उस फूल की जिन्दगी की पंखुड़ियों को नोचकर मौत की मिट्टी में मिला दिया। अगर मैं कानून का रखवाला नहीं होता तो अभी तेरी बोटी-बोटी करके गन्दी नाली के गन्दे कीड़ों के हवाले कर देता। तुझे अदालत में ही मुजरिम साबित करूंगा और सजा के रूप में फांसी के फन्दे पर टंगवा दूंगा।"

"अगर किसी चमत्कार से तूने मुझे मुजरिम साबित करके सजा दिलवा भी दी तो फांसी पर चढ़ने से पहले ही जेल से फरार हो जाऊंगा मैं।"

"अगर ऐसा हुआ तो उसे अपनी बदकिस्मती ही समझना क्योंकि मैंने अपने गिर्द कानून का एक दायरा बनाया हुआ है। उस दायरे के भीतर रहने वालों मुजरिमों को मैं कानून के हाथों सजा दिलवाता हूं। लेकिन कोई बदकिस्मत उस दायरे से बाहर निकल जाये तो फिर मैं हाथ जोड़कर कानून की देवी से क्षमा मांगकर कानून का हथियार उठा लेता हूं। जब उस हथियार का इस्तेमाल मुजरिम पर होता है तो शैतान की भी घिग्घी बंध जाती है। जिस्म से आत्मा निकालने के लिये आये यमदूत भी आंखें मूंदकर सिसकारी भर उठते हैं। मेरे शिकार का इतना बुरा हाल होता है कि जमीन में गाड़ दिये जाने पर कीड़े भी उसे खाने से मना कर देते हैं। भूख से बिलबिलाते गिद्ध, चील, कौव्वे और जंगली जानवर भी ये कह उठते हैं कि आज तो हमारा व्रत है।"

आप। कोई भी वकील केशव पण्डित के सामने नहीं टिक पायेगा।"

"तुम मुझ पर भरोसा करो और रोना बन्द करो। देखो तो सही कि मुकेश को बचाने के लिये मैं क्या करता हूं?"

□□□

□□□

बाथरूम में मौजूद गुप्त रास्ते की सीढ़ियां उतरकर बलवन्त जमीन के नीचे बने बीस गुणा बीस फुट के कमरे में पहुंचा।

डबल बेड, सोफा, मेज, टी० वी०, डी० वी० डी०, फ्रिज, सिलिंग फैन, कूलर समेत कई ऐसे सामान मौजूद थे कि कोई भी उस कमरे में हफ्ताभर आराम से गुजार सकता था।

फ्रिज में खाने-पीने के सामान के साथ व्हिस्की की कई बोतलें भी मौजूद थीं।

लेकिन हम तो स्टील की उस आलमारी की तरफ ही तवज्जो देंगे, जो कि दीवार में फिट है और जिसे बलवन्त सेठ खोल रहा है।

अरे! नहीं!

वो आलमारी नहीं है, बल्कि वह तो ट्रांसमीटर सैट को छिपाने वाला कवर है।

बलवन्त ने ट्रांसमीटर सैट से जुड़े इयर फोन को कानों और सिर पर सैट कर लिया। उसी इयर फोन के साथ एक माइक भी जुड़ा हुआ था, जो कि बलवन्त सेठ के मुंह के सामने था।

सैट को ऑन करने पर वह एक नॉब को इधर-उधर घुमाते हुए किसी से कॉन्टेक्ट करने की चेष्टा करने लगा—

"डॉन कॉलिंग...डॉन कालिंग।"

"एम० सी० दिस साइड।" इयर फोन के जरिये उसके कानों में महिला का सा बारीक स्वर पहुंचा, "स्पीक डॉन...व्हाट हैपंड? ओवर।"

"मैं...मैं आपसे मुलाकात करना चाहता हूं एम० सी० साहब...।" वह गिड़गिड़ाने वाले लहजे में बोला—"इट्स वैरी अर्जेन्ट! प्लीज, एम० सी० साहब...।"

ओके ! सुन शाम को पांच बजे हैडक्वार्टर पर आ सकते हो।"

"थैं...थैंक्यू, एम०सी० साहब।"

"ओवर एंड आल।"

दूसरी तरफ से कनेक्शन कट कर दिया गया।

बलवन्त की बुझी-सी आंखों में उम्मीद के चिराग जल उठे।

रेगिस्तान से चेहरे पर हरियाली-सी नजर आने लगी।

ट्रांसमीटर सैट को ऑफ करके आलमारी बन्द करते हुये वो बुदबुदाया—"मुझे अभी निकलना होगा। तभी पांच बजे तक हैडक्वार्टर पहुंच सकूंगा। अगर लेट हो गया तो माफिया चीफ से मुलाकात ना हो पायेगी।"

❑❑❑

❑❑❑

पुलिस स्टेशन के इन्टेरोगेशन रूम में मुकेश लोहे की कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसके हाथों को कुर्सी के हत्थों और पैरों को कुर्सी के पायों के साथ चमड़े की पट्टियों से कसकर बांधा गया था।

उसका चेहरा सूजकर खरबूजे से तरबूज बन गया था।

बांयी आंख नब्बे फीसदी बन्द थी और उसके चहुं ओर नीले निशान उभरे हुये थे। पंजाब के नक्शों के साथ गाल सूजकर पिट्ठी भरी कचौड़ियों जैसे ही मालूम पड़ रहे थे।

होठ जख्मी थे और सूजकर हरी मिर्ची की मोटाई से मूली की मोटाई में कनवर्ट हो चुके थे।

ऐसा नहीं कि मुकेश ने अपना जुर्म नहीं कबूला था। उसने अपना जुर्म कबूलते हुये बतलाया—वो अपने दोस्त नवीन जिन्दल की मैरिज एनीवर्सरी के उपलक्ष में दी गई पार्टी में सम्मिलित था और वहां पर दशरथ सिंह की बेटी सुरभि भी आई हुई थी।

पीले रंग के सूट अर्थात् सलवार-कुर्ते के साथ गले में नीले रंग की चुनरिया, कानों में सोने की बालियां और नाक में नथनी! गोरी-गोरी, गोल-गोल कलाइयों में चमचमाती हरे रंग की चूड़ियां!

वो सहेलियों के साथ बतियाते हुये खिलखिलाकर हंसती

"ल...लेकिन मेरे साथ...।"

"चुप ओये...!" पीछे से अनिल यादव उसका कॉलर खींचकर गुर्राया-सा—"अब तूने पण्डित जी की शान में जरा-सी भी गुस्ताखी की तो मैं भूल जाऊंगा कि मेरे जिस्म पर कानून की वर्दी है। यहीं पर तेरा तिया-पांचा करके अर्थी निकाल दूंगा! ना पुलिस स्टेशन, ना अदालत और ना जेल...सीधे-सीधे श्मशान घाट।"

मुकेश ने खुले होठों को कसकर भींच लिया और नथुनों को चौड़ाकर तेज-तेज सांसें छोड़ने लगा।

उसका चेहरा कुम्हार के अलाव की मानिन्द ही भभका हुआ था।

❑❑❑

❑❑❑

"जी गुरुवर...!" राजन फोन कान से सटाकर आदर व सम्मान भरे भाव में बोला, "क्या मुकेश पकड़ा गया...अच्छा पकड़ा गया...वैरी गुड...ये तो गुड न्यूज है गुरुवर...कांग्रेचुलेट ...ठीक है...हम ऐसा ही करते हैं।" फिर वो फोन कान से हटाकर करतार सिंह और राजीव अरोड़ा से बोला—"चलो।"

"क...क्या हुआ...?" पीली पड़ चुकी सुगन्धा बेदम आवाज में बोली—"क्या वो पकड़े गये?"

"हां, वो पकड़ा गया। पण्डित जी जिसके पीछे पड़ जायें, वो भला बच सकता है क्या...?"

बलवन्त सेठ का चेहरा यूं लटक गया, जैसे ज्यादा पानी भरे जाने पर गुब्बारा लटक जाता है।

सुगन्धा तो रो पड़ने को तैयार थी।

राजन ने बलवन्त को उसका फोन वापिस किया और फिर करतार सिंह राजीव के साथ चलता बना।

सुगन्धा सोफे पर बैठ गई और हथेलियों से चेहरा ढांपकर रोने लगी।

बलवन्त ने एक सिगरेट सुलगा ली और कश लगाते हुये व्याकुलता के साथ चहलकदमी-सी करने लगा।

तीन वर्षीय खूबसूरत लड़का सीढ़ियों से उतरकर नीचे

आया और सुगन्धा के करीब पहुंचकर बोला—"आप रो रही हैं मम्मी जी? क्यों रो रही हैं? क्या कोई मर गया...?"

"न...नहीं...!" सुगन्धा ने उसके नन्हें-नन्हें होठों पर हथेली रख दी और मानो तड़पकर बोली—"ऐसी अशुभ बातें नहीं बोलते। सब सही है।"

"तो फिर...!" नन्हा बालक सुगन्धा की हथेली होठों से हटाकर मासूमियत के साथ बोला—"आप रो क्यों रही हैं? किसी ने डांटा है आपको? क्या डैडी जी के साथ झगड़ा हुआ है? डैडी जी कहां हैं?"

"डैडी जी आ जायेंगे बेटा! तुम अभी किचन में जाओ और कान्ताबाई से बोलो कि वो तुम्हें बोर्नवीटा वाला दूध बनाकर दे दे। जाओ...तुम अच्छे बेटे हो ना?"

सौभाग्य चुपचाप किचन की तरफ चला गया।

"अब क्या होगा डैडी जी...?" सुगन्धा सुबकते हुये बलवन्त से बोली, "मुकेश को पकड़ लिया गया है। उन पर रेप और मर्डर का इल्जाम है! वो लड़की वैसे भी अपोजिशन पार्टी के लीडर की बेटी थी। अगर मुकेश को फांसी की सजा हो गई तो मेरा क्या होगा...सौभाग्य का क्या होगा? हमारा क्या होगा?"

"नहीं...कुछ नहीं होगा अपने मुकेश को...।"

"आप तो ये भी कह रहे थे कि वो पकड़े नहीं जायेंगे। लेकिन केशव पण्डित ने अपनी चालाकी से मुकेश को पकड़ लिया। केशव पण्डित अदालत में भी मुकेश के खिलाफ पैरवी करेगा। वो आज तक कोई केस नहीं हारा। वो सभी को मुजरिम साबित करके सजा दिलवा देता है। वो मुकेश को भी मुजरिम साबित कर देगा और...नहीं...मैं मुकेश के बिना नहीं जी पाऊंगी। सौभाग्य अभी पूछ रहा था कि डैडी कहां हैं? आगे भी वो जब पूछेगा तो क्या जवाब दूंगी मैं उसे?"

"तुम बेमतलब में ही हलकान हो रही हो बहू।"

"तो क्या करूं? मेरा सुहाग खतरे में है।"

"मुकेश अगर तुम्हारा पति है तो वो मेरा इकलौता बेटा भी है। उसे कुछ नहीं होने दूंगा मैं।"

"न...नहीं, केशव पण्डित के होते कुछ नहीं कर सकते

अब इन्सान तो क्या...दूर-दूर तक कोई जानवर या परिन्दा भी दिखलाई नहीं पड़ रहा था।

दिखलाई पड़ी एक सफेद रंग की शेवरलेट कार, जो कि रेतीली जमीन पर पत्थरों से बचते हुये उस खन्डहर के पास जाकर रुकी।

काली पैन्ट, काले ओवरकोट, फैल्ट हैट व काले जूतों वाला बलवन्त सेठ ड्राइविंग साइड का दरवाजा खोलकर बाहर निकला, जिसकी आंखों पर काले शीशे वाला चश्मा लगा हुआ था।

चारों तरफ नजरों के घोड़े दौड़ाकर इस बात की तसल्ली की कि कोई मौजूद तो नहीं है, उसे देख तो नहीं रहा है?

सन्तुष्ट, आश्वस्त होने पर वो खन्डहर में दाखिल हुआ और तेज-तेज कदमों से चलते हुये एक वर्गाकार सूखे पोखर के करीब पहुंचा।

पोखर की चारों तरफ की सीढ़ियां टूटी-फूटी हुई थीं और उसमें पानी की बजाय कंटीली झाड़ियां, बबूल के दो पेड़ व तीन खजूर के पेड़ खड़े थे।

ओवरकोट की जेब से मोबाइल निकालकर उसने कोई नम्बर मिलाया और फोन कान से सटा लिया।

"यस...!" कान के पर्दे से भारी-भरकम आवाज टकराई—"कोड नम्बर बोलिये।"

"एम० डी० नम्बर फाइव।"

"प्लीज अपना चेहरा दिखलाइये।"

उसने फैल्ट हैट के साथ चश्मा भी उतार लिया। जाहिर था कि आसपास कोई क्लोज सर्किट टी० वी० कैमरा लगा हुआ था और उस पर बलवन्त सेठ को देखा जा रहा था।

"आगे बढ़िये डॉन साहब! लिफ्ट ऊपर आ रही है।"

वह फोन बन्द करके और ओवर कोट की जेब में रखकर पोखर की टूटी-फूटी सीढ़ियों से उतरकर पेड़ों व झाड़ियों के झुरमुट में पहुंचा—जहां पर धूप ना पहुंचने की वजह से नीम अन्धेरा था।

हल्की-सी घरघराहट के साथ जमीन का छह फुट गुणा छह

फुट का टुकड़ा झाड़ियों समेत एक फुट ऊपर उठा और फिर अपनी जगह से खिसकता चला गया।

छह गुणा छह फुट का रिक्त स्थान दिखलाई पड़ा, जिसके भीतर जाने के लिये लोहे की सीढ़ी लगी थीं। उस सीढ़ी से नीचे उतरकर बलवन्त एक छोटे से कमरे में पहुंच गया, जहां एक दीवार पर दो पल्लों वाला गेट लगा हुआ था।

हल्की-सी घरघराहट के साथ दो पल्ले विपरीत दिशा में खुले और लिफ्ट का पिंजरा दिखलाई दिया, जिसके फर्श पर ब्लैक कमान्डो जैसे काली पोशाक व ए० के०, सैंतालीसधारी युवक खड़े दिखलाई पड़े—उनके सिर पर काले रंग की कैप थी।

एक ने ए० के० सैंतालीस को कन्धे पर लटकाने पर पूरी बारीकी के साथ बलवन्त की तलाशी ली।

लिफ्ट की एक दीवार पर कैमरा लगा हुआ था, जिसके माध्यम से तलाशी अभियान को देखा जा रहा था।

तलाशी अभियान सम्पूर्ण होते ही दरवाजा स्वतः ही बन्द हो गया और लिफ्ट का पिंजरा नीचे की तरफ जाने लगा।

लिफ्ट के भीतर मैटल डिटेक्टर भी लगा था, जो कि चुपचाप ही बलवन्त सेठ को चैक कर चुका था।

हल्के से धचके के साथ लिफ्ट रुकी और दरवाजे के पल्ले खुल गये।

सामने स्टील का बना गलियारा था।

फर्श, दीवारें, छत...सब कुछ स्टील के बने हुये थे। ए० के० सैंतालीस व ए० के० छप्पन धारी चार ब्लैक कमान्डोज ने बलवन्त सेठ की अगवानी की और उसे अपने पीछे आने का इशारा करके पलटकर चल दिये—बलवन्त भी उसके पीछे चल दिया।

लिफ्ट से ऊपर जाकर बलवन्त सेठ को नीचे लाने वाले दोनों कमान्डोज वहीं लिफ्ट के पास ही रुक गये थे।

□□□

□□□

उसे मिनी थियेटर भी कहा जा सकता था।

खूबसूरत व डिजाइनदार छत व दीवारें।

तो यूं लगता कि मानो कोई जल-तरंग ही बज उठी हो। इसी के साथ गुलाबी होठों के दायरे में कैद सफेद व चमकदार दांत दिल पर मानो बिजली-सी गिरा रहे थे।

वो पीकर 'टल्ली' हो चुका था और नशे की झांझ में उसने सुरभि का हाथ पकड़कर कहा था—"बहुत ही खूबसूरत और हसीन हो जानेमन। मेरे साथ दोस्ती कर लो! जन्नत की सैर करा दूंगा। हीरों से जड़े गहनों से लाद दूंगा। किसी होटल में चलें? क्या कहती हो डार्लिंग?"

सुरभि ने दायें पैर से सैन्डल निकालकर उसे धुनकर रख दिया और खरी-खोटी भी सुना दी।

दूसरे लोगों ने भी उसे भला-बुरा कहा।

वो अपमानित होकर ही वहां से लौटा था और सुरभि से बदला लेने की प्रतिज्ञा कर ली थीं।

उस रात उसने अपनी कार से सुरभि के स्कूटर का पीछा किया था और कब्रिस्तान के करीब अपनी कार से यूं ओवर टेक किया था कि हड़बड़ाहट में सुरभि स्कूटर समेत सड़क किनारे जा गिरी थी।

सुरभि को रिवॉल्वर के दम पर डरा-धमकाकर वो उसे कब्रिस्तान के भीतर ले गया था और फिर उसके साथ मुंह काला किया था। जब सुरभि ने पुलिस में रिपोर्ट करने की धमकी दी तो उसके दिमाग से शराब और हवस का नशा हिरण हुआ था।

पुलिस में रिपोर्ट होने का मतलब था कि उसके साथ उसके बाप की भी इज्जत का जनाजा निकल जाना था और बलात्कारी का ठप्पा लगने पर वो और उसके घरवाले किसी को मुंह दिखलाने के काबिल नहीं रह जाने थे—उसको सजा भी होनी थी।

स्वयं को बचाने की गरज से ही उसने सुरभि के दुपट्टे का फन्दा बनाकर उसके गले में डाला और उसके दोनों सिरों को विपरीत दिशा में तब तक खींचता चला गया था, जब तक कि सुरभि ने दम ना तोड़ दिया था।

इन्सपेक्टर अनिल यादव ने मुकेश के बयान की वीडियो फिल्म भी बना ली थी और उससे लिखित में भी बयान ले लिया था।

तब वहां पर केशव, राजन, करतार सिंह और राजीव भी मौजूद थे।

पटियाला वाले सरदार जी का खून खौल उठा कि मुकेश ने एक मासूम की बेइज्जती की थी और फिर बेरहमी के साथ उसकी हत्या भी कर दी थी। सो उन्होंने मुकेश को धुनकर रख दिया था।

अगर केशव ने ना रोका होता तो करतार सिंह के हाथों मुकेश का 'राम नाम सत्य' भी हो सकता था। करतार सिंह की आंखें अभी भी अंगारा बनी हुई थीं और वो कराहते मुकेश को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरे जा रहा था।

केशव ने चारमीनार मार्के वाली सिगरेट में कश लगाकर और झुककर मुकेश के सूजे हुये चेहरे पर धुअें का गुब्बार दागकर कहा—"मैं जानता हूं कि तू कोर्ट में अपने बयान से मुकर जायेगा। तू या फिर तेरा वकील बोल देगा कि तुझे पुलिस ने टॉर्चर किया था, इसलिये तूने जुर्म कबूल कर लिया था। लेकिन मैं तुझे मुजरिम साबित कर दूंगा और फांसी की सजा भी दिलवाऊंगा—ये मेरा वायदा है। दुनिया का कोई भी वकील तुझे बचा नहीं पायेगा...ये मेरा दावा है। बहुत जल्द मैं डोरी लेकर आऊंगा और तेरी गर्दन का माप लेकर जाऊंगा—ताकि जल्लाद को फन्दा बनाने में कोई दिक्कत या परेशानी ना हो।"

मुकेश ने कोई जवाब ना दिया—वो सिर्फ कराहता ही रहा।

उसे यूं ही लग रहा था कि मानो करतार सिंह ने हाथों की बजाय लोहे की रॉड से उसकी कुटाई की हो।

❑❑❑

❑❑❑

चारों तरफ रेत-ही-रेत, पत्थर-ही-पत्थर!

घास का नामोनिशान नहीं, लेकिन कंटीली झाड़ियां, बबूल व खजूर के पेड़ अवश्य थे।

इसी जमीन पर पुरानी इमारतों के खन्डहर थे। सिर्फ दीवारें ही दीवारें...छत एक भी नहीं! ऐसा लगता था कि कोई गांव किसी प्राकृतिक आपदा का शिकार होकर उजड़ गया हो।

पण्डित कुछ नहीं कर पायेगा। हां, एक बात और...उस लड़की सुरभि के रेप और मर्डर का चश्मदीद गवाह भी है।"

"व्हाट...?" चिहुंककर उठ खड़ा हुआ बलवन्त सेठ और बौखलाया-सा बोला—"ये...ये आप क्या कह रहे हैं एम० सी० साहब? मुकेश तो बतला रहा था कि उसे किसी ने नहीं देखा था?"

"बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार है तुम्हारा बेटा! रियाजुद्दीन उर्फ राजू नाम का एक गूंगा पेन्टर है। उसके बेटे की मौत हो गई थी। बेटे की याद आने पर उस रात वो कब्रिस्तान गया था। वहां उसने एक पेड़ की ओट से मुकेश को बलात्कार और कत्ल करते देखा था। चूंकि मुकेश के पास रिवॉल्वर भी थी, इसलिये मारे डर के रियाजुद्दीन उर्फ राजू छिपा रहा और फिर वहां से चुपचाप वापिस लौट गया था। फिर वो अपनी बीवी परवीन के साथ दशरथ सिंह के घर आया था और दशरथ सिंह ने वहां पर केशव पण्डित को भी बुलवा लिया था। गूंगे की तरफ से उसकी बीवी परवीन ने ही सारी बातें बतलाई थीं। केशव द्वारा गारन्टी दिये जाने पर राजू मुकेश के खिलाफ गवाही देने को राजी हो गया है।"

"ओह...ये बहुत बुरा हो जायेगा एम० सी० साहब! राजू की गवाही मुकेश को फंसवा देगी। इस राजू का तो इलाज करना होगा। क्या आप उसका पता बतला सकते हैं?"

"कोई फायदा नहीं। केशव पण्डित की सलाह पर राजू और परवीन ने अपनी बेटी के साथ घर छोड़ दिया है। कल्याण इलाके में परवीन की मौसेरी बहन रहती है। हमें इतना ही मालूम है कि परवीन की मौसेरी बहन का पति सऊदी अरब से लौटा है और कुछ दिनों पहले ही उसने कल्याण में मकान खरीदा है। उसका नाम मालूम नहीं। वो क्या करता है, ये भी मालूम नहीं। उसका मकान कल्याण में कहां पर है—ये भी नहीं मालूम! ये सब तुम्हें मालूम करना होगा। अपने आदमियों को इस काम पर लगा दो। राजू की बीवी और बेटी को कब्जे में लेकर उसे मजबूर करो कि वो अदालत में मुकेश की शिनाख्त ना करे। या फिर राजू को खत्म ही करा दो। बेमतलब में रिस्क लेने की

क्या जरूरत है? राजू खत्म तो गवाह खत्म! इसी के साथ मुकेश को छुड़ाने की भी कोशिश करो। रिमाण्ड पूरा होने पर पुलिस उसे कोर्ट में पेश करेगी और कोर्ट उसे जेल भेज देगी। मुकदमे से पहले या मुकदमे के बाद...जब भी दांव लगे—मुकेश को जेल से फरार करा दो। उसे विदेश भेज देना। या फिर उसके चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी कराके किसी दूसरे शहर में उसे सैटल कर देना। तुम मुम्बई के माफिया डॉन हो। रास्ता हमने बतला दिया—लेकिन मन्जिल पर तुम्हें खुद ही पहुंचना है।"

"शुक्रिया, एम० सी० साहब!" बलवन्त ने सिर झुकाकर माफिया चीफ का आभार व्यक्त करते हुये कहा, "आपने मुझे अन्धेरे से निकालकर उजाले में खड़ा कर दिया है। यहां आने से बहुत फायदा हुआ मुझे। अब बाकी का काम मेरा। आप देखियेगा कि अपने बेटे मुकेश को बचाने के लिये मैं क्या करता हूं!"



रिमांड की अवधि पूरी होने पर पुलिस ने मुकेश को अदालत में प्रस्तुत किया और अदालत ने मुकेश को जेल भिजवा दिया।

जेल में मांगी लाल नाम का कैदी मुकेश का पूर्व परिचित निकला।

मांगी लाल ने मुकेश और अंगारा का परिचय करा दिया। दैत्याकार अंगारा से मुकेश बहुत प्रभावित हुआ और उसने तय कर लिया कि अपने साथ अंगारा को भी जेल से निकालेगा और उसे माफिया में भर्ती करायेगा।

उसी रात को जेल के वार्डन ने अंगारा को मोबाइल फोन दिया और सिर्फ इतना ही कहा कि नौ बजे किसी का फोन आयेगा।

बन्द बैरक में तीन लोग ही थे—

अंगारा, मांगी और मुकेश!

ठीक नौ बजे फोन की घंटी बजने पर मांगी ने फर्श पर रखे फोन का स्पीकर वाला बटन दबा दिया।

हॉल में फिट सौ के लगभग सीट नई-नकोर व खूबसूरत थीं—आरामदेह थीं।

सामने स्टेज पर काले रंग की स्क्रीन लगी हुई थी।

बलवन्त आगे की लाइन वाली एक कुर्सी पर बैठा हुआ सिगरेट फूंक रहा था और इन्तजार भरी नजरों से बुलेटप्रूफ कांच वाली स्क्रीन की तरफ देखे जा रहा था। उसे हॉल में आये दस मिनट के करीब हो गई थी।

अचानक ही स्क्रीन के ऊपर लगा लाल रंग का बल्ब मधुर संगीत के साथ जलने-बुझने लगा। बलवन्त ने तुरन्त ही सिगरेट फर्श पर फेंकी और कुर्सी से उठने पर जूते की 'टो' से कुचल दी।

स्क्रीन के पार एक गेट खुला और इन्डिया में माफिया को चलाने वाला माफिया चीफ दाखिल हुआ।

काली स्क्रीन की वजह से वो परछाई सरीखा ही लग रहा था।

माइक वाली मेज के पीछे रखी रिवॉल्विंग चेयर पर बैठने पर वो महिला जैसी बारीक आवाज में बोला—"क्या हाल हैं तुम्हारे मुम्बई के डॉन? बैठ जाओ।"

उक्त आवाज स्क्रीन के ऊपर और हॉल की छत पर लगे विभिन्न स्पीकर्स के माध्यम से ही बलवन्त के कानों तक पहुंची थी।

"हॉल तो बेहाल हैं एम० सी० साहब।" कुर्सी पर बैठ जाने पर दुखी लहजे में बोला बलवन्त—"आपको तो मालूम है ही कि मेरे बेटे मुकेश ने दशरथ सिंह की बेटी के साथ बलात्कार किया और फिर उसकी हत्या कर डाली थी। केशव पण्डित ने बहुत ही चालाकी के साथ उसे पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।"

"जब ये केस केशव पण्डित ने अपने हाथों में लिया था तो हमने मुकेश से कॉन्टेक्ट किया था और उसे अन्डर ग्राउन्ड हो जाने की सलाह दी थी।"

"मुकेश अन्डर ग्राउन्ड हो गया था एम० सी० साहब! वो स्वीटी नाम की कालगर्ल के घर में छिपा हुआ था। लेकिन केशव

पण्डित ने टी० वी० पर मेरे पोते के एक्सीडेन्ट की झूठी खबर प्रसारित करा दी। मैं मुकेश को होशियार करने की सोच ही रहा था कि... ।"

"केशव पण्डित अपने चेलों राजन शुक्ला, करतार सिंह और राजीव अरोड़ा के साथ तुम्हारे घर पर पहुंच गया।" रहस्यमयी माफिया चीफ बलवन्त की बात को काटकर बोला—"मुकेश का फोन आने पर केशव ने तुमसे फोन ले लिया था और तुम्हारी ही आवाज में बात करके मुकेश को विश्वास दिला दिया था कि उसके बेटे का एक्सीडेन्ट हो गया है और वो टाटा हॉस्पिटल में एडमिट है। मुकेश काला बुर्का ओढ़कर गया और केशव के हत्थे चढ़ गया।"

"आप तो सब कुछ जानते ही हैं एम० सी० साहब! अब ये बतलाइये कि अपने बेटे को बचाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?"

"तुम मुम्बई के डॉन हो। क्या अपने दम पर अपने बेटे को नहीं बचा सकते?"

"कोशिश तो करूंगा ही एम० सी० साहब! लेकिन आपकी सलाह भी चाहिये। इस केस में केशव पण्डित इन्वॉल्व है। वो बहुत चतुर है। वो मुकेश को इतनी आसानी से छोड़ने वाला नहीं।"

"इतना कमजोर पड़ने की जरूरत नहीं बलवन्त। हिम्मत हारने की जरूरत नहीं। बाप बनकर नहीं, मुम्बई का डॉन बनकर अपने दिमाग का इस्तेमाल करो। तुम्हारे पास आदमियों की कोई कमी नहीं। केशव पण्डित की टक्कर का वकील भी है। अगर ये मामला अदालत में जाता है तो तुम्हारा वकील मुकेश को निर्दोष साबित करने की कोशिश करेगा। मुकेश की मेडिकल जांच होगी। उसके खून का नमूना लिया जायेगा! ये जानने के लिये कि वो बलात्कारी है कि नहीं। ब्लड और सीमेन का ग्रुप एक ही होता है। उसके फिंगर-प्रिंट्स भी लिये जायेंगे। क्योंकि उसने कब्रिस्तान में सिगरेट के टोंटे छोड़ने की गलती की थी। तुम्हें डॉक्टर और फिंगर प्रिंट्स एक्सपर्ट को किसी भी तरीके से अपने फेवर में करके गलत रिपोर्ट तैयार करानी है। फिर केशव

दिमाग ही खराब हुआ है।" क्रान्ति की आवाज और लहजे में आत्म-विश्वास कूट-कूटकर भरा हुआ था, "अपने दिमाग पर पूरा भरोसा है मुझे। जब मैं अपने दिमाग का इस्तेमाल करूंगी तो नामुमकिन लगने वाली बात मुमकिन हो जायेगी। ऐसा चक्रव्यूह रचूंगी कि दिमाग का जादूगर उसमें फंसकर रह जायेगा। सूरज पूरब की बजाय पश्चिम से उगेगा। गंगा उल्टी बहेगी। पंछी पानी पर दौड़ेंगे और मछलियां जमीन पर दौड़ लगायेंगी—जानवर हवा में उड़ेंगे। अपने दिमाग के बलबूते पर मैं केशव पण्डित को कत्ल करने पर मजबूर कर दूंगी। या फिर बिना कत्ल किये ही वो अदालत में कातिल साबित हो जायेगा। प्रॉब्लम बस ये है कि मैं जेल में कैद हूं और तुम भी जेल में हो। हम दोनों किसी तरीके से जेल से बाहर निकल जायें तो फिर सारी दुनिया मेरे दिमाग का जादुई करिश्मा देखेगी। उस साले केशव पण्डित को दिमाग का जादूगर मानने वाले लोग उसको अदालत में कातिल साबित होते देखेंगे। कुछ भी करना पड़े अंगारा...लेकिन जेल से बाहर निकलने का बन्दोबस्त करो। शायद जेलर राउन्ड पर आ रही है। मौका लगा तो कल फिर बात होगी। अभी से सोचना शुरू कर दो कि जेल से बाहर निकलने के वास्ते क्या करना है!"



मुकेश ने ट्रिपल फाइव की सिगरेट सुलगा ली और डिब्बी व माचिस अंगारा और मांगी के सामने रख दी।

जब अंगारा और मांगी ने भी सिगरेट सुलगा ली तो मुकेश ने अपनी कौतूहलता और उत्सुकता के गुब्बारों को शब्दों के आलपिन से फोड़ा—

"ये मैडम कौन थी अंगारा—जो यमराज जी की शर्त पूरी करने का दावा कर रही थी?"

"क्रान्ति मैडम जी थी।"

"क्रान्ति! ये कौन है...ओह...कहीं ये वो ही तो नहीं है, जिसे केशव पण्डित ने सजा दिलवाई?"

"हां, वो ही मुकेश बाबू।"

"तब मैं बाबा और बेटे के साथ स्विटजरलैंड घूमने गया हुआ था। डैडी जी ने फोन पर जिक्र किया था कि केशव पण्डित ने एक ऐसी औरत को पकड़कर सजा दिलवाई है, जिसके हाथ-पैर कटे हुये हैं, लेकिन फिर भी वो औरत बहुत खतरनाक किस्म की है। ये तो नहीं कह सकता कि क्रान्ति के दावे में कितना दम है—लेकिन उसके आत्म-विश्वास और हौंसले की दाद देनी होगी। इस क्रान्ति से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?"

"बहुत ही अजीबो-गरीब रिश्ता है मुकेश बाबू! वो मेरी मालकिन, मेरी अन्नदाता भी है और हम दोनों कई मर्तबा प्रेमी-प्रेमिका भी बने हैं।"

"क्या मतलब?" मुकेश उत्सुकता और कौतूहलता के झूले झूलते हुये बोला—"मुझे अपने और क्रान्ति के सम्बन्धों की बाबत बतलाओ। साथ ही क्रान्ति के बारे में भी बतलाओ। इस क्रान्ति ने मेरी दिलचस्पी बढ़ा दी है।"

अंगारा ने सिगरेट में कश लगाया और फिर मुकेश को क्रान्ति के बारे में सब कुछ बतलाने लगा।

मुकेश की हैरानी बढ़ती जा रही थी और वो क्रान्ति के इतिहास में पूरी दिलचस्पी ले रहा था।

❑❑❑
❑❑❑

विशेष नोट: यदि आप 'केशव पण्डित' के नियमित पाठक हैं तो आपने 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित केशव पण्डित का 114वां उपन्यास 'शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं' पढ़ा ही होगा—जो कि एक ही भाग में सम्पूर्ण उपन्यास था। उसी उपन्यास में 'क्रान्ति' की एन्ट्री हुई थी और दिमाग की उस लोमड़ी ने दिमाग के जादूगर केशव पण्डित के साथ दिमाग का बहुत ही खतरनाक खेल खेला था और कथानक के अन्त में केशव ने क्रान्ति को तेजाब से नहला दिया था।

फिर 'धीरज पॉकेट बुक्स' से 'केशव पण्डित' का 115 वां उपन्यास 'कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। ये भी एक भाग में सम्पूर्ण उपन्यास था, लेकिन इसमें भी क्रान्ति मौजूद थी, जो कि तेजाब से झुलसने के बाद

"हलो...हलो...!" स्पीकर से निकलने वाली आवाज क्रान्ति की ही थी।

"न...नमस्ते...मैडम जी।" आवाज भर्रा उठी दैत्याकार अंगारा की।

"कैसे हो अंगारा? तुम्हारी आवाज भर्राई हुई क्यों है?"

"वो...क्या है कि कई दिनों बाद आपसे बात हो रही है ना। दीदार तो पता नहीं कि होंगे कि नहीं! आप कैसी हैं मैडम जी? पैर भी नहीं रहे आपके...हाथ तो पहले से ही नहीं थे। हर वक्त यही सोचता रहता हूं कि आप खाना कैसे खाती होंगी? चाय-पानी कैसे पीती होंगी? ट्वायलेट या बाथरूम जाने में भी दिक्कत...।"

"नहीं...कोई दिक्कत नहीं होती अंगारा। यहां पर शान्ता बाई नाम की एक फ्रेन्ड मिल गई है। अभी भी मेरे साथ ही बैठी है। शान्ता बहन और इनकी चेलियां मेरी हेल्प करती रहती हैं। तुमसे फोन पर बात कराने का जुगाड़ भी शान्ता बहन ने ही किया है। खैर ये बोलो कि क्या तुमने टी० वी० पर माफिया किंग यमराज का इन्टरव्यू देखा था?"

"हां, देखा था मैडम जी।"

"यमराज दुनिया का सबसे अमीर और शक्तिशाली आदमी है अंगारा।"

"जी...मैडम जी।"

"जानते हो कि उसने अभी तक शादी नहीं की है?"

"जी...मैडम जी!"

"जानते हो कि उसने अभी तक शादी क्यों नहीं की है?"

"हां, जानता हूं मैडम जी! उसने कसम खाई हुई है कि कोई लड़की केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित कर देगी तो वो उसी के साथ शादी करेगा।"

"मुझे जेल से निकालने का जुगाड़ करो अंगारा।"

"कोशिश करूंगा मैडम।"

"कोशिश नहीं...!" क्रान्ति की आवाज मानों फुंफकार में परिवर्तित हो चली, "तुम्हें ये काम करना ही करना है। तुम्हें खुद भी जेल से निकलना है और मुझे भी निकालना है। हालांकि

जेल में हमारे पास पैसे नहीं हैं। लेकिन बाहर तुम्हारे घर पर नगदी के साथ ज्वैलरी और डायमंडस भी हैं। किसी से कॉन्टेक्ट करो। वो जो भी कीमत मांगेगा, उसे मिल जायेगी।"

"मैं अपने से ज्यादा आपके वास्ते फिक्रमन्द हूं मैडम जी। पूरी कोशिश करूंगा कि आपको जेल से बाहर निकालने का कोई बन्दोबस्त करूंगा।"

"जल्द-से-जल्द अंगारा! मुझे यमराज की शर्त को पूरा करना है।"

□□□
□□□

फोन से मानो क्रान्ति की आवाज नहीं, फुंफकारती हुई कोई जहरीली नागिन ही निकली हो।

अंगारा ही नहीं चिहुंका, मांगी के साथ मुकेश भी चिहुंक उठा।

"क्या हुआ अंगारा?"

क्रान्ति की आवाज उभरी।

"कु...कुछ नहीं मैडम जी।"

"नहीं...तुम झूठ बोल रहे हो अंगारा! मैंने यमराज की शर्त पूरी करने की बात की है तो तुम्हें यूं ही लगा होगा कि मेरा दिमाग खराब हो गया है—मैं अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठी हूं...क्यों?"

"न...नहीं! मैडम जी...नहीं...!"

"बौखलाने की कोई जरूरत नहीं अंगारा। तुम तो क्या...कोई भी मेरे दावे पर चौंक उठेगा और मेरे मेंटल बैलेंस पर डाउट करेगा। मेरे हाथ और पैर कटे हुये हैं। उम्रकैद की सजा काटने के लिये जेल में बन्द हूं और दावा कर रही हूं यमराज की शर्त पूरी करने का। शर्त भी कोई मामूली नहीं। दिमाग के जादूगर...कानून के पण्डित केशव को कत्ल के इल्जाम में फंसाना और उसे फांसी की सजा दिलवाना। लेकिन मैं इस शर्त को पूरा करूंगी। सुन रहे हो ना तुम अंगारा?"

"जी...जी मैडम जी!"

"मैं ओवर कान्फीडेन्स की शिकार नहीं हूं— ना ही मेरा

भी बच गई थी और केशव पण्डित से इन्तकाम लेने के लिये पाकिस्तानी संस्था 'आई० एस० आई०' में सम्मिलित हो गई। इस उपन्यास के अन्त में केशव के दोस्त और इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे ने क्रान्ति के हाथों को कोहनियों से काट डाला था।

फिर 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' में केशव पण्डित का 116वां उपन्यास 'बच्चों की बनेगी बटालियन' प्रकाशित हुआ। ये भी एक भाग में सम्पूर्ण उपन्यास था, लेकिन इसमें भी क्रान्ति मौजूद थी और उसने केशव पण्डित से इन्तकाम लेने के लिये बच्चों की बहुत ही खतरनाक बटालियन बनाई थी। इस उपन्यास के अन्त में एक बम विस्फोट में क्रान्ति की दोनों टांगें बुरी तरह जख्मी हो गई थीं और डॉक्टरों ने उसकी जान बचाने के लिये टांगों को घुटनों से काट दिया था। इसी के साथ केशव ने क्रान्ति को अदालत में उम्रकैद और उसके वफादार अंगारा को फांसी की सजा मुकर्रर करवाई थी। अगर आपने केशव पण्डित द्वारा लिखित 'शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं', 'कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा' और 'बच्चों की बनेगी बटालियन' नामक उपन्यास नहीं पढ़े तो कृपया अवश्य ही पढ़ियेगा। तीनों उपन्यासों के कथानक अलग-अलग हैं और अपने आप में सम्पूर्ण हैं, जिस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास भी एक ही भाग में सम्पूर्ण उपन्यास है।

□□□
□□□

बलवन्त सेठ अपने बंगले के तहखाने में बने गुप्त कमरे में पहुंचा और ट्रांसमीटर वाली आलमारी खोली।

उस इयर फोन को सिर पर फिट किया, जिसके साथ माइक भी जुड़ा हुआ था और वो होंठों के सामने था, ताकि बोलने पर आवाज को कैच करके आगे के लिये चलता कर दे।

सैट को ऑन करने पर एक नॉब को दायें-बायें घुमाते हुये वो बोलने लगा—"एम० डी० कॉलिंग एम० डी० कॉलिंग...।"

"यस, एम० सी० स्पीकिंग।" माफिया चीफ की महिला सरीखी आवाज उभरी, "बोलो, क्या बात है एम० डी०? ओवर।"

"जेल में मेरे बेटे की मुलाकात अंगारा नाम के एक मुजरिम से हुई—जो कि कभी सुरेन्द्रनगर के माफिया बलदेव ठाकुर के गैंग में काम किया करता था... ।"

"हां, हमने अंगारा को देखा है...!" दूसरी तरफ से माफिया चीफ बलवन्त की बात को काटकर बोला, "बलदेव ठाकुर अपने अन्डर में ही काम किया करता था। अंगारा बहुत ही तगड़ा और काला-कलूटा है। वो देखने में ही राक्षस जैसा नहीं लगता, बल्कि उसमें ताकत भी राक्षस जैसी ही है। केशव पण्डित ने उसे पकड़कर फांसी की सजा सुनवाई है। अंगारा के साथ बलदेव ठाकुर की छोटी बहन क्रान्ति को भी केशव ने उम्रकैद की सजा दिलवाई है। वो भी महिला जेल में है।"

"तो क्या आप क्रान्ति को भी जानते हैं? ओवर।"

"हां, क्यों नहीं! बहुत ही खूबसूरत और स्मार्ट लड़की थी। बला की हसीन और सेक्सी! खतरनाक भी थी। लेकिन उसके दिमाग पर केशव पण्डित को हासिल करने की सनक सवार हो गई थी। केशव ने उसे तेजाब से नहलाकर बदसूरत कर दिया था। लेकिन क्रान्ति ने हार नहीं मानी थी। केशव से बदला लेने को वो आई० एस० आई० की कमांडर बन गई थी। इन्टर नेशनल क्रिमिनल अलफांसे ने उसके हाथ काट डाले थे। इस पर भी पट्ठी चैन से नहीं बैठी। उसने खतरनाक बच्चों की बटालियन बनाई और केशव के खिलाफ जंग लड़ती रही। लेकिन उसके नसीब ने साथ नहीं दिया। फिर जीत केशव की हुई और हाथों के बाद क्रान्ति ने अपने पैर भी खो दिये। लेकिन तुमने अंगारा और क्रान्ति की बात क्यों छेड़ी एम० डी०? ओवर।"

"क्रान्ति जेल से बाहर निकलना चाहती है। वो यमराज की शर्त को पूरा करने को उतावली हुई जा रही है।"

"व्हाट...?"

"जी, एम० सी० साहब! क्रान्ति का दावा है कि वो अपने दिमाग के दम पर केशव पण्डित को कोर्ट में कातिल साबित कर देगी। लेकिन इसके लिये उसका जेल से बाहर आना ज़रूरी है। उसने ये बात फोन पर अंगारा से की थी। अंगारा से क्रान्ति की बाबत जानकारी मिलने पर मेरे बेटे ने ये बात मुझसे कही

और कहा कि उसके साथ-साथ अंगारा और क्रान्ति को भी जेल से बाहर निकालने का बन्दोबस्त किया जाये। हमारे बेटे को लगता है कि क्रान्ति अपने दावे पर खरी उतर सकती है। वो केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित कर सकती है। आपका क्या ख्याल है एम० सी० साहब? ओवर।"

"इसमें तो कोई शक नहीं कि क्रान्ति कोई मामूली युवती नहीं है। वो जिद्दी, बहादुर और माइन्डेड है। केशव पण्डित से खार भी खाये बैठी है। वो कामयाब हो पायेगी कि नहीं, ये तो नहीं कहा जा सकता—लेकिन वो अपनी तरफ से पूरी कोशिश जरूर करेगी। यमराज जी भी चाहते हैं कि कोई लड़की उनकी शर्त को पूरा करे—क्योंकि शर्त पूरी होने पर ही वो शादी कर पायेंगे। यमराज जी भी केशव से खार खाये हुये हैं। अगर उन्होंने कसम ना खाई हुई होती तो इतने दिनों तक खामोश नहीं रहते और केशव पण्डित से बदला लेते। क्रान्ति उनकी शर्त पूरी करे या ना करे—लेकिन हम उसे केशव के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल तो कर ही सकते हैं। माफिया की सपोर्ट मिलने पर वो काफी खतरनाक हो जायेगी।"

"ले...लेकिन क्रान्ति तो अपाहिज है एम० सी०, साहब! उसके हाथ-पैर कटे हुये हैं। साथ ही वो तेजाब से झुलसकर बदसूरत भी हो गई। क्या यमराज जी उसके साथ शादी करेंगे? ओवर।"

"आजकल मेडिकल साइंस ने बहुत प्रोग्रेस कर ली है एम० डी०! आर्टीफिशियल ह्यूमन पार्ट्स् बनने लगे हैं, जो कि असली अंगों के जैसा ही काम करते हैं। प्लास्टिक और कॉस्मैटिक सर्जरी के ज़रिये किसी भी बदसूरत इन्सान का कायाकल्प किया जा सकता है—उसको खूबसूरत बनाया जा सकता है। फिर भी हम इस बाबत यमराज जी से बात करेंगे। अभी तो तुम अपने बेटे के साथ-साथ क्रान्ति और अंगारा को भी जेल से निकालने का बन्दोबस्त करो। तुम्हारे पास आदमियों की कोई कमी नहीं है। फिर भी जरूरत समझोगे तो हम भी तुम्हारी मदद करेंगे। क्या कहते हो? ओवर।"

"बज फरमाया आपने एम० सी० साहब! आपकी

परमिशन मिल गई है तो मैं अपने बेटे के साथ क्रान्ति और अंगारा को भी जेल से निकालने का बन्दोबस्त करता हूं। फिर देखेंगे कि जेल से बाहर आने पर क्रान्ति क्या करती है। वो कोई चमत्कार कर पाती है कि नहीं।"

"बिल्कुल! भले ही वो अपने मकसद में कामयाब ना हो, लेकिन कोशिश तो पूरी करेगी! वो केशव पण्डित की नाक में दम कर देगी—इतना भरोसा तो है हमें। ओ० के०...ओवर एंड ऑल...।"

□□□

□□□

दोपहर में मिलाई का वक्त था।

अंगारा से तो कोई मिलने आता नहीं था, लेकिन मांगी नामक कैदी की बीवी मिलने आई थी! इसी के साथ मुकेश की बीवी सुगन्धा अपने बेटे सौभाग्य के साथ मिलने आई थी।

मांगी लाल बीवी से मिलकर आ गया और खुले चौक में पीपल के वृक्ष के नीचे बने सीमेन्ट के गोलाकार चबूतरे पर बैठ अंगारा के पास जा बैठा।

दोनों ने सिगरेट सुलगा ली।

लगभग दस मिनट पश्चात् मुकेश भी वापिस लौटा। उसका खिला हुआ चेहरा और चमक से भरी आंखें जाहिर कर रही थीं कि वो काफी खुश था।

"बहुत खुश दिखलाई पड़ रहे हो मुकेश बाबू...।" पूछा अंगारा ने—"जबकि आज के अखबार में लिखा था कि आपके डैडी ने आपसे सम्बन्ध तोड़ लिया है और अपनी जायदाद से बेदखल भी कर दिया है।"

मुस्कराते हुये मुकेश ने ट्रिपल फाइव की सिगरेट सुलगा ली और धुएं के छल्ले छोड़ने पर बोला—"ऐसा करना डैडी की मजबूरी थी। वो नेता हैं। वो सत्ताधारी पार्टी के सांसद हैं। वो केन्द्रीय मन्त्री बनने की जुगत में लगे हैं। मेरे पकड़े जाने से उनके पोलेटिक्स कैरियर पर फर्क पड़ रहा था। इसीलिये उन्होंने ये ड्रामा किया। मीडिया के जरिये ये भी कहा कि अगर मुझे फांसी की सजा मिलेगी तो उन्हें खुशी होगी। उन्होंने दशरथ

सिंह के घर जाकर उससे मेरे किये की माफी मांगने का नाटक भी किया है और सुरभि को श्रद्धांजली भी दी है। लेकिन भीतर-खाने वो मुझे बचाने की पूरी चेष्टा कर रहे हैं। मेरी वाइफ बतला रही थी कि डैडी जी ने मुम्बई के सबसे घाघ, स्याने, चालाक और हरामी वकील पारस जैन को हायर किया है। पारस जैन ने आज तक मुजरिमों के ही मुकदमें लड़े हैं। वो नकली सबूतों, झूठे गवाहों का इस्तेमाल करता है। दूसरे पक्ष के गवाहों को खरीदता है। गुन्डों से किडनेप करा लेता है। कत्ल तक करा देता है। कहने का मतलब ये है कि उसे भले ही कुछ भी करना पड़े लेकिन वो अपने मुवक्किल को निर्दोष साबित करके बाइज्जत बरी करा ले जाता है। तुम्हारे लिये भी गुड न्यूज है अंगारा।"

"वो क्या मुकेश बाबू?"

"डैडी जी ने पारस जैन एडवोकेट को तो इसलिये हायर किया है कि मुझे जेल से निकालने में देरी हो गई तो अदालत की कार्रवाई होगी। अदालत में कोशिश की जायेगी कि मुझे निर्दोष साबित कर दिया जाये।"

"केशव पण्डित के होते हुये?"

"हालांकि पारस जैन हरामी किस्म का वकील है। वो आज तक कोई केस नहीं हारा। लेकिन आज तक उसका मुकाबला केशव पण्डित के साथ नहीं हुआ है। इसीलिये डैडी पारस जैन के भरोसे ही नहीं हैं। वो मुझे जेल से फरार कराने की भी तैयारी कर रहे हैं। मेरे साथ-साथ तुम्हें और क्रान्ति को भी जेल से निकाला जायेगा।"

"सच...?"

"बिल्कुल सच! सुगन्धा के जरिये डैडी ने कहलवाया है कि तुम दोनों को भी जेल से निकाला जायेगा। तुम और क्रान्ति केशव पण्डित के दुश्मन हो। केशव हमारा भी...माफिया किंग यमराज जी का भी दुश्मन है। तुम्हें और क्रान्ति को माफिया में शामिल कर लिया जायेगा। क्रान्ति को यमराज जी की शर्त पूरी करने का पूरा मौका दिया जायेगा और उसकी हर तरह से मदद की जायेगी। तुम फोन पर ये खुशखबरी क्रान्ति को दे देना।

साथ ही ये भी कह देना कि वो अभी से प्लान बनाना शुरू कर दे। सोचना शुरू कर दे कि यमराज जी की शर्त पूरी करने के लिये यानि केशव पण्डित को कातिल साबित करने के लिये क्या-क्या करना है, कैसे करना है?"



मानो बिस्तर नहीं कोई ईख का खेत था और हाथी और हथिनी की जोड़ी ने जमकर उत्पात मचाया था।

कमरे में फिलहाल तूफान के गुजर जाने के बाद वाली खामोशी व्याप्त थी।

यमराज और मोनिका।

दोनों ही जन्मजात अवस्था में थे।

पसीने की बरसात में स्नान किये हुये।

यूं ही हांफ रहे थे कि मानो तपती दोपहर में हजार मीटर की फर्राटा दौड़ा लगाकर आये हों।

चेहरों पर थकान, लेकिन आंखों में परम सन्तुष्टि वाली चमक थी—मानो खूब भागा-दौड़ी के बाद बिल्ली चूहे का शिकार करने में कामयाब हुई हो। उठ बैठकर मोनिका ने साइड टेबल पर रखी डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर पतले-गुलाबी होठों के दरमियान फंसाई और रत्न-जड़ित सोने के लाइटर की नीली लौ से उसका अग्रिम सिरा सुलगा लिया।

तीन कश लगाने पर सिगरेट को यमराज के स्याह व मोटे होठों के दरमियान फंसाकर बोली—"अगर बुरा ना मानो तो कुछ पूछूं डियर?"

"तुम्हारी किसी बात का कभी बुरा माना है क्या डार्लिंग? चाहे जो पूछ लो।"

"तुमने मुझसे कभी कोई बात नहीं छिपाई—सिवाय अपनी उस प्रतिज्ञा वाली बात को छोड़कर। ऐसा क्या हुआ था कि तुम्हें ये प्रतिज्ञा करनी पड़ी कि कोई औरत केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित करेगी तो तुम उसी के साथ शादी करोगे—वरना शादी करोगे ही नहीं? आखिर केशव पण्डित से कौन-सी दुश्मनी हो गई थी? ऐसा उसने क्या कर दिया था कि

तुम्हें ऐसी प्रतिज्ञा करनी पड़ गई थी?"

यकायक ही गम्भीर हो चला यमराज और सिगरेट में कश लगाकर बोला—"काफी लम्बा किस्सा है। छोड़ो भी डार्लिंग।"

"नहीं! मैं सारी बातें जानने को उत्सुक हूं। शॉर्टकट में ही सही, लेकिन मुझे बतलाओ...प्लीज! क्या तुम मेरी इस जरा-सी इच्छा को भी पूरी नहीं कर सकते?"

यमराज ने मोनिका के ऊपर से हाथ बढ़ाकर साइड टेबल पर से ऐश-ट्रे उठाकर अपने पेट पर रख ली और उसमें सिगरेट की राख झाड़कर बोला—"तुम जिद करती हो तो बतला देता हूं डार्लिंग। जब बतला ही रहा हूं तो अपने बारे में वो सब बातें भी बतला देता हूं, जो कि तुम्हें मालूम नहीं हैं। हिन्दुस्तान का एक स्टेट है राजस्थान। वहां के जैसलमेर जिले के एक गांव में जन्म हुआ था मेरा। पिताजी एक कबीले के सरदार थे। दूसरा एक कबीला और भी था। दोनों के बीच पुश्तैनी दुश्मनी थी। दूसरे कबीले के सरदार जसवन्त ने मेरे पिताजी को धोखे से मार दिया था। पिताजी चोरी-छिपे अफीम खरीदकर बेचा करते थे। कबीले के ही एक आदमी बन्दा ने जसवन्त के हाथों बिकने पर पिताजी को कहा था कि एक व्यक्ति सस्ते दामों पर अफीम बेचना चाहता है। पिताजी बन्दा के साथ जंगल में चले गये थे और वहां जसवन्त ने हथियारबन्द लोगों के साथ पिताजी को घेरकर बेदर्दी के साथ मार दिया था। उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये थे। तब मेरी उम्र सोलह साल की ही थी, लेकिन परम्परा के मुताबिक मुझे पिताजी की जगह कबीले का सरदार बना दिया गया था। मेरी विधवा मां ने कहा था कि अगर मैंने अपने बाप की हत्या का बदला ना लिया तो वो मुझे अपना दूध नहीं बख्शेगी। सारी अफीम औने-पौने दामों में बेचकर और साथ ही मां के गहने बेचकर मैंने एक लाख रुपये इकट्ठा किये थे और उस इलाके के खतरनाक डाकू काले सिंह के साथ सैटिंग की थी। काले सिंह के पचास आदमी और मेरे कबीले के पचास लड़ाके। कुल सौ लोगों के साथ मैंने जसवन्त के कबीले पर हमला बोल दिया था। उस दिन जसवन्त की बेटी की शादी कबीले के ही एक लड़के के साथ हो रही थी। तबाही मचा दी

थी मैंने। कबीले के ढेर सारे लोगों को मारने पर हथियारों के दम पर जसवन्त को एक पेड़ के साथ बांध दिया था। फिर उसके बेटे और होने वाले दामाद को कत्ल करके उसकी दुल्हन बनी बेटी के साथ बलात्कार किया था। मेरे आदमियों ने भी उसके साथ तब तक मुंह काला किया था, जब तक कि उसने दम ना तोड़ दिया था।"

"बाप रे...!" मोनिका ने यमराज के होठों से सिगरेट निकालकर कश मारा और बोली—"सोलह साल की उम्र में ही तुम इतने खतरनाक थे?"

जहरीली किस्म की हंसी हंसकर बोला वह—"ये तो कुछ भी नहीं! कबीले की बाकी जवान लड़कियों और औरतों के साथ भी बलात्कार किया गया था और उन्हें मार दिया गया था। वहां पर वो गद्दार बन्दा भी था। उसे भी मारा था। उस पर और सरदार जसवन्त पर तेल छिड़ककर उन्हें जिन्दा ही जला दिया था। बाकी लोगों को भी मार दिया था। बूढ़ों से लेकर दूधमुंहे बच्चों तक को मार दिया था और कबीले की झोपड़ियों को आग लगा दी थी। जसवन्त के सिर को काटकर साथ ले आया था। और मां के चरणों में रख दिया था।"

"इन्ट्रेस्टिंग...!" मोनिका पूरी दिलचस्पी लेते हुये बोली—"क्या इतने बड़े नरसंहार के बाद पुलिस ने कुछ नहीं किया था?"

"पुलिस के हरकत में आने से पहले ही मैं अपनी मां और छोटे भाई के साथ वहां से भागकर महाराष्ट्र में आ गया था।"

"तुम्हारा छोटा भाई?"

"हां, विजयराज नाम था उसका। राजस्थान की पुलिस ने मुझे डाकू करार देकर मुझ पर दस हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया था। लेकिन मैं आज तक राजस्थान पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ा।"

"महाराष्ट्र में तुमने क्या किया था?"

"अपने पास जो जमा-पूंजी थी, उससे छोटा-सा मकान खरीदा था और हाईवे पर एक ढाबा खोल लिया था।"

"ढाबा? ये क्या होता है?"

"देहाती स्टाइल का होटल! लकड़ियों और छप्पर का बना हुआ! कुर्सी-मेजों की बजाय चारपाईयां होती हैं। ट्रक ड्राइवर उन्हीं चारपाइयों पर बैठकर खाना खाते हैं, चाय पीते हैं। शराब भी पी लेते हैं और सोकर आराम भी कर लेते हैं। इलाके का गुन्डा टप्पू टकला था, जो कि एक केस में जेल गया हुआ था। लेकिन उसके चेले उगाही करते थे। हर किसी की कमाई में से वो हिस्सा लेते थे, जिसे वहां की जुबान में हफ्ता वसूली कहा जाता था। वो मेरे होटल पर भी आये थे, लेकिन मैंने हफ्ता देने से मना कर दिया था। झगड़ा हुआ तो मैंने लोहे की रॉड उठाकर उन सभी की हड्डी-पसली तोड़ डाली थी। बाद में टप्पू टकला आया तो उसे भी मैंने ठोक-पीटकर हॉस्पिटल पहुंचा दिया था। ठीक होने पर टप्पू वापिस लौटा और मेरा चेला बन गया था। फिर वो मेरे वास्ते काम करने लगा था। होटल की आड़ में मैंने पहले शराब का धन्धा किया। फिर अफीम, चरस, हेरोइन, स्मैक वगैरा भी बेचने लगा था।"

"पुलिस ने कुछ नहीं किया था?"

"पुलिस स्टेशन में मेरी रकम पहुंच जाती थी। मैंने काफी कमाई की और अपने छोटे भाई विजय राज को पढ़ने के लिये मुम्बई भेज दिया था। एक ट्रक की चपेट में आकर मां मर गई तो मैं ही विजयराज का माई-बाप बन गया था। उसे किसी चीज की कमी नहीं होने देता था। उसकी हर फरमाईश पूरी करता था। उसे खूब ऐश कराई। पहले मोटर साइकिल और फिर कार भी खरीद कर दी थी। बाद में मुम्बई के एक गैंगस्टर से मुलाकात हुई तो वो मुझे चवन्नी का यानि पच्चीस फीसदी का पार्टनर बनाकर मुम्बई ले गया था। उसका काम काफी बड़ा था और पूरी मुम्बई में फैला हुआ था। मेरी बढ़िया कमाई हुई। एक बंगला बना लिया था। नौकर-चाकर रख लिये थे। अपने वास्ते भी कार खरीद ली थी। कॉलेज में झगड़ा होने पर विजयराज के हाथों एक स्टूडेन्ट का कत्ल हो गया था। नाबालिग होने की वजह से उसे बच्चा जेल भेजा गया था। जेल से लौटने पर वो भी मेरे साथ मेरे धन्धे में जुड़ गया था। तब तक मेरा नाम नागराज से यमराज पड़ चुका था।"

"भला वो कैसे?"

"अपने दुश्मनों को जिन्दा नहीं छोड़ता था मैं। जान से मार देता था और वो भी बुरी तरह तड़पा-तड़पाकर। मेरे पार्टनर जोगावर ने ही मुझे यमराज नाम दिया था। उसकी बेटी मेरे भाई विजयराज से मुहब्बत करने लगी थी। सो हमने विजयराज और सारिका की शादी करा दी थी।"

"लेकिन तुम्हारा केशव पण्डित से पंगा कब हुआ—कैसे हुआ?"

"जोगावर और माफिया के बीच समझौता हो गया था और जोगावर को डॉन की कुर्सी पर बैठा दिया गया था। मैं उसका राइट हैन्ड और कमांडर था। लेकिन किसी की गुलामी करना अपनी फितरत में ही नहीं था। सो मैंने जोगावर को मार दिया था।"

"तुमने?" चौंकी मोनिका।

"हां, मैंने।" कुत्सित किस्म की मुस्कान के साथ ही बोला यमराज, "जोगावर की गाड़ी में बम रख दिया था। बम ब्लास्ट होने पर गाड़ी समेत जोगावर उड़ गया। इस बात की जानकारी मेरे अलावा किसी को नहीं थी। अपने भाई विजयराज तक को भी नहीं बताया था। जोगावर के बाद मैं डॉन बन गया था। विजयराज को अपना कमान्डर और उसके साले मनमोहन को छोटा कमांडर बना दिया था।"

"मनमोहन?"

"हां! जोगावर का बेटा और विजयराज की बीवी सारिका का जुड़वा भाई। वो काफी बहादुर था और मार्शल आर्ट में भी माहिर था। फिर एक दिन मैं अमेरिका में होने वाली सभी डॉनों की मीटिंग में शामिल होने के लिये अमेरिका आया था। मीटिंग तब के माफिया किंग रोज डायर्स ने कॉल की थी, जो कि गॉड फादर के नाम से मशहूर था। मीटिंग का एजेन्डा ये था कि माफिया को समूची दुनिया में फैलाने और शक्तिशाली बनाने के लिये क्या किया जाये। सभी ने अपनी-अपनी राय रखी थी। लेकिन रोज डायर्स को मेरी राय बहुत पसन्द आई थी। उसने पीठ थपथपाकर मुझे शाबाशी दी थी। मीटिंग के बाद मेरा यहीं

अमेरिका में एक्सीडेन्ट हो गया था। बहुत चोटें आई थीं। दायें पैर की हड्डी भी टूट गई थी। डॉक्टरों ने बोल दिया था कि कम-से-कम तीन महीने तक तो मुझे हॉस्पिटल में ही रहना पड़ेगा।"

"फिर मुम्बई में क्या हुआ होगा?"

"मैंने फोन पर छोटे भाई विजयराज को बोल दिया था कि मेरे लौटने तक वो ही कम्पनी के सारे काम सम्भाले। विजयराज ने डॉन की जिम्मेदारी ले ली थी और अपने साले मनमोहन को अपना कमांडर और सलाहकार बना लिया था। उन्हीं दिनों विजयराज पहली मर्तबा बाप बनने वाला था। सारिका गर्भवती थी। काश...काश कि मेरा एक्सीडेन्ट ना हुआ होता और मुझे अमेरिका में ना रुकना पड़ता।"

"क्यों...क्या हुआ था?"

"सारी गड़बड़ी उन दिनों हुई—मेरी गैरमौजूदगी में हुई। केशव पण्डित की एन्ट्री भी उन्हीं दिनों हुई थी। तब वो इतना बड़ा वकील, इन्वेस्टीगेटर और फाइटर नहीं था। लेकिन फिर भी वो काफी नाम कमा रहा था और मुजरिमों के खिलाफ जंग भी लड़ रहा था। ये लगभग बारह साल पहली बात होगी।"

"हुआ क्या था?"

"होम मिनिस्टर गोविन्द सहारा ने खुद मुख्यमंत्री बनने के लिये विजयराज को मुख्यमंत्री के कत्ल की सुपारी दी थी। विजयराज ने अपने साले मनमोहन को ही मुख्यमंत्री के कत्ल की जिम्मेदारी सौंपी थी। और फिर उसके बाद...।"

यमराज मानो अतीत की गहराइयों में खोता चला गया।

❑❑❑

❑❑❑

पांच फुट दो इंच कद वाले मनमोहन का जिस्म भी छरहरा था—लेकिन उसके जिस्म में जान थी।

स्याह रंग वाले मनमोहन का चेहरा और बिल्लौरी रंग की छोटी-छोटी लेकिन गिद्ध-सी पैनी आंखों को देखकर ही अन्दाजा लगाया जा सकता था कि वो छंटा हुआ मुजरिम था।

वह अपनी रखैल सविता के फ्लैट पर मौजूद था। गिलास

में भरी व्हिस्की को पेट तक और सिगरेट के कसैले धुऐं को फेफड़ों तक पहुंचाते हुये सविता के थिरकते जिस्म को घोलकर पी जाने वाली नजरों से घूरे जा रहा था।

सविता का चेहरा और कम वस्त्रों वाला जिस्म ही खूबसूरत नहीं था, बल्कि म्यूजिक सिस्टम से निकलते गाने 'पिया तू अब तो आजा...' वाले गाने की धुन पर गजब का डांस भी कर रही थी।

मनमोहन ने एक होटल में सविता को डांस करते देखा था तो मुग्ध हो गया था और डबल सेलरी का लालच देकर सविता को अपने जीजा विजयराज के भाई यमराज के होटल में डांस करने को राजी कर लिया था।

फिर उसके और सविता के अवैध सम्बन्ध हो गये थे और वो सविता पर दिल खोलकर खर्च कर रहा था। कीमती सामानों से भरा वो फ्लैट खरीदकर दिया था। एक कार भी खरीदकर दी थी और आये दिन कीमती तोहफे भी देता रहता था।

म्यूजिक सिस्टम बन्द करके सविता ने एक तौलिया उठाया और मनमोहन की बगल में सोफे पर बैठकर जिस्म पर उभर आये पसीने को पोंछते हुये बोली—"हम औरतों की जिन्दगी में हर महीने चार-पांच दिन तकलीफों वाले आते हैं। पेट में दर्द था। लेकिन तुमने जिद की तो मुझे डांस करना पड़ा।"

"सॉरी, डार्लिंग..." मनमोहन कांच का गिलास सविता के थोड़ा मोटे, लेकिन रसीले व सेक्सी होठों से लगाकर बोला, "तुम बोलो तो किसी लेड़ी डॉक्टर के पास लिये चलता हूं।"

"नहीं, इसकी जरूरत नहीं...!" व्हिस्की सिप करके सविता ने कहा, "डॉक्टरनी ही क्या कर लेगी? पीरियड में तकलीफ तो होती ही है। खैर, होम मिनिस्टर गोविन्द सहाय वाले काम का क्या हुआ? उसने चीफ मिनिस्टर को उड़ाने के लिये एक करोड़ की मोटी रकम दी है?" पूछने पर सविता ने मनमोहन से सिगरेट ले ली और कश लगाने लगी।

"माफिया वाले जब किसी काम की सुपारी ले लेते हैं तो उसे पूरा भी करते हैं डार्लिंग।" जवाब देकर मनमोहन ने व्हिस्की की घूंट भरी और खाली गिलास मेज पर रख दिया।

"चीफ मिनिस्टर को मारना कोई हंसी-खेल नहीं है मनमोहन डार्लिंग। उसकी सिक्योरिटी के कड़े इन्तजाम रहते हैं। इस काम के लिये प्लान बनाना होगा और कई आदमियों की जरूरत पड़ेगी।"

"नहीं...ऐसा कुछ नहीं है सविता डार्लिंग।" व्हिस्की के नशे की वजह से थोड़ा झूमते हुये ही बोला मनमोहन—"इस काम की जिम्मेदारी मैंने ली है। मैं अकेला ही इस काम को अन्जाम दूंगा।"

"तुमने...!" चौंकी सविता और हैरानी में पड़ी हुई बोली, "तुम चीफ मिनिस्टर को उड़ाओगे? वो भी अकेले...?"

"तो क्या हुआ? तुम तो ऐसे चौंक रही हो कि मानो कोई मुश्किल काम हो।"

"क्या चीफ मिनिस्टर का कत्ल करना मुश्किल काम नहीं है?"

"दूसरे लोगों के लिये होगा—मेरे लिये नहीं है। क्या समझती हो मुझे? माफिया का बड़ा ओहदेदार हूं। आजकल तो मुझे कमान्डर की जिम्मेदारी भी मिली हुई है। खुद मैंने ही...हिच्च ये जिम्मेदारी ली है। क्या तुम्हें मेरी काबिलियत पर शक है?"

"नहीं, कतई नहीं डार्लिंग। तुम बहुत ही पहुंची हुई चीज हो। कब करोगे चीफ मिनिस्टर का खात्मा?"

"कल ही।"

"कल ही...इतनी जल्दी? प्लान क्या है तुम्हारा?"

❑❑❑
❑❑❑

"मिस्टर पण्डित ने मेरे मुवक्किल राजेश गुप्ता जी पर सरासर झूठा इल्जाम लगाया है योर ऑनर...।" चश्माधारी व अधेड़ उम्र वाला वकील चहलकदमी-सी करते हुये उस कठघरे के करीब पहुंचा, जिसके भीतर व्हीलचेयर पर तीस वर्षीय सांवली रंगत वाला युवक बैठा हुआ था। वहां पहुंचकर पलटा और जज साहब से सम्बोधित होकर बोला, "तीन महीने पहले मिस्टर राजेश गुप्ता की कार सामने से आ रहे ट्रक से टकरा गई थी। बड़ा ही भयंकर किस्म का एक्सीडेन्ट था। भगवान

की कृपा से इनकी जान तो बच गई थी—लेकिन रीढ़ की हड्डी में चोट लगने के कारण ये चलने-फिरने के काबिल ना रहे थे। चलना-फिरना तो दूर की बात रही, ये उठकर खड़े भी नहीं हो सकते। मैंने अदालत में डॉक्टर झुनझुनवाला की मेडिकल रिपोर्ट भी प्रस्तुत की है, जिसके मुताबिक मिस्टर राजेश गुप्ता सहारा लेकर भी खड़े नहीं हो सकते। अपने पैरों को हिला भी नहीं सकते। खों...खों...खों...।"

खांसी उठने पर डिफेंस लायर भरत शाह ने थोड़ी देर के लिये अपनी वाणी को विश्राम दिया, फिर खांसी रुकने पर बोला—"क्षमा चाहूंगा योर ऑनर! कुछ दिनों से तबियत खराब है। नजले-जुकाम के साथ खांसी की भी शिकायत है। खैर—मेरे मुवक्किल पर इल्जाम ये है कि ये अपने पड़ोसी अतुल शर्मा के घर पर पहुंचे और उसकी खूबसूरत बीवी अलका की इज्जत पर हमला बोल दिया। अलका के पति अतुल शर्मा को उस दिन बाई प्लेन दिल्ली जाना था। लेकिन मौसम खराब होने की वजह से एयर लाइंस की सभी फ्लाइट कैंसिल हो गई थीं। अतुल शर्मा घर वापिस लौट आये। अलका की चीखो-पुकार सुनने पर उन्होंने मेनगेट खोलने की चेष्टा की लेकिन वो भीतर से बन्द था। एक खिड़की खुली मिल गई तो अतुल शर्मा उससे भीतर दाखिल हुये और मिस्टर राजेश गुप्ता से भिड़ गये। अतुल शर्मा ने अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर निकाली, लेकिन मिस्टर राजेश गुप्ता ने रिवॉल्वर छीनकर अतुल शर्मा को शूट कर दिया। ये देख अलका मारे सदमे के बेहोश हो गई। मिस्टर राजेश गुप्ता ने किसी कपड़े से रिवॉल्वर पर से अपने फिंगर प्रिंट्स पोंछ दिये थे। इसी के साथ दूसरे स्थानों पर से भी अपने फिंगर-प्रिंट और फुट-मार्क्स पोंछ डाले थे और अपने घर को चले गये थे...खों...खों...खों।"

काफी देर तक खांसता रहा भरत शाह और फिर बोला—"जैसा कि मैं पहले भी अदालत को बतला चुका हूं योर ऑनर कि अलका एक चरित्रहीन औरत है। मैंने चार ऐसे गवाहों को भी पेश किया है, जिन्होंने बतलाया कि वो अलका के साथ मुंह काला कर चुके हैं। एक बार नहीं, कई-कई बार...।"

"ये...ये झूठ है, बकवास है।" दर्शक दीर्घा से सफेद साड़ी वाली पच्चीस वर्षीय, खूबसूरत युवती उठी और चिल्लाकर बोली—"वकील साहब मुझ पर झूठा लांछन लगा रहे हैं।"

"चारो गवाहों ने ये भी बतलाया कि अलका अपने ग्राहक को खुश करने के लिये मोटी रकम भी वसूलती है। अलका के पति अतुल शर्मा को भी ये पता था। वो अलका को रोकते थे। अलका नहीं मानती थी। अतुल शर्मा ने कई बार अलका की पिटाई की थी। मेरे मुवक्किल मिस्टर राजेश गुप्ता भी अलका का विरोध करते थे। कई मर्तबा अलका को भला-बुरा भी बोल चुके थे। सो अलका ने अपने पति अतुल शर्मा को कत्ल करके इल्जाम मेरे मुवक्किल पर लगा दिया।"

"ये...ये झूठ है। इस कमीने राजेश को बचाने के लिये वकील साहब मुझ पर झूठे इल्जाम लगा रहे हैं। उस दिन राजेश ने मेरी इज्जत लूटने की कोशिश की थी। मेरे पति फ्लाइट कैंसिल होने पर घर वापिस लौटे और उन्होंने राजेश को रिवॉल्वर दिखलाकर कहा था कि अगर ये तुरन्त ही नहीं चला गया तो वो गोली मार देंगे। तब राजेश ने उनसे रिवॉल्वर छीनकर उन्हें गोली मार दी थी।"

"ऐसा हो ही नहीं सकता।" भरत शाह अलका की तरफ पलटकर बोला, "मिस्टर राजेश गुप्ता व्हील चेयर से उठ ही नहीं सकते। वो अपने पैर तक नहीं हिला सकते। इसलिये ये मुमकिन ही नहीं। तुम अपने गुनाहों को छिपाने के लिये ही उन पर झूठे और बेबुनियाद इल्जाम लगा रही हो। लेकिन तुम ये भूल रही हो कि अदालत या कानून मगरमच्छी आंसुओं के चक्कर में पड़कर फैसला नहीं करता। अदालत का निर्णय सबूतों या गवाहियों के दम पर होता है। क्या तुम अपने इल्जाम को साबित कर सकती हो?"

अलका ने कसमसाकर राजहंस जैसे सफेद दांतों से गुलाब की पंखुड़ी से अधर को कुचला, फिर आंसू भरी आंखों से केशव को यूं देखा कि मानो कहना चाह रही हो कि वो ही उसकी मदद करे।



लगभग सत्ताईस वर्षीय केशव पण्डित!

अपनी झील-सी नीली आंखों से उसने अलका को देखा और आंखों की जुबान से ही उसको आश्वस्त रहने का इशारा करने पर उठ खड़ा हुआ।

दर्शक दीर्घा में पच्चीस वर्षीय सोफिया भी मौजूद थी जिसकी गोद में दो वर्षीय आशीर्वाद बैठा हुआ था।

काले चौगे को दुरुस्त करने पर केशव जज साहब से मुखातिब होकर बोला—"मैं मिस्टर भरत शाह द्वारा पेश किये चारो गवाहों रामकरण, जयन्त, अजीत और मनोहर को विटनेस बॉक्स में बुलाना चाहूंगा मीलॉर्ड।"

"इजाजत है! चारों गवाह विटनेस बॉक्स में आ जायें।" जज साहब का गम्भीर स्वर!

दर्शक दीर्घा में से चार युवक उठे और चलकर विटनेस बॉक्स में जा खड़े हुये।

भरत शाह ने केशव को देखकर उसकी तरफ यूं मुस्कान उछाली कि मानो कहना चाह रहा हो कि ...बच्चू...तू मेरे गवाहों को हिला नहीं पायेगा।

प्रत्युत्तर में केशव भी यूं मुस्कराया कि मानो कह रहा हो...देख तो भरत शाह मैं क्या करता हूं। विटनेस बॉक्स में खड़े चारों गवाह चिन्तित और घबराये हुये से थे। उन्होंने जब अपने वकील भरत शाह की तरफ देखा तो भरत शाह ने आंखों ही आंखों में हौंसला व हिम्मत बनाये रखने का इशारा किया।

"रामकरण, जयन्त, मनोहर, अजीत", विटनेस बॉक्स के करीब पहुंचकर केशव चारों की आंखों से नजरों के पेंच लड़ाते हुये बोला—"क्या तुम लोग ये बात जानते हो कि अगर अदालत में साबित हो जाये कि किसी ने झूठी गवाही देकर कानून को गुमराह करने और धोखा देने का अपराध किया है तो उसे मुजरिम करार देकर सजा सुनाई जाती है और जेल भेज दिया जाता है?"

...की हालत खराब!

पसीने छूट चले।

पहले एक-दूसरे की तरफ देखा, फिर भरत शाह की तरफ!

—"झूठी गवाही देने के लिये कितने पैसे लिये तुम लोगों ने?"

"आई ऑब्जेक्ट, योर ऑनर।" भरत शाह सीट से उठकर चीखा-सा—"मिस्टर पण्डित ना सिर्फ मेरे गवाहों पर झूठा इल्जाम लगा रहे हैं, बल्कि इनका अपमान भी कर रहे हैं। क्या मिस्टर पण्डित के पास कोई सबूत है कि मेरे गवाह झूठी गवाही दे रहे हैं?"

"हां, सबूत है मीलार्ड।"

भरत शाह चौंका, हड़बड़ाया और चिन्तित भी दिखलाई पड़ा।

जबकि चारों गवाहों की दशा पानी से भी पतली। सामने वाले कठघरे में व्हील चेयर पर बैठा राजेश गुप्ता भी व्याकुल दिखलाई पड़ा।

"मिस्टर पण्डित...!" जज साहब आंखों पर लगे नजर के चश्मे को दुरुस्त करके गम्भीर भाव से बोले, "क्या आपके पास कोई सबूत है कि ये चारों गवाह झूठे हैं?"



"यस मीलार्ड! मेरे पास सबूत है...।"

केशव के जवाब पर चारों गवाहों के चेहरों पर धूलभरी आंधी-सी चलने लगी।

राजेश गुप्ता पीलिया का मरीज़ नजर आने लगा—जबकि भरत शाह की आंखें सोचने वाली मुद्रा में सिकुड़ चलीं।

केशव अधेड़ उम्र के वकील रमाकान्त चोपड़ा के पास पहुंचा जिसका कि वो असिस्टेंट था, लेकिन स्वयं वकालत करने पर भी वो रमाकान्त को पूरा मान-सम्मान देता था।

रमाकान्त ने मुस्कराते हुये लैदर के छोटे से बैग से लाल रंग का मिनी टेप रिकॉर्डर निकालकर केशव को दे दिया और मुस्कराकर बोला—"गुडलक...केशव बेटे!"

"थैंक्यू...गुरुजी!" कहने पर केशव पलटा और जज

साहब से सम्बोधित होकर बोला—"मीलार्ड! कल मिस्टर भरत शाह ने इन चारों गवाहों को 'नीलम बार' में दावत पर बुलाया था। ये चारों गये भी थे। वहां पांचों ने बटर चिकन के साथ खाना खाने से पहले जमकर ड्रिंक भी किया था। मैं भी भेष बदलकर वहां गया था और इस टेप रिकॉर्डर में पांचों का वार्तालाप रिकॉर्ड कर लिया था। आपकी इजाजत हो तो मैं अदालत को इन पांचों का वार्तालाप सुना दूं?"

"इजाजत है।"

"थैंक्यू, मीलार्ड।" केशव ने सिर झुकाकर जज साहब का आभार व्यक्त किया और फिर टेप रिकॉर्डर का 'प्ले' वाला बटन दबा दिया—

"मनोहर, रामकरण, अजीत, जयन्त! कल तुम चारों की अदालत में गवाही है...।" शराब के नशे में डूबी उक्त आवाज भरत शाह की ही थी—"तुम चारों को पहले ही समझा चुका हूं कि क्या बोलना है..."

"आपने जो बतलाया हम अदालत में वो ही बोलेंगे वकील साहब। लेकिन हमें दस-दस हजार रुपये तो मिलेंगे ना?"

"हां, क्यों नहीं!"

"लेकिन हमें एडवांस चाहिये।"

"ठीक है। यहां से निकलेंगे तो तुम चारों को पांच-पांच हजार रुपये दे दूंगा। लेकिन मुझे बारी-बारी से ये बतलाओ कि तुम अदालत में क्या-क्या बोलोगे? पहले तुम बोलो मनोहर...।"

"ये...ये मेरी आवाज नहीं है योर ऑनर...!" भरत शाह बौखलकर बोला—"मिस्टर पण्डित अदालत को बरगलाने के लिये झूठी रिकॉर्डिंग सुना रहे हैं। ना जाने इस टेप में किसकी आवाज है।"

"आप चुप रहेंगे।" जज साहब ने चेतावनी भरे लहजे में कहा, "ये टेप असली है कि नकली—इसका निर्णय अदालत करेगी।"

"ले...लेकिन योर ऑनर...!"

"बैठ जाइये। सीट डाउन।"

भरत शाह कसमसाते हुये बैठ गया और बायीं हथेली पर दायें हाथ से घूंसे मारने लगा।

उधर टेप रिकॉर्डर में से मनोहर नामक गवाह की आवाज निकल रही थी, जो कि बतला रहा था कि वो अदालत में क्या बयान देगा।

फिर भरत शाह के पूछने पर बाकी के तीनों गवाहों ने भी बतलाया कि वो अदालत में क्या बोलेंगे, क्या बयान देंगे?

चारों गवाहों की सिट्टी-पिट्टी गुम थी।

उन पर पसीना कृपालु हो रहा था।

राजेश गुप्ता के चेहरे पर भी चिन्ता व व्याकुलता के चील-कौए मंडरा रहे थे।

"मिस्टर शाह...!" जज साहब की आवाज, "मिस्टर पण्डित द्वारा सुनाये गये वार्तालाप के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे? आवाजें तो आपकी और इन चारों गवाहों की ही मालूम पड़ती हैं।"

"न...नहीं योर ऑनर। ये टेप झूठा है। ऐसे मिमिक्री आर्टिस्टों की कमी नहीं है, जो कि किसी की भी आवाज की हू-ब-हू नकल कर सकते हैं। मिस्टर पण्डित ने भी ऐसे ही आर्टिस्टों की मदद से ये टेप तैयार की है। ये आवाजें मेरी और मेरे गवाहों की नहीं हैं।"

मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला।

उस शिकारी के जैसी ही मुस्कान थी, जो शिकार को अपने जाल में फंसते देख खुश हो जाता है।

"मिस्टर पण्डित!" पूछा जज साहब ने—"अदालत ये कैसे मान ले कि टेप रिकॉर्डर में मिस्टर शाह और उनके गवाहों की ही आवाजे हैं? आप साबित कर सकते हैं?"

❑❑❑

❑❑❑

एडवोकेट भरत शाह, अभियुक्त राजेश गुप्ता, चारों गवाहों के साथ जज साहब और कोर्टरूम में मौजूद तमाम वकील व दर्शक भी केशव की तरफ देखने लगे।

अप्सरा-सी खूबसूरत सोफिया और दो वर्षीय नन्हा

आशीर्वाद भी मानो अदालत की कार्रवाई को समझ रहा था।

"यस मीलॉर्ड!" मुस्कराकर बोला केशव—"मैं साबित कर सकता हूं कि टेप रिकॉर्डर में मिस्टर भरत शाह और इनके चारों गवाहों की ही आवाजें हैं।"

"क...कैसे साबित करोगे?" भरत शाह ने उठकर पूछा।

भरत शाह की तरफ देखा तक भी नहीं झील-सी नीली आंखों वाले ने और वह चारों गवाहों के करीब पहुंचकर बोला—"क्या आज से पहले मेरी तुम चारों से कोई मुलाकात हुई है?"

चारों ने असमंजस भाव में एक-दूसरे की तरफ देखा, फिर भरत शाह को भी देखा।

"उधर नहीं इधर...!" केशव की सर्द आवाज—"मेरी तरफ देखो। सवाल मैंने तुमसे किया है—इसलिये जवाब भी तुम्हें देना है—तुम्हारे वकील साहब को नहीं। क्या तुम चारों से मेरी पहले कभी मुलाकात हुई है?"

"न...नहीं...।" चारों ने एक साथ जवाब दिया।

"क्या अदालत की कार्रवाई शुरू होने से पहले मैंने तुम चारों से पूछा था कि तुम अदालत में क्या बयान दोगे?"

"न...नहीं...!"

"तुम चारों ने मुझे बतलाया था कि तुम अदालत में क्या बयान दोगे?"

"न...नहीं?"

"मिस्टर शाह...!" केशव भरत शाह की तरफ घूमकर बोला—"आपके चारों गवाह तो इन्कार कर रहे हैं कि मुझे मालूम नहीं था कि ये चारों यहां क्या बयान देने वाले हैं।"

"तो...?" भरत शाह दुविधा में पड़ा बोला—"तुम...आप कहना क्या चाहते हैं मिस्टर पण्डित...?"

"अभी आपने कहा था कि टेप रिकॉर्डर में आपकी और आपके गवाहों की आवाजें नहीं हैं—मिमिक्री आर्टिस्टों ने आप लोगों की आवाजें बनाकर ही ये टेप तैयार किया है।"

"वो तो मैं अब भी कह रहा हूं।"

अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ ही बोला केशव—"क्या आपके

गवाहों के बयान के बाद मैं अदालत से बाहर गया था?"

"न...नहीं तो?"

"क्या ये टेप रिकॉर्डर गवाही के बाद अदालत के भीतर आया?"

"नहीं! लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आप कहना क्या चाहते हैं—साबित क्या करना चाहते हैं?"

"ओह! मैं तो समझ रहा था कि आप समझ गये होंगे कि मैं क्या समझाना चाह रहा हूं—क्योंकि आप काफी काबिल, होशियार, होनहार और अनुभवी वकील माने जाते हैं। खैर...कोई बात नहीं! ये तय हो चुका है कि मुझे मालूम नहीं था कि आपके गवाह क्या बयान देने वाले हैं जबकि टेप रिकॉर्डर में आपके पूछने पर चारों गवाहों ने वो ही बतलाया जो कि इन्होंने थोड़ी देर पहले अदालत में अपने बयान में कहा। फिर ये कैसे सम्भव है कि मैंने मिमिक्री आर्टिस्ट से आप लोगों की आवाजों में ये टेप तैयार करा ली हो?"

भरत शाह पर मानो घड़ों पानी गिरा हो।

चारों गवाह रो देने को तैयार। राजेश गुप्ता के चेहरे पर मातमी भाव।

जबकि केशव के गुरु रमाकान्त और धर्मपत्नी सोफिया के होठों पर केशव को दाद देती मुस्कान थिरक रही थी।

अदालत कक्ष में मौजूद तमाम लोग केशव को प्रशंसा भरी नजरों से देखने लगे।

आपस में बतियाकर केशव की तारीफ करने लगे।

ज्यादा शोर उत्पन्न होने पर जज साहब ने मेज पर लकड़ी की मुगरी फटकारी और आदेश भरे लहजे में बोले—"ऑर्डर... ऑर्डर...।"

सभी की बोलती बन्द।

होठों पर अलीगढ़ी ताले जड़ गये।

□□□

□□□

"मीलार्ड!" अदालत कक्ष में केशव की कड़क आवाज गूंज रही थी—"अगर मनोहर, अजीत, जयन्त और रामकरण ने कल

गवाही दी होती या मुझे ये मालूम होता कि ये क्या बयान देने वाले हैं—तो ये माना जा सकता था कि मैंने किसी मिमिक्री आर्टिस्ट से या स्वयं ही इन लोगों की आवाज बनाकर नकली टेप तैयार कर लिया होगा। हकीकत यही है कि कल रात को ये लोग नीलम बार में इकट्ठा हुये थे और इनके बीच हुये वार्तालाप को मैंने टेप कर लिया था। हकीकत यही है कि ये चारों गवाह ही झूठे हैं। इन्हें मिस्टर शाह ने दस-दस हजार रुपये देकर खरीदा और झूठी गवाही के लिये तैयार किया। इन चारों ने अदालत में जो बयान दिये, वो मिस्टर शाह ने ही पढ़ाये।"

"ये...ये झूठ है योर ऑनर!" बौखलाया-सा बोला भरत शाह—"चारों गवाह सच्चे हैं। चारों कुछ दिन पहले मेरे पास आये थे और मुझे बतलाया था कि मृतक अतुल शर्मा की बीवी अलका चरित्रहीन है—ये चारों अलका के ग्राहक रहे हैं।"

"अगर ऐसी बात होती तो ये चारों आपके पास नहीं आते मिस्टर शाह और अदालत में गवाही देने के लिये तैयार नहीं होते। क्योंकि इनकी गवाही ने ये बात साबित की है कि ये चारों अय्याश हैं जबकि कोई अय्याश व्यक्ति कभी नहीं चाहेगा कि उसकी काली करतूतों का खुलासा हो और वो समाज में बदनाम हो जाये। वास्तविकता ये है कि ये चारों शराबी और जुआरी हैं। आपने इन्हें रुपये का लालच दिया तो ये झूठी गवाही के लिये राजी हो गये। इनके बयान के मुताबिक ये चारों ही मेरे मुवक्किल अलका जी के पास चोरी-छिपे जाते थे। पीछे के रास्ते से जाते थे, ताकि कोई इन्हें देख ना ले। यानि ये बदनामी से डरते थे। फिर ये अदालत में बयान देकर बदनाम होने के लिये तैयार क्यों गये? जबकि इनके बयान से ऐसा कहीं भी जाहिर नहीं होता कि इनकी अलका जी से कोई कहा-सुनी हुई थी, या कोई मनमुटाव...या झगड़ा हो गया था।"

"चूंकि अलका ने अपने पति की हत्या की थी, इसलिये ये चारों कानून की मदद के लिये ही गवाह बने।"

"अलका जी ने अपने पति की हत्या नहीं की। हत्यारा वो है, जो व्हील चेयर पर बैठा हुआ है—आपका मुवक्किल राजेश गुप्ता।"

"मिस्टर राजेश गुप्ता अपाहिज हैं। फिर इन्होंने अतुल शर्मा की हत्या कैसे कर डाली? क्या आप बताने का कष्ट करेंगे मिस्टर पण्डित कि जो शख्स उठकर खड़ा नहीं हो सकता, अपने पैर नहीं हिला सकता—वो अपने घर से अतुल शर्मा के घर तक कैसे गया? कैसे उसने आपकी मुवक्किल के साथ रेप करने की चेष्टा की और अतुल शर्मा की हत्या कैसे कर डाली?"

❑❑❑

❑❑❑

भरत शाह के सवालों के तुरन्त बाद अदालत कक्ष में कुछ पलों के लिये सन्नाटा पसर गया। मानो हर कोई बनवास पर चला गया हो। हर कोई ये जानने के लिये उत्सुक था कि केशव भरत शाह के सवालों का क्या जवाब देता है?

जवाब दे भी पायेगा कि नहीं?

सबसे ज्यादा व्याकुल विधवा के लिबास वाली अलका दिखलाई पड़ी—जो कि उम्मीद भरी नजरों से केशव को देखे जा रही थी।

"मिस्टर पण्डित!" मानो जज साहब का धैर्य भी जवाब दे गया हो, "क्या आप साबित कर सकते हैं कि अतुल शर्मा की हत्या अभियुक्त राजेश गुप्ता ने ही की थी?"

"यस मीलार्ड!"

केशव के जवाब ने भरत शाह और राजेश गुप्ता को चौंका दिया और सांसत में भी डाल दिया। उत्सुकता और जिज्ञासा तो हर किसी की अंगड़ाई लेकर उठ बैठी थी।

केशव अपने गुरु रमाकान्त के पास पहुंचा तो रमाकान्त ने मुस्कराते हुये काले रंग का एक बैग केशव को पकड़ा दिया।

किसी की समझ में ना आया कि उस बैग में क्या है।

केशव बैग लिये हुये उस कठघरे की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने लगा, जिसके भीतर व्हील चेयर पर राजेश गुप्ता बैठा हुआ था।

व्याकुल और परेशान राजेश गुप्ता—जो कि समझ नहीं पा रहा था कि केशव उसे कातिल कैसे साबित करेगा और उसके बैग में क्या है?

कठघरे के करीब पहुंचने पर केशव ने राजेश गुप्ता को

विचित्र-सी नजरों से देखा और गुलाबी होठों पर ऐसी मुस्कान सजा ली, जिसका मतलब शायद कोई बिरला ही निकाल पाता।

फिर केशव ने बैग की जिप खोली।

हाथ बैग के भीतर डाला।

फिर उसने काले रंग का नाग निकालकर कठघरे के भीतर डाल दिया।

"अरे नहीं!"

घबराकर राजेश गुप्ता व्हील चेयर पर से उठा और चीखते-चिल्लाते हुये कठघरे से निकलकर इधर-उधर दौड़ने लगा।

भरत शाह ने हथेलियों से सिर पकड़ लिया। जबकि केशव पण्डित के होठों पर विजयी किस्म की मुस्कान भांगड़ा किये जा रही थी।



कठघरे में पड़े नाग को उठाकर केशव राजेश गुप्ता के पास पहुंचा और व्यंगभरी मुस्कान के साथ बोला—"तुम तो अपाहिज थे। चलना-फिरना तो दूर की बात रही—अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकते थे—पैरों को हिला नहीं सकते थे। फिर इस नकली नाग को देखकर पैरों में इतना करंट कहां से आ गया कि घोड़े की तरह दौड़ने लगे?"

"न...नकली...!" राजेश गड़बड़ाया।

"हां नकली! रबर का है। ये देखो।" कहने पर केशव ने नाग को अपने गले में डाल लिया। रबर का नाग था—सो हिला भी नहीं।

राजेश की दशा काटो तो खून नहीं वाली।

लकवा-सा मार गया उसे।

रंगे हाथों पकड़े गये चोर की सी दशा हो चली।

चेहरा बाढ़ के बाद पानी की मानिन्द ही उतरता चला गया और पतझड़ के पत्ते-सा मुरझाया हुआ हो गया।

"मीलार्ड...!" केशव जज साहब की तरफ पलटकर बोला—"राजेश गुप्ता की हकीकत सामने लाने के लिये ही मुझे

नकली नाग का सहारा लेना पड़ा! ये ठीक है कि राजेश गुप्ता का एक्सीडेन्ट हुआ था। लेकिन ये अपाहिज नहीं हुआ था। सिर्फ अपाहिज होने का नाटक कर रहा था। क्योंकि इसकी नीयत मेरी मुवक्किल अलका जी पर खराब थी। इसकी योजना यही थी कि ये अलका जी को रेप करके कत्ल कर देगा जैसा कि अलका जी ने पुलिस में दर्ज कराई अपनी रिपोर्ट में और यहां अदालत में दिये अपने बयान में भी बतलाया था कि राजेश ने इनकी इज्जत पर हमला करते हुये अपने इरादे जाहिर कर दिये थे कि ये अलका जी को जान से मार डालेगा और कानून से इसलिये बचा रहेगा क्योंकि ये अपाहिज होने का ड्रामा करता रहा है—इसलिये कोई इस पर शक भी नहीं करेगा। अगर अलका जी के पति अतुल शर्मा नहीं आ जाते तो ये दुष्ट राजेश अलका जी की इज्जत लूटकर इनकी हत्या कर देता। लेकिन दिल्ली जाने के लिये निकले अतुल शर्मा फ्लाइट के कैंसिल होने पर वापिस आ गये और राजेश ने उनकी हत्या कर दी।"

थोड़ा-सा अल्प-विराम लेने पर केशव पुनः बोला—"मैं सिर्फ राजेश गुप्ता को सजा देने की मांग ही नहीं करूंगा, सिर्फ इन चारों झूठे गवाहों को ही सजा देने की मांग नहीं करूंगा—बल्कि मैं ये मांग भी करूंगा कि मिस्टर भरत शाह को भी सजा सुनाई जाये।"

सभी चौंके, लेकिन भरत शाह चिहुंका—

वह हड़बड़ाकर सकपकाकर बोला—"मु...मुझे किस बात की सजा? केस की पैरवी करने वाले वकील को सजा नहीं मिल सकती।"

"लेकिन वकील को भी सजा मिलनी चाहिये।" आवेश से भरा हुआ केशव तेज व ऊंची आवाज में बोला—"वकील का काम कानून और अदालत के सामने सच्चाई लाने का है—ताकि अदालत के हाथों नाइन्साफी ना होने पाये। मुजरिम को सजा और मजलूम को इन्साफ मिल सके। लेकिन आपने क्या किया मिस्टर शाह? आप जानते थे कि राजेश मुजरिम है—लेकिन आपने उसे निर्दोष साबित करने के लिये डॉक्टर से झूठी रिपोर्ट तैयार कराई। चार झूठे गवाहों को पेश करके

अदालत को भ्रमित करने की कुचेष्टा की। अगर आप अपने मकसद में कामयाब हो गये होते तो एक कातिल निर्दोष साबित हो जाता और सजा से बच जाता। अलका जी के साथ नाइन्साफी हो जाती, जिनके पति की हत्या कर दी गई और जिनकी इज्जत लूटने की चेष्टा की गई थी। इतना ही नहीं...अदालत का गलत निर्णय होने पर अलका जी के माथे पर चरित्रहीन...वेश्या होने का ठप्पा भी लग जाता और ये जीते जी मर जाती। गंगाजल-सी पवित्र होने पर इन्हें समाज नाली के गन्दे पानी की दृष्टि से ही देखता। आप जैसे वकीलों ने ही कानून को, अदालत को मजाक बनाकर रख दिया है। दौलत के लिये कानून की दुकान सजाकर बैठ गये हो और मुजरिमों को बचाने का धन्धा करते हो। इस देश की सरकार , संसद और कानून से जुड़े जिम्मेदार लोगों को चाहिये कि वो ये कानून बनायें कि अगर कोई किसी मुजरिम को बचाने के लिये झूठे गवाहों और नकली सबूतों की मदद लेता है तो उसको भी मुजरिम मानते हुये मुजरिम के बराबर ही सजा दी जाये।"

अदालत कक्ष में उपस्थित सभी लोग उठ खड़े हुये और ताली बजाकर केशव के कथन का समर्थन करने लगे।

ये दूसरी बात रही कि जज साहब ने राजेश गुप्ता को फांसी की, चारों गवाहों को एक-एक वर्ष की सजा सुनाई और भरत शाह को कोई सजा सुनाने की बजाय कानून के साथ खिलवाड़ न करने की हिदायत देकर ही छोड़ दिया।

❑❑❑
❑❑❑

"किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूं मैं पण्डित जी...!" अदालत कक्ष में ही लोगों की बधाई स्वीकार करते केशव के करीब पहुंचकर विधवा के लिबास वाली अलका हाथ जोड़कर और आंखों में आंसुओं के साथ कृतज्ञता के भाव लिये हुये बोली—"राजेश गुप्ता के वकील भरत शाह ने तो मुझे इन्साफ की बजाय बदनामी देने की पूरी तैयारियां कर ली थी। अगर आप नहीं होते तो वो मुझे बदचलन और पति की हत्यारिन साबित कर देता। मुझे आपने इन्साफ और उस दुष्ट राजेश

गुप्ता को सजा दिलवाई। मैं आपके इस अहसान को कैसे उतारूं?"

"कोई अहसान नहीं किया मैंने अलका जी। मैंने अपना फर्ज निभाया है। प्लीज, आप अहसान वाली बात बोलकर मुझे शर्मिन्दा मत कीजिये।"

तब अलका ने सफेद साड़ी के पल्लू की गांठ खोली और सौ-सौ के कुछ नोट निकालकर केशव की तरफ बढ़ाकर कहा—"आपने तो अपनी फीस बतलाई ही नहीं थी। मैं अभी पांच हजार दे रही हूं। ये बतला दीजिये कि और कितने देने हैं?"

केशव ने नोटों वाली उसकी हथेली को बन्द कर दिया और बोला—"मैं सिर्फ फीस के लिये वकालत नहीं कर रहा हूं। मेरा मकसद कानून की सेवा और इन्साफ के लिये लड़ना है। आप तो ऐसे ही विपत्ति में हैं। आपने अपने पति को खो दिया। मुझे मालूम पड़ा है कि अतुल जी का कारोबार घाटे में चल रहा था। उनकी फैक्ट्री और बंगला गिरवी रखे हुये हैं। इतना कर्जा है कि फैक्ट्री और बंगला नीलाम करने पड़ेंगे। आपने कॉमर्स से पोस्ट ग्रेजुएशन किया हुआ है। मैंने मुम्बई महिला उद्योग केन्द्र की एम० डी० श्रीमती राधिका वर्मा जी से बात कर ली है। आप उनसे मिल लेना। वो आपको सुपरवाइजर की पोस्ट पर रख लेंगी।"

अलका भौचक्का-सी केशव को देखती रह गई और फिर झिझकते हुये बोली—"नहीं, आपको फीस तो लेनी ही होगी।"

"क्या एक भाई अपनी बहन से फीस लेगा?"

"भ...भाई...!"

"हां! हम भाई-बहन ही तो हैं। इसलिये फीस लेने का तो कोई मतलब ही नहीं बनता। ना ही अहसान वाली कोई बात चलेगी—मैंने सिर्फ भाई होने का फर्ज निभाया है।"

अलका रोते हुये केशव के सीने से लग गई। केशव उसकी पीठ सहलाते हुये बोला—"रोते नहीं बहन जी! मैं जानता हूं कि आपका कोई भाई नहीं है। लेकिन अब मैं हूं, भाई के तमाम दायित्व निभाऊंगा।"

"धन्य हो तुम केशव!" समीप ही खड़ा रमाकान्त गदगद भाव से बोला—"मुझे गर्व है कि तुम जैसा काबिल वकील और महान इन्सान मुझे गुरु का दर्जा देता है। तुम भी सौभाग्यशाली हो बहू।" वह करीब ही खड़ी सोफिया से बोला—"जो तुम्हें पति के रूप में केशव जैसा इन्सान मिला है।"

नन्हें आशीर्वाद की उंगली थामे खड़ी सोफिया ने केशव को वारी हो जाने वाली नजरों से देखा और कोयल-सी कुहकी—"आयम प्राउड ऑफ यू केशव!"

प्रत्युत्तर में सिर्फ मुस्करा दिया वो, जिसकी झील-सी नीली आंखें थीं।

□□□

□□□

"डैडी...चॉकलेट चाहिये...।"

केशव ने मर्डर केस से सम्बन्धित फाइल को एक तरफ रखकर आशीर्वाद को देखा।

नीलम-सी नीली आंखों वाले आशीर्वाद के हल्के सुनहरे व अर्ध-घुंघराले बाल लड़कियों की मानिन्द ही काफी लम्बे थे—जिनकी वजह से उसकी सुन्दरता में चार चांद लगे हुये थे।

कुर्सी पर बैठे केशव ने उसे उठाकर अपनी गोद में बिठा लिया और उसके कचौड़ी से फूले हुये गुलाबी गाल को चूमकर बोला—"तुम्हारी मम्मी मार्केट गई हैं। वो तुम्हारे लिये चॉकलेट भी लायेंगी। मैंने बोल दिया था।"

ट्रिन...ट्रिन...ट्रिन...।

मेज पर रखे बेसिक फोन की घन्टी बज उठी।

"फोन आया है। डैडी जी फोन सुनेंगे और मिस्टर आशीर्वाद अपने खिलौनों से खेलेंगे।"

कहने पर केशव ने आशीर्वाद को गोद से उतार दिया और आशीर्वाद फर्श पर रखे ढेर सारे छोटे-बड़े, नये-पुराने खिलौनों के साथ खेलने लगा। जबकि केशव ने रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया और बोला—"हैलो।"

"प...पण्डित जी...आह...!"

"हां, केशव बोल रहा हूं आप कौन...?"

"मैं...मैं एक दुखियारी...आह...!" दूसरी तरफ से बोलने वाली शायद घायल थी और उसे बोलने में काफी तकलीफ हो रही थी, "मु...मुझे गोली लगी है...आह...!"

"गोली?" चिहुंककर बोला केशव, "आप कौन हैं और कहां से बोल रही हैं?"

"शा...शायद मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। किसी तरह जान बचाकर...आह...टैक्सी से...मनोहर लाल गुप्ता मैमोरियल हॉस्पिटल जा रही हूं...मु...मुझे चक्कर...आंखों के सामने अन्धेरा...शायद मैं बेहोश...या फिर मर रही...ओह...!"

"हैल्लो...हैलो...!" केशव जोर-जोर से बोला, "आप ठीक तो हैं ना? अपना फोन टैक्सी ड्राइवर को दो...हैलो...हैलो...।"

लेकिन उसकी तरफ से कोई जवाब ना दिया गया।

"क्या बात है केशव?"

तभी सोफिया कमरे में दाखिल हुई। सफेद रंग की सलवार पर उसने सलमा-सितारों वाला काला कुर्ता पहना हुआ था और गले में नीले रंग का दुपट्टा भी डाला हुआ था।

मानो परीलोक की सबसे सुन्दर परी हो और सैर-सपाटे के मूड से पृथ्वी पर उतर आई हो।

लेकिन केशव का ध्यान सोफिया की सुन्दरता की बजाय फोन पर बोल रही युवती की तरफ था, वो कुर्सी से उठा और मेज पर रखी चारमीनार सिगरेट की डिब्बी व गोल्डन कलर का लाइटर उठाकर बोला—"किसी अन्जान महिला का फोन था सोफी। वो इतना ही बतला पाई कि उसे गोली लगी है और वो टैक्सी से मनोहर लाल गुप्ता मैमोरियल हॉस्पिटल जा रही है। तुम आशीर्वाद का ख्याल रखना। मैं जाकर देखता हूं कि क्या मामला है।"

□□□

□□□

केशव के पास सफेद रंग की मारुति-800 कार थी, वो भी सैकंडहैन्ड! उसी में सवार होकर वह हॉस्पिटल पहुंचा।

रिसेप्शन पर मौजूद नर्स ने बतलाया कि घण्टाभर पहले

एक टैक्सी वाला जख्मी युवती को लेकर आया था, जिसके पेट पर गोली लगी थी। उसको इलाज के लिये ऑपरेशन थियेटर में ले जाया गया है।

केशव लपकते हुये ऑपरेशन थियेटर के सामने पहुंचा। वहां पर खाकी वर्दी वाला टैक्सी ड्राइवर और दो कांस्टेबिलों के साथ सब-इन्सपेक्टर भी मौजूद था जिसकी शर्ट की जेब पर लगी काले रंग की नेम प्लेट पर 'आनन्द सावरकर' लिखा हुआ था।

टैक्सी ड्राइवर सब-इन्सपेक्टर से हाथ जोड़कर और गिड़गिड़ाकर बोले जा रहा था—"साहब अपुन का कसूर क्या है? वो जख्मी थी। उसके पेट से खून बह रेला था। हाथ देके अपुन कू रोका और हॉस्पिटल पहुंचाने की रिक्वेस्ट की। अपुन इन्सानियत के नाते उसपे तरस खाके इदर ले आया। वो रास्ते में इच बोली कि किसी कू जरूरी फोन करने का है। एस० टी० डी० बूथ में फोन करने गयेली वो और वापिस नेई लौटी। अपुन ने जाके देखा तो वो बूथ के भीतर बेहोश पड़ेली थी। अपुन कू तरस आयेला तो उसकू उठाके इदर ले आया। वो पैले इच अपून कू हॉस्पिटल का नाम बतला चुकी थी। उसके पास कोई पर्स बी नेई था। भाड़ा का बी कोई चांस नेई है। ऊपर से शर्ट उसके खून से गन्दी हो गयेली। बोहनी-बट्टे का टैम है। अपुन कू जाने देने का। सौ रुपे से कम लेके घर में घुसेगां तो बीवी ताड़का की माफिक इच चिल्ला पड़ेगी। बोलेगी कि अपुन ने कोई दूसरी लुगाई पालके रखेली है और उसपे नोट खर्च करके आ रेला है। अगर आप लोग ऐसा सलूक करेंगे वो फिर कोई किसी मुसीबत में पड़ने वाले की हेल्प कायू कू करेगा?"

"ज्यादा चबड़-चबड़ मत कर ओये! काफी देर से विविध भारती रेडियो की तरह बजकर मेरे सिर में दर्द किये जा रहा है। ये तीन सौ सात का केस है। अगर वो मर गई तो तीन सौ दो का मामला बन जायेगा। वो बच गई और तेरे फेवर में बयान दे दिया तो तेरी छुट्टी कर दूंगा। अगर वो मर गई तो पूछताछ के लिये पुलिस स्टेशन ले जाऊंगा...अरे, आप...!" केशव पर नजर पड़ने पर सब-इन्सपेक्टर लपककर उसके करीब

पहुंचा और हर्षित भाव से बोला—"नमस्कार, पण्डित जी...।"

"नमस्कार, आनन्द भाई।" केशव उससे हाथ मिलाकर बोला—"मेरे ख्याल से ये ड्राइवर निर्दोष है। इसकी टैक्सी का नम्बर नोट कर लो। इसके ड्राइविंग लाइसेंस से इसका एड्रेस नोट कर लो और इसे जाने दो। जरूरत पड़ने पर ये यहां पर या पुलिस स्टेशन आ जायेगा...।"

"बरोबर साहब!" ड्राइवर लपककर दोनों के पास आया और बोला, "अपुन दरोगा जी कू बोल रेला था कि जरूरत पड़ने पर पुलिस स्टेशन में हाजिर हो जायेंगा अपुन। अदालत में बी आके गवाही दे देगा। पन दरोगा जी अपुन की सुन नेई रेले हैं।"

"ठीक है जा...सवारियां ढो!" सब-इन्सपेक्टर रौबीले लहजे में बोला—"तेरी टैक्सी का नम्बर नोट कर लिया है और एड्रेस भी नोट कर लिया है। रात को आठ बजे यहां पर आ जाना। अगर यहां पर मैं या कोई पुलिसवाला नहीं मिले तो फिर पुलिस स्टेशन में चले आना। अगर होशियारी दिखलाई तो लपेट दूंगा।"

"अपुन आठ बजे आ जायेगा। शुक्रिया, दरोगा जी! आपका बी बहोत-बहोत शुक्रिया...सर जी...।" ड्राइवर केशव का आभार व्यक्त करके वहां से निकल लिया।

"थैंक्यू, आनन्द भाई।"

"शर्मिन्दा मत कीजिये पण्डित जी। आपकी पारखी नजरों का कायल हूं। आपने उस ड्राइवर को जाने को बोल दिया तो ये तय है कि वो निर्दोष ही होगा। लेकिन आप यहां पर कैसे?"

केशव ने फोन की बाबत बतलाने पर कहा—"मेरे ख्याल से वो फोन उसी का होगा, जिसका ऑपरेशन चल रहा है। डॉक्टर क्या बोल रहे हैं? वो बच तो जायेगी ना?"

"मेरे यहां आने से पहले ही डॉक्टर उसे ओ० टी० में ले जा चुके थे। एक नर्स ने बतलाया कि उसकी तबियत बिगड़ती जा रही थी—अगर पुलिस का इन्तजार किया जाता और उसको ओ० टी० में ना ले जाया जाता तो उसकी मौत हो जाती। ओ०

टी० का गेट खुलने पर जब डॉक्टर बाहर आयेंगे तो ही उसके मरने-जीने की खबर मिलेगी। वो मर गई तो अपनी मुसीबत हो जायेगी। वैसे आप तो हैं ही। आप इन्वेस्टीगेशन करके उसके कातिल को पकड़वा ही देंगे। अगर वो बच गई तो होश में आने पर बतला ही देगी कि वो कौन है और उसे गोली मारने वाला कौन है?"

❑❑❑
❑❑❑

वो युवती बच गई।

ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर ने केशव और सब-इन्सपेक्टर आनन्द सावरकर को बतलाया कि युवती खतरे से बाहर है, लेकिन काफी खून बहने की वजह से वो काफी कमजोर हो चुकी है और उसे खून चढ़ाया जा रहा है।

केशव ने जब उसके होश में आने की बाबत पूछा तो डॉक्टर ने बतलाया कि उसे होश आने में घण्टों लग जायेंगे—ये भी हो सकता है कि सारी रात ही गुजर जाये।

केशव को जरूरी काम था—सो उसने हॉस्पिटल से निकलने से पूर्व सब-इन्सपेक्टर आनन्द सावरकर को सलाह दी कि वो युवती की सिक्योरिटी की उचित व्यवस्था कर दे—क्योंकि उस पर गोली चलाने वाला स्वयं को बचाने के लिये हॉस्पिटल में आकर उसकी जान लेने की चेष्टा कर सकता है।

केशव रात्रि नौ बजे हॉस्पिटल लौटा। वो घर में डिनर करके आया था।

युवती बेहोश ही थी और इमेरजेंसी वार्ड में उसको खून चढ़ाया जा रहा था।

केशव ने सारी रात हॉस्पिटल की कैन्टीन में चाय और चारमीनार की चार डिब्बियां अर्थात् चालीस सिगरेटें पीकर गुजारी।

सुबह सात बजे उसे एक कांस्टेबिल ने कैन्टीन में आकर बतलाया कि युवती को होश आ चुका है और वो उससे मिलना चाहती है।

❑❑❑
❑❑❑

भले ही कमजोरी की वजह से उसका जिस्म पीला पड़ गया था और चेहरे की रौनक रूठ गई थी—लेकिन थी वो बला की खूबसूरत!

"नमस्कार, पण्डित जी...।" क्षीण-सी आवाज।

"नमस्कार!" केशव बेड के करीब ही रखे स्टूल पर बैठ गया।

एस० आई० आनन्द सावरकर और एक हवलदार पहले से ही मौजूद थे। वो केशव के आने पर उसे सम्मान देने के लिये उठे थे और उसके बैठने पर ही स्टूलों पर बैठे।

बेड पर लाल कम्बल ओढ़े लेटी युवती सूखे होठों पर जिव्हा फिराकर बोली—"प...पण्डित जी...आपसे बहुत जरूरी बात करनी है।"

"हां, बोलिये—क्या बात है?"

उसने एस० आई०, हवलदार, डॉक्टर व नर्स को देखा, फिर झिझकते हुये बोली—"मामला काफी गम्भीर है। मैं अकेले में ही आपको बताना चाहूंगी।"

"ये सब-इन्सपेक्टर आनन्द सावरकर हैं। बहुत ही ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ। आप इन पर भरोसा कर सकती हैं। वैसे भी इन्हें आपका बयान लेना है।"

"ठीक है! आप बोलते हैं तो...लेकिन बाकी लोगों को बाहर भेज दीजिये।"

केशव ने आनन्द सावरकर की तरफ देखा तो उसने डॉक्टर, नर्स व हवलदार को थोड़ी देर के लिये बाहर चले जाने को बोल दिया।

तीनों कमरे से बाहर चले गये तो केशव उस युवती से बोला—"अब आप अपनी बात कह सकती हैं। लेकिन पहले आप अपना परिचय दे सकें तो बेहतर होगा।"

वह हाथों को जोड़कर विनती भरे लहजे में बोली—"प्लीज, पण्डित जी...मुझे 'आप' मत कहिये। उम्र में शायद आपसे बड़ी होऊं—लेकिन आप कानून और पीड़ित लोगों के रहनुमा

हैं—देशभक्त हैं, जबकि मैं अपने चरित्र से गिरी हुई हूं और मुजरिम भी हूं।"

"मुजरिम?" चौंका आनन्द सावरकर।

जबकि केशव ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त ना की।

"प्लीज, आप मुझे 'तू' कहें। मैं सम्मान के काबिल कतई भी नहीं हूं। मेरा सम्बन्ध माफिया से है और मेरा नाम सविता है। मुम्बई डॉन यमराज का छोटा भाई विजयराज है। विजयराज के साले मनमोहन की रखैल हूं मैं।"

"कमाल है...!" आनन्द सावरकर आश्चर्य व्यक्त करते हुये बोला, "तुम अपने ही मुंह से कबूल रही हो कि तुम मुजरिम हो और माफिया से जुड़ी हुई हो। ओह...समझा...।"

"क...क्या समझे आप सर?"

"तुम्हें माफिया वालों ने गोली मारी। उनका इरादा तुम्हारी जान लेने का होगा—लेकिन किसी तरीके से तुम बच गई और तुम्हें अपनी गलती या जुर्म का अहसास हो चला है।"

"न...नहीं ये बात नहीं है इन्सपेक्टर साहब?"

"तो फिर क्या बात है?"

"जुर्म की दुनिया में जाना मेरी मजबूरी थी। अपनी छोटी बहन निशा की वजह से ही मुझे जुर्म की कीचड़ में उतरना पड़ा।"

"बहन की वजह से... क्या मतलब?"

"वो सब तो मैं बाद में भी बतला दूंगी लेकिन पहले...टाइम क्या हुआ होगा?"

केशव ने रिस्टवॉच में देखने पर बतलाया—"सवा आठ बजे हैं। आठ बजकर सोलह मिनट।"

"ओह...वक्त नहीं है पण्डित जी! ठीक नौ बजे नागपुर रोड पर एम० डी० कॉलेज के ग्राउन्ड पर चीफ मिनिस्टर साहब की रैली है। उनकी जान खतरे में है। उनका मर्डर होने वाला है।"

□□□
□□□

प्लान के मुताबिक ही मनमोहन गिटार केस लिये हुये

होटल नीलकमल में दाखिल हुआ। किसी से कहे-सुने बिना ही वो लिफ्ट में सवार होकर होटल की तीसरी मन्जिल पर पहुंचा और फिर वहां से सीढ़ियां चढ़कर लम्बी-चौड़ी छत पर पहुंचा। लाउड स्पीकर के जरिये किसी नेता का भाषण फिजा में गूंज रहा था। इसी के साथ तालियां भी बज रही थीं और नारे भी लगाये जा रहे थे।

छत की रेलिंग पर पहुंचने पर उसने सड़क पार भीड़ से भरे ग्राउन्ड को देखा। साथ ही ऊंचे व लम्बे-चौड़े मंच पर एक कुर्सी पर आसीन प्रदेश के मुख्यमन्त्री को भी देखा और जहरीली किस्म की मुस्कान के साथ बोला—"बहुत राज कर लिया तूने। क्या किसी दूसरे का नम्बर नहीं आना चाहिये? अब होम मिनिस्टर गोविन्द सहाय की बारी है। वो इस स्टेट का सी० एम० बनेगा। उसने तेरा राम नाम सत्य करने के लिये माफिया को सुपारी दी है। बस...चन्द मिनटों की ही जिन्दगी बची है तेरी...प्यारे।"

फिर वो गिटार केस के साथ छत के फर्श पर बैठ गया और गिटार केस को खोला।

अरे! ये क्या?

केस में गिटार की बजाय रायफल के अलग-अलग पार्टस् रखे हुये थे, जिन्हें मनमोहन जोड़ने लगा।

पांच मिनट के भीतर ही रायफल तैयार हो गई—जिसके ऊपरी हिस्से में टेलीस्कोप भी फिट थी।

"अब मैं आदरणीय मुख्यमन्त्री जी से प्रार्थना करूंगा कि वो माइक पर आकर अपने अनमोल वचनों से हमें कृतार्थ करें। मित्रों, भाई-बहनों और माताओं! ये हमारा और हमारे प्रदेश का परम सौभाग्य ही है कि हमें इतने अच्छे मुख्यमंत्री जी मिले हैं, जिन्होंने प्रदेश भर में विकास गंगा बहाई हुई है। जोरदार तालियों के साथ आदरणीय मुख्यमंत्री जी का स्वागत करेंगे।"

मंचासीन नेताओं, होममिनिस्टर गोविन्द सहाय और ग्राउन्ड में उपस्थित लोगों ने मंच संचालक की बात मानते हुये जोरदार तालियां बजाकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

अधेड़ उम्र के मुख्यमंत्री ने माइक के सामने पहुंचकर हाथ

जोड़कर और हाथों को हिलाकर सभी का अभिवादन किया।

आभायुक्त चेहरा और होठों पर पवित्रता का आभास कराती मुस्कान।

होटल की छत पर मौजूद मनमोहन ने रायफल की बट को कन्धे से सटा लिया और टेलीस्कोप में से झांकते हुये मुख्यमंत्री को निशाने पर लेने लगा। मुख्यमंत्री के सीने के बायें यानि दिल वाले हिस्से को निशाने पर लेकर उसने ट्रिगर दबा दिया...धांय...!

"आ...आहऽऽऽ!"

❑❑❑
❑❑❑

मुख्यमंत्री ने अपनी बात कहने के लिये गला खंखारा ही था कि...करीब खड़ा ब्लैक कमान्डो सीने पर हथेली रखकर चीखा और लड़खड़ाते हुये पीछे की तरफ जा गिरा।

उसकी हथेली खून से सन गई और परकटे पंछी की मानिन्द ही फड़फड़ाकर शान्त पड़ गया।

बाकी के तीन ब्लैक कान्डोज ने मुख्यमंत्री को घेर लिया और उनमें से एक बौखलाया-सा बोला—"आ...आपकी जान खतरे में है सर! आप तुरन्त ही हमारे साथ स्टेज के पीछे चलिये।"

मंच पर हड़कम्प-सा मच गया और नेता गण इधर-उधर दौड़ने लगे। उनमें जो मुख्यमंत्री के वफादार थे, वो मुख्यंत्री को घेरे हुये सीढ़ी से उतरकर मंच के पिछले हिस्से में पहुंच गये। जबकि बाकी के मंच से कूदे और चोट खाने के बाद में उठकर लंगड़ाते हुये भाग निकले।

जनता में भी हड़कम्प मच गया।

सभी चीखते-चिल्लाते हुये इधर-उधर दौड़ने लगे। वो अपनी जान बचाने की ललक में ये भी परवाह नहीं कर रहे थे कि जमीन पर गिरे अभागे लोग उनके कदमों तले कुचले जा रहे थे।

मंच पर ही मौजूद होम मिनिस्टर गोबिन्द सहाय ने जब मुख्यमंत्री की बजाय ब्लैक कमान्डो को गोली का शिकार होते

देखा तो मन-ही-मन भुनभुनाकर रह गया और उसने सड़क पार होटल की छत की तरफ देखा तो कोई भी नजर नहीं आया।

मन-ही-मन उसने माफिया के कार्यकारी बॉस विजयराज को गालियां भी दीं—फिर वो लपकते हुये मंच के उस पिछले हिस्से में पहुंचा—जहां पर ब्लैक कमान्डोज, पुलिस व कई नेताओं से घिरे मुख्यमंत्री जी तिरंगे अंगोछे से चेहरे का पसीना पोंछ रहे थे।

"अ...आप ठीक तो हैं ना सर...?" गोविन्द सहाय ने ऐसी मुख मुद्रा बना ली कि मानो मुख्यमंत्री का उससे बड़ा शुभचिन्तक दुनिया में कोई और हो ही नहीं, "भगवान का शुक्र है कि आप बच गये। मेरे ख्याल से किसी हरामजादे ने आपकी जान लेनी चाही थी, लेकिन कम्बख्त का निशाना चूक गया। बेचारा कमान्डो मारा गया। ऐ कमिश्नर!" फिर वो वहां मौजूद पुलिस कमिश्नर पर भड़क उठा—"तुम यहां खड़े तमाशा क्या देख रहे हो? पुलिस फोर्स को चारों तरफ दौड़ाओ। कातिल आसपास ही होना चाहिये। बचकर नहीं जाना चाहिये वो। उसे किसी भी कीमत पर पकड़ो। उस हरामजादे को फांसी पर ना चढ़वा दिया तो मेरा नाम भी गोविन्द सहाय नहीं। अगर कातिल बच निकला तो तुम्हारी खैर नहीं होगी।"

"मैं...मैं देखता हूं सर।" कमिश्नर बौखलाकर बोला—"कातिल को बचकर निकलने नहीं दिया जायेगा।"

"कोई गाड़ी मंगवाओ।" गोविन्द सहाय चीखकर बोला—"सी० एम० साहब को यहां से निकालकर ले जाना है। अब सभा नहीं होगी। हे गणपति बप्पा...आपने हमारे सी० एम० साहब को बचा लिया। आपके मन्दिर में आकर प्रसाद चढ़ाऊंगा। इक्यावन ब्राह्मणों को भोजन कराऊंगा और भूखे गरीबों को भी दान-दक्षिणा दूंगा।"

❑❑❑
❑❑❑

जैसे कोई जहरीला नाग कई दिनों तक पिटारे में कैद रहने पर निकला।

फुंफकारता-सा ही गोविन्द सहाय अपने घर में दाखिल

हुआ और एक कमरे में पहुंचकर सामान को उठा-उठाकर इधर-उधर गिराने लगा, फर्श व दीवारों पर पटककर तोड़ने लगा। उसने सोफे उलट दिये और लात मारकर मेज को फर्श पर गिरा दिया।

"बच गया वो हरामजादा।" किंग कोबरा-सा ही फुंफकारा वो—"गोली लगी भी तो ब्लैक कमाण्डो को। लगता है कि इन माफिया वालों के पास बढ़िया किस्म के शूटर हैं ही नहीं। किसी अनाड़ी को भेज दिया। उसका निशाना चूका और मेरा खेल खराब हो गया। सोचा था कि मुख्यमंत्री खत्म हो जायेगा और मैं मुख्यमंत्री बन जाऊंगा। मेरी ताजपोशी हो जायेगी।"

फिर वो दूसरे कमरे में पहुंचा।

वहां रखे फोन की घण्टी बज रही थी, लेकिन गुस्से से भरे गोविन्द सहाय ने उसे नजर अन्दाज करके फ्रिज में से बीयर की बोतल निकाली। दांतों से उसका ढक्कन खोलकर फर्श पर थूका और बोतल मुंह से लगाकर 'गट-गट' की आवाज के साथ बीयर को मुंह व हलक तथा गले के रास्ते पेट में उतारता चला गया।

"चुप हरामजादे...!" बोतल फर्श पर पटककर तोड़ी और टनटनाते फोन पर बरसा—"ट्रिन-ट्रिन करके कान खाये जा रहा है। एक लात मारकर तोड़ दूंगा—चकनाचूर कर डालूंगा। खामख्वाह ही मेरी टेंशन बढ़ाये जा रहा है भूतनी का...।"

फोन भी पक्का बेशर्म था—गृहमन्त्री जी की फटकार से कतई भी नहीं डरा और अपनी ही टोन में रागनी गाये जा रहा था।

गोविन्द सहाय ने फोन को उठाकर फर्श पर पटक देने का उपक्रम भी किया, लेकिन अचानक ही दिमाग पलट गया। उसने बायें हाथ में इन्स्ट्रूमेंट पकड़कर दायें हाथ से रिसीवर पकड़कर कान से लगाया और मिर्ची से चबाते हुये बोला—"कौन है बे...घंटी-पे-घंटी बजाये जा रहा है।"

"मैं मनमोहन बोल रहा हूं मन्त्री जी।"

"कौन मनमोहन? हम किसी मनमोहन को नहीं...।"

"मैं विजयराज जी का ब्रदर इन लॉ...साला...।"

"ओ...तुम...!" गोविन्द सहाय के गुस्से के हवनकुण्ड में मानो घी पड़ गया हो, इसी अन्दाज में चीखकर बोला वह, "क्या किया तुमने? पैसे लिये सी० एम० को मारने के और मार दिया उसके कमान्डो को। तुम्हारा जीजा तो बोल रहा था कि तुम्हारा निशाना इतना बढ़िया है कि उड़ते हुये पंछी की आंख भी फोड़ सकते हो। क्या हथियार में एक ही गोली थी? निशाना बढ़िया नहीं था तो बाकी की गोलियां चलाकर तो सी० एम० को खत्म कर सकते थे।"

"आप तो काफी नाराज मालूम पड़ रहे हैं।"

"नहीं...खुश हूं। इतना खुश हूं कि अपने सिर के बाल नोच सकता हूं। अपने कपड़े फाड़ सकता हूं। जश्न मनाने को जी चाह रहा है। हेमा मालनी को बुला लूं पार्टी में डांस के लिये?"

"आप गलत समझ रहे हैं मन्त्री जी। बहुत बड़ी गड़बड़ी हो गई थी।"

"कैसी गड़बड़ी?"

"ऐसी बातें फोन पर करना ठीक नहीं होगा। आपका काम कल ही हो जायेगा। बेहतर होगा कि हम अभी मिलकर बात कर लें।"

"कहां मिलोगे?"

"जहां भी आप बोलें—वहीं आ जाता हूं।"

गोविन्द सहाय ने आंखें सिकोड़कर कुछ सोचा—फिर बोला—"हमारा फार्म हाउस देखा है?"

"हां, देखा है। मैं वहीं आ जाऊंगा। कितने बजे तक आ जाऊं?"

❑❑❑
❑❑❑

गोविन्द सहाय अपने फार्म हाउस के शानदार कमरे में सोफे पर बैठा व्हिस्की की चुसकियां ले रहा था।

वो व्हिस्की की बोतल, सोडा-सायफन, आइस बॉक्स में बर्फ के टुकड़े और पनीर लेकर चला था। चौकीदार रिश्तेदार की मौत होने पर गांव गया हुआ था। वो अपने साथ नौकर को लेकर नहीं आया था। नौकर तो क्या...सिक्योरिटी वालों

को भी नहीं लाया था। उसका विश्वासपात्र ड्राइवर आया था जो कि मेज पर ड्रिंक का सामान सजाकर बाहर चला गया था।

"नमस्कार, मन्त्री जी...!"

मनमोहन कमरे में सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये दाखिल हुआ। उसने काली पैन्ट के ऊपर लैदर की लाल जरकीन पहनी हुई थी।

गोविन्द सहाय ने उसे घूरकर देखा, लेकिन फिर ये सोचकर आंखों को कन्ट्रोल कर लिया कि वह माफिया का खास ओहदेदार है।

"आओ...!" वह गुस्से को जहर की घूंट की मानिन्द ही पीकर बोला–"बैठो।"

मनमोहन उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया और बिना इजाजत लिये ही खाली गिलास उठाकर अपने लिये पैग बनाने लगा।

"हां, पी ले। तेरे बाप की है।" बुदबुदाया ही गोविन्द सहाय, जोर से नहीं बोल पाया।

"जब मैं आपको सारी बात बतलाऊंगा तो आपकी सारी नाराजगी दूर हो जायेगी मन्त्री जी।" व्हिस्की की घूंट भरकर बोला मनमोहन–"जीजू ने ठीक ही बोला था कि मेरा निशाना इतना पक्का है कि उड़ते पंछी की आंख फोड़कर उसे काना बना सकता हूं।"

"तो फिर आज निशाना कैसे चूक गया?"

"पुलिस के साथ केशव पण्डित आ गया था।"

"कौन केशव पण्डित...वो वकील?"

"सिर्फ वकील ही नहीं है वो मन्त्री जी। इन्वेस्टीगेटर भी है और फाइटर भी है। अकेला ही दस-बीस हथियारबन्द आदमियों का खात्मा कर सकता है। आपने सुना ही होगा कि आतंकवादियों ने प्लेन को हाईजैक करने की कोशिश की थी लेकिन उस प्लेन में केशव पण्डित भी था। उसने सभी आतंकियों को मारकर प्लेन को बचा लिया था। गफूर का और उसके पूरे गैंग का खात्मा भी उसी ने किया था।"

"हां, उसके बारे में काफी सुना है। लेकिन वो पुलिस के साथ कैसे आ गया था?"

"ये तो मालूम नहीं। मैं चीफ मिनिस्टर पर निशाना लगाकर गोली चला रहा था कि पीछे से कोई चीखकर बोला कि 'खबरदार! गोली मत चलाना।' बस मेरा निशाना चूक गया। मुड़कर देखा तो होटल की छत पर केशव पण्डित समेत कई पुलिसवाले मौजूद थे। सभी के हाथों में हथियार थे। ये तो शुक्र हुआ कि मैंने चेहरे पर नकाब चढ़ा ली थी–इसलिये वो लोग मेरा चेहरा नहीं देख पाये।"

"लेकिन तुम बच कैसे गये?"

"जान की परवाह किये बिना ही रेलिंग पर चढ़कर नीचे सड़क पर कूद गया था। मेरा नसीब बढ़िया था कि नीचे से सब्जियों से भरी एक ट्रक गुजर रही थी। उसी पर जाकर गिरा और ज्यादा चोटें नहीं आईं। अब तो आपकी नाराजगी दूर हो जानी चाहिये।"

"नाराजगी तो तभी दूर होगी, जब तुम उस साले मुख्यमंत्री को खत्म कर दोगे। वो खत्म होगा, तभी तो हम मुख्यमंत्री बनेंगे। आज तो तुम्हारा निशाना चूक गया। लेकिन अगली बार नहीं चूकना चाहिये। ये बोलो कि अब सी० एम० को कब मारोगे?"

"इससे क्या पूछता है...?" केशव कमरे में दाखिल होकर बोला–"मुझसे पूछ ना ओयें गोविन्द सहाय।"

❑❑❑

❑❑❑

"तु...तुम...?"

केशव को देख गोविन्द सहाय यूं ही चिहुंका कि मानो एक दर्जन सिरों वाला शेर घुस आया हो। गिलास में बची सारी व्हिस्की उसके कुर्ते व धोती पर गिरी।

"हां, मैं...।" चारमीनार की सिगरेट में कश मारकर बोला केशव, "केशव पण्डित! क्या हाल हैं होम मिनिस्टर साहब?"

"तु...तुम यह क्या कर रहे हो?"

"इन्वेस्टीगेटर हूं। जासूसी करना मेरा काम है। फिर

मुजरिम को पकड़कर कानून के हवाले करना मेरा धर्म है और अदालत में सजा दिलवाना कर्तव्य है।"

"लेकिन यहां तो कोई मुजरिम नहीं है।"

मुस्कराया केशव, फिर बोला—"क्यूं मजाक करते हो होम मिनिस्टर? अभी तो आप इन भाई साहब से मुख्यमन्त्री जी की हत्या करने को बोल रहे थे।"

"ओह! तुमने हमारी बातें सुन लीं।" कहने पर गोविन्द सहाय गम्भीर व चिन्तित हो चला, फिर बोला—"तो तुम सब कुछ जान गये।"

"हां! जान तो गया हूं। आज सुबह मुख्यमंत्री जी पर जो हमला हुआ था, तुमने ही कराया था। लेकिन मारा गया एक ब्लैक कमान्डो। क्या किया जा सकता है? तुम्हारी तकदीर ही खराब है। तुम्हारे नसीब में मुख्यमंत्री बनना लिखा ही नहीं है। तुम्हारे नसीब में तो जेल की चक्की पीसना लिखा है।"

"क्या बकते हो?" खाली गिलास लिये हुये गोविन्द सहाय उठकर बोला—"होश की दवा कर ओये केशव पण्डित! मत भूल कि हम होममिनिस्टर हैं।"

"हां, मिनिस्टर हो, लेकिन रहोगे नहीं। तुम्हें इस पद से हटा दिया जायेगा और पार्टी से भी निकाल दिया जायेगा। तुम्हें गिरफ्तार करके ही यहां से ले जाया जायेगा।"

"तू ही ले जायेगा?" व्यंग और चुनौती का पुट।

"हां मैं ही ले जाऊंगा। हालांकि यहां पर पुलिस को आना चाहिये।"

"पुलिस आ भी जाती तो क्या कर लेती? आई० जी०, डी० आई० जी० और कमिश्नर हमें सैल्यूट मारते हैं।"

"अब जूते मारेंगे, वर्दी किसी के बाप की बपौती नहीं। ना ही वर्दीवाले किसी के गुलाम होते हैं। वो किसी व्यक्ति को नहीं, उसके पद को सलाम करते हैं। तुम होममिनिस्टर थे तो वो सलाम ठोकते थे। जब तुम होम मिनिस्टर नहीं, एक मुजरिम रह जाओगे तो सिर्फ ठोकेंगे तुम्हें। हाथों से और जूतों से तुम्हारी सारी मिनिस्टरी झाड़कर रख देंगे।"

मानो वानर दल के किसी वानर ने रावण को चैलेंज कर

दिया हो और अहंकारी रावण उसका उपहास उड़ाने वाले भाव से ही मुस्कराकर बोला हो—"लगता है कि होश में नहीं है तू—या फिर तूने जो दो-चार कारनामे कर दिखलाये उन्होंने तेरा दिमाग खराब कर दिया। अपनी औकात और अपनी हैसियत देखकर ही बात कर। हम पहाड़ हैं तो तू मामूली कंकर है। हम समन्दर है तो तू चुल्लू में भरा पानी है। हम तूफान हैं तो तू हवा का मामूली झोंका। हम तीर तो तू सुई है। हमसे इस लहजे में बात करने वाले की जुबान काट ली जाती है।"

"मर गये केशव की जुबान काटने वाले।" केशव गोविन्द सहाय के करीब पहुंचा और मुंह में भरे सिगरेट के धुएं का गुबार उसके चेहरे पर तोप के गोले की मानिन्द ही दागकर हन्टर की फटकार-सी आवाज में ही बोला—"जुबान काटने से पहले जुबान को पकड़ना पड़ता है। जुबान को पकड़ने के लिये मुंह में हाथ डालना पड़ता है। मेरा मुंह शेर का जबड़ा है। अगर हाथ डालने की गलती करेगा तो कटा हुआ ठूठ ही रह जायेगा। उंगलियों समेत पंजा गायब हो जायेगा। लगता है कि तेरी आंखें ठीक से काम नहीं कर रही हैं। दिमाग की आंखें खोलकर देख मुझे ओये गोविन्द सहाय! कंकर नहीं बम हूं— जो फटेगा तो तेरे अहंकार के पहाड़ को मिट्टी में मिलाकर रख देगा। चुल्लू भर पानी नहीं, ज्वालामुखी का वो लावा हूं, जो तेरी गलतफहमी के समन्दर को जलाकर सूखा हुआ तालाब बना डालेगा। हवा का मामूली झोंका नहीं हूं, वो टारनेडो हूं, जिसकी लपेट में आने वाले तुझ जैसे मामूली तूफान अपना वजूद, अपना असतित्व ही खो बैठते हैं। सुई नहीं, मिसाइल हूं, जिसकी जद में आने पर तेरी बदकिस्मती का तीर जलकर चिता की लकड़ी ही बनकर रह जायेगा।"

"तु...तुम चुपचाप बैठे क्या कर रहे हो?" गोविन्द सहाय मनमोहन पर भड़क उठा—"ये गुस्ताख हमसे जुबानजोरी किये जा रहा है और तुम्हारे कानों पर जूं भी नहीं रेंग रही है। तुम्हारे पास हथियार तो होगा। इसे खत्म कर दो। इसकी लाश को फार्म हाउस के पीछे खड्डा खोदकर दफना दिया जायेगा।"

"मेरे पास कोई हथियार नहीं है।"

"तो हमारे ड्राइवर तेजेन्द्र को बुलवाओ। उसके पास एक रिवॉल्वर और एक पिस्टल है। हमें आश्चर्य हो रहा है कि उसने इस गुस्ताख को भीतर कैसे आने दिया? शायद वो लघुशंका के लिये चला...।"

"वो कहीं नहीं गया था।" केशव ने उसकी बात काटी और फर्श पर सिगरेट का अवशेष डालकर चमचमाते काले जूते की 'टो' से कुचलकर बोला—"उसने रिवॉल्वर और पिस्टल के दम पर मुझे रोकने का बचपना किया था। लेकिन उस मूर्ख को मालूम नहीं था कि खिलौनों से शेर-हाथी को नहीं डराया जा सकता। वो अपने हाथ-पैर, पसलियां तुड़वाकर बेहोश पड़ा है। उसकी रिवॉल्वर और पिस्टल ये रही।"

केशव ने पैन्ट की जेबों से रिवॉल्वर व पिस्टल निकालकर दिखलाई और उन्हें मेज पर रखकर बोला—"तूने अगर अपनी मां का दूध पीया है तो रिवॉल्वर और पिस्टल उठाकर मुझे मार डाल। ये याद रखना कि अगर तू मुझे मारने में कामयाब नहीं हो पाया तो तुझे मारते और घसीटते हुये ही ले जाऊंगा और पुलिस के हवाले कर दूंगा।"

गोविन्द सहाय ने बला की फुर्ती के साथ पिस्टल और रिवॉल्वर उठा ली। फिर रिवॉल्वर सोफे पर बैठे मनमोहन की गोद में डालने पर केशव पर पिस्टल तानकर बोला—"बेवकूफ है तू—जो हाथ आये हथियारों को हमारे हवाले करके 'आ बैल मुझे मार' वाली बात कर डाली। हम और मनमोहन तुझे भून डालेंगे। तेरे जिस्म को छलनी-छलनी कर देंगे। तेरी मौत के साथ ही तेरे साथ कब्र में दफन हो जायेगा कि हमने ही उस साले मुख्यमन्त्री पर गोली चलवाई थी, उसे मरवाना चाहा था। आज तो बच गया वो—लेकिन कल उसे खत्म कर दिया जायेगा और फिर हमारी ताजपोशी होगी। मुख्यमन्त्री की कुर्सी पर हम बैठेंगे...हम...मुख्यमंत्री श्री गोविन्द सहाय। मुस्करा रहा है। मौत को सामने देख तेरा दिमाग खराब...।"

"नहीं...तेरी तकदीर खराब है। तेरे हाथ में जो रिवॉल्वर है, उसमें गोलियां नहीं हैं।"

गोविन्द सहाय ने केशव के सीने का निशाना लगाकर

ट्रिगर दबा दिया...खट की आवाज ही हुई—कोई फायर ना हुआ।

बौखलाया गोविन्द सहाय ट्रिगर दबाता चला गया...खट...खट...खट!

गोलियां ना चलते देख वो झुंझला और बौखला गया। उसने केशव के चेहरे पर खाली रिवॉल्वर से वार करना चाहा तो केशव ने हवा में ही उसके हाथ को पकड़कर दूसरे हाथ से घूंसा चला दिया। तड़ाक...की ऐसी आवाज कि मानो नारियल पर हथौड़ा मारा गया हो।

पीड़ाभरी चीख के साथ गोविन्द सहाय सोफे से उलझा और फिर उसे साथ लिये हुये फर्श पर उलट गया।

उसकी नाक के साथ मुंह से भी खून निकला और खून के साथ दो दांत भी फर्श पर आ गिरे।

"तू...तू क्या कर रहा है ओये मनमोहन?" पीड़ा को भुलाकर वह चीखा—"खत्म कर दे इसे। इसे मारने के लिये हम तुम्हें अलग से रकम देंगे...आह...!"

सोफे को लांघकर केशव ने उसकी पसलियों पर 'किक' मारकर कई पटखनियां खिला दीं और फिर उसके कुर्ते व गिरेहबान को पकड़कर उसे खड़ा कर दिया, उसकी आंखों में झांकते हुये बोला, "तेरी अक्ल घास चलने चली गई क्या? क्या पिस्टल की गोलियां निकालने वाला रिवॉल्वर का चैम्बर खाली नहीं करेगा?"

सकपका गोविन्द सहाय, फिर चीखकर बोला—"तुम तो मार्शल आर्ट में माहिर हो मनमोहन। इस पण्डित पर कहर बनकर टूट पड़ो...आह...इसे जान से मार डालो।"

"मनमोहन कुछ नहीं करेगा। अगर करना होता तो बहुत पहले कर चुका होता। तुझे उससे कहने की जरूरत नहीं पड़ती। तूने ये नहीं सोचा कि मेरे आने पर भी स्टेच्यू बना बैठा है—जरा-सा भी हिला तक नहीं...तो कोई-ना-कोई तो वजह तो होगी ही। वो बेचारा मजबूर है।"

"म...मजबूर...क...क्या मतलब?"



"मनमोहन...!" गोविन्द सहाय को गिरेहबान से पकड़े हुये केशव हुक्म देने वाले लहजे में बोला—"होम मिनिस्टर जी सस्पेंस के जाल में उलझ गये हैं। इन्हें सस्पेंस के जाल से मुक्त कर।"

यूं ही उठा मनमोहन की मानो उसके घुटनों की सारी 'ग्रीस' खत्म हो गई हो। विवश और पस्त भाव से ही नजरें झुकाये हुये और बीमार-सी आवाज में बोला—"यहां आने पर मैं तुमसे झूठ बोला था गोविन्द सहाय कि मैं पण्डित जी और पुलिसवालों के आने पर सब्जी वाली ट्रक पर कूद गया था। हकीकत ये है कि मैंने जैसे ही मुख्यमन्त्री पर गोली चलाई थी, पीछे से पण्डित ने मेरी पीठ पर ठोकर जड़ दी थी। चीख मारकर मैं फर्श पर जा गिरा था।"

"क...क्या...?" गोविन्द सहाय का खून से सना मुंह खुला-का-खुला रह गया।

"फिर पण्डित ने मुझसे रायफल छीन ली थी और कनपटी पर घूंसा मारकर बेहोश कर दिया था। ना जाने कितनी देर बाद मुझे होश आया? मैं पुलिस हैडक्वार्टर में था। वहां पर पुलिस के कई बड़े अफसर भी थे, पण्डित भी था। पण्डित ने कहा कि गोविन्द सहाय यानि तेरे खिलाफ पुख्ता सबूत हासिल करने हैं। मुझे मजबूर करने के लिये पण्डित ने मेरे पेट पर खतरनाक किस्म का बम बांध दिया था।"

"ब...बम...!" चिहुंका गोविन्द सहाय।

"हां, ये वाला बम...।" मनमोहन ने जरकीन की जिप खोलकर पेट पर बंधा बम दिखलाया और फिर बोला—"ये रिमोट से फटने वाला बम है। इसका रिमोट केशव के पास है। मजबूरी में मुझे वो ही करना पड़ा जो पण्डित ने कहा। तुझे फोन किया और मुलाकात करने को कहा। पण्डित ने ही बोला कि तू जहां भी बुलवाये, मैं वहीं के लिये हामी भर दूं। तूने फार्म हाउस के लिये कहा तो मैं यहां पर चला आया। लेकिन मैं

अकेला नहीं आया था। मेरे साथ पण्डित और एक वीडियो कैमरे वाला भी था।"

"वी...वीडियो कैमरे वाला...?"

"हां, वीडियो कैमरे वाला। वो उधर...खिड़की के पास से वीडियो फिल्म बना रहा है।" केशव ने हैरान-परेशान गोविन्द सहाय का सिर पकड़कर थोड़ा घुमा दिया, ताकि वो खिड़की पर मौजूद वीडियो कैमरे वाले को देख सके।

वीडियो कैमरे वाले दर्शन होते ही गोविन्द सहाय के चेहरे पर हवाइयां-सी उड़ने लगीं।

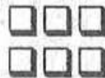
फैल चली आंखों की कटोरियों में चिन्ता की मछलियां-सी तैरने लगीं।

केशव ने उसके सिर को अपनी तरफ घुमाया और उसकी आंखों से नजरों के पेंच लड़ाते हुये सर्द से लहजे में बोला—"वीडियो कैमरे से बन रही फिल्म इस बात को साबित करेगी कि तूने मुख्यमन्त्री जी की हत्या करने की चेष्टा की थी और इसके लिये माफिया को सुपारी दी थी। मनमोहन के बयान की भी फिल्म तैयार कर ली है। अदालत में भी ये तेरे खिलाफ बयान देगा। ना भी दे...तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। वीडियो फिल्म ही काफी है। अब तू चुपचाप और शराफत के साथ मेरे साथ पुलिस कमिश्नर के ऑफिस चलेगा। वहीं पर तेरी गिरफ्तारी होगी। वहीं पर मीडिया वाले भी आयेंगे। मुख्यमंत्री जी भी आयेंगे और तुझे होम मिनिस्टर के पद से हटाने के साथ-साथ पार्टी से निकालने की भी घोषणा करेंगे। फिर तुझे अदालत में पेश करके पुलिस रिमांड पर लेगी और तुझसे जुर्म कबूलवायेगी। फिर अदालत तुझे सजा सुनायेगी और तुझे जेल भेज दिया जायेगा। चल, मनमोहन के साथ आगे-आगे चल, तेरा ड्राइवर तो बेहोश है। तुझे ही गाड़ी ड्राइव करनी होगी। मैं तो तेरी बगल में बैठकर तेरी ड्राइविंग देखूंगा। मेरे वाली गाड़ी विडियो कैमरे वाला आशीष ले आयेगा।"

बेचारा गोविन्द सहाय।

उसका चेहरा ऐसा हो चला कि मानो उसे राजसिंहासन

मिलने जा रहा था, लेकिन उसे ब्रश और पोलिश देकर लोगों के जूते-चप्पलों पर पॉलिश करने का काम सौंप दिया गया हो।



केशव ने गोविन्द सहाय से ही उसकी कार की ड्राइविंग करवाई—क्योंकि उसका ड्राइवर कार के करीब ही जमीन पर बेहोशी की अवस्था में पड़ा हुआ था, जिसे केशव ने उठाकर कार की डिक्की में ठूंस दिया था।

मनमोहन पीछे की सीट पर चुपचाप बैठा हुआ था। ऐसा नहीं कि वो शरीफ बच्चा था। लेकिन पेट पर बंधे बम की वजह से उसकी दशा उस नाग के जैसी हो चली थी, जिसके ऊपर ऐसा बर्तन रख दिया गया हो, जिसके भीतर पैने ब्लेड्स लगे हों।

केशव ने पुलिस कमिश्नर के ऑफिस में पहुंचकर मनमोहन, गोविन्द सहाय और उसके ड्राइवर को पुलिस की हिरासत में दे दिया और मनमोहन के पेट से बम खोलकर उसे बतला दिया कि वो बम एकदम नकली था।

मनमोहन तिलमिलाकर, कसमसाकर, झुंझलाकर ही रह गया।

मिडिया वाले भी आ गये और मुख्यमन्त्री भी आ गये। मुख्यमन्त्री ने गोविन्द सहाय को ना सिर्फ गृहमन्त्री के पद से, बल्कि पार्टी से भी निकाल दिये जाने की घोषणा कर दी।

गोविन्द सहाय के बारे में तो यही कहा जा सकता है कि चौबे जी छब्बे बनने चले थे, लेकिन दूबे जी भी ना रहे।

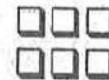
मीडिया वालों ने केशव के इन्टरव्यू लिये और उसकी प्रशंसा के पुल बांध दिये।

मीडिया वालों ने ही नहीं, मुख्यमन्त्री ने भी केशव की भूरि-भूरि प्रशंसा की—साथ ही माफिया के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई करने के लिये पुलिस अफसरों को आदेश दे दिये।

पुलिस ने माफिया के कई ठिकानों पर तावड़-तोड़ छापे मारकर गुन्डों के साथ-साथ नम्बर दो के माल को भी पकड़ा।

मनमोहन को हैडक्वार्टर का पता जानने के लिये टार्चर

किया गया। उसने हैडक्वार्टर का पता बताया भी और पुलिस ने छापा भी मारा, लेकिन तब तक यमराज के छोटे भाई विजयराज ने हैडक्वार्टर को खाली करा दिया और दूसरा हैडक्वार्टर बना लिया था।



"मैं किन शब्दों में आपका शुक्रिया अदा करूं पण्डित जी...समझ में नहीं आता।" बिस्तर पर लाल कम्बल ओढ़े लेटी सविता आभार व्यक्त करते हुये बोली—"आपने मुख्यमन्त्री जी की जान बचा ली। वो बहुत ही भले आदमी हैं। ईमानदार और साफ छवि वाले। दूसरी खुशी की बात ये कि आपने होम मिनिस्टर के साथ-साथ उस कमीने मनमोहन को भी गिरफ्तार करा दिया—बहुत-बहुत शुक्रिया...।"

"इसमें शुक्रिया वाली कोई बात नहीं सविता जी। शुक्रगुजार तो मुझे और कानून को होना चाहिये आपका।"

"आप और जी नहीं पण्डित जी। आपको भगवान की सौगन्ध। मैं सम्मान और इज्जत के काबिल कतई भी नहीं हूं। हालात ने मुझे चरित्रहीन और मुजरिम बना दिया। किसी पर अहसान नहीं किया मैंने। अपने स्वार्थ के लिये ही आपकी मदद ली थी मैंने।"

"कुछ भी कहो तुम! लेकिन तुम्हारी वजह से मुख्यमन्त्री जी की जान बची। वो दुष्ट गोविन्द सहाय पकड़ा गया और उसके बुरे इरादों का पर्दाफाश भी हो गया। मनमोहन पकड़ा गया। माफिया के कई ठिकाने नष्ट कर दिये गये। यमराज तो अमेरिका में है। उसका भाई विजयराज हैडक्वार्टर खाली करके फरार हो गया। लेकिन वो भी एक-ना-एक दिन अवश्य ही पकड़ा जायेगा। तुम्हारी सिक्योरिटी के कड़े बन्दोबस्त करा दिये हैं मैंने। अब तुम ये बतलाओ कि जुर्म की दुनिया में कैसे पहुंच गई थीं। तुमने अपनी छोटी बहन निशा का जिक्र किया था।"

"जी, पण्डित जी।" सविता उदास होकर बोली—"हमारे माता-पिता ट्रेन एक्सीडेन्ट में चल बसे थे। तब मैं बी० ए० में पढ़ रही थी और निशा आठवीं क्लास में थी। हम नागपुर

में रहते थे। बड़ा मकान था। चार किरायेदार थे। जिनसे काफी किराया मिल जाता था। निशा बहुत ही चंचल, नटखट और चुलबुली थी। सारा दिन चिड़िया-सी चहकती रहती थी। वो मेरी जान थी। उसे देखकर ही जी रही थी मैं। वो भी मुझे बड़ी बहन की बजाय मां का ही दर्जा देती थी। बारहवीं क्लास में थी वो—जब उसके स्कूल का टूर मुम्बई आया था। झील किनारे मनमोहन अपने साथियों के साथ आया हुआ था और इस कुत्ते की निशा पर नीयत खराब हो गई थी। हथियारों के दम पर वो निशा को उठा ले गया था। उसने और उसके साथियों ने निशा के साथ सामूहिक बलात्कार किया था। निशा ने दम तोड़ दिया था और उसकी लाश को मनमोहन ने गायब कर दिया था।"

"तुमने कानून की मदद नहीं ली थी?"

सविता ने आंखों में भर आये आंसुओं को पोंछा, फिर रुंधे कण्ठ से बोली—"पहली बात तो ये कि निशा की लाश गायब थी और लाश मिले बिना मनमोहन का जुर्म साबित करना आसान नहीं था। इसी के साथ मुझे सभी ने बताया कि मनमोहन बहुत खतरनाक है। उसका जीजा बहुत बड़े मुजरिम का भाई है। उन लोगों की पुलिस के साथ सैटिंग भी है। अगर मैं कानून की मदद लूंगी भी तो कोई फायदा नहीं होगा। लेकिन निशा की मौत ने मुझे तोड़ दिया था—मानो जीते-जी ही मर गई थी मैं। कोई भी तो मेरा नहीं रह गया था। जी चाहता था कि आत्महत्या कर लूं। लेकिन फिर दिमाग ने कहा कि मुझे मनमोहन से इन्तकाम लेना चाहिये। सो मैं मुम्बई आ गई थी और एक होटल में डांसर की नौकरी कर ली थी। मुझे मनमोहन को ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ी। वो उसी होटल में एक दिन आया और मेरी खूबसूरती पर फिदा हो गया था। उसने अपने होटल में मुझे नौकरी दिलवाई। एक फ्लैट, कार और कई कीमती सामान खरीदकर दिये। उसकी रखैल बन गई थी मैं और इन्तकाम के लिये किसी अच्छे मौके की तलाश में थी।"

"वो मौका तुम्हें तब मिला, जब गोविन्द सहाय ने सी० एम० साहब को मारने के लिये सुपारी दी?"

"जी, पण्डित जी।"

"लेकिन फिर गड़बड़ी कैसे हुई?"

"मैं शराब के नशे में थी और निशा की तस्वीर को आलमारी से निकालकर उससे बात कर रही थी कि मनमोहन से बदला लेने का वक्त आ गया है। जब मनमोहन मुख्यमन्त्री को मारने जायेगा तो मैं उसे रंगे हाथों पकड़वा दूंगी। दुर्भाग्य से मनमोहन आ गया। निशा की तस्वीर देख वो सब कुछ समझ गया था। उसने रिवॉल्वर निकालकर मुझे गोली मारी। ना जाने मुझमें इतनी हिम्मत कहां से आ गई थी कि मनमोहन को धक्का देकर और कमरे का दरवाजा बाहर से बन्द करके भाग निकली थी। टैक्सी रोककर उसे इस हॉस्पिटल में चलने के लिये कहा। रास्ते में टैक्सी रोककर आपको फोन कर दिया था।"

"तुम्हारी हिम्मत की दाद देनी होगी...।" केशव स्टूल से उठकर बोला—"जो होना था, हो गया! अब तुम्हें सरकारी गवाह बना लिया जायेगा। तुम्हारी गवाही से मनमोहन को सजा मिलेगी। वैसे मेरे पास मनमोहन और गोविन्द सहाय के खिलाफ पर्याप्त सबूत भी हैं। दोनों को सजा मिलेगी। मैं तुम्हें कोई सजा नहीं होने दूंगा। तुम पढ़ी-लिखी हो। नागपुर में मेरी जान-पहचान के काफी लोग हैं। तुम्हें किसी कम्पनी में सर्विस मिल जायेगी। अपने काले अतीत को भूलकर नई जिन्दगी की शुरूआत करना।"

"थैंक्यू—पण्डित जी।"

"मेंशन नॉट।"

❑❑❑

❑❑❑

"प्लीज, रोना बन्द करो सारिका...तुम मां बनने वाली हो। सातवां महीना चल रहा है और डॉक्टरनी ने बहुत ही एतिहात बरतने को कहा हुआ है। मुझे नन्दू काका ने बतलाया कि तुम कल से ही रोये जा रही हो। कुछ खाया-पीया भी नहीं। रातभर सोई भी नहीं तुम।"

"तो और क्या करूं...?" उभरे पेट वाली सारिका रोते-सुबकते हुये बोली—"एक ही तो भाई है मेरा। मम्मी-डैडी

से ज्यादा मनमोहन भइया ने ही मेरा ख्याल रखा। मम्मी जी तो मुझे जन्म देते ही मर गई थीं। डैडी जी को जुर्म की दुनिया से ही फुर्सत ही नहीं थी। भइया ने ही मेरा हर तरह से ख्याल रखा। अपनी शादी तक नहीं की। पहले मेरी शादी कराई। फिर बोले कि जब तक मैं मां नहीं बन जाती, उनके भान्जे को जन्म नहीं दे देती, तब तक वो शादी नहीं करेंगे। लेकिन वो गिरफ्तार हो गये। उन पर चीफ मिनिस्टर के ब्लैक कमान्डो को कत्ल करने का इल्जाम है। वैसे भी उनके खिलाफ केशव पण्डित केस लड़ेगा। मेरे भाई को फांसी हो गई तो...।"

लम्बा-चौड़ा—लेकिन अपने भाई यमराज के विपरीत गोरा-चिट्टा विजयराज सारिका के सुर्ख व रसीले होठों पर हथेली रखकर बोला—"ऐसी अशुभ बात ना करो। मनमोहन तुम्हारा भाई ही नहीं है, बल्कि मेरा साला और दोस्त भी है। इसके अलावा वो माफिया का ओहदेदार भी है। उसे कुछ हुआ तो इसमें माफिया की भी तौहीन है। भले ही मुझे कुछ भी करना पड़े—लेकिन मनमोहन को सजा नहीं होने दूंगा। उसे जेल या पुलिस हिरासत से छुड़वा लूंगा।"

"स...सच कह रहे हो तुम?"

"तुम्हारी कसम!" विजयराज सारिका के सिर पर हथेली रखकर बोला—"मेरे होते मनमोहन को कुछ भी नहीं हो पायेगा...कुछ भी...। विजयराज की जुबान और पत्थर की लकीर में कोई फर्क नहीं है। तुम देखो तो सही कि मनमोहन को बचाने के लिये मैं क्या करता हूं?"



इसके बाद विजयराज ने मनमोहन को छुड़ाने के लिये अपने आदमियों को हुक्म दे दिया।

गुन्डों ने जेल पर बमों व हथियारों से हमला बोल दिया। बमों से जेल की दीवारों को तोड़ने पर वो भीतर दाखिल हुये। कई जेलकर्मी और कैदियों को मारने पर भी मनमोहन नहीं मिला। मिलता तो तब, जब वहां होता।

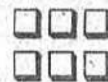
केशव की सलाह पर उसे पुलिस ने गुप्त स्थान पर रखा

हुआ था। ये व्यवस्था की गई थी कि मनमोहन को भेष बदलकर और चेहरे पर किसी अन्जान व्यक्ति का फेस मास्क लगाकर ही अदालत ले जाया जायेगा।

जब विजयराज को महसूस हो गया कि अदालत में पेशी से पहले मनमोहन को नहीं छुड़ाया जा सकेगा तो उसने दूसरी चाल चली।

उसने एस० आई० आनन्द सावरकर की गर्भवती बीवी और चार साल के बेटे को कब्जे में लेकर उससे कहा कि वो अदालत में अपने होलस्टर का फ्लैप खोलकर रखे, ताकि मनमोहन को उसकी रिवॉल्वर निकालने का मौका मिल सके। विजयराज ने आनन्द सावरकर से ये भी कहा कि मनमोहन उसकी कनपटी पर रिवॉल्वर लगाकर उसकी जीप से भागेगा और वो उसे मुम्बई से बाहर अली बाग के कब्रिस्तान तक छोड़ना है। वहां मनमोहन उसे बेहोश कर देगा। वो वहां से अपने घर वापिस लौटेगा तो उसे अपनी बीवी और बेटा सही-सलामत मिलेंगे—लेकिन उसने कोई चालाकी की तो उसकी बीवी और बेटे को खत्म कर दिया जायेगा।

ये जिम्मेदारी भी आनन्द सावरकर की ही थी कि मौका मिलने पर वो मनमोहन को सारे प्लान से वाकिफ करा दे।



गोविन्द सहाय और मनमोहन को अदालत में पेश किया गया।

प्लान के मुताबिक पहली दो पेशियों की ही मानिन्द मनमोहन को भेष बदलकर और चेहरे पर मास्क लगाकर लाया गया था। पहली पेशी में वो मौलवी, दूसरी पेशी में साधु और तीसरी पेशी में वो हिप्पी के भेष में लाया गया।

अदालत में उसे उसके वास्तविक रूप में ही पेश किया गया।

मनमोहन और गोविन्द सहाय की पैरवी करने को कोई भी वकील तैयार ना हुआ था, इसलिये अदालत ने सरकारी

वकील को नियुक्त किया था, जिसने सिर्फ रस्म अदायगी ही की।

केशव ने मनमोहन और गोविन्द सहाय के खिलाफ वीडियो फिल्म के रूप में ठोस सबूत और सविता व गोविन्द सहाय के ड्राइवर को वादामाफ गवाह बनाकर पेश किया था।

जज साहब ने अपना फैसला सुनाते हुये मनमोहन को फांसी और गोविन्द सहाय को दस साल कैद-ए-बामश्क्कत की सजा सुना दी।

सब-इन्सपेक्टर आनन्द सावरकर ने दूसरे एस० आई० को गोविन्द सहाय को हथकड़ी लगाने का इशारा किया और स्वयं हथकड़ी लेकर मनमोहन की तरफ बढ़ा।

उसने रास्ते में ही मनमोहन को सारा प्लान समझा दिया था और प्लान के ही मुताबिक होलेस्टर का फ्लैप खोला हुआ था।

जैसे ही वो मनमोहन के करीब पहुंचा तो मनमोहन ने होलेस्टर से रिवॉल्वर निकालकर उसकी कनपटी से लगा दी और उसके बायें हाथ को उमेठकर तथा मोड़कर उसकी पीठ से सटाने पर चिल्ला-चिल्लाकर बोला—"खरबदार! कोई भी गड़बड़ी ना करे। अगर किसी ने भी मेरे करीब आने की कोशिश की तो इस इन्सपेक्टर को उड़ा दूंगा।"

अदालत-कक्ष में हड़कम्प-सा मच गया।

लोग चीखते-चिल्लाते, गिरते-पड़ते बाहर को भाग निकले।

पुलिसवालों ने मनमोहन पर हथियार तान दिये।

"ऐ पुलिसवालों!" मनमोहन चिंघाड़कर बोला—"अगर अपने साथी को जिन्दा देखने के ख्वाहिशमन्द हो तो हथियार नीचे कर लो। मुझे तो ऐसे ही फांसी की सजा सुनाई गई है। इसलिये मुझे अपनी जान की कतई भी परवाह नहीं है। लेकिन इस पुलिसवाले को जरूर फोड़ा डालूंगा मैं।"

"मेरी परवाह ना करो।" आनन्द सावरकर ने ऐसे हाथ-भाव बनाये कि मानो वह घबराने के बावजूद भी हिम्मत से काम ले रहा हो—"अगर मेरी जान जाती है तो जाये—लेकिन

ये नहीं बचना चाहिये। आगे बढ़कर इसे पकड़ लो। जरूरत पड़े तो इसे गोली मार डालो। फायर करो...मैं कहता हूं...इस पर फायर करो।"

"हां, फायर करो मुझ पर...।" विक्षिप्त से भाव से ही चीखकर बोला मनमोहन—"मुझे तो ऐसे भी फांसी पर लटकना है सालो। गोली चलाते ही मैं ट्रिगर दबाकर इस इन्सपेक्टर की कनपटी में सूराख कर दूंगा।"

"ये...ये तुम ठीक नहीं कर रहे हो।" केशव धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुये बोला—"तुम हाईकोर्ट...सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति जी के यहां अपील कर सकते हो। हो सकता है कि तुम्हारी फांसी की सज़ा उम्र कैद में तब्दील कर दी जाये। लेकिन इस हरकत के बाद तुम्हारे बचने के चान्सेज नहीं।"

"चुप ओये पण्डित...।" जैसे कोई खूनी भेड़िया ही इन्सानी भाषा में गुर्राकर बोला हो, "अपनी सलाह अपने ही पास रख। काश...काश कि मैं तुझे गोली मारकर अपनी खुन्नस निकाल पाता। लेकिन अभी नहीं। पहले मुझे यहां से निकलना है। बाद में तुझसे हिसाब-किताब पूरा करूंगा। सभी कान खोलकर सुन लो। मैं इस इन्सपेक्टर को अपने साथ पुलिस की गाड़ी से ले जाऊंगा...अगर किसी ने भी मेरा पीछा किया, या मेरा रास्ता रोकने की कोशिश की तो मैं अपनी जान की परवाह ना करके इसको मार दूंगा। चल...ओये इन्स्पेक्टर।" वह आनन्द सावरकर को धकेलते हुये बोला, "चुपचाप बाहर चल! जैसा भी मैं बोलूं वैसा ही करता रहेगा तो फायदे में रहेगा।"

फिर मनमोहन आनन्द सावरकर की कनपटी से रिवॉल्वर सटाये हुये आगे बढ़ा तो सभी ने उसके वास्ते रास्ता छोड़ दिया।

पुलिस वाले उसके पीछे चले भी, लेकिन जब उसने आनन्द सावरकर को मारने की धमकी दी तो सभी कसमसाते हुये अपने स्थान पर ही ठिठक गये।

अदालत के बाहर ही पुलिस जिप्सी खड़ी थी—

जो कि चारों तरफ से बन्द थी।

मनमोहन ने आनन्द सावरकर को ड्राइविंग सीट पर बिठाया और स्वयं उसकी बगल में बैठकर उस पर रिवॉल्वर

तानकर बोला—"जीप स्टार्ट कर और खाली सड़कों से होते हुये मुम्बई से बाहर निकल।" आनन्द सावरकर ने जीप स्टार्ट की और उसे दौड़ा दिया।

❑❑❑

❑❑❑

"हम लोग मुम्बई से बाहर आ चुके हैं और थोड़ी देर में ही अली बाग पहुंच जायेंगे...।" जिप्सी को अस्सी किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से दौड़ाते हुये बोला आनन्द सावरकर—"इस बात की क्या गारन्टी है कि मेरी बीवी और बेटे को छोड़ दिया जायेगा?"

"तुम्हारे बीवी-बच्चे को हमारे लोगों ने तेरे घर में अपने कब्जे में लिया हुआ है। उठाकर अपने ठिकाने पर नहीं ले गये थे। जैसे ही मैं सही-सलामत जीजा जी के पास पहुंच जाऊंगा, जीजाजी अपने आदमियों को फोन कर देंगे कि तेरी बीवी और बेटे को छोड़कर चलते बनें।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी प्यारेलाल...।"

उक्त आवाज ने मनमोहन को यूं ही चिहुंका दिया कि मानो अचानक ही उसकी सीट में आग लग गई हो।

हड़बड़ाकर उसने पीछे की तरफ देखा तो जिप्सी के पिछले हिस्से में केशव को देखकर मारे आश्चर्य व अविश्वास के उसकी आंखें फैलकर कटोरियों से बाहर निकलने को तैयार हो चलीं। फिर खतरे का अहसास होने पर उसने सीट पर बैठे-बैठे ही पलटकर केशव पर फायर करना चाहा, लेकिन केशव ने उसकी कनपटी पर इतना तगड़ा घूंसा जड़ा कि उसकी आंखों के सामने रंग-बिरंगे सितारे से डिस्को करने लगे। फिर वो सितारे अन्धेरे की गोद में जा समाये और मनमोहन सीट पर ही लुढ़क गया।

ना जाने कितनी देर पश्चात् उसको होश आया। जिप्सी रुकी हुई थी और वो पीछे वाली सीट पर लेटा हुआ था।

कराहते हुये उसने आंखें खोलीं तो जैसे चार सौ चालीस वोल्ट का करेंट लगा हो, यूं ही हड़बड़ाकर उठ बैठा वो।

मुंह खुला-का-खुला और आंखें फटी-की-फटी रह गईं।

वो फटी-फटी आंखें सामने की तरफ यूं ही देख रही थीं

मानो किसी चींटी को अपनी गोद में हाथी को लिटाकर दूध पिलाते हुये देख रही हों।

❑❑❑

❑❑❑

मनमोहन की जगह दूसरा कोई बन्दा भी होता तो उसकी बुद्धि भी कुम्हार के चाक पर चढ़कर कत्थक कर रही होती।

नजारा ही कुछ ऐसा था।

सामने वाली सीट पर उसका हमशक्ल बैठा हुआ था।

वो ही कद-काठी, डील-डौल, वो ही आंखें, हेयर स्टाइल, नैन-नक्श...वगैरा...इत्यादि।

फर्क सिर्फ इतना ही था कि उसके जिस्म पर कैदियों वाली वो पोशाक थी, जो कुछ देर पहले उसके जिस्म पर थी। लेकिन अब उसके जिस्म पर पैन्ट व शर्ट थी।

काफी देर तक वो उल्लू की मानिन्द आंखों को चौड़ाये हुये, अपलक सामने बैठे अपने हमशक्ल को देखता रहा।

"ऐ...कौन हो तुम...?" सामने वाला बिल्कुल उसी की आवाज में ही बोला—"तुम तो बिल्कुल मेरे जैसे ही लग रहे हो। नाम क्या है तुम्हारा?"

"क...क्या बकते हो?" वह बौखलाकर बोला—"मैं...मैं मनमोहन हूं।"

"तो फिर मैं कौन हूं?"

"मु...मुझे क्या पता?" वह हड़बड़ाकर बोला—"मेरी मां ने कभी बतलाया नहीं कि उसने जुड़वा और हमशक्ल बच्चों को जन्म दिया था। ओह...कहीं ऐसा तो नहीं कि ऑपरेशन करने वाली डॉक्टरनी ने एक बच्चे को गायब कर दिया हो और मेरी मां से झूठ बोल गई हो कि उसने एक ही लड़के को जन्म दिया...?"

सामने वाला उसका मखौल उड़ाने वाले अन्दाज में मुस्कराया, जबकि अगली सीट पर बैठा आनन्द सावरकर हंसकर बोला—"कहीं ये बावला ना हो जाये पण्डित जी...।"

"प...पण्डित जी...।" चिहुंककर बोला मनमोहन!

"हां, ये अपने पण्डित जी ही तो हैं।"

"न...नहीं...ये पण्डित कैसे हो सकता है?"

हमशक्ल ने चारमीनार की डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर गोल्डन कलर के लाइटर से सुलगा ली और फिर डिब्बी व लाइटर आगे बैठे आनन्द सावरकर की गोद में डालकर बोला—"इन्हें तुम ही रखो आनन्द भाई! ये विल्स की सिगरेट पीता है। मजबूरी है। मुझे भी विल्स की ही सिगरेट पीनी होगी।"

उसके मुख से केशव की आवाज निकलती देखकर मनमोहन के मुंह से सिसकारी-सी छूट गई। फिर वो हैरानी के झूले झूलते हुये बोला—"ओह...अब समझ में आया। तूने फेसमास्क, विग और कॉन्टेक्ट लैंसेस लगाकर मेरा रूप धारण किया है।"

प्रत्युत्तर में मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला।

अरे, भई...भले ही उसने कॉन्टेक्ट लैंसेज से आंखों का कलर चेंज कर लिया था, लेकिन लैंसेस के भीतर तो झील-सी नीली आंखें ही छिपी हुई थीं।

हैरान-परेशान मनमोहन ने पहले सिर खुजलाया, फिर कौतूहलता की डाल पर उलटा लटका हुआ बोला—"ल...लेकिन तुमने मेरा रूप क्यों धारण किया है? तुम्हारे इरादे क्या हैं? करना क्या चाहते हो तुम?"

❑❑❑
❑❑❑

सिगरेट में कश लगाकर होठों को गोलाकार करके मनमोहन रूपी केशव ने धुएं की बौछार मनमोहन के चेहरे पर फेंकी और फिर उसकी विस्फारित आंखों में झांकते हुये बोला—"तूने ये नहीं पूछा कि मैं तो अदालत में ही रह गया था—फिर इस जिप्सी में कैसे पहुंच गया?"

चौंका मनमोहन!

आकाशीय बिजली की मानिन्द ही उसके मस्तिष्क में उक्त सवाल कौंधा—इसलिये भी कौंधा कि उसने पूरी सावधानी बरती थी और जिप्सी के चलने तक इस बात का पूरा ख्याल रखा था कि कोई भी जिप्सी के आसपास फटकने ना पाये। फिर केशव जिप्सी में कहां से...कैसे आ गया था? जवाब की

तलब में उसने अपने हमशक्ल बने केशव को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

"मैं अदालत के बाहर बरामदे में गटर का एक ढक्कन खोलकर नीचे कूदा था और दौड़कर दूसरे हिस्से में पहुंचा था। जिप्सी के फर्श पर ध्यान से देखा। इसका चौकोर हिस्सा खिसकाया जा सकता है। तब भी ये हिस्सा खिसका हुआ था। जिप्सी को जानबूझकर गटर के ढक्कन के ऊपर खड़ा किया गया था। उस ढक्कन को नीचे की तरफ से हटाकर मैं इस खुले हुये हिस्से से जिप्सी के भीतर आ गया था और सीट के नीचे छिप गया था। इसीलिये तुझे भनक तक भी नहीं लगी कि जिप्सी में कोई तीसरा बन्दा यानि मैं भी मौजूद हूं।"

"ओह...ओह...! लेकिन मेरा मास्क, विग और कॉन्टेक्ट लैंसेज कहां से आ गये? तुम्हारा मेकअप किसने किया?"

"किसी ने भी नहीं। मैंने स्वयं ही मेकअप किया है—वो भी दर्पण की मदद लिये बिना ही। जासूसी की ट्रेनिंग में ये सब चीजें सिखलाई जाती हैं। तेरा मास्क, विग और कॉन्टेक्ट लैंसेज मेरे पास पहले से ही थे।"

"ले...लेकिन मेरा मास्क कैसे तैयार हो गया?"

"एक कुशल कारीगर को तेरी विभिन्न कोणों से खींची गई तस्वीरें दी गई थीं, जो कि छिपकर जेल के भीतर खींची गई थीं। इतना ही नहीं, उस कारीगर को जेल में भी ले जाया गया था और उसने घण्टेभर तक तुझे देखा था। बाकायदा तेरी विडियो फिल्म भी तैयार की थी मैंने। फिर उस फिल्म को कई बार देखकर तेरे उठने, बैठने, लेटने-चलने, खाने-पीने, खांसने, छींकने, पानी पीने, सिगरेट सुलगाकर पीने, खाना खाने और बात-चीत करने के लहजे की प्रेक्टिस करता रहा मैं।"

"ले...लेकिन क्यों?"

"ताकि...!" केशव उसकी आंखों से आंखों के पेंच लड़ाकर बोला—"मैं तेरे भेष में...यानि मनमोहन बनकर तेरे जीजा विजयराज तक पहुंच सकूं।"

"क...क्या मतलब?" मनमोहन मेंढक की मानिन्द ही सीट पर बैठे-बैठे उछला।

केशव ने सिगरेट में कश मारकर उसके हैरान-परेशान चेहरे पर धुओं का गुबार फेंककर कहा—"मतलब समझाने के लिये बाध्य तो नहीं हूं मैं प्यारे लाल! लेकिन तू भी क्या याद करेगा कि किसी दानवीर कर्ण से पाला पड़ा था। तू तो कानून की पकड़ाई में आ गया। लेकिन तेरा जीजा और बाकी लोग तो अभी आजाद हैं। वो लोग अन्डर ग्राउन्ड हो गये हैं। शायद विजयराज ने नया ठिकाना बना लिया है। उसके नये ठिकानें तक पहुंचकर उसे दबोचने को मेरी आत्मा अति व्याकुल थी। समझ में नहीं आ रहा था कि किया जाये तो क्या किया जाये? तभी बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा और तुझे आजाद कराने के लिये विजयराज ने इन्सपेक्टर सावरकर की धर्मपत्नी जी और बेटे को अपने कब्जे में ले लिया। धन्य है वो माँ जिसने इन्सपेक्टर सावरकर जैसे ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अफसर को जन्मा। इस वर्दी के पुजारी ने अपनी बीवी और बेटे की जान की चिन्ता किये बिना ही मुझे सारी बातें बतला दी थी और मैंने अपना प्लान तैयार कर लिया।"

"ओह...ओह...!" मनमोहन ने आनन्द सावरकर को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा और मिर्ची-सी चबाते हुये बोला—"ये...ये तूने ठीक नहीं किया इन्सपेक्टर। सरकार से प्रमोशन और मैडल पाने के चक्कर में तूने अपनी बीवी और बेटे की जान दांव पर लगा दी। उन दोनों को बुरी मौत मारा...।"

"चुप कर ओये...।" केशव जूते समेत दायें पैर से मनमोहन के बायें घुटने पर ठोकर जड़कर बोला—"केशव पण्डित...नाम है मेरा। पण्डित कभी भी कच्ची गोलियां नहीं खेलता। सुबह-सवेरे ही आनन्द भाई के घर जाकर मैंने ऐसी गैस छोड़ी थी कि भाभी और नीटू समेत तेरे आठों गुन्डे भी बेहोश हो गये थे। उन्हें कुछ भी करने का मौका नहीं दिया था मैंने। भाभी और नीटू को तुरन्त ही हॉस्पिटल भिजवा दिया गया था। वो दोनों होश में आ गये और भले-चंगे हैं। जबकि तेरे गुन्डों को चुपचाप जेल भिजवा दिया गया। लेकिन तुझे अभी जेल नहीं भेजा जायेगा। जब तक मेरा प्लान कम्पलीट और

कामयाब नहीं हो जाता, तुझे छिपाकर गुप्त स्थान पर रखा जायेगा। मिशन कम्पलीट होने पर तुझे फांसी पर चढ़वाने के लिये जेल भेज दिया जायेगा। अभी तो तुझे बेहोश होना है। ताकि आनन्द भाई तुझे उस गुप्त स्थान पर ले जा सकें और मैं तेरे जीजू तक पहुंच सकूं। समझा कि नहीं समझा घोंचू?"



और फिर केशव ने मनमोहन की कनपटी की एक खास नस को दबाकर उसे कम-से-कम चौबीस घन्टे के लिये बेहोश कर दिया।

पीछे से आई पुलिस की गाड़ी मनमोहन को अपने साथ वापिस ले गई।

अब केशव ने मनमोहन की जगह ले ली—यानि अगली सीट पर आकर आनन्द सावरकर पर रिवॉल्वर तान दी और सावरकर जिप्सी को ड्राइव करने लगा।

थोड़ा आगे चलने पर ही मुम्बई से आ रही ऐसी सड़क से, जो कि हाईवे से आकर मिल जाती थी, एक मर्सडीज कार आई और जिप्सी के पीछे-पीछे चलने लगी।

उसमें बैठे ड्राइवर और उसकी बगल वाले युवक को बैक व्यू मिरर के जरिये देखकर उनके हुलिये व हाव-भाव से केशव ने अन्दाजा लगा लिया कि वो छंटे हुये मुजरिम थे और मनमोहन के जीजा विजयराज द्वारा ही भेजे गये थे।

"पंछी दाने चुगने के लिये आ चुके हैं आनन्द भाई।"

"हां! मैं देख रहा हूं पण्डित जी। लेकिन एक बात समझ में नहीं आ रही है।"

"वो क्या?"

"आपने मनमोहन का हुलिया तो बदल लिया। उसकी नक्ल भी बखूबी कर लेंगे। लेकिन बहुत सी ऐसी बातें होंगी, जो आपको मालूम नहीं होंगी। मनमोहन की बहन-जीजा या किसी और ने ऐसी कोई बात या सवाल कर दिया तो फिर आज जवाब कैसे देंगे?"

"तुम्हें इस गाड़ी से उतार दूंगा मैं। वो भी गाड़ी के फुल

स्पीड में दौड़ते-दौड़ते और ड्राइविंग सम्भाल लूंगा। लेकिन फिर जानबूझकर एक एक्सीडेन्ट करूंगा। उससे मेरे सिर पर चोट लगेगी और मेरी याददाश्त चली जायेगी। बात समझ में आई कि नहीं?"

❑❑❑
❑❑❑

मनमोहन की बहन तथा विजयराज की बहन सारिका का रो-रोकर बुरा हाल था।

कारण...वजह?

कारण या वजह यही थी कि मनमोहन रूपी केशव बेड पर जख्मी अवस्था में लेटा हुआ था। उसके सिर पर पट्टियों का हेलमेट-सा चढ़ा हुआ था।

बायीं हथेली पर पट्टी बंधी थी और बायें पैर के पंजे पर हल्के लाल रंग की गर्म पट्टी लिपटी हुई थी।

मर्सीडिज गाड़ी से मनमोहन को लाने गये चार गुन्डे पांच मिनट पहले ही बेहोशी का नाटक कर रहे केशव को लेकर लौटे थे।

कमरे में उन चारों के अलावा मनमोहन रूपी केशव, विजय-राज और रोती-बिलखती सारिका ही मौजूद थी—

"हाय...ये क्या हो गया मेरे भइया को? कितनी चोटें आई हैं। कई बार पुकार लिया, लेकिन जवाब नहीं दे रहे हैं, आंखें नहीं खोल रहे हैं।"

"ये सब कैसे हुआ?" विजयराज ने चारों गुन्डों से पूछा।

"छोटे कमांडर साहब ने इन्सपेक्टर सावरकर कू चलती गाड़ी से बाहर फेंक दियेला था बाप।" एक गुन्डा बोला—"पन फिर गाड़ी का बैलेंस बिगड़ गयेला। गाड़ी का अगला पहिया एक पत्थर पे चढ़ गयेला था। गाड़ी पलट गयेली और एक पेड़ से टकराई। छोटे कमान्डर बुरी तरह जख्मी हो गये ले थे। अपुन लोग इनकू कबीर नगर ले गयेले। उदर डॉक्टर से मरहम-पट्टी करायेली और फिर इनकू इदर लेके आयेले।"

"हाय...मेरे भइया।"

"भगवान के वास्ते चुप हो जाओ सारिका।" विजयराज

थोड़ा झुंझलाकर बोला—"मनमोहन सिर्फ बेहोश ही है। इसे जल्दी ही होश आ जायेगा। देखो हिल रहा है। कुनमुनाया है। दस-पांच मिनट में ही होश में आ जायेगा। चुपचाप बैठो। कितनी बार कहा कि तुम मां बनने वाली हो। रोने से तबियत खराब होगी। बैठ जाओ।"

सारिका बेड के नजदीक ही सोफा चेयर पर बैठ गई और गुलाबी साड़ी के पल्लू से आंसू पोंछते हुये सुबकने लगी।

"आ...आह...!"

कोई दस मिनट पश्चात् ही मनमोहन रूपी केशव ने आंखें खोल दीं और एकटक, अपलक छत को घूरने लगा।

"भ...भइया...।" सारिका सोफे से उठकर बेड के किनारे बैठ गई और 'भइया' का हाथ थाम लिया।

"कैसे हो मनमोहन?" पूछा विजयराज ने।

उसने जैसे सुना ही नहीं।

"तुम...जवाब क्यों नहीं देते हो मनमोहन?"

"......!"

विजयराज उसके चेहरे पर झुककर बोला—"तुम्हीं से पूछ रहा हूं मैं। अब कैसे हो? क्या दर्द ज्यादा है?"

केशव ने उसे अजनबी निगाहों से देखा—एकटक और अपलक देखा।

"कौन-कौन हो तुम?"

"व्हाट...?" विजयराज चिहुंककर बोला—"क्या तुम मुझे नहीं पहचान पा रहे हो?"

उसने इन्कार में सिर हिलाया।

"मु...मुझे तो पहचानते हो तुम भइया?"

उसने फिर इन्कार में सिर हिला दिया।

"हे भगवान!" सारिका रोते हुये बोली—"ये...ये भइया को क्या हो गया जी? ये ना तो आपको ही पहचान रहे हैं और ना ही मुझे।"

"मैं...मैं यहां कैसे आ गया?" बिस्तर पर उठ बैठा दिमाग का जादूगर और हथेलियों से पट्टियों में लिपटे सिर को पकड़कर बोला—"क...क्या हुआ मुझे?"

"त...तुम्हारा एक्सीडेन्ट हो गया था मनमोहन...।"

"मनमोहन? कौन मनमोहन?"

"तुम! क्या तुम्हें अपना नाम भी याद नहीं?"

उसने इन्कार में सिर हिलाया और फिर माथे पर कैंचुअे जैसी कई सिलवटें डालकर बोला—"क...क्या नाम है मेरा? मु...मुझे कुछ याद क्यों नहीं आ रहा है? कौन हूं मैं? क्या नाम है मेरा? कहां का रहने वाला हूं मैं? ये...ये क्या हो रहा है? मु...मुझे अपने बारे में कुछ भी याद क्यों नहीं आ रहा है? भगवान के लिये कोई तो मुझे बतलाये कि मैं कौन हूं? मैं...मैं पागल हो जाऊंगा...मेरा दिमाग चल जायेगा...।"

"हे भगवान...!" सारिका घबराकर बोली—"ये...ये... भइया को क्या हो गया जी?"

"मुझे ऐसा लगता है सारिका कि सिर पर तगड़ी चोट लगने की वजह से तुम्हारे भाई की याददाश्त चली गई है।"

"न...नहींऽऽऽ!" सारिका चीख उठी और बुक्का फाड़कर रोने लगी।




"क...कमांडर साहब...कमांडर साहब...।" एक गुन्डा चीखते-चिल्लाते हुये, गिरते-पड़ते हॉल में दाखिल हुआ और दमे के मरीज की मानिन्द ही हांफते हुये बोला—"पु...पुलिस...।"

हॉल में अपने खास आदमियों और मनमोहन रूपी केशव के साथ बैठा विजयराज चिहुंककर उठा और चीखकर बोला—"क्या बकता है बे?"

"मैं...मैं सच बोल रहा हूं कमान्डर साहब! अपने अड्डे को पुलिस ने चारों तरफ से घेर लिया है। बहुत बड़ी फोर्स है। कम-से-कम पांच सौ पुलिसवाले तो होंगे।"

"ले...लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? पुलिस को हमारे इस नये अड्डे का पता कैसे मिल गया?"

"मैंने बतलाया।" तपाक से बोला केशव।

"तुमने?" चौंककर बोला विजयराज, "ये कोई मजाक करने का वक्त है मनमोहन?"

"मैं मजाक नहीं कर रहा हूं।"

"लगता है कि सिर पर लगी चोट ने तुम्हारी याददाश्त ही नहीं छीनी—बल्कि दिमाग भी खराब कर दिया है।"

"मेरा दिमाग एक दम टनाटन है विजयराज! जिस तरह हवा के तेज झोंकों से पहाड़ नहीं हिलता—उसी तरह ऐसी मामूली और जानबूझकर खाई चोट से मेरा दिमाग हिलने वाला नहीं।"

"जानबूझकर...क्या मतलब?"

तभी बाहर से फायरिंग और चीखो-पुकार की आवाज आने लगी।

"मतलब भी समझाना पड़ेगा क्या? ठीक है...तू भी क्या याद करेगा। मतलब भी समझा देता हूं।"

"ये...ये तुम्हारी आवाज को क्या हुआ? ये आवाज तो मनमोहन की नहीं है।"

"मैं ही कौन-सा मनमोहन हूं।"

"तो फिर कौन है तू?"

केशव ने पहले विग उतारी और फिर फेस मास्क भी उतारकर फेंक दिया।

"तु-तुम...!" विजयराज चिहुंककर बोला—"केशव पण्डित...!"

बाकी गुन्डे भी बुरी तरह चौंके।

"हां, केशव पण्डित।"

"ले...लेकिन तुम तो...मनमोहन कहां है?"

"जहां उसे होना चाहिये...जेल में। तुझ तक...तेरे इस हैडक्वार्टर तक पहुंचने के लिये मैंने सारा खेल खेला था।"

"ऐ...पकड़ो इसे...जान से मार डालो।" विजयराज चीखकर अपने गुन्डों से बोला—"गोलियों से भून डालो इसे।"

गुन्डों ने हथियार सम्भाले भी नहीं थे कि केशव ने एक गुन्डे की कनपटी पर घूंसा जड़कर उससे पिस्टल छीनकर विजयराज की कनपटी पर लगा दी।

घूंसा खाने वाला फर्श पर बेहोश पड़ा था।

"केशव को मारना इतना आसान नहीं है प्यारे।" विजयराज के हाथ को मोड़कर और उसकी ही पीठ से सटाकर

बोला केशव—"तू और तेरे गुन्डे बच नहीं पायेंगे। मैं तेरे भाई यमराज को भी पकड़ना चाहता था लेकिन यहां आने पर पता चला कि वो टांग की हड्डी तुड़वाये अमेरिका के हॉस्पिटल में एडमिट है और महीनेभर से पहले वो आने वाला नहीं है। इतना लम्बा इन्तजार नहीं कर सकता मैं। जब यमराज वापिस लौटेगा तो उससे भी निबटा जायेगा। ये ही काफी है कि तेरे रूप में उसका राइट हैन्ड और तमाम गुन्डे पकड़े जा रहे हैं। एक तरह से मुम्बई से माफिया का खात्मा हो जायेगा। नहीं...कोई भी अपनी जगह से नहीं हिलेगा। जो लोग बाहर हैं, वो या तो गिरफ्तार कर लिये जायेंगे या फिर पुलिस की गोलियों के शिकार हो जायेंगे। सभी लोग यहीं रहेंगे और पुलिस का इन्तजार करेंगे।"

पुलिसवाले आये।

विजयराज और सभी गुन्डों को गिरफ्तार कर लिया गया।

हैडक्वार्टर से काफी तादाद में हथियार, गोला-बारूद, नम्बर दो का माल भी पकड़ा गया।

बहुत-सी फाइलें भी मिलीं, जिनमें माफिया के लिये काम करने वालों के नाम-पते दर्ज थे और माफिया के कई अड्डों व गोदामों के पते भी दर्ज थे।

कुल मिलाकर केशव ने माफिया को बढ़िया और करारी चोट दी थी।

ये तो सिर्फ शुरूआत भर ही थी।

आगे तो इससे भी बड़े-बड़े काम होने बाकी थे।

□□□

□□□

अमेरिका के हॉस्पिटल में एडमिट होकर इलाज करा रहे नागराज उर्फ यमराज को जब सारी बातें मालूम हुई तो उसने हिन्दुस्तान के कुछ दूसरे माफियाओं से फोन पर बात की और कहा कि किसी भी तरीके से उसके भाई को छुड़वाया जाये।

उस रोज पन्द्रह अगस्त था।

जेल में भी स्वतन्त्रता दिवस का कार्यक्रम रखा गया था और जेल के पुराने कैदियों ने जेल के प्रांगण को पतंगी कागजों

की झन्डियों, केले के पेड़ों और पेपर डेकोरेशन से सजाया था।

जेलर, जेल कर्मचारियों और कैदियों को नये होम मिनिस्टर अजीत पारेख से ज्यादा केशव के आने की खुशी थी, उत्साह था।

सिर्फ एक बन्दा ही था, जो कि खुश नहीं था, बल्कि किलसा-मरा जा रहा था—

वो था विजयराज!

केशव ने पहली ही पेशी में उसे अदालत में मुजरिम साबित कर दिया था। उसके खिलाफ इतने सबूत पेश किये थे कि उसके बचने की कोई गुंजाईश ना रही थी। अदालत ने हालांकि सजा सुनाने के लिये अगली तारीख दे दी थी, लेकिन ये तय था कि विजयराज को फांसी की सजा ही सुनाई जानी थी।

एक आयताकार स्टेज पर रंगीन पण्डाल लगाकर उसे सजाया गया था और होम मिनिस्टर...जेलर, केशव पण्डित तथा अन्य मेहमानों के लिये कुर्सियां रखी गई थीं, जिनके आगे एक मेज पर स्वागत के लिये फूल-मालायें, बिसलेरी पानी की बोतलें रखी गई थीं।

स्टेज के अगले हिस्से में माइक रखा हुआ था। स्टेज से थोड़ी ही दूरी पर एक गोल चबूतरा था, जिस पर लगे लोहे के खम्भे पर तिरंगे को बांधा गया था, जिसे होममिनिस्टर को फहराना था।

सभी कैदी मैदान में नई दरियों पर बैठे हुये थे।

स्वतन्त्रता दिवस होने की वजह से विजयराज समेत सभी खतरनाक किस्म के मुजरिमों को हथकड़ी और बेड़ियों से मुक्त रखा गया था।

ठीक दस बजे सायरन व हूटर की आवाजें उभरीं। कई गाड़ियों का काफिला आकर रुका।

सफेद रंग की एम्बेसडर कार में से केशव पण्डित के साथ होममिनिस्टर अजीत पारेख बाहर निकला। साथ आये हथियारबन्द ब्लैक कमान्डोज व अन्य सिक्योरिटी गार्डस् ने दोनों को घेरे में ले लिया।

अपने अन्य अफसरों के साथ जेलर ने होममिनिस्टर और

केशव पण्डित का स्वागत व आगवानी की और ससम्मान स्टेज पर ले गये।

दोनों को फूलमालायें पहनाई गईं।

होम मिनिस्टर तो खादी की धोती-कुर्ते व गांधी टोपी में थे ही, केशव ने सफेद कॉटन का सफारी सूट पहना हुआ था, जिसमें बहुत ज्यादा ही जम रहा था वह।

केशव और कैदियों के बीच बैठे विजयराज की नजरें मिलीं तो विजयराज का चेहरा इलेक्ट्रिक हीटर के जलते एलीमेंट की मानिन्द ही दहक उठा और आंखों में खून के कतरे से उतर आये।

जबकि केशव ने बदले में उसकी तरफ प्यारी-सी मुस्कान उछाल दी।

जेलर ने माइक सम्भालकर होम मिनिस्टर और केशव का स्वागत किया और फिर दोनों को बारी-बारी से भाषण के लिये बुलाया।

फिर होम मिनिस्टर ने दूसरे चबूतरे पर पहुंचकर खम्भे से बंधी डोरी को खोला और खींचा तो बंधे हुये तिरंगे से गुलाब की पंखुड़ियां बरसी और फिर तिरंगा लहराने लगा।

बाहर से आये मिलिट्री बैन्ड ने राष्ट्रीय-गान 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' की मधुर धुन छेड़ दी।

होम मिनिस्टर, जेलर, सभी जेलकर्मी और तमाम कैदी सीधे खड़े हो गये और राष्ट्रीयगान को बुदबुदाने लगे। केशव भी होम मिनिस्टर के साथ सावधान की मुद्रा में खड़ा था और दूसरों के मुकाबले बुलन्द आवाज में राष्ट्रीयगान गा रहा था।

एक व्यक्ति सभी की आंखों में अंगारे की किर्ची की मानिन्द ही चुभ रहा था। वह था विजयराज, जो कि अपने स्थान पर बैठा हुआ होठों को गोलाकार बनाकर सीटी बजाये जा रहा था।

राष्ट्रीय गान पूरा हुआ ही था कि हेलीकॉप्टर की गड़गड़ाहट ने सभी का ध्यान अपनी तरफ खींचा।

"हेलीकॉप्टर...!" जेलर चौंककर बोला—"ये यहां पर कैसे...किसलिये?"

❑❑❑

❑❑❑

वह लाल रंग का हेलीकॉप्टर था, जो कि जेल प्रांगण के ऊपर उड़ रहा था और जिसके निचले हिस्से में लाउडस्पीकर भी बंधा हुआ था।

अचानक ही हेलीकॉप्टर से हैन्ड ग्रेनेड गिराये जाने लगे—

धड़ाम...धड़ाम...धड़ाम...धड़ामऽऽऽ।

कर्णभेदी चार धमाकों के साथ जमीन से आग के गोले उठे और पीड़ाभरी चीखों के साथ कई इन्सानी जिस्म हवा में गैस के गुब्बारों की ही मानिन्द उड़े और हवा में ही उनके परखच्चे से उड़ गये।

जमीन पर इन्सानी अंग, खून व गोश्त के लोथड़ों के साथ हड्डियां भी बिखरी हुई नजर आईं।

चारों तरफ धूल-ही-धूल!

चीखते-चिल्लाते, गिरते-पड़ते लोग जान बचाने की गरज से इधर-उधर दौड़ रहे थे।

"पोजीशन ले लो...।" हड़बड़ाया हुआ जेलर चीख-चीखकर बोला—"आतंकियों का हमला मालूम पड़ता है। हेलीकॉप्टर पर हमला बोल दो।"

"आइये, होम मिनिस्टर साहब।" केशव अजीत पारेख का हाथ पकड़कर बोला—"मैं आपको सुरक्षित स्थान पर पहुंचा देता हूं।"

दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे थोड़ी दूर तक ही दौड़े थे कि...धड़ाम...की तेज आवाज के साथ उनसे दस मीटर आगे एक ग्रेनेड फटा और हेलीकॉप्टर पर बंधे लाउड स्पीकर पर कोई चीख-चीखकर बोला—"नहीं, होम मिनिस्टर...भागने की कोशिश मत करना। हमारे पास सिर्फ ग्रेनेड ही नहीं हैं, बल्कि मशीनगन भी है, जिसके निशाने पर तू ही है। जहां का तहां रुक जा वरना तुझको उड़ा दिया जायेगा।"

ठिठक पड़े अजीत पारेख की दशा दयनीय।

मानो संगमरमर के स्टैच्यू में ही परिवर्तित हो चुका हो वह।

चेहरा पके व बासी आम की मानिन्द ही पीला पड़कर मुरझा-सा गया।

फैलकर फट पड़ने को तैयार आंखों की कटोरियों में आतंक के मेंढ़क 'छप्पक...छप्पक' कर रहे थे।

सूख चले होठों पर जीभ फेरनी चाही—लेकिन मानो वह लकड़ी की हो चुकी थी और हलक में रेगिस्तान का सूखा रेत-सा भर गया था।

"ऐ खबरदार...!" हेलीकॉप्टर की तरफ एक फायर ही हुआ था कि लाउड स्पीकर पर दहाड़ की आवाज गूंज उठी—"कोई भी हेलीकॉप्टर पर फायर नहीं करेगा। सिंहानी सेठ के यहां से इसे चुराने में हमें काफी मशक्कत करनी पड़ी। सिंहानी के पांच गार्डस् मारने पड़े और अपने भी दो आदमी मारे गये। मत भूलो कि तुम सभी लोग और तुम्हारे होम मिनिस्टर साहब हमारे निशाने पर हैं। हमारे पास इतना गोला-बारूद है कि तुम लोगों के साथ-साथ जेल को भी नेस्तनाबूद कर सकते हैं। हमें तबाही का खेल खेलने को मजबूर मत करो। हम यहां विजयराज जी को लेने के लिये आये हैं।"

"मु...मुझे?" एक पेड़ की ओट में छिपा विजयराज बुरी तरह चौंका।

"कहां हो विजयराज जी? सामने आइये।"

कपड़ों की धूल झाड़ते हुये विजयराज पेड़ की ओट से निकला और चीखकर बोला—"कौन लोग हो तुम?"

"हम माफिया से ताल्लुक रखते हैं और आपको इस जेल से निकाल ले जाने के लिये ही आये हैं। हम सीढ़ी नीचे लटका रहे हैं। आप उससे चढ़कर ऊपर आ जाइये।"

विजयराज की नजरें इधर-उधर थिरकने पर केशव पर पहुंचकर अटक गईं और उनमें खून-सा उतर आया।

"यहां पर मेरा एक जानी दुश्मन मौजूद है।" वह चीखकर बोला—"केशव पण्डित... इसी ने मुझे पकड़कर कानून के हवाले

किया। मैं इससे बदला लेना चाहता हूं। इसे सबक सिखलाना चाहता हूं।"

"अभी हमारे पास वक्त नहीं है। हेलीकॉप्टर के चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज करा दी गई होगी। हो सकता है कि जेल में से भी किसी ने पुलिस को फोन कर दिया हो। हमें तुरन्त ही यहां से निकलना होगा। आपका दुश्मन कौन-सा भागा जा रहा है। इससे बाद में निपट लेना। अभी तो फौरन ही हेलीकॉप्टर में चले आइये।"

हेलीकॉप्टर से डोरियों व लकड़ी के डन्डों से निर्मित सीढ़ी नीचे लटका दी गई थी।

दौड़ा विजयराज और सीढ़ी के निचले डन्डे को पकड़कर तेज आवाज में बोला—"हेलीकॉप्टर दौड़ाओ! मैं ऊपर आ रहा हूं।"

हेलीकॉप्टर धीरे-धीरे ऊपर ऊपर उठने लगा और फिर घूमकर उसी दिशा में उड़ने लगा, जिस दिशा से आया।

अचानक ही केशव का चेहरा नारियल के ऊपरी खोल-सा सख्त व कठोर हो चला।

लपककर उसने एक सन्तरी से राइफल झपट ली और हेलीकॉप्टर को निशाना लगाकर दो बार ट्रिगर दबाया...धांय...धांयऽऽऽ।

अचूक निशाना!

दोनों गोलियां ईंधन की टंकी पर लगीं और टंकी आग के शोलों से घिरी दिखलाई पड़ी।

केशव ने एक बार फिर ट्रिगर दबा दिया—

धांयऽऽऽ।

"आहऽऽऽ!"

सनसनाती हुई गोली सीढ़ी पर लटके विजयराज की पीठ में पेवस्त होने पर सीने को फाड़ते हुए पार निकल गई।

विजयराज के हाथों से सीढ़ियां छूट गईं और वो कटी पतंग की मानिन्द ही चकराते हुये नीचे गिरने लगा।

जेल की चाहरदीवारी पर एक खम्भा खड़ा था—उसी खम्भे पर गिरा विजयराज।

काफी ऊंचाई से गिरने के कारण उसका पेट खम्भे से टकराते ही फटा और खम्भा उसके पेट व कमर को फाड़ते हुये पार निकल गया।

खम्भे पर टंगे-टंगे ही विजयराज उस पंछी की मानिन्द ही फड़फड़ाया, जिसके पंखों को एक ही झटके में तोड़कर जिस्म से अलग कर दिया गया हो।

फिर वो शान्त पड़ गया।

उधर पायलट ने जलते हुये हेलीकॉप्टर को सम्भालने की बहुतेरी चेष्टा की, लेकिन हेलीकॉप्टर एक ऊंची चट्टान से जा टकराया। धड़ाम...की कानफोड़ आवाज के साथ हेलीकॉप्टर के टुकड़े आग की लपटों से घिरे हुये हवा में इधर-उधर छितराये और फिर जमीन पर जा गिरे।

❑❑❑

❑❑❑

"न...नहींऽऽऽ!" फोन को फर्श पर पटककर विक्षिप्त भाव से ही चीखा यमराज, "ये...ये नहीं हो सकता। इतना बड़ा अनर्थ नहीं हो सकता। ये...ये क्या हो गया...ये क्या हो गया...विजयराज ...मेरे...भाई...।"

वह फूट-फूटकर रोने लगा।

कमरे में मौजूद डॉक्टर, नर्स और कमरे में यमराज की आवाज सुनकर दाखिल हुई बला की खूबसूरत नमिता भी भौचक्का-सी रह गई।

नमिता यमराज की रखैल थी और वो यमराज के साथ ही हिन्दुस्तान से अमेरिका आई थी। यमराज का एक्सीडेन्ट होने के बाद से वो ही चौबीसों घन्टे उसके पास रहकर उसकी देखभाल कर रही थी। जिन्दगी में पहली बार यमराज को बच्चों की मानिन्द रोते देख रही थी।

उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यमराज को रोते हुये तो क्या कभी दुखी भी देखेगी।

वह बेड के किनारे बैठी और यमराज के हिलते कंधे पर हाथ रखकर बोली—"क...क्या बात हुई यमराज जी...आप इस तरह से क्यों रो रहे हैं?"

यमराज ने चेहरा ऊपर उठाया।

उसकी आंखों से बहते आंसुओं से हल्की दाढ़ीवाला चेहरा भीगा हुआ था।

"गजब हो गया नमिता...अनर्थ हो गया।" यमराज उसके कंधे पर सिर रखकर रोते हुये बोला—"मे...मेरा भाई विजयराज...!"

"क...क्या हुआ विजयराज को?"

"वो...वो मर गया...!"

"क...क्या? न...नहीं...ये नहीं हो सकता...ये झूठ...।"

"काश...काश कि ये सब झूठ होता नमिता। लेकिन हकीकत यही है कि विजयराज...मेरा भाई अब इस दुनिया में नहीं रहा। नागपुर के डॉन जमशेद भाई का फोन आया था। उसके आदमियों ने एक हेलीकॉप्टर का जुगाड़ किया था। उसके आदमी हथियारों और ग्रेनेड से लैस होकर गये थे। कुछ ग्रेनेड डालकर उन्होंने पन्द्रह अगस्त का झन्डा फहराने आये होम मिनिस्टर को मारने की धमकी दी थी और रस्सी लटकाकर विजयराज को कहा था कि वो ऊपर हेलीकॉप्टर में आ जाये। विजयराज सीढ़ी पर चढ़ भी गया था। लेकिन वहां मौजूद केशव पण्डित ने राइफल से गोलियां चलाकर विजयराज की जान ले ली और हेलीकॉप्टर को भी उड़ा दिया।"

"ओ गॉड! ये...ये तो बहुत बुरा हुआ। बेचारी सारिका पर क्या बीत रही होगी? वो तो मां बनने वाली...।"

"सारिका भी जिन्दा नहीं है नमिता।"

"व्हाटऽऽ...ये...ये क्या कह रहे हैं आप?"

"हां, यही हकीकत है नमिता।"

"लेकिन...!"

"विजयराज के साथ सारिका भी गिरफ्तार हुई थी और महिला जेल में थी! जब उसे विजयराज के मरने की खबर मिली तो वो बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसे इतना तगड़ा सदमा लगा कि उसके दिल ने धड़कना ही बन्द कर दिया। सारिका ही नहीं मरी...उसकी कोख में पल रहा बच्चा भी चला गया। अल्ट्रा-साउन्ड की रिपोर्ट के मुताबिक सारिका लड़के को...मेरे

भतीजे को जन्म देने वाली थी। भतीजे के जन्म को लेकर बहुत खुश था मैं। तय किया हुआ था कि ताऊ बनते ही जश्न मनाऊंगा और शानदार पार्टी दूंगा। अपने भतीजे के वास्ते ढेर सारे खिलौने खरीदे थे। अब कौन खेलेगा उन खिलौनों से...कोई नहीं! मैं...मैं बर्बाद हो गया हूं न...नमिता। बेटे समान छोटा भाई। बेटी बराबर सारिका और उसकी कोख में पल रहा मेरा भतीजा...तीनों ही हमेशा-हमेशा के वास्ते छोड़कर चले गये मुझे। कोई भी नहीं रहा। सबकुछ लुट गया मेरा। अनाथ-सा हो गया मैं।"

वह हथेलियों से चेहरा ढांप फफक-फफककर रोने लगा।

नमिता सन्नाटे-से में रह गई।

समझ नहीं पा रही थी कि वो क्या करे?

"हमें फौरन ही हिन्दुस्तान जाना होगा नमिता।"

यमराज के वाक्य ने उसे चौंका दिया।

"ये...ये क्या कह रहे हैं आप? आपकी तबियत ठीक नहीं है। पैर पर प्लास्टर चढ़ा हुआ।"

"प्लास्टर कट जायेगा। जरूरत पड़ी तो हिन्दुस्तान जाकर दोबारा प्लास्टर चढ़वा लूंगा।"

"ले...लेकिन वहां की पुलिस आपको पकड़ सकती है।"

"पुलिस के सामने पडूंगा...तो ही तो पकड़ेगी ना। वहां मेरा भाई और उसकी बीवी मर गई। उनका अन्तिम संस्कार करना है मुझे। उनकी अस्थियों को दरिया में बहाना है। भले ही मेरा भगवान में यकीन ना हो, लेकिन उन लोगों की आत्मा की शान्ति के लिये पूजा-पाठ, हवन वगैरा कराऊंगा। माफिया को जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई करनी है। नये आदमियों को जोड़कर फिर से संगठन खड़ा करना है। नया हैडक्वार्टर बनाना है। सबसे बड़ी बात तो ये कि उस हरामजादे केशव पण्डित से इन्तकाम लेना है। उसको बतलाना है कि यमराज अपने दुश्मन का कितना बुरा हाल करता है।"

कहने पर यमराज नथुनों को चौड़ाकर जोर-जोर से सांसें छोड़ने लगा।

उसका चेहरा और हाव-भाव इतने खतरनाक हो चले कि नमिता भी कांपकर रह गई।

❑❑❑

❑❑❑

पूना का श्मशान घाट!

एक बड़ी चिता तैयार की गई थी, जिस पर विजयराज और सारिका की लाशों को लिटाया गया था।

विजयराज को जहां नया जोधपुरी कुर्ता-पाजामा पहनाया गया था, वहीं सारिका को नई बनारसी साड़ी पहनाने के साथ उसका श्रृंगार भी किया गया था। दोनों की लाशों को पोस्टमार्टम के पश्चात् मोर्ग में रख दिया गया था। पुलिस को ये उम्मीद तो थी ही नहीं कि यमराज लाशों को लेने आयेगा और कानून के शिकंजे में फंस जायेगा—लेकिन ये उम्मीद थी कि शायद कोई रिश्तेदार अन्तिम-संस्कार के लिये लाशों को लेने आ जाये।

हिन्दुस्तान आने पर यमराज ने अपने उन आदमियों को इकट्ठा किया जो कि पुलिस की पकड़ में आने से बच गये थे।

यमराज ने उन्हीं लोगों को ये काम सौंपा था कि वो मोर्ग से विजयराज व सारिका की लाशों को निकालकर लायें और पूना लेकर आयें—क्योंकि मुम्बई में अन्तिम-संस्कार करने में खतरा था।

"लीजिये यजमान!" बूढ़े ब्राहमण ने पानी से भरा घड़ा यमराज की तरफ बढ़ाकर कहा—"इसे कन्धे पर रखकर चिता की तीन परिक्रमा कीजिये और फिर इसे पीठ पीछे जमीन पर गिराकर फोड़ दीजिये।"

यमराज घड़े को कन्धे पर रखकर चिता की परिक्रमा करने लगा। चूंकि घड़े में छिद्र किया गया था, इसलिये पानी की धार जमीन पर गिरती जा रही थी।

तीन परिक्रमा करके यमराज ने पीठ पीछे घड़े को गिराकर जमीन पर फोड़ दिया तो ब्राहमण ने उसे जलती हुई लकड़ी पकड़ा दी।

यमराज ने विजयराज तथा सारिका की लाशों को सारिका

के उभरे हुये पेट को आंसूभरी आंखों से निहारा और फिर चिता को आग लगाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

रो रही नमिता उसकी सूंड-सी मोटी कलाई पकड़कर जलती चिता से थोड़ा परे ले गई।

बाकी जो लोग मौजूद थे, उनकी आंखों में आंसू भरे हुये थे।

यमराज ने जिस लकड़ी से दाह संस्कार किया था उसे पकड़े हुये ऊंची-ऊंची लपटों वाली चिता के करीब पहुंचा।

पता नहीं कि चिता की लपटों की रोशनी उसके स्याह चेहरे पर पड़ रही थी, या उसके सीने की आग ने चेहरे को सुलगाना शुरू कर दिया था।

चिता को एकटक घूरती आंखों में भरे आंसू धीरे-धीरे गाढ़े होने लगे और सफेद से सुर्ख रंग में भी परिवर्तित होने लगे।

"विजयराज! मेरे भाई!" उसके हलक का पिटारा खुला और इन्तकाम के नाग ने फन उठाकर फुंफकारना शुरू कर दिया, "छोटा भाई नहीं, बेटा माना तुझे। आज तू ही नहीं रहा। मुझे हमेशा-हमेशा के लिये छोड़कर जा रहा है। जा भाई जा...मेरे पुकारने से भी वापिस नहीं आयेगा। तेरी आत्मा जहां भी जाये...खुश रहे। सुनते हैं कि मरने बाद आत्मा दूसरा जन्म ले लेती है। मरने वाले का दूसरा जन्म हो जाता है। लेकिन तू दूसरा जन्म लेने की जल्दी मत करना। पहले ऊपर बैठे-बैठे ये देखना कि तेरा भाई तेरे कातिल को क्या सजा देता है। नहीं...तेरे कातिल को मारूंगा नहीं। दुश्मन खत्म तो दुश्मनी भी खत्म। तुझे मैंने इस चिता की आग में जलाया है और तेरी बची-खुची हड्डियों को किसी दरिया में बहा दूंगा।"

"लेकिन केशव पण्डित लकड़ियों से बनी चिता में नहीं जलेगा...।" अचानक ही वह गला फाड़कर चिल्ला-चिल्लाकर बोलने लगा—"मैं केशव पण्डित की जिन्दगी को श्मशान बनाकर रख दूंगा। उसकी खुशियों को गम और दुख की धूप में सुखाकर लकड़ियां बना दूंगा। उसकी एक-एक सांस में अपने इन्तकाम की चिंगारियां भर दूंगा। उसकी खुशहाली को उसका कफन बना दूंगा और उसके वास्ते शिकस्त की अर्थी तैयार

करूंगा। लोग मरने के बाद चिता में जलते हैं। लेकिन तेरा कातिल...वो केशव पण्डित जीते-जी जलेगा। मुसीबतों की लपटों से घिर जायेगा वो और तकलीफों का धुआं उसका दम घोंटता रहेगा। उसे अपनी जिन्दगी मौत से भी बदतर लगने लगेगी। वो हरामजादा घबराकर अपने भगवान से मौत की दुआ करेगा। उसकी जिन्दगी को तहस-नहस करके रख दूंगा। मेरी आंखों में तो नमकीन पानी वाले आंसू आये थे—लेकिन उसकी आंखों में खून के आंसू भरे होंगे। अगर मैंने तेरे कत्ल का इन्तकाम ना लिया तो अपने बाप की औलाद नहीं। समझूंगा कि अपनी मां का नहीं, किसी कुतिया का दूध पीया था मैंने। तू ऊपर से केशव पण्डित की तबाहियों का मन्जर देखना विजयराज। जश्न मनाना मेरे भाई...जश्न।"

फिर जलती लकड़ी को चिता में फेंककर पलटा यमराज और नमिता समेत अपने तमाम आदमियों से मुखातिब होकर बोला—"ऐ...अपने आंसू पोंछो। अब कोई नहीं रोयेगा। हमें जितना रोना था, रो लिये। अब रोने की बारी है तो उस साले केशव पण्डित की। मेरे भाई को मारकर तो वो कामयाबी का जश्न मना रहा होगा। लेकिन बहुत जल्द उसके जश्न को मातम में बदल दिया जायेगा। लेकिन उससे पहले हमें अपने संगठन को खड़ा करना है और पहले की तरह ही मजबूत करना है। फिर केशव पण्डित को बतलाऊंगा कि उसने यमराज के भाई, छोटी भाभी और होने वाले भतीजे की जान लेकर अपने वास्ते कितनी बड़ी मुसीबत खरीद ली है!"





लगभग एक महीने पश्चात्—

काफी बड़ा और खूबसूरत हॉल था वो।

खूबसूरत नक्काशी वाली छत के बीचों-बीच क्रिस्टल का बना बड़ा झूमर लटका हुआ था, जिसके भीतर पचास के लगभग छोटे-बड़े बल्ब रोशन थे। दीवारों पर शेर, चीते, हिरण, भालू, भेड़िये, लक्कड़बग्घे, लोमड़ी, जंगली बिल्ली के कटे हुये सिर लगाये गये थे।

पचास कुर्सियों पर काले सूट वाले युवक तथा अधेड़ विराजमान थे, जो कि शक्ल-सूरत और हाव-भाव से ही छंटे हुये मुजरिम मालूम पड़ रहे थे। उनके सामने डॉन के रूप में यमराज शेर की खाल से मढ़े सिंहासन पर विराजमान था।

काली पैन्ट के ऊपर काला ओवरकोट, जिसके सभी बटन सोने के थे। सिर पर काला हैट और आंखों पर भी काला चश्मा।

उसकी बगल में नमिता भी बैठी हुई थी, जिसने लाल रंग की फ्रॉक-नुमा ऐसी पोशाक पहनी हुई थी कि सीने के दूधिया व गुदाज उभार बाहर की ताका-झांकी कर रहे थे और केले के तने-सी चिकनी व सून्डाकार लम्बी टांगें अपनी खूबसूरती की चुगली खा रही थीं।

सिंहासन के दायें-बायें एक-एक और पीछे दो ब्लैक कमान्डोज अटेंशन की पोजीशन में खड़े थे जिनके हाथों में लाइट मशीनगन, ए० के० सैंतालीस और टॉमीगन जैसे हथियार थमे हुये थे।

यमराज ने ओवरकोट की जेब से सिगरेट की डिब्बी व लाइटर निकालकर लाइटर नमिता को दिया और डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर होठों के दरमियां फंसा ली।

नमिता ने लाइटर जलाकर उसकी नीली लौ से सिगरेट का अगला सिरा सुलगा दिया।

नथुनों से धुआं उगलकर और सिगरेट को होठों से दायें हाथ की दो उंगलियों के बीच ट्रांसफर करके भारी-भरकम आवाज में बोला यमराज—"महीनेभर की मेहनत-मशक्कत के बाद हमने आखिरकार अपना संगठन खड़ा कर ही लिया। ये हैडक्वार्टर भी तैयार कर लिया और मुम्बई के लगभग सभी इलाकों में अपने अड्डे बनाकर कारोबार शुरू कर दिया है। धीरे-धीरे पूरे स्टेट में अपने कारोबार को फैला देंगे। आदमियों की भर्ती चालू है। बहुत जल्द हमारे पास खतरनाक आदमियों की पूरी फौज होगी। कारोबार तो चलता ही रहेगा। लेकिन महीनेभर तक में सब्र के कड़वे घूंट पीता रहा हूं और इन्तकाम के अंगारों को सीने की अंगीठी में पाले बैठा हूं। अब बर्दाश्त की इन्तहा हो चली है। अब मुझे अपने दुश्मन केशव पण्डित

से इन्तकाम लेना है। एक बात ध्यान में रखना कि केशव पण्डित को जान से नहीं मारना है। उसको सिर्फ परेशान करना है। उसकी राहों में कांटे बो देने हैं। उसकी खुशियों को मातम में तब्दील कर देना है। सुना है कि वो बहुत घमन्डी है। सिर कटवा सकता है, लेकिन सिर झुका नहीं सकता। मुझे भी इस बात की जिद है कि उस मगरूर इन्सान का सिर झुका देना है। ऐसे हालात पैदा कर देने हैं कि वो घुटनों के बल चलकर आये और मेरे पैरों में सिर टिकाकर रहम की भीख मांगने पर मजबूर हो जाये। फिर सोचूंगा कि उसे जिन्दा छोड़ना है कि उसकी बोटी-बोटी करके चील-कौओं को खिलानी है!"

❑❑❑
❑❑❑

सफेद रंग का बहुत छोटे साइज का पामेरियन नस्ल का प्यारा-सा खूबसूरत पिल्ला, जिसके माथे के बीचोंबीच भूरे रंग का कुदरती तिलक बना हुआ था।

बेंत की बनी छोटी-सी बास्केट में फूलों के बिछौने पर बैठा वह 'कूं...कूं' किये जा रहा था।

आज आशीर्वाद का जन्मदिन था—दूसरा जन्मदिन।

सोफिया ने ही गुब्बारों, कलर्ड रिबन्स, रंग-बिरंगी व चमकीली कन्दीलों से हॉल रूम को सजाया था।

हॉल के बीचों-बीच गोल मेज पर चारमीनार के मॉडल जैसा केक सजा हुआ था और उस पर लाल रंग की दो मोमबत्तियां लगी हुई थीं।

सोफिया ने आस-पड़ोस के लोगों को बुलाया हुआ था और दर्जनभर बच्चों के सिरों पर रंग-बिरंगे पंखों वाली टोपियां और चेहरों पर विभिन्न जानवरों के मुखौटे चढ़े हुये थे।

आशीर्वाद ने गारमेन्ट स्टोर से अपनी पसन्द की ली हुई नेवी के अफसर जैसी सफेद रंग की पोशाक पहनी हुई थी, जिसमें वो काफी जम रहा था।

खैर, अपने गुरु रमाकान्त, उसकी बीवी कमलेश और चौदह वर्षीय बेटी माधवी के साथ केशव आ पहुंचा।

"डैडी...डैडी...!" आशीर्वाद लपककर केशव के पास

और उसके हाथ में थमी बास्केट में बैठे पप्पी को निहारते हुए बोला—"ये छोटा कुत्ता किसका है डैडी?"

"ये तुम्हारे लिये है। तुम्हारे हैप्पी बर्थ डे का तोहफा। लेकिन पहले दादाजी-दादीजी और दीदी का आशीष लो।"

आशीर्वाद ने रमाकान्त, कमलेश और माधवी के चरण-स्पर्श किये तो तीनों ने उसे खूब प्यार किया और आशीष के साथ जन्मदिन की बधाइयां भी दीं।

फिर माधवी ने आशीर्वाद को गिफ्ट पैक दिया और आशीर्वाद ने उसे थैंक्यू बोलने पर केशव से बास्केट ले ली।

बास्केट फर्श पर रख स्वयं भी फर्श पर बैठ गया और पप्पी को गोद में लेकर केशव से पूछा—"इसका नाम क्या है डैडी जी?"

"अभी तक तो इसका कोई नाम नहीं है। ये तुम्हारा दोस्त है। तुम ही इसको कोई नाम दे दो।"

आशीर्वाद की नीलम-सी नीली आंखें सोचने वाली मुद्रा में सिकुड़ चलीं।

"मैं इसका नाम पप्पू रखूं डैडी जी...!"

"तुम्हारी मर्जी।"

"ठीक है। मैं इसे पप्पू बोलूंगा। पप्पू...ऐ पप्पू...।"

बाकी बच्चों ने भी आशीर्वाद को घेर लिया और उसकी गोद में दुबके पप्पू को सहलाने लगे।

उधर सोफिया ने रमाकान्त व कमलेश के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लिया और उन्हें सम्मान के साथ सोफे पर बिठाया, जबकि माधवी को काम में हाथ बंटाने के लिये किचन में ले गई। उन दोनों ने सभी मेहमानों को थम्स-अप और लिम्का के साथ काजू की बर्फी व छोटे-छोटे समोसे सर्व किये।

"बारह बजने में सिर्फ पांच मिनट शेष रह गई हैं सोफी।" केशव कलाई पर बंधी रिस्टवॉच पर निगाहें डालकर बोला—"आशीर्वाद का जन्म बारह बजे हुआ था। अगर आशीर्वाद बारह बजे ही केक काटे तो बढ़िया रहेगा। चलो, आशीर्वाद बेटे।"

आशीर्वाद 'पप्पू' को गोद में उठाये हुये अपने मित्रों के साथ केक वाली मेज के करीब पहुंच गया।

केशव ने दोनों मोमबत्तियां जला दीं और आशीर्वाद से पप्पू को ले लिया।

तालियों के बीच आशीर्वाद ने फूंक मारकर मोमबत्तियां बुझाईं और फिर सोफिया की मदद से लाल रिबन बंधी छुरी से केक को काटा।

सभी ने एक सुर में 'हैप्पी बर्थ डे' सांग गाया। केशव और सोफिया ने आशीर्वाद को और आशीर्वाद ने उन दोनों को केक खिलाया।

फिर सोफिया व माधवी ने मिलकर सभी को केक सर्व किया।

ये क्या?

सभी के सिर चकराने लगे और आंखों के सामने अन्धकार-सा छाने लगा।

सभी सिर पकड़कर झूमने लगे।

बच्चे घबराकर रोने-चिल्लाने लगे और फिर फर्श पर गिरने लगे—आशीर्वाद भी गिरा।

केशव की छठी इन्द्री ने खतरे की घण्टी टनटनाई तो वह लड़खड़ाते कदमों से बाथरूम पहुंचा। वाशबेसिन की टोंटी खोलकर उसने मुंह में दायें हाथ की उंगलियां डाली और 'कै' करने लगा।

"सा...साहब जी...साहब जी।" एक पतली-सी और घबराई हुई आवाज उसके कानों में पड़ी—"आप कहां हो साहब जी?"

वह बाथरूम से बाहर निकला तो पाया कि सभी लोग बेहोश हो चुके थे।

किचन से निकलकर आई सोलह वर्षीय नौकरानी पुष्पा बुरी तरह घबराई हुई थी। उसका सुन्दर चेहरा फक्क पड़ा हुआ था और समूचा जिस्म तेज भूकम्प की चपेट में आये मकान की मानिन्द ही थरथरा रहा था।

"ये...ये क्या हो गया...साहब जी...?"

"घबराने की जरूरत नहीं पुष्पा। मैं अभी हॉस्पिटल फोन करके एम्बूलेंस मंगवाता हूं।"

फिर केशव ने हॉस्पिटल फोन किया।

आधे घन्टे में ही एक दर्जन एम्बूलेंस आ गईं।

हॉस्पिटल के सफेद वर्दीधारी कर्मचारी सभी को स्ट्रेचर पर लादकर एम्बूलेंसों तक ले गये। केशव ने एक साथ दो-दो बच्चों को उठाकर एम्बूलेंस तक पहुंचाया। सबसे अन्त में उसने अपने बेटे आशीर्वाद को एम्बूलेंस में पहुंचाया।

उसके दिमाग में खलबली-सी मची हुई थी कि आखिर सभी लोगों के बेहोश होने के पीछे वजह क्या है?

❑❑❑

❑❑❑

मैट्रो कन्फैक्शनरी एंड बेकरी में दाखिल होते वक्त केशव काफी क्रोध में था और उसकी मुट्ठियां इस कदर भिंची हुई थीं कि अगर उनमें कंचे भी होते तो शायद उनका पाउडर बन गया होता।

लेकिन!

बेकरी के मालिक पर नजर पड़ने पर उसका क्रोध सोडा वाटर के झागों की मानिन्द ही बैठता चला गया।

दुकानदार के चेहरे पर मातमी भाव थे और वह लुटा-पिटा नजर आ रहा था।

"आ...आइये, पण्डित जी।" वह कमजोर-सी आवाज में बोला—"पार्टी कैसी रही?"

"खाक ठीक रही अरोड़ा जी।" केशव क्रोध के पिटारे पर नियन्त्रण का ढक्कन लगाकर बोला, "आपके यहां से गये केक को खाकर सभी लोग बेहोश हो गये।"

"क...क्या?" अरोड़ा चिहुंककर बोला—"ये...ये आप क्या कह रहे हैं पण्डित जी? ऐ...ऐसा कैसे हो सकता?"

"तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं अरोड़ा जी? मैंने बाथरूम जाकर कै की तो बेहोश होने से बच गया। नौकरानी किचन में चाय-नाश्ता तैयार कर रही थी इसलिये उसने केक नहीं खाया और वो बेहोश होने से बच गई। सभी को हॉस्पिटल में एडमिट

कराया है। हालांकि सभी खतरे से बाहर हैं और होश में आ चुके हैं, लेकिन डॉक्टरों के मुताबिक केक में तेज नशे वाली कोई दवाई मिलाई गई थी।"

"न...नहीं...!"

"पुराने सम्बन्धों का ख्याल करते हुये मैं पुलिस में नहीं गया। लेकिन आपको ये तो बतलाना ही होगा कि केक में गड़बड़ी कैसे हुई—क्यों हुई?"

"केक बनाने वाला एक ही कारीगर था...बलवीर! उसे आप जानते हैं।"

"कहां है वो?"

अरोड़ा ने तर्जनी उंगली ऊपर की तरफ उठा दी।

"क्या मतलब?" चौंककर केशव ने अरोड़ा को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

"बीरबल दोपहर का खाना खाने के लिये अपने घर गया था। लेकिन वो अगले चौराहे तक ही पहुंचा था कि एक ट्रक उसे कुचलकर चला गया।"

"क्या?"

"जी पण्डित जी!" अरोड़ा मानो रो पड़ने को तैयार था—"देखने वालों ने बतलाया कि ट्रक के ड्राइवर ने जानबूझकर बलवीर को रौंदा था। बलवीर फुटपाथ पर था। ट्रक ने फुटपाथ पर बलवीर को कुचला और फिर भाग गया। देखने वालों के मुताबिक ट्रक की नम्बर प्लेट पर कीचड़ पुती हुई थी, इसलिये कोई उसका नम्बर नोट नहीं कर पाया। फिर भी मेरा लड़का पुलिस सटेशन में रिपोर्ट दर्ज कराने गया है। वो लौटेगा तो दुकान बढ़ाऊंगा। बलवीर बहुत पुराना कारीगर था। मेहनती भी था और ईमानदार भी था वो। स्टाफ के लोग और मेरा छोटा लड़का बलवीर के घर गये हुये हैं। बड़े लड़के के लौटने पर मैं भी उसके घर जाऊंगा।"

अरोड़ा बोले जा रहा था, लेकिन केशव उसकी बजाय अपने दिमाग की सरगोशी-सी सुन रहा था—"कोई-ना-कोई तो चक्कर है केशव प्यारे। केक बनाने वाले कारीगर को एक ट्रक वाला जानबूझकर रौंदकर चला गया। कहीं ऐसा तो नहीं कि

किसी ने बलवीर को डरा-धमकाकर या रुपये-पैसों का लालच देकर केक में गड़बड़ी कराई हो? और केशव को उसके बारे में बतला ना दे...इसीलिये उसे मार दिया गया हो? क्या बलवीर की बीवी कोई जानकारी दे सकती है?"



केशव ने नई मारुति आठ सौ खरीदी थी, जिस पर सवार होकर वह केक बनाने वाले कारीगर बलवीर के घर जा रहा था।

कल की बजाय उसने आज का दिन चुना था।

हॉस्पिटल में एडमिट सभी लोगों की तबियत में सुधार देखते हुये डॉक्टरों ने सभी को कल शाम को ही छुट्टी दे दी थी।

धांयऽऽऽ!

फायर हुआ और कार धुत्त शराबी की मानिन्द ही लहराई।

नर्वस हुये बिना केशव ने कार को नियन्त्रित किया और धीरे-धीरे ब्रेक लगाकर सड़क किनारे रोक दिया। बाहर निकालकर देखा कि ड्राइविंग साइड वाला टायर फटकर सड़क से चिपक गया था।

केशव ने चारों तरफ निगाहें दौड़ाई—लेकिन गोली चलाने वाला दिखलाई नहीं पड़ा।

उसने कार के सभी दरवाजे लॉक किये और फिर चारमीनार की सिगरेट सुलगाकर कश लगाते हुये पैदल ही चल दिया।

वजह ये थी कि स्टपनी में पहले से ही पंक्चर था—इसलिये गैराज वाले की मदद लेनी जरूरी थी।

लगभग आधा किलोमीटर आगे ही गैराज था।

"नमस्कार, पण्डित जी...।" गैराज के मालिक ने उसे देखा तो कुर्सी छोड़कर और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

"नमस्कार नदीम भाई...," केशव ने पहले हाथ जोड़े और फिर उससे हाथ मिलाकर बोला—"कैसे हो?"

"ऊपरवाले का करम है, मेहरबानी है पण्डित जी। बैठिये। कहिये, ठन्डा लेंगे कि गर्म?"

"कुछ नहीं नदीम भाई। एक अन्तिम संस्कार में शामिल होने जा रहा था कि किसी ने गोली मारकर अगला टायर फाड़ दिया।"

"ओह...आपको तो चोट नहीं आई?"

"नहीं...बिल्कुल नहीं।" केशव ने पैन्ट की पिछली जेब से पर्स निकालकर उसे खोला और सौ-सौ के कई नोट निकालकर बोला—"ऐसा करना नदीम भाई, डिक्की में पंक्चर वाली स्टपनी है। उसमें तो पंक्चर लगवा देना। गोली लगने से अगला टायर और ट्यूब तो बेकार हो ही गये होंगे। मार्केट से नये टायर-ट्यूब मंगवा लेना। कितने पैसे ...?"

"शर्मिन्दा मत कीजिये पण्डित जी। पैसे काम हो जाने के बाद ही लूंगा। जब आप लौटेंगे तो मेरे साथ चाय या कोल्ड ड्रिंक पीनी होगी। पर्स जेब में रख लीजिये। गाड़ी कहां है?"

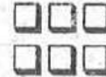
"मुन्ना पार्क के सामने।"

"ठीक है। मैं अपने चेलों को भेजकर मंगा लेता हूं।"

"थैंक्यू! मैं तीन-चार घण्टे बाद ही लौट पाऊंगा।"

केशव ने कार की चाबी नदीम को दी और फिर बलबीर के घर जाने के लिये टैक्सी रुकवाई और उसमें सवार होकर चलता बना।

"ओये राधे...कल्लू...!" नदीम चिल्लाकर बोला—"मुन्ना पार्क के बाहर अपने पण्डित जी की गाड़ी खड़ी है। अगले टायर में गोली लगी है। फौरन ही गाड़ी को यहां लेकर आओ।"



केशव बलवीर की शवयात्रा और अन्तिम संस्कार में भी शामिल हुआ और फिर वापिस उसके घर लौटा। उसने बेकरी के मालिक सुदेश अरोड़ा से कहा कि उसे मृतक बलवीर की बीवी से मिलकर थोड़ी पूछताछ करनी है।

अरोड़ा उसे मकान के एक कमरे में ले गया और कुर्सी पर बैठने को कहकर बाहर चला गया।

केशव पण्डित के अब तक प्रकाशित 117 उपन्यास

1. सुहाग की हत्या
2. हत्यारा जज
3. खून से सनी वर्दी
4. कानून की दहशत
5. कानून किसी का बाप नहीं
6. सोलह साल का हिटलर
7. कब मिटेगी गुण्डागर्दी
8. नसीब वाला गुण्डा
9. डण्डे की दुनिया
10. केशव का चक्रव्यूह
11. गुण्डों की जंग
12. हिंसा भड़क उठी
13. वर्दी में भरा बारूद
14. मां टकरायेगी कानून से
15. दिमाग का जादूगर
16. धमाका करेगी रोटी
17. लाठी की आवाज
18. जंग का ऐलान
19. तबाही का तूफान
20. जज खड़ा कटहरे में
21. कोर्ट रूम
22. टाईम बम
23. टुकड़े कर दो कानून के
24. लाश पर सजा तिरंगा
25. **कानून की लोमड़ी**
26. मुंहतोड़ जवाब
27. खून बहा दे लाल मेरे
28. शेर की औलाद
29. मां करोड़ों हैं लाल तेरे
30. दुनिया मेरे कदमों में
31. हिटलर का अवतार
32. मत बेचो कानून को
33. मकड़ी का जाल
34. जिसकी लाठी उसकी भैंस
35. यमराज
36. तबाही मचायेगी विधवा
37. नाच नचायेगा मदारी
38. कानून का खिलाड़ी
39. तिगनी का नाच
40. होली खेलेगा तिरंगा
41. छक्के छुड़ा दूंगा
42. दुल्हन लड़ेगी कानून से
43. खादी में लिपटा माफिया
44. जूता करेगा राज
45. आंचल में है बारूद
46. डाक बंगला
47. मां ललकारे शैतान को
48. चींटी लड़ेगी हाथी से
49. पगली माई बोले जयहिन्द
50. **तू लोमड़ी मैं चाणक्य**
51. मास्टर माइंड
52. दस दिन का सिकन्दर
53. लड़ेगा भाई भगवान से
54. 48 इंच का हिटलर
55. दिमाग की जंग
56. शेर-चीते की लड़ाई
57. रिंग मास्टर
58. ढाई इंच का बाजीगर
59. चूहे-बिल्ली का खेल
60. बन जा बेटा भस्मासुर
61. अन्धा वकील गूंगा गवाह
62. गंगा बहेगी अदालत में
63. ढाई आने का वकील
64. कानून का जोकर
65. बच्चा-बच्चा है हिन्दुस्तानी
66. बावन गज का बौना
67. आया ऊंट पहाड़ के नीचे
68. जूता ऊंचा रहे हमारा
69. चवन्नी का हाथी
70. डकैती एक रुपये की
71. आंटी बड़ी शैतान है
72. गुरु-चेले की जंग
73. कानून की दुकान
74. तू पण्डित मैं कसाई
75. **बब्बर शेर**
76. चकमा
77. सास-बहू की जंग
78. ये देश है वीर जवानों का
79. मेरा रंग दे बसंती चोला
80. काला कातिल गोरी लाश
81. पचास करोड़ का भिखारी
82. सौ सुनार की एक लोहार की
83. छूमंतर
84. मर्डर मिस्ट्री
85. बालम का चक्रव्यूह
86. झटका 440 वोल्ट का
87. मुर्दा बड़ा बदमाश है
88. केकड़ा
89. बारात जायेगी पाकिस्तान
90. किन्नर बादशाह
91. हिमालय से ऊँचा है कानून
92. कातिल मिलेगा माचिस में
93. अन्धा नहीं है कानून
94. दीपावली मनायेंगे सरहद पर
95. दिमाग घूम जायेगा
96. फंस गया जादूगर
97. मर्डर स्पेशलिस्ट
98. तू सेर मैं सवा सेर
99. जिसका डंडा उसका कानून
100. **केशव की शादी**
101. अर्जुन एक कौरव 101
102. कंकर का जवाब गोली
103. दुल्हन एक रुपये की
104. देख तमाशा नागिन का
105. वो लाश खाने वाला
106. ये शहर है चूहों का
107. डेढ़ पसली का रावण
108. चिराग लड़ेगा तूफान से
109. सिकन्दर हारेगा दिमाग से
110. मेरी बीवी झांसी की रानी
111. बन जाओ सजना तानाशाह
112. शंख बजाऊंगा हाथी नचाऊंगा
113. कब आओगे कृष्ण कन्हैया
114. शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं
115. कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा
116. बच्चों की बनेगी बटालियन
117. शादी करूंगी यमराज से

दस मिनट पश्चात् लौटा तो साथ में विधवा के लिबास वाली कोई पैंतीस वर्षीय युवती भी थी, जिसकी आंखें लगातार रोने की वजह से सुर्ख हो चुकी थीं और सूजी हुई भी थीं।

"नमस्ते, बहन जी... ।" केशव ने कुर्सी से उठकर और हाथ जोड़कर कहा, "माफी चाहूंगा! ये वक्त पूछताछ करने का नहीं है—लेकिन... ।"

"कोई बात नहीं पण्डित जी... ।" वह भराई-सी आवाज में बोली—"अरोड़ा जी ने बतलाया कि कल आपके बेटे का जन्मदिन था और केक खाकर सभी लोग बेहोश हो गये थे। भगवान का धन्यवाद कि किसी की जान पर नहीं बनी। मेरे पति ने जिन्दगी में पहली बार लालच में आकर गलत काम किया और उसकी सजा भी मिल गई। शायद उनसे गलत काम कराने वाले ने ही ट्रक से टक्कर मारकर उनकी जान ले ली।"

"क...क्या मतलब?" चौंककर बोला केशव, "क्या बलवीर ने आपको कुछ बतलाया था? प्लीज, पहले आप बैठ जाइये।"

"आप दोनों भी बैठिये।" वह केशव और अरोड़ा से बोली। दोनों के कुर्सियों पर बैठ जाने पर ही वो तीसरी कुर्सी पर बैठी और फिर आंखों में भर आये आंसुओं को सफेद साड़ी के पल्लू से पोंछने पर बोली—"हमारा बेटा बीमार पड़ गया था और उसका तीन महीने बाद इलाज चला था। हालांकि अरोड़ा जी ने भी हमारी काफी मदद की थी, लेकिन फिर भी उन्हें मकान को गिरवी रखकर कर्जा लेना पड़ा था। हमें यही चिन्ता खाये जाती थी कि कर्जे से कैसे छुटकारा मिलेगा और मकान के कागजात कैसे वापिस मिलेंगे। आज वो बेकरी पर गये तो घण्टे भर बाद ही उन्होंने पड़ोसी के यहां फोन करके मुझे बुलाया था।"

"फोन... ।" अरोड़ा बीच में बोला, "बेकरी पर पहुंचने पर तो बलवीर पण्डित जी के लिये केक बनाने में जुट गया था। वो काफी लेट पहुंचा था। मैंने शिकायत की तो वो बोला कि घण्टेभर में ही केक तैयार कर दूंगा। उसने साढ़े दस बजे

तक केक तैयार कर भी दिया था। खैर, फोन पर उसने तुमसे क्या कहा था बेटी?"

"वो बोले थे कि उन्हें किसी ने एक लाख रुपये के बदले बहुत ही मामूली काम करने के कहा है। मैं हैरानी में पड़कर बोली थी कि आखिर कोई मामूली काम के बदले इतनी मोटी रकम कैसे दे सकता है? मैंने उनसे कहा था कि कोई नम्बर दो का काम तो नहीं करा रहा है? तो वो बोले थे कि उन्हें केक में नशीली दवा मिलानी है। केक खाने वाले थोड़ी देर के लिये बेहोश होंगे, लेकिन किसी की जान नहीं जायेगी। ये भी बोले थे कि एक अमीर आदमी है और वो अपने किसी दोस्त के साथ मजाक करनी चाहता है। वो ये बोले कि दोपहर में जब खाना खाने आऊंगा तो एक लाख रुपये लेकर आऊंगा। लेकिन वो नहीं आये...उनकी लाश ही आई।" इतना बोलने पर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

केशव ने उसे सांत्वना दी और फिर उठ खड़ा हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

केशव पहले बेकरी वाले इलाके के पुलिस स्टेशन पर पहुंचा।

वहां का थानेदार पूर्व परिचित था। उसने केशव का स्वागत किया और कोल्ड ड्रिंक के साथ आलू के समोसे भी मंगवा लिये।

केशव ने जब बलवबीर का एक्सीडेन्ट करने वाले ट्रक की बावत पूछा तो इन्सपेक्टर ने बतलाया कि वो ट्रक लावारिश हालत में खड़ा मिल गया था। उसके मालिक को तलब किया गया तो उसने बतलाया कि कुछ नकाबपोशों ने ढाबे पर खाना खा रहे ड्राइवर व क्लीनर को हथियार दिखलाकर चाबी ली थी और ट्रक को ले उड़े थे। ड्राइवर और क्लीनर ने ट्रक मालिक के साथ कल्याण पुलिस स्टेशन जाकर ट्रक की लूट की रिपोर्ट दर्ज करवा दी थी।

इन्सपेक्टर ने केशव को ये भी बतलाया कि वो फोन पर कल्याण पुलिस से इस बात की तस्दीक भी कर चुका है कि

वहां पर ट्रक चोरी की रिपोर्ट कल शाम ही दर्ज करा दी थी।

दुविधा में पड़े केशव ने इन्सपेक्टर का शुक्रिया अदा किया और फिर गैराज पर पहुंचा।

गैराज मालिक के मातमी चेहरे ने उसे चौंकाया—"क्या हुआ नदीम भाई?"

"गजब हो गया पण्डित जी!" नदीम कुर्सी से उठकर बोला—"मैंने अपने चेलों राधे और कल्लू को आपकी गाड़ी लाने के लिये भेजा था लेकिन...।"

"लेकिन? लेकिन क्या?"

"उन्होंने वहां पहुंचकर देखा कि आठ काली पोशाक और नकाब वाले गुन्डे हॉकियों और लोहे के सरियों से आपकी गाड़ी पर अन्धाधुन्ध प्रहार किये जा रहे थे।"

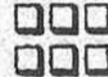
"क्या...?" चौंका केशव।

"राधे और कल्लू ने उन गुन्डों का विरोध किया तो गुन्डे गाड़ी को छोड़ उन पर पिल पड़े। दोनों को इतना मारा कि वो बेहोश हो गये।"

"ओह...नो...!"

"जब वो दोनों काफी देर तक नहीं लौटे तो मैंने तीसरे चेले मन्नू को भेजा। मन्नू गया और फिर वापिस लौटकर बतलाया कि राधे और कल्लू जख्मी और बेहोशी की हालत में पड़े हैं और आपकी गाड़ी को आग लगी हुई है। मैं तुरन्त ही स्कूटर उठाकर वहां गया। आपकी गाड़ी धूं-धूं करके जल रही थी। दौड़कर बूथ से फायर ब्रिगेड वालों को फोन किया और एक टैक्सी में राधे, कल्लू को लादकर मन्नू के साथ हॉस्पिटल भेजा। फायर ब्रिगेड की गाड़ी आई लेकिन तब तक आपकी गाड़ी बुरी तरह जल चुकी थी। थोड़ी देर पहले ही हॉस्पिटल से लौटा हूं। राधे और कल्लू को होश आ गया है। उन्होंने ही बतलाया कि गाड़ी को तोड़कर आग लगाने वाले आठ गुन्डे थे। उन्होंने काली पोशाक पहनी हुई थी और चेहरों पर काली नकाबें भी पहनी हुई थीं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है पण्डित जी कि वो गुन्डे कौन थे और उन्होंने आपकी कार से किस बात की खुन्नस निकाली?"

केशव ने ठन्डी आह-सी भरकर पहले चारमीनार मार्का वाली सिगरेट सुलगाई और फिर बोला—"मेरा प्रोफेशन ही ऐसा है नदीम भाई। ना जाने कितने मुजरिमों को पकड़कर पुलिस के हवाले किया और अदालत के जरिये सजा दिलवाई होगी। उनमें से ही किसी ने खुन्नस निकाली होगी। डोन्ट वरी, गाड़ी का बीमा है। दूसरी गाड़ी मिल जायेगी। फिर भी चलकर देख तो लेते ही हैं कि दुश्मनों ने अपनी नई-नवेली गाड़ी का क्या हाल किया है?"



"पप्पू...मेरे दोस्त! शाम को हम दोनों पिक्चर देखने चलेंगे। शोले फिल्म देखेगा?"

प्रत्युत्तर में पप्पू 'कूं-कूं' करते हुये नन्हीं-सी दुम को हिलाने लगा।

आशीर्वाद फर्श पर बैठा पप्पू के साथ खेल रहा था। उसने अपने तमाम खिलौने पप्पू को लिये फर्श पर सजाये हुये थे।

सोफे पर बैठी सोफिया दोनों की हरकतों को देख मुस्कराये जा रही थी।

"मेम साहब...!" सोलह वर्षीय नौकरानी पुष्पा लाल रंग का गिफ्ट पैक लिये हुये भीतर दाखिल हुई।

"अरे, ये क्या है पुष्पा?"

"कोई गिफ्ट ही होगा। जो आदमी आया था, वो बोल रहा था कि कोरियर कम्पनी से आया है। उसने एक पर्चे पर मेरे साइन भी लिये। बहुत भारी है। किसी ने मूर्ति भेजी होगी।"

"यहां रखो देखती हूं।"

पुष्पा ने पैकेट मेज पर रख दिया और सोफिया के सामने वाले सोफे पर बैठ गई।

सोफिया ने पैकेट को उलट-पलटकर देखा और बोली—"कमाल है...भेजने वाले ने अपने नाम की स्लिप नहीं लगाई। शायद भीतर अपना नाम लिखा हो।"

"खोलकर तो देखिये मेम साहब।"

सोफिया ने ऊपर लिपटे हरे रिबन की गांठ खोली और

रिबन को अलग करके पैकेट पर चढ़ी तथा सेलो टेप के टुकड़ों से चिपकाये चमकीले कागज को फाड़कर पैकेट से अलग किया, फिर टेप के टुकड़े हटाकर गत्ते के ऊपरी हिस्से को खोला।

पैकेट के भीतर जो 'वस्तु' थी— वो काले रंग के कागज में लिपटी हुई थी। सोफिया ने दोनों हाथों से उसे पैकेट से निकालकर मेज पर रखा और फिर उस पर लिपटे कागज को खोला तो मुख से घुटी-घुटी-सी चीख ही नहीं निकली, बल्कि वो चिहुंक कर सोफे से उठकर काफी दूर जाकर खड़ी हो गई।

जबकि पुष्पा को जैसे काठ मार गया।

मुंह खुला, लेकिन चीख मानो हलक के फ्रिज में बर्फ की मानिन्द ही जम गई हो।

फैल चली आंखों में आतंक का समुद्र हिल्लौरे मार रहा था।

चेहरा ऐसा कि मानो जिस्म के भीतर खून की एक भी बूंद शेष ना बची हो।

फिर उसकी घिग्घी-सी बंध गई।

फिर हुआ यूं कि वो बेहोश होकर सोफे पर लुढ़क गई।

सोफिया की अवस्था भी मारे आतंक के बुरी थी। उसका मुखड़ा गुलाब के फूल से गेंदे के सूखे फूल में परिवर्तित हो चला था।

यूं तो समूचे जिस्म में ही भूकम्प-सा मचा हुआ था—लेकिन रीढ़ की हड्डी में तेज कम्पन था और पैरों में मानो जान ही ना रही हो।

पसीने का आलम ये था कि मानो उसे किसी फैक्ट्री के बाउलर के मुहाने पर खड़ा कर दिया गया हो। फट पड़ने को तैयार हरी आंखें मानो फेवीकोल का जोड़कर बनकर मेज पर रखे कटे हुये सिर पर चिपक गई हों।

□□□

□□□

वो पैंतीस वर्षीय महिला का सिर था, जिसके घने व लम्बे केश जूड़े की शक्ल में बंधे हुये थे।

मांग में सिन्दूर, माथे पर बिन्दी।

आंखों मानो कटोरियों से बाहर कूदने को तैयार थीं। उस कटे सिर को देखकर एक बारगी को तो केशव भी हिल गया था।

फिर उसने आशीर्वाद को गोद में उठाया और सोफिया के बुरी तरह कांपते हाथ को पकड़कर दूसरे कमरे में पहुंचा।

कूं...कूं...करता 'पप्पू' भी उसी कमरे में पहुंच गया।

सोफिया को बेड पर बिठाकर उसके पास ही आशीर्वाद को बिठाकर केशव वापिस ड्राइंगरूम में आया और बेहोश पुष्पा को गोद में उठाकर बेडरूम में ले गया।

आशीर्वाद बेड में उतरकर फर्श पर पप्पू को गोद में लिये बैठा था।

बेहोश पुष्पा को बेड पर लिटाने पर केशव किचन से ठन्डे पानी की बोतल व कांच का गिलास लाया। उसने गिलास में पानी भरकर सोफिया को दिया। सोफिया के हाथ इस कदर हिल रहे थे कि पानी उसके कुर्ते पर गिरने लगा।

केशव ने उससे गिलास लेकर अपने हाथ से उसे पानी पिलाया और फिर बोतल व गिलास नजदीक रखे स्टूल पर रखने पर सोफिया की पीठ थपथपाकर बोला—"रिलेक्स, डार्लिंग...रिलेक्स... !"

"वो...वो कटा हुआ सिर..."

"हां, कोई बात नहीं। तुम्हारा पति वकील है और जासूस भी। वैसे भी मैं मुजरिमों और देश के दुश्मनों के पीछे पड़ा रहता हूं। दुश्मनों की कमी नहीं। ऐसी घटनायें तो होती रहेंगी। तुम्हें अपने आपको स्ट्रांग बनाना होगा।"

"ले...लेकिन वो सिर किसने भेजा होगा?"

"ये मैं कैसे बतला सकता हूं? लेकिन तुम्हें साहसी बनना होगा। मजबूत बनना होगा।"

"मैं...मैं इतनी बुजदिल भी नहीं हूं! लेकिन मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि...उस पैकेट में किसी औरत का कटा हुआ सिर निकलेगा... ।" कहने पर सोफिया ने ऐसी झुरझुरी-सी ली, मानो उसे बर्फ के ठन्डे पानी में डुबोकर बाहर निकाला गया हो।

"तुम हिम्मत से काम लो डार्लिंग। पुष्पा के मुंह पर ठन्डे पानी के छींटे मारो। होश में आ जाये तो थोड़ा पानी पिला देना। मैं पुलिस को फोन करके आता हूं।"

❑❑❑

❑❑❑

चीख मारकर उठ बैठी पुष्पा और घबराई नजरों से इधर-उधर देखने लगी।

बगल में ही बैठी सोफिया ने उसकी कमर में बांह डालकर अपने से सटा लिया और बोली—"घबराने की कोई जरूरत नहीं। लो, थोड़ा पानी पी लो।"

पुष्पा ने सोफिया के हाथ से दो घूंट पानी पीया और फिर कंपकंपाती आवाज में बोली—"क...क्या वो असली है? या किसी ने मजाक में नकली सिर भेजा है?" सोफिया ने केशव की तरफ यूं देखा कि मानो पूछ रही हो कि वो पुष्पा को क्या जवाब दें?

चारमीनार वाली सिगरेट में कश मारकर केशव बोला—"सिर असली है। लेकिन तुम घबराओ मत पुष्पा। अभी थोड़ी देर में पुलिस आ जायेगी और सिर को ले जायेगी। मैंने पुलिस को फोन कर दिया है।"

तभी बाहर चिड़िया-सी चहचहाई।

"मैं देखता हूं। शायद पुलिस ही होगी। तुम दोनों यहीं कमरे में रहना।"

कहने पर केशव कमरे से बाहर निकला और फिर ड्राइंगरूम लांघने पर उसने दरवाजा खोल दिया।

"नमस्कार, पण्डित जी!" चार हवलदारों के साथ खड़े 'देवेन्द्र खेड़ेकर' की नेम प्लेट वाले इन्सपेक्टर ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

हवलदारों ने भी सिरों को जुम्बिश देकर केशव का अभिवादन किया।

"नमस्कार, इन्सपेक्टर साहब!" केशव उससे हाथ मिलाकर बोला, "प्लीज, कम इन...।"

हवलदारों के साथ भीतर दाखिल हुआ इन्सपेक्टर देवेन्द्र

खेड़ेकर और मेज पर रखे सिर को देखकर तपाक से बोला—"मेरा अन्दाजा ठीक ही निकला। ये शीला का ही सिर है।"

"क्या मतलब?" चौंका केशव और देवेन्द्र खेड़ेकर को सवालिया निगाहों से देखा।

"कल रात सुदेश नाम का एक आदमी बड़े बाजार के एक कोठे पर गया था। वहां उसने शीला नाम की एक वेश्या से रातभर के लिये हजार रुपये में सौदा किया था। सुबह शीला और सुदेश में झगड़ा हो गया। क्योंकि सुदेश के पास सिर्फ दस रुपये ही थे। शीला ने सुदेश की पिटाई की तो सुदेश ने ताव में आकर शीला की चुनरी से ही शीला का गला घोंट दिया। दूसरी वेश्या ने देखा तो शोर मचा दिया। कोठे की वेश्याओं और गुर्गों ने सुदेश को पकड़कर पुलिस को फोन कर दिया था। मैंने ही वहां जाकर सुदेश को गिरफ्तार किया था और पंचनामे की कार्रवाई करके शीला की लाश को पोस्टमार्टम के लिये मोर्चरी भिजवा दिया था। आपका फोन आने के बाद ही पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर अशोक सेन का फोन आया। वो शीला का पोस्टमार्टम करने के लिये मोर्चरी गया था तो वहां ताला लगा था और चौकीदार गायब था। डॉक्टर ने जब चौकीदार की तलाश कराई तो वह झाड़ियों में बेहोश मिला। उसके सिर पर जख्म था। उसे होश में लाया गया तो उसने बतलाया कि चार काली पोशाक वाले नकाबपोश ना जाने अचानक ही कहां से आये और उनमें से एक ने उसके सिर पर पत्थर से वार करके उसे बेहोश कर दिया था। चौकीदार की जेब से मोर्चरी की चाबी गायब थी। डॉक्टर ने ताला तुड़वाया तो पाया कि शीला का सिर गायब था। कोई शीला के सिर को काटकर ले गया था। डॉक्टर का फोन आने पर मुझे यही लगा कि हो ना हो—आपके घर पर शीला का ही सिर हो—ये शीला का ही सिर है।"

केशव के गुलाबी होठ गोलाकार हो चले और वो धीमी-धीमी सीटी बजाने लगे।

फिर इन्सपैक्टर खेड़ेकर के निर्देश पर एक हवलदार ने

पोलीथीन की थैली में कटे हुये सिर को बन्द कर लिया।

केशव ने चाय-नाश्ते के लिये कहा, लेकिन इन्सपेक्टर खेड़ेकर ने विनम्रता के साथ इन्कार कर दिया और कहा कि उसे तुरन्त ही मोर्चरी जाना होगा और इस बात की तस्दीक करनी होगी कि शीला का सिर काटने वाला कौन है।

❑❑❑
❑❑❑

"पुलिसवालों को ऐसे ही भेज दिया केशव! उन्हें चाय या कोल्ड-ड्रिंक के लिये तो...अरे...तुम्हारी कार कहां गई?"

चारमीनार की सिगरेट में कश मारकर केशव सोफिया की तरफ पलटा और नथुनों से धुआं छोड़ने पर बोला—"उसका अन्तिम संस्कार हो गया।"

"अ...अन्तिम संस्कार...क्या मतलब?"

"चलो, भीतर चलकर बातें करते हैं।" केशव उसके कन्धे पर हथेली रखकर बोला, "भीतर चलते हैं। पुष्पा घबरा रही होगी।"

दोनों भीतर पहुंचे, जहां आशीर्वाद के साथ पुष्पा भी पप्पू के साथ खेल जरूर रही थी, लेकिन उसकी आंखों में व चेहरे पर घबराहट बरकरार थी।

"हिम्मत के काम लेना चाहिये बहनजी।" केशव उसके सिर पर हाथ रखकर बोला—"अभी किचन में जाओ और तीन कप चाय बनाकर लाओ। तुम्हें भी हमारे साथ चाय पीनी है।"

पुष्प उठकर बाहर चली गई।

केशव फर्श पर बैठ गया और पप्पू को सहलाने लगा।

सोफिया भी फर्श पर बैठ गई और व्याकुलता के साथ बोली—"तुमने बताया नहीं केशव। कार का क्या हुआ?"

केशव ने सारी बातें बतलाईं तो सोफिया चिन्तित भाव से बोली—"ये तो कमाल वाली बात बतला रहे हो तुम केशव। बिना मतलब के ही उन नकाबपोशों ने कार को तोड़ा और फिर उसे जला भी दिया।"

"बिना मतलब नहीं सोफिया। उन लोगों ने गैराज के दो ...ो भी बुरी तरह पीटा। इतना ही नहीं, उन नकाबपोशों ने एक काम और किया है। उन्होंने एक ट्रक चुराया और उस ट्रक से बेकरी के कारीगर बलवीर की हत्या की गई। बलवीर ने ही वो केक तैयार किया था जिसे खाने पर मुझे और पुष्पा को छोड़ बाकी सभी लोग बेहोश हो गये थे। बलवीर को एक लाख रुपये का लालच देकर केक में नशीली दवा मिलाने को कहा गया था। लेकिन उसे ट्रक से कुचलकर मार दिया गया। ये सारी जानकारी मुझे बलबीर की बीवी और पुलिस स्टेशन से मिली।"

"ये...ये हो क्या रहा है केशव? किसी ने हमारे केक में नशीली दवा मिलवाई। दवा मिलाने वाले को मार दिया गया। कार को तोड़-फोड़कर आग लगा दी और गिफ्ट पैक में किसी महिला का कटा हुआ सिर हमारे घर भेजा। कौन हो सकता है ये?"

"क्या मालूम! लेकिन मालूम तो करना ही पड़ेगा कि वो आखिर वो है कौन?"

❑❑❑
❑❑❑

"पप्पू भी हमारे साथ डिनर करेगा।"

"नहीं आशीर्वाद! पप्पू अभी छोटा है। इसे सिर्फ दूध ही देना है। तुम ऐसा करो कि इसे गोद से उतार दो और हाथ धोकर आओ।"

"नहीं, मम्मी! पप्पू मेरे पास ही रहेगा।" आशीर्वाद ने ठिनककर कहा।

"ठीक है। मैं तुम्हें अपने हाथों खाना खिलाती...।"

"पुष्पा!" अचानक ही केशव चौंककर बोला—"क्या हुआ? तुम तो अपने घर के लिये गई थी...फिर वापिस क्यों...क्या हुआ?"

सोफिया ने सिर घुमाकर देखा तो चौंककर उठ खड़ी हुई।

पुष्पा की दोनों हथेलियां कुर्ते की ओट में थीं, जिनसे उसने सलवार पकड़ी हुई थी। वो रोते हुये एक कमरे के दरवाजे तक पहुंची और फिर पलटकर सोफिया की तरफ देखा।

"जाकर देखो सोफी।" केशव गम्भीर भाव से बोला, "मुझे बतलाना कि क्या बात है।"

सोफिया लपकते हुये कमरे में पहुंची...जहां कुर्सी पर बैठी पुष्पा रो रही थी।

"क्या हुआ पुष्पा?"

"मैं घर जा रही थी मेमसाहब! स्कूल के सामने जो पनवाड़ी है, वहां पर चार मवाली खड़े थे। उन्होंने मेरे साथ बदतमीजी की। गन्दी-गन्दी बातें कीं। उन्हें पनवाड़ी ने रोका तो उसे बहुत पीटा और उसका सामान उठाकर फेंक दिया। फिर उनमें जो गुन्डा बहुत लम्बा और तगड़ा था उसने...।"

"क्या किया उसने? अरी बोल ना।"

"उसने...मेरी सलवार...का नाड़ा तोड़ दिया।"

"क...क्या?" चिहुंकी सोफिया।

"वो गुन्डा बोला कि तू केशव पण्डित के यहां नौकरी करती है। अगर तूने नौकरी नहीं छोड़ी तो...मेरे साथ ब...बलात्कार किया जायेगा।"

"उस कमीने की इतनी हिम्मत...!"

"मुझसे बोला कि ऐसे ही सलवार पकड़कर पण्डित के घर जा और अपना हिसाब-किताब पूरा करके आ...बोलकर आ कि आईन्दा काम करने नहीं आऊंगी।"

कहने पर पुष्पा फूट-फूटकर रोने लगी।

सोफिया ने उसे बाहों में भर लिया और बोली—"रोते नहीं। केशव के होते कोई माई का लाल तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर पायेगा। मैं भीतर से दरवाजा बन्द करती हूं और नाड़ा देती हूं।"

❑❑❑

❑❑❑

सोफिया के मुंह से सारी बातें सुनकर केशव की मुट्ठियां प्रेशर कुकर के ढक्कन की मानिन्द ही कसकर भिंच गईं।

झील-सी नीली आंखों में खून-सा भरता चला गया और खूबसूरत चेहरा क्रोधग्नि में सुर्ख हो चला।

मानो तूफान आया और चला गया।

सामान्य होकर केशव पुष्पा के सिर पर हथेली रखकर बोला, "तुम चलो! मैं दूसरी गली से होकर स्कूल पर पहुंचता हूं। देखता हूं कि वो महारथी कौन है?"

पुष्पा ने हामी में सिर को जुम्बिश दी और फिर खौफ के भाव चेहरे पर से पसीने की मानिन्द पोंछकर बाहर को चल दी।

वह स्कूल के करीब पहुंची।

सामने पनवाड़ी रोते-कराहते हुये सड़क पर से सामान उठाकर दुकान में रख रहा था।

वहीं चार मवाली टाइप के युवक पान चबाते हुये सिगरेट भी फूंक रहे थे। उनमें तीन तो सामान्य कद-काठी के थे लेकिन एक जंगली भैंसे-सा काला-कलूटा और लम्बा-तगड़ा था।

"आ गयेली तू...।" वह पुष्पा से मुखातिब होकर बोला—"हिसाब-किताब कर आयेली। बोल के आई है ना कि आगे से काम पे नेई आयेगी?"

"मैं पण्डित जी के यहां ही काम करूंगी...।" पुष्पा पूरी निडरता के साथ बोली, "क्या कर लेगा तू?"

"उस्ताद! इसकू क्या होयेला है?" एक मवाली हैरानी के साथ बोला, "ये तो इदर से भीगी बिल्ली बनके गयेली थी—पन शेरनी बनके लौटेली है।"

"अब्बी इसकू चूहिया बना देगा अपुन! अब्बी इच इसका चीर हरण करेगा और बीच सड़क पे गिराके इसकी इज्जत कू वाट लगा देगा।"

"अबे ओये काले कुत्ते।" एक पतली गली से निकलकर केशव खजूर के पेड़ की छाल-से खुरदरे लहजे में बोला—"पुष्पा मेरे यहां भले ही काम करती हो—लेकिन ये मेरी छोटी बहन के जैसी ही है।"

"ओह, पण्डित!"

"हां, पण्डित! ये अकेली थी तो तूने अपने इन तीन गीदड़ों के साथ मिलकर इसके साथ बदतमीजी की। अब जरा इसको टच करके तो दिखला।"

"अपुन का नाम शेरू है ओये पण्डित...।" [illegible]
गुर्राकर बोला—"अपुन से खौफ खाने का...क्या...?"

"नाम शेरू रख लेने से कोई कुत्ता शेर नहीं बन...।"

"ओये पण्डित...!" एक मवाली केशव के करीब पहुंचा और गर्दन को शतुरमुर्ग की मानिन्द अकड़ाकर बोला, "अपुन के उस्ताद कू कुत्ता बोल रेला है तू? अब्बी उस्ताद जी के पैर पकड़के माफी मांगने का...नेई तो...।"

"नहीं तो?" पूछने पर मुस्कराया केशव।

"तेरी हड्डी-पसली तोड़ के रख देने का और तेरी इस खूबसूरत नौकरानी कू इदर इच नंगी करके...आऽऽऽ!"

केशव का हाथ हवा में लहराया और घूंसे की शक्ल में उस मवाली के चेहरे पर किसी हथौड़े की मानिन्द ही पड़ा...तड़ाक...।

हवा में उछलते हुये वह मवाली सड़क पर गिरा तो नाक व मुंह से खून की पिचकारी की मानिन्द ही खून निकलने के साथ उसके चार दांत भी सड़क पर गिरे।

वह छिपकली की कटी दुम की मानिन्द ही तड़फड़ाया और फिर बेहोशी की गोद में जा दुबका।

"ओये...देख क्या रहे हो...?" शेरू बौखलाकर अपने बाकी के दो चेलों से बोला—"खत्म कर देने का इस पण्डित कू...खल्लास कर देने का।"

दोनों मवालियों ने जेबों से चाकू निकाल लिये और केशव पर झपट पड़े।

"ब...बचिये साहब जी!" खौफजदा होकर पुष्पा चीखी। लेकिन केशव पर कोई फर्क नहीं पड़ा। उसने शान्त भाव से दोनों के करीब आने का इन्तजार किया और फिर हवा में लहराते चाकुओं वाले हाथों को पकड़कर ऐसा उमेठा कि...कड़...कड़क की आवाज के साथ कलाइयों की हड्डियां टूट गईं।

दोनों के मुंह से चीख और हाथों से चाकू निकल गये।

केशव ने उनकी टूटी कलाइयों को छोड़कर उनके गले पकड़कर उन्हें जमीन से फुटभर ऊपर उठाकर उनके सिरों को आपस में टकरा दिया।

केशव ने चार बार उनके सिरों को आपस में टकराने के बाद उन्हें छोड़ दिया।

दोनों सड़क पर गिरे और बेहोश होने की वजह से हिले तक भी नहीं।

शेरू ने पैन्ट की जेब से पिस्टल निकाल ली और क्रोध से बावला-सा होकर चिंघाड़ा—"ठीक नेई किया तूने ओये पण्डित! अपुन से पंगा लेके अपनी मौत कू दावत दी है। तेरे कू अभीच उड़ा देगा अपुन...क्या?"

यूं ही मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला कि मानो खटमल ने चारपाई को उठाकर हिमालय की चोटी पर फेंकने की हास्यास्पद बात कर दी हो।

केशव की मुस्कान मानो शेरू के क्रोध के अग्निकुण्ड में घी बनकर ही टपकी हो। उसने जबड़े कसकर ट्रिगर दबा दिया—धांयऽऽऽ।

"न...नहींऽऽऽ!" चीख पुष्पा की थी।

केशव तो अपने स्थान पर से किसी जिन्न की मानिन्द ही गायब था।

वो दूसरे स्थान पर खड़ा दिखाई दिया।

पुष्पा ने राहत की सांस ली—जबकि शेरू ने क्रोध से हुंकारकर फिर फायर किया।

केशव हवा में उछला और गोली के गुजर जाने पर जमीन पर खड़ा दिखलाई पड़ा।

क्रोध से बावला होकर शेरू बार-बार ट्रिगर दबाता चला गया, लेकिन तमाम गोलियां बेवफा निकलीं—एक भी तो केशव को स्पर्श नहीं कर पाई।

झुंझालकर शेरू ने खाली पिस्टल को ही केशव पर खींच मारी तो केशव ने बढ़िया फील्डर की मानिन्द ही पिस्टल को कैच करके बला की फुर्ती से शेरू पर खींच मारी।

तड़ाक...से पिस्टल शेरू के सिर से टकराई तो उसने चीख मारकर हथेलियों से सिर थाम लिया।

इतनी देर में ही केशव का जिस्म धनुष से छोड़े गये तीर

की मानिन्द ही हवा में उड़ा और 'तड़ाक' की आवाज के साथ उसका सिर शेरू के चौड़े सीने से टकराया।

चीख के साथ शेरू हवा में उड़ता-सा स्कूल की बाउन्ड्री वॉल से टकराया और जमीन पर गिरा शेरू को दिन में ही पूर्णिमा का चांद नजर आ गया।

केशव ने उसके सिर के बालों को मुट्ठी में जकड़कर उसे उठाया और उसके पेट पर घूंसा जड़ दिया...भड़ाक...।

"आ...आ...आह...!"

शेरू को यूं ही लगा कि मानो उसके पेट से लोहे की रॉड टकराई और पीठ से होकर बाहर निकल गई हो।

केशव ने ऐसे ही तीन घूंसे और जड़े, फिर शेरू को छोड़ दिया।

भरभराकर जमीन पर गिरा शेरू और इधर-उधर पटखनियां-सी खाते हुये बिलबिलाने लगा।

केशव ने जूते समेत उसके चेहरे पर बायां पैर रखा और हिंसक लहजे में बोला—"अगर मेरे सवालों का सही-सही जवाब ना दिया तो तेरा कचूमर निकाल दूंगा। किसके कहने पर तूने पुष्पा के साथ बदतमीजी की थी? जल्दी से जवाब दे।"

"वो...वो...आह...काली पोशाक में था बाप...आह... थोबड़े कू...काली नकाब में छिपा रखेला था उसने...आह...अपुन कू एक पेटी का लालच दियेला। अक्खा रकम एडवांस में दे दी उसने...आह...बोला कि अपुन कू तुम्हेरी नौकरानी कू तंग करने का है...उसकू नौकरी छोड़ने कू मजबूर करने का।"

केशव ने उसकी कनपटी पर ठोकर मारकर बेहोशी की गोद में पहुंचा दिया और हाथों को यूं झाड़ा कि मानो धूल लग गई हो।

□□□
□□□

"हैलो...!"

फोन की घण्टी बजने पर केशव ने रिसीवर उठाया।

"सा...साहब जी...साहब जी...मु...मुझे बचा लीजिये।"

"पु...पुष्पा...!" वह चौंका और चिन्तित भाव से बोला,

"क्या बात है? तुम रो क्यों रही हो? क्या किसी परेशानी में हो तुम...?"

"मैं...मैं आपके घर आ रही थी साहब जी...।" दूसरी तरफ से बोल रही पुष्पा ना सिर्फ रो रही थी, बल्कि खौफजदा भी मालूम पड़ रही थी—"एक कार से पांच काली पोशाक वाले उतरे...इनके चेहरों पर काली नकाबें भी हैं...मुझे हथियारों के दम पर एक पुराने से मकान में ले गये।"

"वो मकान कहां है...किस इलाके में है पुष्पा?"

"मु...मुझे नहीं पता। रास्ते में मेरी आंखों पर काली पट्टी बांध दी गई थी...ये बहुत खतरनाक हैं। इनके पास रिवॉल्वर, चाकू, तलवार और लोहे के डन्डे भी हैं। ये...मुझे जान से मारने को बोल रहे हैं। अगर मुझे कुछ हो गया तो मेरी विधवा मां का क्या होगा? मु...मुझे बचा लीजिये...साहब जी...।"

"उन लोगों में से किसी से मेरी बात कराओ पुष्पा।"

"पण्डित जी बात करनी चाहते हैं।" पुष्पा ने किसी से कहा, जो केशव को भी सुनाई दिया।

"अपुन कू बी उससे बात करने का है। ला, फोन अपुन कू देने का...हैलो...पण्डित!"

"कौन हो तुम लोग? पुष्पा को किडनेप क्यों किया है तुम लोगों ने?"

"अपुन के बॉस का ऑर्डर है।" कौओे के जैसी बेसुरी आवाज थी वो।

"कौन है तुम्हारा बॉस?"

"बॉस ने मना कियेला है कि उसके बारे में कुछ बी बताने का नेई।"

"क्या चाहते हो तुम लोग?"

"तुम्हेरे साथ एक गेम खेलने का है भीड़ू।"

"गेम...?" केशव आंखें सिकोड़कर बोला—"कैसा गेम?"

"अपुन सेठ ताराचन्द की कोठी से बोल रेला है। वो बिजनेस के चक्कर में इंग्लैंड में गयेला है। अपुन लोगों ने मास्टर चाबी से मेन गेट खोल लिया। बान्द्रा में रामनगर कॉलोनी है।

गली नम्बर पांच में तीन सौ बीस नम्बर की कोठी है...ग्रीन कलर की। तुम अपने घर से टैक्सी से चलेगा तो इदर पहुंचाने में कम से कम दो घण्टे तो लगेंगे इच। तुम्हेरे पास कार तो है इच नेई। अपुन लोगों ने इस तुम्हेरी कार कू तोड़-फोड़के पैट्रोल छिड़का था और आग लगा दी थी। अपुन लोग अपना काम चालू कर रेले हैं।"

"कैसा काम?"

"तुम्हेरी नौकरानी कमसिन और सुन्दर है। बन्द कली, जो फूल बनने कू मचल रेली है। अपुन इसके कपड़े फाड़ेंगे।"

"ऐ...खबरदार!"

"फिर बारी-बारी से पांचों तेरी नौकरानी के साथ मुंह काला करेंगे।"

"अगर पुष्पा को उंगली भी लगायी तो तुम्हारे हाथ तोड़ डालूंगा कमीनों। उसे गन्दी नजरों से देखा तो आंखें फोड़ डालूंगा।"

"अपुन के हाथ तोड़ने कू और आंखें फोड़ने कू तेरे कू इदर तो आना इच पड़ेगा। तू जब तक आयेगा...अपुन अपना काम करके निकल जायेंगे। ये इच तो गेम है पण्डित। अपुन लोग तेरी इस नौकरानी के साथ बलात्कार करेंगे और फिर इसके हाथों की नसें बी काट डालेंगे। देखना ये है कि तू इस फुलझड़ी की इज्जत और जान बचाने कू सकता है कि नेई।"

"ऐ सुनो...हल्लो...हैलो...हैलो...मेरी बात...।"

लेकिन दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया था।

❑❑❑

❑❑❑

परेशान केशव ने चारमीनार मार्के वाली सिगरेट सुलगा ली और कश मारते हुये दिमाग के घोड़ों को चारों दिशाओं में दौड़ाने लगा।

घोड़ों को खुराक के रूप में चारमीनार सिगरेट का धुआं मिल रहा था।

फिर घोड़ों के लौटते ही केशव लपकते हुये एक कमरे

में गया और पांच मिनट पश्चात् लौटा तो हाथों में टेलीफोन डायरेक्टरी थी।

फोन के सामने सोफे पर बैठकर उसने डायरेक्टरी के पन्नों को उलटना-पलटना शुरू किया और जल्दी ही वांछित फोन नम्बर को ढूंढने पर टेलीफोन का रिसीवर उठाकर उक्त नम्बर मिलाने लगा।

दूसरी तरफ घण्टी बजने लगी।

किसी ने रिसीवर उठाकर कहा—"हैलो...रामनगर कॉलोनी, बान्द्रा पुलिस स्टेशन।"

"नमस्कार! मैं केशव पण्डित।"

"नमस्कार, पण्डित जी।"

"नमस्कार! कौन साहब बोल रहे हैं?"

"मैं सब-इन्सपेक्टर बादल अठावले बोल रहा हूं पण्डित जी।"

"अरे, बादल भाई...तुम बान्द्रा में हो? एक जरूरी काम पड़ गया है बादल भाई।"

"हुक्म कीजिये पण्डित जी।"

"मेरे यहां काम करने वाली पुष्पा को कुछ नकाबपोश गुन्डों ने किडनेप कर लिया।"

"क्या? कहां हुआ ये किडनेप?"

"ये तो मालूम नहीं बादल भाई। लेकिन वो लोग रामनगर कॉलोनी की गली नम्बर पांच की तीन सौ बीस नम्बर की ग्रीन कलर की कोठी में हैं। जिसका मालिक सेठ ताराचन्द है, जो कि इंग्लैंड गया हुआ है। वक्त नहीं बादल भाई। वो जगह मेरे घर से बहुत दूर है। मुझे वहां पहुंचने में दो घण्टे तो लग जायेंगे।"

"आप चिन्ता क्यों करते हैं पण्डित जी? मैं अभी कुछ हवलदारों को जीप में बिठाकर जाता हूं और उन गुन्डों को पकड़ता हूं। क्या आपके पास मोबाइल फोन है?"

"हां, है। कुछ दिन पहले लिया है।"

"उसका नम्बर नोट करा दीजिये।"

केशव ने नम्बर नोट कराया और फिर वह बादल से

बोला—"प्लीज, जल्दी करो बादल भाई। पुष्पा की इज्जत और जान खतरे में है। मैं भी वहां पहुंच रहा हूं।"

कहने पर केशव ने रिसीवर रख दिया और चिल्लाकर बोला—"कॉफी रहने दो सोफी डार्लिंग...मुझे जरूरी काम से जाना है।"

"क्या बात है केशव?" किचन से ट्रे में कॉफी के दो मग रखे हुये सोफिया बाहर निकलकर बोली—"तुम परेशान मालूम पड़ रहे हो।"

सोफिया के पीछे-पीछे आशीर्वाद भी पप्पू को गोद में लिये हुये बाहर निकला।

सोफिया को टेंशन से बचाने की गरज से केशव ने गोल-मोल जवाब दिया—"कोई खतरे में है। मुझे उसकी मदद को जाना है।"

"लेकिन तुम्हारी कार तो...।"

"कोई बात नहीं...!" मेनगेट तक पहुंच चुका केशव चिल्लाकर बोला—"टैक्सी ले लूंगा।"

"चॉकलेट लाना डैडी!"

आशीर्वाद की डिमांड को अनसुनी करके केशव मेनगेट खोलकर बाहर को लपक लिया।

बहुत तेज दौड़कर केशव मेन रोड पर पहुंचा—इसीलिये पसीन से तर-ब-तर था।

उसने हाथ देकर टैक्सी रुकवाई। उसका पिछला गेट खोलकर सीट पर बैठा और गेट बन्द करके बोला, "बान्द्रा चलो ड्राइवर...जल्दी करो।"

"बान्द्रा में किधर साहब?"

"वो मैं बतला दूंगा! तुम चलो तो सही! स्पीड तेज रखना...इमरजेंसी है।"

ड्राइवर ने मीटर चालू करके टैक्सी को दौड़ा दिया।

लगभग आधे घण्टे पश्चात् मोबाइल फोन की घण्टी बजने लगी, जिसका कनेक्शन चार दिन पहले ही लिया था केशव ने।

"हैलो!" फोन का ग्रीन रिसीवर वाला बटन दबाने पर और दायें कान से लगाकर बोला वह।

"मैं बादल अठावले बोल रहा हूं पण्डित जी।"

"हां, बादल भाई! क्या वो गुन्डे पकड़े गये?"

"नहीं, पण्डित जी।"

"न...नहीं? क्या मतलब?"

"मैं आपके बतलाये पते पर गया था! पण्डित जी! वहां पर कोई भी नहीं मिला।"

"ले...लेकिन ऐसा कैसे हो सकता...?"

"कोठी का मेनगेट खुला हुआ था। भीतर के दरवाजे भी खुले हुये थे। ऐसा लगता है कि वहां पर कुछ लोग थे, लेकिन पुलिस के पहुंचने से पहले ही वो चले गये। मैंने पूरी कोठी खंगाल डाली। आसपास भी देखा, लेकिन कोई नहीं मिला। हवलदारों को आसपास के मकानों में पूछताछ के लिये भी भेजा था। लेकिन हर घर से यही जवाब आया कि घर के मर्द दुकानों पर या नौकरी पर चले जाते हैं और बच्चे स्कूल चले जाते हैं। चोरी, लूटपाट के डर से औरतें मेनगेट बन्द करके रसोई का काम करती हैं, या फिर टी० वी० पर सीरियल देखती हैं। किसी ने भी सेठ ताराचन्द की कोठी में किसी को आते-जाते नहीं देखा था। अब मेरे लिये क्या हुक्म है पण्डित जी?"

केशव का दिमाग घूम गया।

समझ में नहीं आया कि वो क्या जवाब दे।

फिर उसने पूछा—"कहां से बोल रहे हो तुम बादल भाई?"

"मैं एक मोटर साइकिल वाले से लिफ्ट लेकर अभी थोड़ी देर पहले ही पुलिस स्टेशन लौटा हूं। जीप को पैट्रोलिंग पर भेजा है। अपने स्टाफ के लोगों से कहा है कि इलाके की तमाम सड़कों पर जायें और अगर नकाबपोश या संदिग्ध किस्म के लोग नजर आयें, जिनके साथ कोई लड़की भी हो तो उन्हें फौरन ही पकड़कर पुलिस स्टेशन ले आयें।"

"ये तो तुमने समझदारी का काम किया बादल भाई। मुझे उम्मीद नहीं थी कि वो गुन्डे पुष्पा को उस कोठी से इतनी जल्दी ले जायेंगे। खैर, क्या तुम एक काम कर सकते हो बादल भाई?"

"हुक्म दीजिये, पण्डित जी।"

"पुलिस कन्ट्रोल रूम से कॉन्टेक्ट करके ये खबर करो

कि काली पोशाक और नकाब वाले पांच गुन्डों ने सोलह साल की पुष्पा नाम की लड़की का किडनेप कर लिया है। ये खबर सभी थानों और पैट्रोलिंग वाहनों तक फ्लैश हो जायेगी तो उन लोगों के पकड़े जाने की सम्भावना बढ़ जायेगी।"

"आपके आइडिये में दम है पण्डित जी। मैं ऐसा ही करता हूं। वो गुन्डे किसी सड़क पर होंगे तो वहीं पर...या चैक पोस्ट पर पकड़े जायेंगे।"

कहने पर केशव ने फोन बन्द किया और परेशानी के आलम में बुदबुदाया—"किडनेपर जरूरत से ज्यादा चालाक निकले। ना जाने वो पुष्पा को कहां ले गये होंगे? अब करूं तो क्या करूं?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव अभी इसी उधेड़-बुन में था कि उसे क्या करना चाहिये कि मोबाइल कुनमुनाने लगा।

फुर्ती के साथ उसने जेब से फोन निकालकर उसकी स्क्रीन पर नम्बर देखा तो पाया कि दूसरी तरफ से भी मोबाइल फोन का इस्तेमाल किया जा रहा था। रिसीवर वाला बटन दबाकर और फोन कान से लगाकर वह बोला—"हैलो, कौन?"

"वो इच...जिसने सेठ ताराचन्द की कोठी पर से फोन कियेला था।"

"देखो...सुनो...पुष्पा को कुछ मत कहना। वो बेचारी बहुत ही गरीब है। उसकी मां विधवा है और बीमार भी रहती है। पुष्पा ही घर का खर्चा चलाती है।"

"अपुन पे क्या फर्क पड़ता है पण्डित? अपुन कोई इन्सान तो है इच नेई कि किसी पे तरस खा लेगा। अपुन तो गुन्डे हैं, बदमाश हैं। गन्दे-गन्दे काम करना अपुन का काम है।"

"क्या तुम सेठ ताराचन्द के घर से ही बोल रहे हो?"

"नेई पण्डित! अपुन कू उल्लू का पट्ठा समझ रेला है क्या? अपुन ने फोन पे उस छोकरी की बात करायेली और खुद बी बात की थी और फिर उदर से निकल लिये थे। अपुन के बॉस ने ऐसा इच करने कू बोला था। उसने कहा था कि तुम पुलिस कू फोन करके सेठ की कोठी पे भेजने कू सकता है—इसी वास्ते उदर से फौरन इच निकल लेने का। अपुन की गाड़ी सड़क पे दौड़ रेली है। अपुन ड्राइवर वाले अगले हिस्से में बैठेला है। पीच्छू के हिस्से में अपुन के आदमियों का प्रोग्राम इस्टार्ट है। अपुन अपना काम कर चुका है। तेरी नौकरानी कू कली से फूल अपुन ने इच बनायेला। कमसिन और कुंवारी थी...जन्नत की सैर हो गयेली भीड़ू...।"

केशव का खून खौलने लगा—

"पुष्पा छोड़ दो। वरना पुलिस तुम सबको गोलियों से भून डालेगी।"

"धमकी नेई देने का ओये पण्डित! अपुन लोगों कू बेवकूफ समझेला है क्या? अपुन लोगों के पास एम्बूलेंस है। एम्बूलेंस का सायरन नेई सुनाई पड़ रेला है क्या? अपुन ने और अपुन के ड्राइवर साथी ने हॉस्पिटल के कर्मचारियों वाली सफेद ड्रेस पहनेली है। अपुन कू पुलिस कुछ बी नेई बोलेगी! अपुन की तरफ तवज्जो बी नेई देने की...क्या?"

केशव का दिमाग कुम्हार का चाक बन गया।

उसे एम्बूलेंस का सायरन सुनाई पड़ रहा था।

"अपुन तेरे कू थोड़ी देर बाद फोन करेगा।" उसके कान के पर्दे से उसी गुन्डे की भद्दी-सी आवाज टकराई—"बलात्कार का प्रोग्राम होते इच तेरी नौकरानी की कलाइयों की नसें काट देगा अपुन और उसकू दौड़ती एम्बूलेंस से फेंकने पे तेरे कू फोन करके जगह बतलायेगा। उस छम्मक छल्लो की लाश कू उठाके ले जाना...बाय।"

इसी के साथ दूसरी तरफ से केशव की बात सुने बिना ही फोन काट दिया गया।

❑❑❑

❑❑❑

"ड्राइवर! टैक्सी की स्पीड बढ़ाओ प्लीज—चाहे फालतू पैसे ले लेना।"

"फालतू पैसे नहीं चाहिये साहब।" ड्राइवर टैक्सी की रफ्तार बढ़ाकर बोला—"काफी देर से देख रहा हूं कि आप अपनी

नौकरानी के लिये भागा-दौड़ी कर रहे हैं। आज के बुरे दौर में कोई अपने सगे के लिये भी इतना परेशान नहीं होता। पहले आपको पहचाना नहीं था। लेकिन आपने फोन पर बातें की तो मालूम हुआ कि आप पण्डित जी हैं। आपके बारे में काफी सुना है मैंने। आपने पुलिस कमिश्नर को फोन किया है। शायद आपकी नौकरानी बच जाये।"

इतने में ही फोन की घण्टी बजने लगी।

केशव ने मुट्ठी में दबे फोन की स्क्रीन पर उभरते नम्बर को देखने पर रिसीव वाला बटन दबाया और फोन कान से लगाकर बोला—"जी कमिश्नर साहब! क्या कोई कामयाबी मिली?"

"हां, मिली है पण्डित जी। आपका फोन आने पर मैंने वायरलेस पर आदेश जारी कर दिया था। अन्धेरी ईस्ट में फाउन्टेन सर्किल पर पैट्रोलिंग पुलिस ने एक एम्बूलेंस को रोका तो उसके भीतर से गोलियां चलने लगीं। वहां पर इलाके की पुलिस फोर्स भी पहुंच गई। गुन्डों ने एम्बूलेंस को एक इमारत की दीवार के करीब रोका है और उसकी ओट लेकर फायरिंग कर रहे हैं। चूंकि आपकी नौकरानी एम्बूलेंस के भीतर है। इसलिये पुलिस फोर्स अन्धाधुंध फायरिंग नहीं कर सकती। सभी को सोच-समझकर एनकाउन्टर करना पड़ रहा है। मैं उस तरफ ही जा रहा हूं।"

"मैं भी उधर के लिये रवाना हो रहा हूं कमिश्नर साहब। अन्धेरी ईस्ट के करीब ही हूं। आधे घण्टे में पहुंच जाऊंगा।"

केशव ने फोन बन्द किया और ड्राइवर से बोला—"अन्धेरी ईस्ट चलो भाई...फाउन्टेन सर्किल...।"

ड्राइवर ने एक्सीलेटर पर दायें पैर के पन्जे का दबाव बढ़ा दिया और चौराहा आने पर अन्धेरी ईस्ट को जा रही सड़क पर टैक्सी को मोड़ दिया।

टैक्सी से तेज दौड़ रहा था केशव का दिमाग—पुलिस और पुष्पा के किडनेपर के बीच चल रहे एनकाउन्टर का क्या परिणाम निकल रहा होगा? पुष्पा किस हाल में होगी?



फाउन्टेन सर्किल के नाम से मशहूर चौराहे पर टैक्सी रुकवाई केशव ने और उस तरफ दौड़ पड़ा जिधर पुलिस के कई वाहन और पुलिसवालों के साथ एक एम्बूलेंस भी खड़ी नजर आ रही थी।

"हैलो, पण्डित जी!" पुलिस कमिश्नर लपकते हुये उसके करीब आया और दायां हाथ आगे बढ़ाया।

केशव ने उससे हाथ मिलाया और फिर व्याकुलता के साथ पूछा—"क्या हुआ कमिश्नर साहब?"

"एनकाउन्टर में पांचों गुन्डे मारे गये पण्डित जी! दो पुलिसवालों को भी गोलियां लगीं—उन्हें हॉस्पिटल भिजवा दिया गया है।"

"और पुष्पा...?"

"......!"

"आप खामोश क्यों हैं कमिश्नर साहब! पुष्पा ठीक तो है ना?"

"आइये, मेरे साथ...!" कहने पर कमिश्नर एम्बूलेंस की तरफ बढ़ गया।

आशंकित मन से केशव भी उसके पीछे लपका।

एम्बूलेंस के भीतर का हॉल देख केशव के मुख से सिसकारी-सी छूट गई।

हालांकि पुष्पा के ऊपर एक कपड़ा डाल दिया गया था, लेकिन उसके गालों, होठों, कन्धों व गले पर पड़े दांतों व नाखूनों के निशान और एक तरफ पड़े उसके फटे हुये कपड़े इस बात की चुगली खा रहे थे कि उसके साथ बर्बरता पूर्वक बलात्कार किया गया था...सामूहिक बलात्कार!

उसकी कलाइयों को किसी धारदार हथियार से काफी गहराई तक काट दिया गया था। कटी हुई कलाइयों से अभी भी खून की बूंदें टपककर फर्श पर बने खून के तालाब में गिर रही थीं।

जीवन का कोई लक्षण नहीं था।

केशव का मन भर आया।

आंखें नम हो चली।

फिर पुष्पा की विधवा और बीमार मां का ख्याल आया तो मानसिक पीड़ा में बढ़ोतरी हो चली।

केशव ने फिर पांचों काली पोशाक वाले गुन्डों की लाशों को देखा, जिनके चेहरों पर से नकाबें उतार दी गई थीं। उनके जिस्म गोलियों से छलनी-छलनी हो गये थे—यहां तक कि उनके चेहरों के भी चीथड़े से उड़ गये थे।

फिर भी केशव उनकी लाशों को ठोकरें मारकर दिल में भरे आक्रोश को निकालने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

बेटी के बारे में बुरी खबर सुनकर ही रामकली को बेहोशी के दौरे पड़ने लगे थे। जब पोस्टमार्टम के पश्चात् पुष्पा की डैड बॉडी आई तो उस अभागिन को दिल का दौरा पड़ गया।

केशव अपने दोस्त से मांगी कार में डालकर रामकली को हॉस्पिटल की तरफ दौड़ा भी, लेकिन बीच रास्ते में ही रामकली ने दम तोड़ दिया।

कोई नजदीकी रिश्तेदार या सगा-सम्बन्धी नहीं था। अन्तिम संस्कार का सारा खर्चा केशव ने ही उठाया और उसने पुष्पा व रामकली को मुखाग्नि देकर उनका अन्तिम संस्कार किया।

इसके बाद केशव, सोफिया और आशीर्वाद घर पहुंचे।

मेनगेट खुलते ही आशीर्वाद सोफिया की गोद से उतरकर 'पप्पू...पप्पू' कहते हुये भीतर की तरफ दौड़ पड़ा।

मेनगेट के भीतर पड़े बिस्किट को देख केशव की झील-सी नीली आंखें सिकुड़ चलीं।

"क्या तुमने बिस्किट मंगवाये थे सोफी?"

"नहीं तो! तुम ही ब्रिटेनिया वाले बिस्किट लाये थे। समझ में नहीं आ रहा ये बिस्किट कहां से आ गया...?"

केशव भीतर की तरफ लपका।

"पप्पू...पप्पू...!" पप्पू के करीब बैठा आशीर्वाद उसे झिंझोड़ते हुये बोल रहा था, "मैं आ गया हूं। तुम सो रहे हो। उठो...हम खेलेंगे।"

पप्पू को देख सोफिया के मुख से सिसकारी-सी छूट गई और वो घबराकर बोली—"ये...पप्पू के मुंह से झाग क्यों निकल रहे हैं केशव?"

केशव ने झुककर पप्पू को चैक किया और फिर उठकर निराश भाव से बोला—"वो मर चुका है।"

"व्हाट...?" सोफिया चिहुंककर बोली, "ये क्या कह रहे हो तुम? ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने पप्पू को दूध पिलाया था और उसको स्लाइस के टुकड़े भी खिलाये थे।"

"किसी ने जहरीले बिस्किट मेनगेट के नीचे से भीतर डाले। पप्पू ने बिस्किट खाये और मर गया...।"

"हाय...!" सोफिया पप्पू को हसरतभरी नजरों से देखते हुये बोली—"कितना प्यारा था। हमसे घुलमिल भी गया था। आशीर्वाद तो इसके साथ बहुत ज्यादा ही घुल-मिल गया था। आशीर्वाद इसकी मौत पर बहुत दुखी हो जायेगा।"

गलत नहीं बोली थी सोफिया।

केशव जब मृत पप्पू को कपड़े में लपेटकर चला तो आशीर्वाद रोने लगा और पूछने लगा कि उसके पप्पू को कहां ले जा रहे हो?

ये भी बोला कि...मैं पप्पू को कहीं भी ना जाने दूंगा। लेकिन केशव मजबूर था। वो पप्पू की डैड बॉडी को जानवरों के कब्रिस्तान में ले गया और उसे दफनाकर भारी मन से वापिस घर लौटा।

उदास तो सोफिया भी थी, लेकिन आशीर्वाद का तो रोना ही बन्द नहीं हो रहा था।

उसने कुछ खाया-पीया भी नहीं।

बस एक ही रट...मेरे पप्पू को लेकर आओ।

खूब रोने की वजह से उसे बुखार तक चढ़ गया।

❑❑❑
❑❑❑

रात्रि के पौने दस बजे थे।

सोफिया बुखार से तप रहे आशीर्वाद के माथे पर ठन्डे पानी की पट्टियां रख रही थी।

आशीर्वाद रह-रहकर पप्पू को याद कर रहा था।

केशव किचन से दो कप चाय बना लाया और ट्रे टेबल पर रखकर एक कप सोफिया को दिया।

सोफिया ने चाय की घूंट भरी और फिर कसमसाने वाले लहजे में बोली—"आखिर ये हो क्या रहा है केशव? आशीर्वाद के बर्थडे पर केक में बेहोशी की दवा मिला दी जाती है। दवा मिलाने वाले बलबीर को ट्रक से कुचलकर मार दिया जाता है। हमारे घर पर एक औरत का कटा हुआ सिर भेजा जाता है। गुन्डे हमारी नौकरानी पुष्पा के साथ बदतमीजी करते हैं। हमारी नई कार को तोड़-फोड़कर आग लगा देते हैं। पुष्पा को किडनेप करके उसके साथ पहले सामूहिक बलात्कार किया जाता है, फिर उसकी कलाइयों को काटकर उसका कत्ल कर दिया जाता है। हमारे कुत्ते को जहर के बिस्किट खिलाकर मार दिया जाता है। आखिर ये सब हो क्या रहा है...कौन कर रहा है...क्यों कर रहा है?"

"मैं भी इसी उधेड़बुन में लगा हुआ हूं सोफी...।" चाय की घूंट भरकर गम्भीर भाव से बोला केशव, "वो जो कोई भी है, जरूरत से ज्यादा चालाक है। अपने खिलाफ कोई क्लू नहीं छोड़ रहा है। पुष्पा की इज्जत लूटकर उसकी जान लेने वाले गुन्डों से उस दुश्मन के बारे में जानकारी मिल सकती थी, लेकिन वो गुन्डे पुलिस के साथ हुये एनकाउन्टर में मारे गये। समझ में आकर नहीं दे रहा है कि आखिर वो कौन है? वो हमसे किस बात की खुन्नस निकाल रहा है?"

"लेकिन उसके बारे में मालूम तो करना ही होगा।"

"बिल्कुल करना होगा। वरना वो जो कोई भी है, हमें परेशान करता रहेगा। आज नहीं तो कल...मालूम पड़ ही

जायेगा कि वो कौन है। उसकी बख्शीश नहीं करूंगा मैं सोफी। तुम देखना कि उसका क्या हाल करता हूं मैं।"

केशव का चेहरा यूं हो चला कि मानो सुलगे हुये अंगारे को जोर-जोर से फूंक मारी जा रही हो।

आंखों में मानो आकाशीय बिजली ही कौंध रही थी।

❑❑❑
❑❑❑

"कान्ता बाई!"

फर्श पर पोंछा मार रही अधेड़ उम्र की कान्ता बाई ने सोफिया को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"आशीर्वाद को दवा देकर सुला दिया है। मंगलवार है। मुझे मन्दिर होकर आना है। कोशिश करूंगी कि घण्टेभर में वापिस लौट आऊं। क्या तुम आशीर्वाद का ख्याल रख लोगी?"

"क्यों नहीं बीबी जी? आशीर्वाद मुझसे काफी हिला-मिला हुआ है। रोजाना परी और राजकुमार की कहानी सुनाने को कहता है। मैं सुनाती हूं। बनाकर...घड़कर सुनाती हूं। इस शर्त पर कि वो नाचकर दिखलायेगा। फिर वो जो ठुमके लगाता है, कसम से मजा ही आ जाता है। सारी थकान उतर जाती है। वो जागेगा तो कहानी सुना दूंगी, लेकिन आज नाचने को नहीं बोलूंगी—क्योंकि उसको बुखार है। उसने दूध मांगा तो गर्म करके और होरलिक्स मिलाकर दे दूंगी। आप जाइये और आराम से पूजा-पाठ करके ही लौटना। जल्दबाजी मत करना। आपसे प्रसाद लेकर ही जाऊंगी।"

"थैंक्यू, कान्ता बाई।" कहने पर सोफिया ने मेज पर रखी पूजा-पाठ वाली बेंत की बनी बास्केट उठाई और बाहर को चल दी।

इलाके में ही खूबसूरत और भव्य मन्दिर बना हुआ था।

सोफिया ने हनुमान जी की प्रतिमा के समक्ष घी का दीया और धूपबत्ती जलाई, फिर कण्ठस्थ 'हनुमान चालीसा' का पाठ किया, आरती की, बाकी देवी-देवताओं, भगवान की प्रतिमाओं के समक्ष शीश नवाकर और हाथ जोड़कर प्रार्थना की और बेसन के लड्डुओं का प्रसाद चढ़ाया।

फिर पुजारी जी ने उसे चरणामृत पिलाया, प्रसाद दिया और सौभाग्यवती, सदा सुहागिन होने का आशीर्वाद दिया।

सोफिया घर वापिस लौटी तो वहां का नजारा देखकर मुख से घुटी-घुटी-सी चीख निकल गई और साथ ही हाथों से बास्केट भी छूट गई।

घर का सारा सामान और फर्नीचर उलटा-पुलटा और टूटी-फूटी हालत में पड़ा था।

कान्ता बाई फर्श पर पड़ी थी और उसके सिर से खून बह रहा था।

सोफिया ने उसे पुकारा भी, लेकिन बेहोश होने के कारण वो कोई जवाब ना दे पाई।

फिर अचानक ही आर्शीर्वाद का ख्याल आते ही सोफिया दौड़कर कमरे में गई—

आशीर्वाद नहीं था।

पगलाई सी सोफिया 'आशीर्वाद...आशीर्वाद' पुकारते हुये पूरे घर में घूम गई।

कोना-कोना, चप्पा-चप्पा देख लिया, छत पर भी हो आई, लेकिन आशीर्वाद कहीं ना मिला।

आंखों के सामने अन्धेरा-सा छाने लगा। हथेलियों से सिर थामकर वो रूआंसी-सी बोली—"हे ईश्वर! मेरा बच्चा...मेरा आशीर्वाद कहां गया?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव तब कचहरी में था और अपने बॉस रमाकान्त के साथ एक मर्डर केस पर डिसकशन कर रहा था कि सोफिया का फोन आ गया।

केशव नई खरीदी गई लाल रंग की मारूति कार में सवार होकर घर पहुंचा—उसके साथ रमाकान्त भी था।

झाड़ू-पोंछा करने वाली कान्ता बाई होश में आ चुकी थी और डॉक्टर उसके सिर पर पट्टी बांध रहा था।

सोफिया ने शिष्टाचारवश पहले रमाकान्त के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लिया, फिर केशव की कोहली भर फूट-फूटकर

रोते हुये बोली—"हमारे बेटे का किडनेप हो गया केशव। वो आठ गुन्डे थे। उन्होंने सामान के साथ तोड़-फोड़ की। कान्ता बाई ने विरोध किया तो इसके सिर पर लोहे की रॉड मारकर बेहोश कर दिया। फिर वो हमारे आशीर्वाद को किडनेप करके ले गये। मेरे लाल को कैसे भी करके वापिस ले आओ। मैं उसके बिना नहीं रह पाऊंगी। मैं मर जाऊंगी।"

"रिलेक्स सोफी।"

"मेरे बच्चे का किडनेप हो गया और तुम मुझे रिलेक्स होने को बोल रहे हो?"

"आशीर्वाद मेरा भी बेटा है सोफी। मैं उसे कुछ नहीं होने दूंगा। भले ही मुझे कुछ भी करना पड़े—लेकिन मैं आशीर्वाद को सही-सलामत वापिस लाऊंगा। भगवान के लिये रोना बन्द करो।"

"नहीं...मुझे मेरा बेटा लाकर दो।"

"तुम्हें केशव पर भरोसा करना चाहिये बहू।"

रमाकान्त सोफिया के सिर पर हथेली रखकर समझाने वाले अन्दाज में बोला, "मुझे इस पर पूरा विश्वास है। लेकिन तुम्हारे यूं रोने से ये नर्वस हो जायेगा। तुम सब्र से काम लो। केशव बहुत जल्द आशीर्वाद को वापिस ले आयेगा।"

"नमस्कार पण्डित जी!" अपना काम निबटा चुका डॉक्टर बोला—"मुझे इजाजत दीजिये।"

"चाय पीकर जाइयेगा डॉक्टर साहब।"

"नहीं, फिर कभी, क्लीनिक पर काफी पेशेन्ट थे। भाभी जी का फोन गया तो चला आया।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया! आपकी फीस...?"

"नहीं, मुझे शर्मिन्दा मत कीजिये पण्डित जी।"

केशव ने जेब से पर्स निकाला और उसमें से सौ का नोट निकालकर डॉक्टर की जेब में ठूंसते हुये कहा—"घोड़ा घास से यारी करेगा तो फिर खायेगा क्या?"

"थैंक्यू, पण्डित जी।" कहने पर डॉक्टर चला गया।

जबकि केशव फर्श पर बैठी कान्ता बाई के करीब पहुंचकर बोला—"कैसी हो कान्ता बाई? ज्यादा तकलीफ तो नहीं?"

"नहीं साहब...!" कान्ता बाई कराहते हुये बोली—"मैं ठीक हूं...आह...अफसोस इस बात का है कि मैं आशीर्वाद बाबा को किडनेप होने से नहीं बचा पाई। उन गुन्डों ने आते ही तोड़-फोड़ चालू कर दी और मेरा सिर फोड़कर मुझे बेहोश कर दिया।"

"तुम्हारा कोई दोष नहीं कान्ता बाई। मैं फोन करके एक स्केच आर्टिस्ट को बुला रहा हूं। वो तुमसे उन गुन्डों का हुलिया पूछकर उनकी तस्वीरें बनायेगा। जब तक तुम ओ० के० नहीं कर दोगी, वो तस्वीरों में बदलाव करता रहेगा। तस्वीरें बन जाने पर मुझे उन गुन्डों तक पहुंचने में आसानी हो जायेगी।"

"ठीक है...साहब जी। मैं उन गुन्डों का हुलिया बता दूंगी। सभी के चेहरे याद हैं मुझे। आप तस्वीर बनाने वाले को बुलवा लीजिये।"

❑❑❑
❑❑❑

"ओ मुंगड़ा...मुंगड़ा...मैं गुड़ की डली—मंगता है तो आ जा रसिया...नहीं तो मैं चली।"

बस्ती के हिसाब से ही घटिया किस्म का शराबखाना था, जिसका तमाम फर्नीचर पुराना, टूटा-फूटा हुआ था।

मेज-कुर्सियों, बेंच के अलावा चारपाइयां भी थीं।

पीने-खाने वाले लोअर-क्लास के ही थे या फिर मवाली टाइप के।

काल-कलूटी, या मोटी-थुल-थुल, या फिर बुरे नैन-नक्श वाली कई औरतें ग्राहकों को शराब व खाने-पीने का सामान सर्व कर रही थीं।

चार बड़े कॉलम यानि स्पीकर्स व बुफर वाले बड़े डिब्बों से निकल रहे फिल्मी गाने की धुन पर एक लड़की आठ बाई आठ फुट के पांच फुट ऊंचे स्टेज पर डांस कर रही थी। उसके लटके-झटके और इशारे अश्लील किस्म के ही थे। कई शराबी लड़की तक पहुंचने को व्याकुल थे, लेकिन स्टेज के चारों तरफ खड़े गुन्डे किसी को भी स्टेज पर चढ़ने नहीं दे रहे थे। सारे

शराबी और मनचले नीचे ही डांस कर रहे थे और लड़की पर रुपये-पैसे उछाल रहे थे।

एक काउन्टर के पीछे लम्बा-चौड़ा, दढ़ियल बैठा था, जो कि सर्विस कर रही लड़कियों से पैसे ले रहा था और बकाया राशि दे रहा था। उसका सिर गंजा था और मांझे गये तांबे के लोटे की मानिन्द ही चमचमा रहा था। उसने काले रंग की लुंगी के साथ काले रंग की ही जालीदार बनियान पहनी हुई थी।

राजपाल यादव के साइज के युवक के साथ केशव को देख गंजा बुरी तरह चौंका और उसने काउन्टर की भीतरी दराज से रिवॉल्वर निकालकर गोद में रख ली।

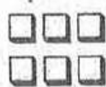
"ये ही है मस्तान दादा, पण्डित जी।" राजपाल यादव की कद-काठी वाला युवक गंजे की तरफ हाथ उठाकर बोला—"दूसरे बाकी के वो सातों चेले वो रहे...जो नाचने वाली लड़की के चारों तरफ खड़े हैं। आपके पास इनकी तस्वीरें हैं ही...आपने पहचान ही लिया होगा।"

"ओये टोनी...!" गंजा अकड़कर बोला—"तू अपुन से दारू खरीद के दूसरे लोगों कू बेचके कमाई करता है। फिर तू इसे यहां क्यों लाया है?"

"ये पण्डित जी हैं मस्तान! इन्होंने एक बार मेरी जान बचाई थी। इनका अहसानमन्द हूं मैं। इन्होंने तुम लोगों की फोटू दिखलाई तो मैं इन्हें यहां पर ले आया। तुम लोगों ने इनके घर जाकर तोड़-फोड़ की, नौकरानी का सिर फोड़ा और इनके बेटे को उठाकर ले आये। इनके बेटे को इनके हवाले कर दो।"

"अच्छा...!" मस्तान कुत्सित किस्म की मुस्कान के साथ बोला—"अगर अपुन उस लौंडे को नेई लौटायेगा तो तू क्या कर लेगा? तेरा ये पण्डित इच क्या कर लेगा भीडू?" कहने पर उसने गोद से रिवॉल्वर उठाकर केशव और टोनी पर तान दी। वो नजारा देख मस्तान के सातों चेले चौंके और लपके हुये आये। उन्होंने केशव और टोनी को घेरकर जेबों से रिवॉलवरें, पिस्टल व चाकू निकाल लिये।

झगड़े की आशंका को देखते हुये कई ग्राहक उठे और भाग लिये।



टोनी नामक युवक स्वयं को घिरा पाकर बुरी तरह घबरा गया और सूखे पत्ते-सा पीला पड़कर कांपने लगा।

जबकि केशव पर सुई की नोक बराबर भी फर्क नहीं पड़ा। पूरी तसल्ली के साथ और फुर्सत में उसने डिब्बी व गोल्डन कलर का लाइटर निकाल एक सिगरेट सुलगाई। डिब्बी व लाइटर नीले रंग के कोट की जेब में सरकाकर कश मारा और गंजे मस्तान की आंखों में झांकते हुये मोर्ग में रखे मुर्दे जैसे ठन्डे लहजे में बोला—"मेरे बेटे आशीर्वाद की वजह से मेरी धर्मपत्नी सोफिया बहुत दुखी और परेशान है। रो-रोकर बुरा हाल है उसका। उससे वादा करके आया हूं कि आशीर्वाद के साथ ही घर वापिस लौटूंगा। हालांकि तूने मेरे घर का कीमती सामान तोड़ा-फोड़ा और नौकरानी को भी जख्मी किया—लेकिन कोई बात नहीं। तू सिर्फ आशीर्वाद को मेरे हवाले कर दे।"

"चल बे ओये!" मस्तान केशव पर रिवॉल्वर ताने हुये बोला—"बड़ा आयेला उस लौंडे कू ले जाने वाला।"

"तो घी सीधी उंगली से नहीं निकलेगा?"

"नेई निकलेगा। क्या कर लेगा तू?"

"टोनी भाई...!" केशव टोनी के थरथराते कन्धे पर हथेली रखकर बोला—"ये भाई साहब शराफत वाली भाषा नहीं समझते। इनको दूसरी भाषा में समझाना पड़ेगा।"

और फिर केशव हवा में उछलते दिखलाई पड़ा और फिर वो मस्तान के पीछे दिखलाई पड़ा।

मस्तान की कनपटी पर हथौड़े जैसा घूंसा जड़कर उससे रिवॉल्वर छीन ली और उसके टकले सिर को पंजे में दबोचकर उसके चेहरे को काउन्टर के टॉप से चिपकाकर रिवॉल्वर की नाल उसकी कनपटी से लगा दी।

सिगरेट... सिगरेट तो हवा में उछलते ही फेंक दी थी केशव ने।

मस्तान ने चेहरे को काउन्टर पर से उठाने को पूरे जोर

लगा दिये, लेकिन काज-बटन करने वाली नन्हीं-सी सुई की मोटाई बराबर भी चेहरे को ना उठा पाया।

उसे यूं ही लगा कि उसके सिर पर ट्रक का टायर चढ़ गया हो।

मस्तान के हथियारबन्द चेले लुटे-पिटे से नजर आये।

जबकि टोनी भीगी बिल्ली से शेर बन गया और बीस इंची सीने को यथा सम्भव चौड़ाकर, ककड़ी-सी गर्दन को अकड़ाकर बोला—"देख नहीं रहे हो हराम के पिल्लों। पण्डित जी तुम्हारे उस्ताद का बैन्ड बजा सकते हैं। अपने हथियार फेंको। फर्श पर नहीं, उस स्टेज पर...जहां रानी खड़ी है।"

चेलों ने कसमसाकर उस स्टेज पर हथियार फेंक दिये, जहां पर डांसर से स्टैच्यू में तब्दील हो चुकी लड़की मौजूद थी।

टोनी ना जाने कहां से ढूंढकर लोहे की रॉड ले आया और मस्तान के चेलों पर पिल पड़ा।

तड़ाक...तड़ाक...तड़ाक...!

"आ...आह...!"

चमचे हड्डी-पसली तुड़वाकर, सिर फटवाकर चीखे और फर्श पर गिरकर तड़पने लगे। वो जब तक अधमरे नहीं हो गये, तब तक टोनी के हाथ नहीं रुके।

केशव ने मस्तान के सिर को दबाये हुये उसके कंधे पर रिवॉल्वर की नाल रखकर ट्रिगर दबा दिया—

धांय...गोली मस्तान के कंधे में पेस्त होकर हड्डी के भीतर दर्द का कत्थक करने लगी।

चीखता-चिल्लाता हुआ मस्तान काउन्टर पर से चेहरा उठाने की नाकाम कोशिश करने लगा।

केशव ने उसके कन्धे पर रिवॉल्वर की नाल टिकाई और ट्रिगर दबा दिया...धांयऽऽ।

"आ...आहऽऽऽ!" चीखा मस्तान।

जल बिन मछली-सा तड़पने लगा।

केशव ने रिवॉल्वर की नाल उसकी गर्दन पर रखी ही थी कि वो चिल्ला उठा "ने...नेई...गोली नेई मारने

का...आह...अपुन कू होटल शाहजहां के मैनेजर अजीत शेट्टी ने पांच पेटी दियेला था और...और...आह...बोला था कि तुम्हेरे बेटे कू किडनेप करके उसके हवाले करने का है...आह...अपुन मौके की फिराक में था...जब तुम नेई थे और तुम्हेरी बीवी बी बाहर गयेली तो घर में घुसके तोड़-फोड़ की...आ...आह...नौकरानी कू चोटिल कियेला...तुम्रे बेटे कू किडनेप करके शेट्टी के हवाले किया...आह...अपुन सच बोल रेला है...भगवान की कसम...तुम्हेरा बेटा शेट्टी के कब्जे में है...उसने तुम्हेरे बेटे कू क्यों उठवाया...अपुन कू नेई मालूम...आ...आह!"

केशव ने रिवॉल्वर के दस्ते का जबरदस्त प्रहार मस्तान की खोपड़ी पर किया तो खोपड़ी फट गई और खून की धारा बह निकली।

मस्तान बेहोश!

❑❑❑
❑❑❑

छह फुट लम्बा और फुटभर लम्बे बालों वाला अजीत शेट्टी सिर्फ अन्डरवियर में था और हाथ में व्हिस्की का गिलास लिये हुये म्यूजिक सिस्टम से निकलती धुन पर थिरक रहा था।

उसके साथ डांस करने वाली खूबसूरत बाला के तन पर नाममात्र के दो वस्त्र ही थे, जो कि छिपाने से ज्यादा दिखला रहे थे।

"स्वीटी...माई डार्लिंग!" शेट्टी उसकी पतली कमर में हाथ डालकर बोला—"बीवी अपने मायके गई है। हफ्तेभर के लिये आजाद हूं मैं। कल रेशमा को बुलाया था और आज तुम्हें। लो...घूंट भरो जानेमन। जश्न मनाओ।"

"अपने जश्न में मुझे शामिल नहीं करोगे शेट्टी?"

शेट्टी के हाथ से गिलास छूटा और फर्श से टकराते ही शहीद हो गया।

"तु...तुम...!" वह केशव को देखकर चौंका।

"प...पण्डित जी?" केशव को देख स्वीटी दौड़कर रूम से अटैच्ड बाथरूम में जा समाई।

केशव शेट्टी के करीब पहुंचा। सिगरेट में कश लगाकर होंठों को गोलकार करके धुएं को उसके थोबड़े पर फेंका और फिर सिगरेट फेंककर उस पर पिल पड़ा।

दे लात...दे घूंसे।

उसके हाथ-पैर मशीनी अन्दाज में चल रहे थे।

चीखते-चिल्लाते शेट्टी को मुकाबला करने का तो क्या...बचाव करने का भी मौका नहीं मिल रहा था।

"स...स्वीटी...कहां मर गई?" बुरी तरह पिट रहा शेट्टी चिल्लाया—"जल्दी से होटल फोन करो...बाला पांच-सात...आह गुन्डों को लेकर यहां आ जायेगा...हाय मर गया...हाय...आह...!"

बाथरूम का दरवाजा खुला। काली जींस व टीशर्ट पहने हुये स्वीटी बाहर निकली और नजरें झुकाये हुये बोली—"मेरी मम्मी को एक टैक्सी वाले ने ठोक दिया था तो पण्डित जी ही उन्हें हॉस्पिटल ले गये थे। उनका इलाज कराया था—यहां तक कि अपना खून भी दिया था। इनकी बदौलत ही मम्मी जिन्दा है।"

"ले...लेकिन तू मेरे होटल में नौकरी...आह...!"

"भाड़ में गई तेरी नौकरी। मुम्बई में बहुत होटल हैं। कोई भी डांसर की नौकरी दे देगा। मैं चलती हूं। आप अपना प्रोग्राम चालू रखिये पण्डित जी। आपने आते ही मुझे जिस रूप में देखा...उसके लिये जिन्दगीभर शर्मिन्दा रहूंगी पण्डित जी... चलती हूं...नमस्ते।"

अपना पर्स उठाकर स्वीटी कमरे से बाहर निकल गई।

केशव शेट्टी को ठोंकने लगा।

एक-एक प्रहार घातक।

बायें हाथ और दायें पैर की हड्डी तुड़वा चुका शेट्टी खूंट में आकर बोला—"तु...तुम्हारा बेटा...यहीं है...आह...दायीं तरफ वाले रूम में...आह...उसे नींद का इंजेक्शन आह...मु...मुझे माफ कर दो...आह...!"

वह बेहोश हो गया—लेकिन बेहोशी की हालत में भी कराहे जा रहा था।



जब फोन की घण्टी बजी तो केशव और सोफिया नाश्ता ले रहे थे।

सोफिया ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया और कोयल-सी कूहकी—"हलो।"

"अपने खसम को फोन दे।"

"ऐ...बात करने की तमीज नहीं है क्या?"

"पण्डित को फोन दे।"

सोफिया ने रिसीवर केशव को दिया और केशव रिसीवर कान से लगाकर बोला—"केशव पण्डित स्पीकिंग।"

"यमराज! यमराज बोल रहा हूं मैं...।" दूसरी तरफ से मानो कोई चोटिल नाग इन्सानी जुबान में फुंफकारते हुये बोल रहा था।

"यमराज कब से फोन का इस्तेमाल करने लगा?"

"मैं वो नहीं...धरती का यमराज हूं पण्डित! वो यमराज...जिसका भाई विजयराज, उसकी बीवी सारिका और सारिका की कोख में पलने वाला बच्चा मारे गये।"

"ओह...तो तू है! अमेरिका से बोल रहा है कि...?"

"कभी का हिन्दुस्तान आ गया था मैं। विजयराज और सारिका की लाशों को उठवाकर अपने हाथों से उनका अन्तिम संस्कार किया था मैंने और तुझसे इन्तकाम लेने की कसम खाई थी।"

"ओह...समझा...मेरे साथ जो भी गड़बड़ियां हो रही थीं—वो तू ही करा रहा था?"

"हां, मैं ही...!" दूसरी तरफ से नाग फुंफकारा, "मेरे होटल का मैनेजर गायब है और उसके घर पर तेरा बेटा भी नहीं है। जाहिर है कि तू अपने बेटे को छुड़ाकर ले गया।"

"हां, ले तो आया हूं।"

"खुश मत होना ओये पण्डित! कतई भी खुश मत होना। मुम्बई का माफिया डॉन हूं मैं। दोबारा से अपना संगठन खड़ा कर लिया है मैंने और नया हैडक्वार्टर भी बना लिया है। अभी

तक तो छुप्पा-छुप्पी वाला खेल चल रहा था। लेकिन अब जो भी होगा...खुलकर होगा। अब मैं किराये के गुन्डों का इस्तेमाल नहीं करूंगा। अब मेरे गैंग के कमान्डोज मैदान में उतरेंगे। तेरा खाना-पीना, सोना-जागना...सब हराम कर दूंगा मैं हरामजादे। तबाह करके रख दूंगा तुझे। तेरी जिन्दगी को मौत से भी बदतर बना दूंगा। वो हालात पैदा कर दूंगा कि तू एक दिन घुटनों के बल चलकर मेरे दरबार में आयेगा और पल्ला पसारकर रहम की भीख मांगेगा।"

"मुझे कुछ मांगना ही होगा तो उसी से मांगूंगा, जो हर किसी की झोली भरता है।" केशव चाय की घूंट भारकर शान्त भाव से बोला, "मैं भगवान से ही मांगता हूं। उसी से डरता हूं! उसी के रौब में आता हूं। तुझ जैसे गीदड़ की भभकियों से तो मुझे गुदगुदी-सी होती है। तेरी समझ में जो धमकियां थीं, मेरे लिये चुटकले थे—लेकिन इतने घटिया कि कम्बख्त हंसी भी नहीं आ रही है।"

"अब कभी हंसी नहीं आयेगी तुझे पण्डित। तेरी हंसी और खुशी को छीन लूंगा मैं और तेरी आंखों में खून के आंसू भर दूंगा।"

"अपने हैडक्वार्टर का पता बतला। अभी आ जाता हूं। देख लेंगे कि...जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है?"

"वो वक्त भी आयेगा...जब तू रहम की भीख मांगता हुआ मेरे दरबार में आयेगा। लेकिन अभी नहीं। तेरी बीवी और बेटे को उठवाऊंगा...।"

"अपने आदमी भेज और उठवा ले। सोफिया और आशीर्वाद यहीं...घर पर हैं। मेरी गैर मौजूदगी में उठवायेगा क्या? छक्के वाला गेम खेलेगा क्या? अपने बाप की औलाद नहीं क्या? अपनी मां का दूध नहीं पीया क्या?"

"जुबान को लगाम दे...काट दी जायेगी।"

"आमना-सामना कर। जुबान पर लगाम लग जायेगी। मर्दों वाली लड़ाई लड़।"

"जिस तरह बिल्ली पहले चूहे के साथ खेलती है और फिर उसे खा जाती है...।"

"माना कि तू बिल्ली है—लेकिन मैं चूहा नहीं शेर हूं। एक पंजे में तेरा कचूमर निकाल दूंगा। बिल में बैठकर लम्बी-लम्बी फेंक रहा है। किस गधे ने तुझे माफिया डॉन बना दिया? कहीं माफिया छक्कों की संस्था तो नहीं?"

"ओये पण्डित ऽऽऽऽ!"

"इतनी जोर से मत चीख...फेफड़े फट जायेंगे।"

"मैं...मैं तुझे फाड़ डालूंगा।"

"कागज नहीं हूं कि फाड़ डालेगा। अष्टधातु का बना मजबूत बख्तर हूं—वो भी भट्टी में तपा हुआ। हाथ भी लगायेगा तो जल जायेगा।"

"जलेंगी तो तेरी तमाम खुशियां, तेरी जिन्दगी! लोग मरने पर चिता में जलते हैं लेकिन यमराज तुझे जीते-जी ही चिता की आग में जलायेगा।"

"शेखचिल्ली की तरह ख्वाब मत देख। गरजने वाले बादल बरसते नहीं और भौंकने वाले कुत्ते कभी काटते नहीं।"

"मैं बरसूंगा भी और काटूंगा भी पण्डित!"

"बरसने से पहले ही हवा में उड़ जायेगा। काटने से पहले ही अपने दांत तुड़वा बैठेगा तू।"

"हरामजादे!"

"तू...तेरा बाप...तेरा सारा खानदान।"

"मैं...मैं तुझे..."

"डैडी बोलेगा?"

"मैं तेरी..."

"पूजा करेगा?"

"लगता है तेरा बुरा वक्त..."

"कभी नहीं आयेगा। हां, तेरी जन्म कुन्डली में शनिचर जरूर बैठ गया है। चारों तरफ से मुसीबत टूटेगी तुझ पर यमराज।"

"तू...तू मुझे मजबूर कर रहा है।"

"खुदकुशी के लिये।" हंसकर बोला केशव, "कर ले—बढ़िया रहेगा। अगर मैं मारूंगा तो बहुत ज्यादा तकलीफ होगी।"

"अब फोन पर कुछ नहीं बोलूंगा पण्डित। करके दिखलाऊंगा और बतलाऊंगा तुझे कि यमराज जब अपनी पर आता है तो अपने दुश्मन का कितना...।"

"सम्मान करता है।"

"बुरा हाल करता है।" कहने पर दूसरी तरफ से यमराज ने फोन काट दिया।

❑❑❑
❑❑❑

हॉलरूम में दो दर्जन के करीब युवक व अधेड़ विराजमान थे, जो कि शक्ल-सूरत से ही छंटे हुये मुजरिम नजर आ रहे थे।

उनके सामने शेर की खाल से मढ़े सिंहासन पर यमराज विराजमान था। काली पैन्ट व सोने के बटन वाला काला ओवरकोट, सिर काला हैट और आंखों पर काला चश्मा।

बगल में ही उसकी राइट हैन्ड नमिता बैठी हुई थी, जो कि लाल रंग की स्ट्रेप लेस पोशाक पहने हुये थी।

सिंहासन के दायें-बायें एक-एक और पीछे दो हथियारबन्द कमान्डो-रूपी गुन्डे अटेंशन की पोजीशन में खड़े थे।

चार काली पोशाक व नकाब वाले गुन्डे केशव के बॉस या गुरु रमाकान्त और उसकी बेटी माधवी को पकड़े हुये हॉल में दाखिल हुये।

रमाकान्त और माधवी के हाथों को पीठ पीछे बांधा गया था। आंखों पर काली पट्टियां बांधी थीं और होठों पर टेप चिपकी हुई थी।

दोनों खौफजदा थे और पीले पड़े हुये थे।

"अपने आदमी केशव के गुरु और उसकी लौंडिया को ले आये डार्लिंग।" यमराज चहकते हुये नमिता से बोला—"अब आयेगा गेम का मजा। फोन पर बहुत बकवास कर रहा था वो हरामजादा।"

"क्या आप इन दोनों को मारने की धमकी देकर केशव पण्डित को यहां बुलवाओगे?"

"नहीं, अभी नहीं डार्लिंग। केशव को यहां तभी लाया

जायेगा, जब उसके खत्म करने का मूड बन जायेगा। अभी तो उसे जिन्दा रखना है और खून के आंसू रुलाने हैं।"

"तो फिर इन दोनों को क्यों उठवाया है आपने...उई...आह...!"

यमराज ने नमिता के गाल पर चिकोटी काटी और फिर रमाकान्त व माधवी पर गिद्ध दृष्टि गड़ाकर बोला—"इन दोनों को मारा जायेगा। इनकी लाशों के छोटे-छोटे टुकड़े करके और गिफ्ट पैक बनाकर केशव पण्डित को भेज देंगे।"

रमाकान्त और माधवी की दशा खराब!

माधवी तो रोने ही लगी। ये बात दूसरी थी कि मुंह पर टेप चिपकी होने की वजह से आवाज नहीं निकल पा रही थी।

"फोन दो नमिता डार्लिंग। उस पण्डित को फोन करता हूं। देखता हूं कि अपने गुरु और उसकी बेटी के किडनेप की खबर मिलने पर उसकी अकड़ कैसे बरकरार रहती है?"

❑❑❑

❑❑❑

"हैलो...!"

"हैलो नहीं, हिलो! हिल पण्डित...ऐसा हिलेगा कि तुझे सारी दुनिया हिलती हुई नजर आयेगी।"

"तूने फिर बेमतलब की गीदड़ भभकियां देने को फोन कर दिया।" दूसरी तरफ से केशव ही बोल रहा था—"अगर जंग ही लड़नी है तो सामने आकर...।"

"मैं गीदड़ भभकियां नहीं दे रहा हूं ओये पण्डित!" यमराज हिंसक लहजे में बोला—"ये शेर की दहाड़ है।"

"शेर कब से म्याऊं-म्याऊं करने लगा?"

"अपने कानों का मैल साफ कर ओये पण्डित! मैं तुझे वो आवाजें सुनवाने जा रहा हूं...जिन्हें तू आखिरी बार ही सुनेगा। फिर उन आवाजों को सुनने के लिये तरसता ही रहेगा।"

"क्या मतलब? किनकी आवाजों की बात कर रहा है तू यमराज?"

"थोड़ा सब्र तो रख। अभी तेरी उन दोनों से बातें कराता

हूं। ऐ...इन दोनों को हमारे पास लेकर आना। इनकी केशव पण्डित से बात करानी है।"

चारों गुन्डे रमाकान्त और माधवी को पकड़े हुये यमराज के करीब आ गये।

"इनके मुंह से टेप हटाओ और केशव पण्डित से थोड़ी-थोड़ी देर तक बातें कराओ।" कहने पर यमराज ने रिसीवर एक गुन्डे को थमा दिया।

उस गुन्डे ने रमाकान्त के मुंह से टेप हटा दी और रिसीवर उसके कान से लगाकर बोला—"बात करने का बुढ़ऊ। जल्दी कर।"

"ह...हैलो।"

"अरे, गुरुजी आप...?"

"हां, मैं केशव बेटे।" रमाकान्त रूआंसा-सा होकर बोला—"मैं और माधवी मन्दिर गये थे तो हमें काली ड्रेस और नकाब वाले चार आदमियों ने किडनेप कर लिया। मुंह पर टेप चिपका दी। हाथ बांध दिये। आंखों पर काली पट्टी बांधी है। ना जाने कहां पर लाया गया है।"

"लौंडिया से बात कराओ।"

यमराज का हुक्म होते ही गुन्डे ने रमाकान्त के कान से रिसीवर हटाकर माधवी के कान से लगा दिया।

और उसके होठों पर से टेप हटाकर बोला—"चल जल्दी से बात करने का...ज्यास्ती टैम नेई लगाने का।"

"केशव भइया...!" माधवी रोते हुये बोली—"मुझे और पापा जी को किडनेप कर लिया गया है। प्लीज, हमारी हेल्प कीजिये। हमें बचा लीजिये।"

इतने में ही गुण्डे ने यमराज का इशारा होने पर रिसीवर माधवी के कान से हटाकर यमराज को थमा दिया।

"फिक्र मत करो माधवी। मैं कोई-ना-कोई जतन करके तुम्हें और गुरुजी को बचा लूंगा।"

"नहीं बचा पायेगा ओये पण्डित...।" यमराज केशव की बात काटकर बोला—"क्योंकि तुझे मरते दम तक पता नहीं चल सकेगा कि मेरा हैडक्वार्टर कहां पर है। तेरा गुरु और उसकी

लौंडिया मेरे कब्जे में है। लेकिन फिक्र ना कर। कल दोनों तेरे घर पर पहुंच जायेंगे। दो बड़े-बड़े गिफ्ट पैक होंगे, जिनमें दोनों के छोटे-छोटे नन्हें-नन्हें टुकड़े होंगे।"

"न...नहीं... तू ऐसा नहीं कर सकता यमराज।"

"कौन रोकेगा...तू? क्या तेरे पास ऐसा कोई मन्त्र है कि अपने घर में आंखें मूंदकर पढ़ेगा और अगले ही पल यहां पर हाजिर हो जायेगा?"

"सुन यमराज! तेरी दुश्मनी मेरे साथ है। गुरुजी और माधवी ने तेरा कुछ बुरा नहीं किया।"

"दुश्मनी में ये सब चलता है पण्डित! तेरी आवाज इस बात की चुगली कर रही है कि रमाकान्त और माधवी की वजह से तू खासा परेशान है। दोनों के टुकड़े या बोटियां देखेगा तो तेरे दिल पर आरे-से चलेंगे। यही तो चाहता हूं मैं कि तू तड़पे—जैसे कि विजयराज और सारिका को याद करके मैं तड़पा था। मैंने तो उन दोनों को भुला दिया। लेकिन तू रमाकान्त और माधवी को नहीं भुला पायेगा।"

"सुन यमराज!"

"हां, सुना।"

"मैं अपनी बीवी और बेटे के साथ गुरुजी और माधवी का अदला-बदला करना चाहता हूं। किसी भी स्थान पर अपने आदमियों को भेज दे। वो मेरी बीवी और बेटे को ले जायेंगे और गुरुजी, माधवी को छोड़ जायेंगे। बोल, मन्जूर है?"

❑❑❑
❑❑❑

यमराज सोच में पड़ गया।

"नहीं...तेरी ये बात मन्जूर नहीं है मुझे। तू बहुत हरामी है। ना जाने कौन-सी चाल खेल जाये। मैं तेरे गुरु और उसकी बेटी को मारूंगा। फिर उसके बाद तेरी बीवी और बेटे का भी नम्बर आयेगा। उन्हें भी मारूंगा और तुझे खून के आंसू रुलाऊंगा।"

"मैं कोई गड़बड़ी नहीं करूंगा यमराज।" दूसरी तरफ से

केशव बोला—"तू एक काम कर। अपने आदमियों को गेट वे ऑफ इन्डिया पर भेज दे। वहां मैं अपनी बीवी और बेटे को उनके हवाले कर दूंगा। जब वो दोनों तेरे कस्टडी में पहुंच जायें तो गुरुजी और माधवी को छोड़ देना।"

"हुम्म...ये तो हो सकता है।"

"ठीक है! बतला कि मैं कितने बजे तक गेट वे इन्डिया तक पहुंचूं?"

यमराज ने रिस्टवॉच में टाइम देखा और फिर रिसीवर कान से लगाये हुये बोला—"शाम पांच बजे तक अपनी बीवी और बेटे को लेकर आजा। लेकिन कोई चालाकी नहीं। ये मत समझना कि मेरे आदमियों को पकड़कर उनसे मेरे हैडक्वार्टर का पता मालूम कर लेगा। मैं ऐसे आदमियों को भेजूंगा जो मेरे हैडक्वार्टर का पता जानते ही नहीं! वो तेरी बीवी और बेटे को मेरे हैडक्वार्टर की बजाय किसी दूसरे अड्डे पर ले जायेंगे। तेरी तरफ से कोई भी चालाकी हुई तो रमाकान्त और माधवी को मार दिया जायेगा।"

"नहीं! मेरी तरफ से कोई भी गड़बड़ी नहीं होगी। लेकिन तुम गुरुजी और माधवी को तो छोड़ दोगे ना?"

"हां, बिल्कुल...!" यमराज की आंखों में धूर्तता व मक्कारी भरी हुई थी, "दोनों को आजाद कर दूंगा—ये मेरा वायदा है।"

यमराज ने रिसीवर इन्स्ट्रूमेंट पर रख दिया और नमिता की जंघा पर हाथ मारकर बोला—

"अब आयेगा गेम का मजा डार्लिंग। केशव अपनी बीवी और बेटे को हमारे हवाले कर रहा है—इस शर्त पर कि बदले में हम रमाकान्त और माधवी को छोड़ देंगे।"

"क्या आप इन दोनों को छोड़ देंगे?"

"पागल हुई हो क्या? केशव की बीवी और बेटा एक बार अपने कब्जे में आ जायें—फिर इन दोनों की बोटियां का तोहफा पण्डित को भेज दूंगा।"

उसी वक्त अजीत शेट्टी हॉल में दाखिल हुआ।



शेट्टी के बायें हाथ और दायें पैर पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। सिर पर पट्टियों का हेलमेट-सा चढ़ा हुआ था।

वह बगलों में बैसाखियां दबाये हुये 'खट...खट' की आवाज करते हुये यमराज के करीब पहुंचा और रोने लगा—

"मु...मुझे माफ कर दीजिये डॉन साहब। ना जाने उस हरामजादे केशव पण्डित को किसने मेरे बारे में बतला दिया था। उसने मुझे बहुत मारा और अपने बेटे को छुड़ा ले गया। मैं ठीक होने पर केशव पण्डित को जान से मार दूंगा। अपनी पिटाई का उससे बदला लूंगा। बस...एक बार माफ कर...।"

"मैं आज बहुत खुश हूं ओये शेट्टी—इसलिये तेरी सारी खता माफ...।"

"शुक्रिया...डॉन साहब...थैंक्यू! मरते दम तक आपका अहसानमन्द रहूंगा मैं। अरे, ये बुड्ढा और लड़की कौन हैं?"

"ये केशव पण्डित का गुरु रमाकान्त है और वो इसकी बेटी माधवी है।"

"ओह...ये तो आपने बढ़िया काम किया। अब इन दोनों को बचाने के लिये केशव पण्डित को आना पड़ेगा। सबसे पहले मैं उसकी ठुकाई करूंगा।"

"पहले अपनी चोटें तो सही कर ले।" कहने पर नमिता ठहाका लगाकर हंसी तो यमराज ने भी रामलीला वाले रावण की मानिन्द ही अट्टहास किया।

धांय...धांय...!

तड़...तड़...तड़...!

रेट...रेट...रेट...!

"आह...आह...!"

अन्धाधुंध फायरिंग के साथ इन्सानी चीखें उभरीं तो यमराज बौखलाकर बोला—"ये...ये क्या हो रहा है?"

"डॉन...साहब...आह...!" गोलियों से छलनी-छलनी हुआ और खून से लथपथ काली पोशाक वाला गुन्डा

गिरता-पड़ता हॉल में दाखिल होकर बोला—"पु...पुलिस... हमला...पुलिस आह...!"

वह भरभराकर हमेशा के लिये गिर पड़ा।

"पुलिस...?" यमराज चिहुंका और सिंहासन से उठकर चीखा—"पुलिस यहां कैसे आ गई? सभी लोग बाहर जाओ और पुलिस से मुकाबला करो।"

"किसी को कष्ट करने की जरूरत नहीं।" शेट्टी के मुंह से केशव की आवाज निकली—"पुलिस यहीं आकर तुम लोगों को गिरफ्तार कर लेगी ना।"




यमराज चिहुंककर सिंहासन पर से यूं ही उठा कि मानो सिंहासन की गद्दी से अचानक ही अनेकों बिच्छुओं ने निकलकर डंक-प्रहार कर दिये हों।

"ऐ, कौन है तू? नहीं, तू शेट्टी नहीं हो सकता।"

"किसने कहा कि मैं शेट्टी हूं...?" वह मुस्कराकर बोला—"मैं केशव हूं...केशव पण्डित।"

"ले...लेकिन केशव से तो फोन पर मेरी...।"

"मुझसे ही हो रही थी। तब मैं रास्ते में था और तेरे हैडक्वार्टर की तरफ पुलिस फोर्स के साथ बढ़ रहा था। तेरे उस शेट्टी को मार-मारकर तुम्बा बना दिया था मैंने। उसी ने यहां का पता बतलाया था और दाखिल होने के लिये कोडवर्ड भी बतलाया।"

"ऐ, देख क्या रहे हो...पकड़ो इसे...।" चीखकर बोला यमराज, "नहीं...कोई गोली नहीं चलायेगा इस पर। इसे जिन्दा रखना है।"

केशव ने हवा में छलांग लगाई और फर्श पर पैर टिकते ही यमराज की कनपटी पर रिवॉल्वर की नाल सटाकर सर्द लहजे में बोला—"कोई भी अपनी जगह से नहीं हिलेगा। सभी अपने हथियार डाल दें—नहीं तो यमराज को यमलोक पहुंचा दूंगा।"

यमराज के चारों गार्डस् तथा हॉल में मौजूद गुन्डों ने कसमसाकर अपने हथियार फेंक दिये।

इतनी देर में ही कई पुलिसवाले धड़धड़ाते हुये भीतर आये और गुन्डों पर हथियार तान दिये।

साठ हथियारबन्द पुलिसवालों ने कसमसाते हुये यमराज को घेरकर उस पर हथियार तान दिये।

केशव ने रमाकान्त और माधवी को बन्धनमुक्त किया तो दोनों ने उसकी कोहली भर ली और शुक्रिया अदा करने लगे।

"ओये पण्डित...!" तभी यमराज दहाड़कर बोला—"पुलिस के दम पर ही तूने ये बाजी जीती है।"

"तू भी तो अपने गुन्डों के दम पर जुर्म कर रहा था बे। बेचारी पुष्पा को तूने अपने गुन्डों से रेप कराके मरवाया। मेरे बेजुबान कुत्ते को जहरीले बिस्किट खिला दिये। तमाम काम अपने गुन्डों के दम पर ही किये तूने। अपने दम पर किया क्या तूने? मैंने तुझे आमने-सामने आकर मुकाबला करने का चैलेंज दिया था, लेकिन कबूल नहीं किया। चल, तू भी क्या याद करेगा प्यारे! अब मुकाबला हो जाये। अगर तूने मुझे हरा दिया तो पुलिस तुझे अरेस्ट नहीं करेगी और यहां से जाने देगी। क्यों, कमिश्नर साहब?"

"ठीक है।" थोड़ी देर पहले ही हॉल में दाखिल हुआ पुलिस कमिश्नर बोला—"मुझे आप पर पूरा भरोसा है पण्डित जी! ओये यमराज...मैं तुझे वचन देता हूं कि अगर तूने पण्डित जी को हरा दिया तो तुझे यहां से जाने दिया जायेगा। और घण्टेभर तक तेरी तलाश भी नहीं की जायेगी। घण्टेभर में तू कहीं भी छिप सकता है या फरार हो सकता है। तुम दोनों के मुकाबले के बीच कोई नहीं आयेगा...ना ही पुलिसवाले और ना ही तेरे गुन्डे।"

यमराज का चेहरा यूं ही खिल उठा कि मानो किसी भिखारी को कुबेर के खजाने के सामने खड़ा करके कह दिया गया हो कि वो चाहे जितना खजाना उठाकर ले जा सकता है।

"तू गया पण्डित! पांच मिनट के भीतर तेरा कचूमर ना निकाल दिया तो मेरा नाम भी यमराज नहीं।"

कहने पर यमराज हुंकार भरकर केशव पर झपट पड़ा।



यमराज का इरादा सिर की टक्कर से केशव के सीने को पिचका देने का था—लेकिन केशव अपने स्थान से थोड़ा पीछे हटा और बायीं भुजा के मजबूत शिकंजे में यमराज की हाथी के पैर जैसी मोटी गर्दन को दबोचकर उसके पेट पर घूंसे जड़ने लगा।

एक-एक घूंसा हथौड़े की मार-सा...घातक! चीख-चीखकर ऊपर को उछलते यमराज को यूं ही लगा कि मानो उसके पेट के साथ आंतों पर भी मूसल बरस रहे हों।

स्वयं को छुड़ाने की उसने बहुतेरी चेष्टा की, लेकिन गर्दन शिकंजे में बुरी तरह कसी हुई थी।

"मारो...खूब मारो इसे केशव!"

"और मारो केशव भइया...और मारो!"

रमाकान्त व माधवी केशव का उत्साह बढ़ाने लगे।

पुलिसवाले भी खुश थे—जबकि नमिता समेत तमाम गुन्डों के सीनों पर मानो सांप लोट रहे थे।

यमराज को धरती पर पटक केशव उसके पेट पर चढ़ बैठा और उसके चेहरे पर घूंसे बरसाते हुये बोला—"कुएं का मेंढक भी खुद को शहंशाहे-आलम समझता है—लेकिन जब उसे कुएं से निकालकर समुद्र में डाला जाता है तो वहां के मगरमच्छ, शार्क और व्हेल मछलियों को देख उसे अपनी औकात मालूम पड़ती है। अपने दड़बे में बैठकर मुर्गे की तरह 'पक...पक...पक' तो कोई भी कर ले—लेकिन असली खिलाड़ी वो ही होता है, जो मैदान में उतरकर सामने वाले से जंग लड़ता है। यूं तो तूने मेरे खिलाफ बहुत काम किये—लेकिन तूने अपने गुन्डों से उस मासूम पुष्पा के साथ जो कराया, उसके लिये ही तेरी ठुकाई कर रहा हूं।"

मारता चला गया केशव उसे।

यमराज की नाक और मुंह के साथ कान से भी खून निकलने लगा। उसकी बायीं आंख का शटर बन्द हो चुका था।

"उठ...!" केशव उसे छोड़कर उठा और बोला—"खड़ा हो और मुकाबला कर ओये गीदड़।"

बड़ी मुश्किल से उठ पाया यमराज और किसी पियक्कड़ की मानिन्द ही झूमने-सा लगा।

केशव ने हवा में उछलकर उसके पेट पर सिर की जोरदार 'किक' जड़ दी।

लम्बी चीख के साथ यमराज हवा में उठा और पीछे की तरफ उड़ते हुये तड़ाक...की आवाज के साथ दीवार से टकराया और फिर फर्श पर गिरा।

फिर लेटे-लेटे ही उसने पलटकर दीवार में लगे एक लीवर को घुमा दिया और फिर पलटकर विक्षिप्त से भाव चेहरे पर समेटकर बोला—"मैं तो मरूंगा ही पण्डित...आह... लेकिन अपने साथ तुझे और बाकी लोगों को भी लेकर मरूंगा...मैंने दीवारों और छतों के बीच बम फिट कराये थे—उनके ब्लास्ट होने का सिस्टम चालू हो गया, जिसे अब कोई भी बन्द नहीं कर सकता...आह...मैं भी नहीं...पांच मिनट के भीतर ही ये इमारत ढह जायेगी...नेस्तनाबूद हो जायगी...ये सभी लोगों की कब्र बन जायेगी। हा...हा...ही...ही...हू...हू...आह... आह...।"

तभी घरघराहट-सी होने लगी।

दीवारें और छत बुरी तरह हिलने लगीं।

□□□

□□□

केशव ने पहला काम ये किया कि यमराज की कनपटी पर जूते समेत दायें पैर की ठोकर मारकर उसे बेहोश कर दिया और पुलिसवालों से कहा कि उसे उठाकर बाहर ले जायें।

फिर वो लपककर रमाकान्त व माधवी के पास पहुंचकर बोला—"जल्दी से बाहर चलिये। ये इमारत ध्वस्त होने वाली है।"

तभी छत का एक बड़ा हिस्सा उस सिंहासन पर गिरा, जिस पर यमराज बैठता था।

एक खम्भा टूटकर गिरा।

सभी बाहर को भागे।

कुछ पुलिसवालों ने बेहोश यमराज के पैर पकड़े और उसे फर्श पर घसीटते हुये बाहर को दौड़ पड़े। बाकी पुलिसवालों ने भी नमिता समेत सभी गुन्डों को हथियारों से कवर किया हुआ था। इमारत की दीवारें और छत के बड़े-बड़े टुकड़े तेज आवाज के साथ गिर रहे थे।

गलियारे की छत का एक हिस्सा टूटकर नमिता और चार गुन्डों के ऊपर गिरा—पांचों उसके नीचे दबकर 'जय राम जी की' कर गये।

कंक्रीट से बना एक भारी-भरकम शहतीर रमाकान्त व माधवी के ऊपर गिरने जा ही रहा था कि केशव ने दोनों को धक्का देकर गिरा दिया और शहतीर को दोनों हाथों से पकड़ लिया।

लेकिन कहां वो और कहां शहतीर।

शहतीर का एक नुकीला हिस्सा केशव के गले को काटने लगा तो खून की धार बह चली।

रमाकान्त व माधवी घबराकर चीखे।

तभी कुछ पुलिसवाले आ गये और उन्होंने फर्श पर गिरे पड़े रमाकान्त व माधवी को घसीटकर परे किया और फिर शहतीर को पकड़ लिया।

केशव शहतीर के नीचे से निकला तो सभी ने शहतीर को छोड़ दिया।

धड़ाम की आवाज के साथ शहतीर फर्श पर गिरा।

कटे हुये गले और उससे बहते खून की परवाह किये बिना केशव रमाकान्त व माधवी के हाथ पकड़कर धड़ाधड़ गिरती छतों और दीवारों से बचते-बचाते हुये दौड़ने लगा।

वो इमारत से निकलने में कामयाब रहे—लेकिन एक दर्जन गुन्डे और छह अभागे पुलिसवाले इमारत के मलबे में दबकर मारे गये।

पूरी इमारत जमींदोज हो गई।



केशव के गले पर गहरा जख्म था और वो बोल भी नहीं पा रहा था। डॉक्टरों ने ऑपरेशन करके टांके लगा दिये थे और उसे हॉस्पिटल में ही एडमिट कर लिया था—क्योंकि लम्बे ट्रीटमेंट की आवश्यकता थी।

उधर यमराज के खिलाफ पुलिस को कोई ठोस सबूत नहीं मिल पाया था—सिर्फ उसके गैंग के पकड़े गये लोग ही थे, जो कि इन्टेरोगेशन रूम में पुलिस की थर्ड डिग्री मिलने पर अपना जुर्म कबूल कर चुके थे और ये भी लिखकर दे चुके थे कि उनका बॉस यमराज ही है।

यूं तो यमराज ने भी अपने गुनाह कबूल किये थे, लेकिन सम्भावना यही थी कि उसने और उसके साथियों ने अदालत में मुकर जाना है और ये बोल देना है कि पुलिस ने उन्हें टॉर्चर करके झूठा बयान देने पर मजबूर किया था।

यमराज की तरफ से एडवोकेट उदयराज ने पैरवी करने का ऐलान किया था। उदयराज हालांकि पैंतीस वर्ष का युवक ही था—लेकिन उसका शुमार मुम्बई के कामयाब वकीलों में होता था। अपना केस जीतने के वास्ते वो 'साम-दाम-दण्ड-भेद' वाली नीति अपनाने से गुरेज नहीं करता था। नकली सबूतों और झूठे गवाहों का जमकर उपयोग करता था।

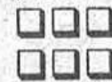
बोलने से लाचार केशव ने लिखकर सोफिया से कहा कि यमराज के खिलाफ वो ही केस लड़ेगी और वो रमाकान्त से मदद लेगी।

सोफिया ने आना-कानी की और कहा कि ये केस रमाकान्त को ही लड़ना चाहिये—लेकिन केशव नहीं माना और अपनी सौगन्ध दे डाली तो मजबूर होकर सोफिया ने कोर्ट में एप्लीकेशन लगा दी कि उसे यमराज के खिलाफ पैरवी करने की इजाजत दे दी जाये।

चूंकि तब सोफिया सरकारी वकील थी, इसलिये उसे पैरवी करने की इजाजत मिल गई।

केशव के प्रशंसकों के बीच ये चर्चा छिड़ गई कि क्या

सोफिया अदालत में उदयराज जैसे काईयां वकील के सामने टिक सकेगी?



पन्द्रह दिन बाद—

"योर ऑनर...!" खचाखच भरे अदालत कक्ष में सांवली रंगत वाले एडवोकेट उदयराज की बुलन्द आवाज गूंज रही थी—"मेरे मुवक्किल मिस्टर नागराज सिंह ने अदालत को पहले ही बतला दिया था कि माफिया डॉन इनका ममेरा भाई जयचन्द था। वो बीमार था तो ये उसका हाल-चाल पूछने चले गये थे। तभी पुलिस की रेड पड़ी और जयचन्द ने बम सिस्टम ऑन कर दिया था। इमारत के ढहने पर जयचन्द और बाकी कई लोग मारे गये। लेकिन पुलिस ने मिस्टर नागराज सिंह को ही माफिया डॉन बनाकर पेश कर दिया। जबकि पिछली तारीख में ही माफिया के लिये काम करने वाले सभी लोगों ने भी बयान दे दिया था कि उनका बॉस और माफिया डॉन जयचन्द ही था—पुलिस ने थर्ड डिग्री देकर उनसे और मिस्टर नागराज सिंह से झूठा बयान ले लिया था। पुलिस और मिसेज पण्डित मिस्टर नागराज सिंह के खिलाफ एक भी सबूत पेश नहीं कर पाई। इसलिये मेरी अदालत से ये गुजारिश है कि मिस्टर नागराज सिंह को निर्दोष करार देकर बाइज्जत बरी कर दिया जाये।"

सिर झुकाकर जज साहब का अभिवादन करने पर उदयराज पलटा और सोफिया को देखकर यूं ही मुस्कराया कि मानो उसका मखौल उड़ा रहा हो।

केशव और रमाकान्त के बीच बैठी सोफिया ने भी मुस्कान का जवाब मुस्कान से दिया।

मुस्कान तो लकड़ी के कठघरे में खड़े यमराज के स्याह होठों पर भी थी।

"मिसेज पण्डित!" जज साहब की गम्भीर आवाज गूंजी, "क्या आप नागराज सिंह के खिलाफ कोई ठोस सबूत पेश कर सकती हैं?"

उठी सोफिया!

हल्के गुलाबी रंग के खूबसूरत जिस्म पर सफेद साड़ी और काले रंग का चौगा।

"यस, मीलार्ड...!" मानो उपवन में कोई कोकिला ही कुहुकी हो, "मैं अदालत में ऐसा ठोस सबूत पेश करने जा रही हूं—जो कि नागराज उर्फ यमराज को मुजरिम और माफिया डॉन साबित कर देगा।"

चौंका यमराज और बौखलाकर उदयराज की तरफ यूं ही देखने लगा कि मानो उससे पूछ रहा हो कि सोफिया के पास उसके खिलाफ सबूत कहां से आ गये?"



"मीलार्ड...!" खाकी रंग का एक बड़ा लिफाफा जज साहब तक पहुंचाने पर बोली सोफिया—"इस लिफाफे में वो सब सबूत हैं—जो साबित कर देंगे कि नागराज सिंह उर्फ यमराज माफिया डॉन है और ये अब तक कई संगीन जुर्म कर चुका है।"

जज साहब ने लिफाफे को खोलकर उसमें से दो फाइलें निकालीं और उनको खोलकर देखने लगा।

बौखलाये यमराज ने अपने वकील उदयराज को भस्म कर देने वाली नजरों से देखा, लेकिन उदयराज उसकी तरफ ना देखकर सोफिया को देख रहा था।

"मिसेज पण्डित...!" बोले जज साहब—"पुलिस तो कोई भी सबूत पेश नहीं कर पाई थी। फिर आपको ये सब कहां से और कैसे मिले?"

मुस्कराते हुये सोफिया अपनी मेज तक पहुंची तो केशव ने उसे एक मिनी टेपरिकॉर्डर थमा दिया।

"मीलार्ड...!" जज साहब की तरफ घूमकर बोलीं सोफिया—"कृपया करके आप इस टेप को सुनने का कष्ट करें।"

फिर उसने टेप रिकॉर्डर का प्ले वाला बटन दबा दिया...खट्!

"आओ, उदयराज!" वो आवाज यमराज की थी, "मैं

काफी देर से तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था।"

"क्या कोई जरूरी काम था यमराज जी?" वो आवाज एडवोकेट उदयराज की ही थी।

कठघरे में खड़े यमराज और अपनी कुर्सी पर बैठे उदयराज की आंखें सिकुड़ चलीं।

"तुम्हें एक जरूरी काम के लिये बुलवाया है भई उदयराज।"

"हुक्म कीजिये यमराज जी।"

"मैंने तुम्हें पहले भी बतलाया कि माफिया का ये नियम है कि संगठन में काम करने वाले हरेक आदमी का पूरा रिकॉर्ड रखती है। माफिया ज्वाइन करने वाले को एक प्रमाण-पत्र भी दिया जाता है जिससे ये साबित होता है कि वो माफिया के लिये काम करता है और उसका ओहदा क्या है। इसी के साथ फाइल भी बनती है। मेरी भी फाइल है। जिसमें मेरे तमाम कारनामों का ब्यौरा है। दूसरी फाइल में मेरे अन्डर में काम करने वाले तमाम लोगों के फोटो के साथ नाम और पते के साथ उनके पूरे ब्यौरे दर्ज हैं। उसी फाइल में इस बात का भी रिकॉर्ड है कि मेरे पास नम्बर दो के माल का कितना स्टॉक है। वो माल किस रेट आया और किस रेट बिका। कितना बिजनेस हुआ और कितनी कमाई हुई। सारा हिसाब न्यूयार्क भेजा जाता है और कमाई का हिस्सा भी न्यूयार्क हवाला के जरिये भेजा जाता है। और भी कई कागजात हैं, जिनमें मेरे बारे में बहुत-सी जानकारियां हैं तमाम जानकारियां, दो फाइलों में हैं।"

"वो फाइलें तो हैडक्वार्टर के साथ नष्ट हो गईं...।"

"नहीं, वो फाइलें मैंने हैडक्वार्टर पर नहीं रखी थीं।"

"तो फिर?"

"राजस्थान के जिला जैसलमेर में रामगढ़ गांव में मेरी पुश्तैनी हवेली है। हवेली के भीतर चौक में बरगद का एक पेड़ है। उस पेड़ के नीचे काले रंग का पत्थर है। उस पत्थर के नीचे खुदाई करने पर तुम्हें लकड़ी का एक बक्सा मिलेगा। उसी में वो दोनों फाइलें हैं। हालांकि उम्मीद तो नहीं, लेकिन सोफिया पण्डित केशव पण्डित की बीवी है। भले ही केशव की आवाज

चली गई हो—लेकिन उसका दिमाग तो ठीक है। वो किसी जुगाड़ से उस बक्से तक पहुंच गया तो अपना डिब्बा गोल हो जायेगा। तुम जाओ और उस डिब्बे को जलाकर उन फाइलों को नष्ट कर दो।"

"ले...लेकिन!"

"लेकिन क्या?"

"आज मेरे बेटे का बर्थडे है यमराज जी।"

"कोई बात नहीं। बेटे का बर्थडे मनाकर जैसलमेर के वास्ते निकल जाना।"

"ठीक है। अच्छा, अब मुझे इजाजत दीजिये।"

"खट...!"

सोफिया ने टेप रिकॉर्डर बन्द किया और बुलन्द आवाज में बोली, "मैंने यमराज की कोठरी में इस टेप रिकॉर्डर को जेलर साहब की मदद से तब रखवा दिया था, जब एडवोकेट साहब यमराज से मिलने गये थे। इन दोनों के बीच हुये वार्तालाप को टेप ने रिकॉर्ड कर लिया था। एडवोकेट साहब अपने बेटे का बर्थडे मनाते रहे और मैं जैसलमेर पहुंच गई थी। उस बक्से को निकालकर उसमें से दोनों फाइलें निकाल ली थीं और दो नकली फाइलें रखकर बक्से को उसी जगह पर दबा दिया था। एडवोकेट साहब वहां गये और इन्होंने उस डिब्बे पर पैट्रोल छिड़ककर आग लगा दी थी। ये नहीं जानते थे कि फाइले मेरे पास पहुंच चुकी हैं। अब वो फाइलें आपके पास हैं मीलॉर्ड! इन फाइलों में यमराज के खिलाफ ठोस सबूत हैं। आप यमराज के कारनामों को पढ़कर स्वयं ही निर्णय कर लीजिये कि यमराज को क्या सजा मिलनी चाहिये?"

□□□
□□□

फांसी की सजा सुनकर यमराज अदालत से बाहर निकला तो मुस्कराते हुये केशव ने उसका रास्ता रोक लिया।

पुलिसवालों से घिरे यमराज की आंखों में खून-सा उतर आया और वो जख्मी नाग की मानिन्द ही फुंफकारकर बो[illegible] [illegible]निया का कोई कानून यमराज को फांसी पर नहीं चढ़ा

सकता ओये गूंगे...ना ही कोई जेल मुझे ज्यादा दिनों तक कैद करके रख सकती है। मौका मिलते ही फरार हो जाऊंगा मैं। समझ में नहीं आ रहा है कि तू इतना मुस्करा क्यों रहा है?"

"तेरी हालत पर।"

"तू...तू...!" यमराज चिहुंककर बोला, "तू तो बोल रहा है। क्या तेरी आवाज लौट आई?"

केशव ने गले पर बन्धी पट्टी खोलकर यमराज के गले में डाल दी और फिर बोला—"मेरी आवाज गायब ही कब हुई थी?"

"क...क्या मतलब?"

"मतलब ये कि मेरे गले पर चोट जरूर लगी थी—लेकिन आवाज नहीं गई थी। मैंने गूंगा होने का ड्रामा ही किया था।"

"ले...लेकिन क्यों?"

"क्योंकि...!" केशव यमराज की 'भूल-भुलैया' बनी आंखों में झांकते हुये बोला, "अगर मैं आवाज चले जाने का ड्रामा नहीं करता तो मेरी धर्मपत्नी तेरे खिलाफ पैरवी करने को तैयार नहीं होती।"

"तो क्या हो जाता? अगर वो तैयार नहीं होती तो तू मेरे खिलाफ पैरवी कर...।"

"मुझे नहीं करनी थी ना।"

"क्यों?"

मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला, फिर बोला, "हालांकि सोफिया सरकारी वकील है। लेकिन उसे अभी कानून की ज्यादा नॉलेज नहीं है। वो सरकार या अदालत की तरफ से छोटे-मोटे केसेज की ही पैरवी करती रही है। उसने कोई बड़ा मुकदमा नहीं लड़ा।"

"तो क्या हुआ?" झल्लाकर बोला यमराज।

"तुझे तेरी औकात बतानी थी ना।"

"क्या मतलब?"

"तू खुद को जुर्म का बहुत बड़ा खिलाड़ी समझता था। उदयराज को हायर करके ये सोच रहा था कि वो तुझे निर्दोष साबित कर देगा। लेकिन एक औरत ने तेरा खेल बिगाड़ दिया।

कानून की इस लड़ाई में मैंने तुझे एक औरत के जरिये मात दिलवाई है। औरत भी ऐसी कि...जिसे कानून की खास नॉलेज नहीं है। उसका अच्छे वकीलों में शुमार नहीं होता। महाभारत में श्री कृष्ण ने भीष्म पितामह को खत्म करने के लिये शिखंडी का इस्तेमाल किया था। लेकिन मैंने जुर्म के पितामह को एक औरत के हाथों धूल चटवा दी है।"

"ओह...ओह...समझा...।" हथकड़ियां लगे हाथों की मुट्ठियां भींचकर यमराज फुंफकारा, "अब समझा कि तूने मेरे साथ कौन-सा खेल खेला। लोग यही कहेंगे कि यमराज को एक ऐसी औरत ने सजा दिलवाई—जो कि नामचारे को ही वकील है।"

मुस्कराया केशव और फिर पुलिसवालों से बोला—"इसे ले जाओ—वरना ये पागल हो सकता है।"

पुलिसवाले यमराज को पकड़कर ले जाने लगे तो वह जोर लगाकर उनसे छूटा और पलटकर बरसाती बादल की मानिन्द ही गरजकर बोला, "एक औरत के जरिये मुझे मात देकर तू खुश हो रहा है पण्डित। मैंने मन-ही-मन ये तय किया था कि जेल से फरार होने पर तुझसे इन्तकाम लूंगा—अपने हाथों से तुझे बुरी मौत दूंगा। लेकिन नहीं...अब नहीं...कतई नहीं! अब यमराज तुझे टच भी नहीं करेगा। मैं कसम खाता हूं कि कोई औरत ही एक दिन तुझे अदालत में कातिल साबित करके फांसी की सजा दिलायेगी।"

"तू पागल हो गया है।"

"हां, मैं पागल हो गया हूं केशव पण्डित! मैं ये प्रतिज्ञा कर रहा हूं, सौगन्ध खा रहा हूं कि किसी औरतजात से ही तुझे कातिल साबित कराऊंगा और उस कानून से तुझे सजा दिलवाऊंगा, जिसकी कि तू पूजा करता है।"

"कोई भी औरत तेरा ये काम करने के लिये राजी नहीं होगी यमराज! क्योंकि सभी जानते हैं कि केशव कभी भी जुर्म नहीं कर सकता और केशव को अदालत में कातिल साबित करना मुमकिन ही नहीं है।"

"मैं जेल से फरार होने पर अपनी ताकत बढ़ाऊंगा।

दुनिया का सबसे शक्तिशाली मुजरिम बनूंगा। इतनी दौलत कमाऊंगा कि दुनिया का सबसे अमीर आदमी बन जाऊंगा मैं। दुनिया की औरतें मुझसे शादी करने के लिये तड़पेंगी—मरी जायेंगी। लेकिन मेरी यही शर्त होगी कि जो कोई भी केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित करेगी—वो ही मेरी बीवी बनेगी। मेरी बीवी बनने के लालच में ही कोई औरत तुझे मुजरिम साबित करके फांसी पर चढ़वायेगी...मेरी बात को मजाक में मत लेना पण्डित। एक दिन ऐसा जरूर आयेगा कि कोई औरत तुझे मुजरिम साबित करेगी।"





"इन्ट्रेस्टिंग...वैरी इन्ट्रेस्टिंग! तुम्हारा अतीत बहुत ही दिलचस्प है डियर।"

मोनिका की आवाज कानों में पड़ने पर यमराज अतीत की गोद में उतरकर वर्तमान की बाहों में आ गया।

एक सिगरट सुलगा ली उसने और कश लगाकर कसैले धुएं को फेफड़ों में पहुंचा, उसकी तमाम गलियों की सैर कराने पर नथुनों के रास्ते बाहर को चलता कर दिया।

"तुम्हें मेरा अतीत दिलचस्प लगा है मोनिका डार्लिंग—जबकि मैं उसे याद करता हूं तो खून खौलने लगता है...दिमाग में आतिशबाजी होने लगती है।" बुरा-सा मुंह बनाकर ही बोल रहा था यमराज, "छोटे भाई विजयराज और उसकी बीवी सारिका की याद करके आत्मा खून के आंसू रोने लगती है। विजयराज का साला मनमोहन भी मारा गया था। इन बातों को बारह-तेरह साल हो चुके हैं और मेरा दुश्मन केशव पण्डित अभी तक जिन्दा है और अब तो काफी नाम कमा चुका है। कितनी शर्म की बात है कि माफिया किंग का दुश्मन इतने सालों तक जिन्दा रहा है। कभी-कभी तो पछताता हूं कि ताव में आकर वो प्रतिज्ञा क्यों कर बैठा था मैं? अगर वो प्रतिज्ञा नहीं करता तो आज केशव पण्डित जीवित नहीं होता। उसको बुरी मौत मार चुका होता। लेकिन...क्या किया जाये? इतने साल हो गये लेकिन कोई भी औरत मेरी शर्त को पूरी नहीं कर पाई।"

"वो शर्त मैं पूरी करूंगी डार्लिंग।"

"तुम...?"

"हां...मैं...!"

हंसा यमराज, फिर बोला—"चींटी पहाड़ पर चढ़ने का दावा करे तो उस पर यकीन किया जा सकता है मोनिका! लेकिन वो फूंक मारकर किसी पत्थर को उड़ाने की बात करे तो उसकी नादानी पर हंसी आयेगी। केशव पण्डित को जानती नहीं हो। मैंने जो बातें तुम्हें बतलाईं...वो काफी पुरानी हैं। तब तो पण्डित ने अपने कैरियर की शुरूआत ही की थी। कानून की दुनिया का नया-नया खिलाड़ी था वो। आज की तारीख में तो काफी खतरनाक हो चुका है वो। ना सिर्फ अदालत का, बल्कि मैदान का भी बड़ा खिलाड़ी बन चुका है। अकेला और निहत्था ही वो हथियारबन्द सेना पर भारी पड़ जाता है। उसके दिमाग की धार भी बहुत तेज हो चुकी है। दिमाग का कम्प्यूटर भी कहा जा सकता है उसे। वैसे भी उसका बेटा अब चौदह-पन्द्रह साल का हो चुका है और वो भी केशव पण्डित की तरह खतरनाक है और दिमाग का चैम्पियन कहलाता है। केशव के साथ राजन शुक्ला और करतार सिंह नाम के दो असिस्टेंट भी हैं—वो भी काफी खतरनाक हैं यानि केशव के पास सॉलिड टीम है।"

"कुछ भी हो! लेकिन मैं भी मजाक नहीं कर रही हूं।" आत्मविश्वास से भरी हुई बोली मोनिका, "माना कि केशव पण्डित जीनियस है, माइन्डेड है—लेकिन वो भी ये दावा नहीं कर सकता कि दुनिया में उसके पास ही सबसे बढ़िया दिमाग है। वैसे भी कहावत है कि तैराक ही पानी में डूबकर मरता है—क्योंकि जो तैरना नहीं जानता, वो पानी में उतरता ही नहीं। समुद्र में रहने वाली मछली को उससे बड़ी मछली निगल जाती है। लोहे को लोहा ही काटता है। बहुत-सी बार तो खिलाड़ी की हार अनाड़ी के हाथों हो जाती है। महाभारत पढ़ी है मैंने। भीष्म पितामह की मौत का कारण शिखंडी बना था। मैं इन्डिया जाऊंगी और तुम्हारी शर्त पूरी करके तुम्हारी बीवी बनूंगी।"

"नहीं, तुम इन्डिया नहीं जाओगी। मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता।"

"लेकिन...!"

"बस...!" यमराज हाथ उठाकर सख्त लहजे में बोला—"एक बार बोल दिया तो बोल दिया!"

मोनिका कसमसाकर रह गई।

उसने सिगरेट सुलगा ली और कश मारकर धुऐं के साथ मानो कसमसाहट को भी बाहर निकालने लगा।

फिर उसने अपना मूड चेंज किया और बिल्कुल सामान्य भाव से बोली—"कुछ सवाल मेरे दिमाग में उथल-पुथल मचा रहे हैं। जब इतनी बातें बतला दी हैं तो ये भी बतला दो कि तुम फांसी की सजा से कैसे बचे थे? इतनी जल्दी माफिया किंग की कुर्सी तक कैसे पहुंच गये और तुम दुनिया के सबसे अमीर आदमी कैसे बन गये? मेरा मतलब कि तुम्हारे पास वो खजाना कहां से और कैसे आया?"

❑❑❑

❑❑❑

"इसका मतलब ये कि मम्मी जी पब्लिक-प्रोसीक्यूटर यानि सरकारी वकील भी रही हैं...।" बेड पर औंधा लेटा आशीर्वाद चने के दाने चबाते हुये बोला, "तो फिर मम्मी जी ने उस जॉब को छोड़ क्यों दिया था? वकालत क्यों छोड़ दी थी?"

"तुम्हारी वजह से।"

"मे...मेरी वजह से ? क्या मतलब?"

"मतलब ये बेटे...!" यमराज से सम्बन्धित अतीत के सन्दर्भ में बतला चुका केशव बोला, "तुम बहुत छोटे थे। तुम्हारे लिये गवर्नेस भी रखी गई—लेकिन वो जिम्मेदारी से काम नहीं कर पाई। फिर तम्हारी एजुकेशन का भी सवाल था। सोफी ने यही निर्णय लिया था कि वो वकालत छोड़कर तुम्हारी परवरिश पर ही ध्यान देगी और गृहस्थी सम्भालेगी। शॉर्ट पीरियड के लिये ही सोफिया ने वकालत की थी।"

"बहू का वो डिसीजन एकदम ठीक ही था बेटा...!" कमरे में अपनी बेटी माधवी के साथ मौजूद रमाकान्त बोला—"नौकरों

के दम पर बच्चों की परवरिश नहीं होती। बहू ने बहुत ही सलीके और जिम्मेदारी से गृहस्थी की जिम्मेदारी निभाई।"

कमरे में मौजूद सोफिया मुस्करा भर दी।

कमरे में अपनी धर्मपत्नी चांदनी के साथ राजन भी मौजूद था। इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे भी अपनी प्रेमिका सलमा के साथ मौजूद था।

करतार सिंह भी था।

नर्सिंग होम का सर्विस ब्वाय सभी के लिये कॉफी ले आया।

आशीर्वाद ने मग बेड के बिस्तर पर रखा और औंधे लेटे-लेटे ही कॉफी सिप करने लगा।

"नमस्कार, पण्डित जी!"

तभी कमरे के भीतर विपक्षी पार्टी के नेता दशरथ सिंह का पदार्पण हुआ।

केशव समेत सभी ने उसका अभिवादन किया और राजन ने उसके लिये कुर्सी छोड़ दी—साथ ही आग्रह करके अपने हिस्से की कॉफी भी दे दी।

दशरथ सिंह ने कॉफी सिप की और आशीर्वाद से सम्बोधित होकर बोला—"अब तुम्हारी तबियत कैसी है बेटा?"

"ठीक हूं अंकल जी! भागा-दौड़ी कर सकता हूं—लेकिन डैडी जी और मम्मी जी बिस्तर से उठने भी नहीं देते।"

"ओये सूंड वाले शेर...।" अलफांसे तपाक से बोला, "तुझे कोई कंकर नहीं लगी थी। बम की चपेट में आया था तू। तेरी जगह कोई और होता तो यमलोक में झाड़ू की सींक से क्रिकेट खेल रहा होता। जब तेरे जख्म ठीक हो जायेंगे तो फिर कैंचुअे की तरह उछाले भर-भरकर दौड़ लगाना। मना किसने किया है?"

"पण्डित जी...!" दशरथ सिंह यकायक ही उदास व गम्भीर होकर बोला, "रात को ख्वाब में मेरी बच्ची सुरभि आई, बोली कि...मेरी इज्जत लूटने वाले और कत्ल करने वाले उस दुष्ट मुकेश को फांसी पर जरूर चढ़वाना पापा जी। ख्वाब के तुरन्त बाद ही नींद उचट गई और फिर जागकर ही बाकी की

रात गुजारी। काफी बेचैनी रही। पहले आपके घर गया था। नौकर ने बतलाया कि आप यहां पर हैं तो यहां चला आया। आपकी योग्यता पर मैं तो क्या...कोई भी शक नहीं कर सकता। फिर भी एक अभागा पिता होने के नाते हाथ जोड़कर रिक्वेस्ट करता हूं कि उस कमीने मुकेश को फांसी पर चढ़वाना।"

केशव उसके जुड़े हुये हाथों को अलग करके शालीनता से बोला—"आप निश्चिंत रहिये नेता जी। मुकेश को अपने कुकर्मों की सजा भुगतनी ही होगी।"

"ले...लेकिन...उसकी पैरवी पारस जैन कर रहा है।"

"अजी पारस जैन करे, चाहे माइकल चैन करे—अपने केशव के सामने उसके तोते उड़ जायेंगे।" केशव के बदले अलफांसे ने जवाब दिया, "मैं जानता हूं कि वो पारस जैन गिलहरी की तरह घाघ और चालाक है—लेकिन केशव के सामने पड़ते ही वो पंख फड़फड़ाने भूल जायेगा। हजार वकील भी मिलकर मुकेश को नहीं बचा पायेंगे। कल अदालत में आप देखना कि अपना केशव क्या करता है!"

❑❑❑
❑❑❑

वस्त्रविहीन यमराज ने वस्त्रविहीन मोनिका को खींचकर अपने ऊपर लिटा लिया और उसके गुलाबी व रसीले होठों को चूमने पर बोला—"दूसरे माफिया डॉनों तक मेरा मैसेज पहुंच गया था। उन लोगों ने जेल पर हमला बोलकर बमों से जेल की दीवार तोड़ दी थी। बमों के साथ अन्धाधुंध फायरिंग बरसाकर जेल के कर्मचारियों को मार दिया था। जो बचे थे, वो जान बचाने को इधर-उधर छिप गये थे। मैं जेल से फरार हो गया था और फिर अमेरिका चला आया था।"

"तुम इस मुकाम तक कैसे पहुंचे?"

"एक कार की ट्रक से भिड़न्त हो गई थी। कार का ड्राइवर और चार गार्डस् रूपी आदमी तो हाथों-हाथ ही मारे जा चुके थे। एक अधेड़ जीवित था, लेकिन वो बुरी तरह जख्मी था। उसे पहचानकर चौंक गया था मैं। जानती हो कि वो कौन था?"

"कौन था?"

"गॉड फादर।"

"गॉड फादर?"

"माफिया किंग रोज डायर्स। उसको हर कोई गॉड फादर कहता था। मैं रोज डायर्स को तुरन्त ही हॉस्पिटल ले गया था। भाग्य भी मेरा साथ दे रहा था। रोज डायर्स को खून की जरूरत थी और मेरा भी ब्लड ग्रुप वो ही था। पूरी दस बोतल उसको चढ़वा दी थीं।"

"दस बोतल?" मोनिका सिसकारी-सी भरकर बोली—"बाप रे...!"

"तुम तो हैरत में पड़ रही हो जानेमन।" यमराज हाथी के कान जैसी लम्बी-चौड़ी हथेली मोनिका की पीठ पर फेरते हुये बोला—"बहुत खून है इस जिस्म में। दस बोतल देने पर भी कोई कमजोरी महसूस नहीं की थी मैंने।"

"रोज डायर्स तो तुम्हारा अहसानमन्द हो गया होगा।"

"बिल्कुल, इसमें भला शक वाली क्या बात है? उसे जब से पता चला कि मैं माफिया का ही मेम्बर हूं तो उसकी खुशी बढ़ गई थी। वो मुझ पर मेहरबान था ही। उसने तुरन्त ही मुझे अपना बॉडीगार्ड बना लिया था और मेरी एन्ट्री माफिया के हैडक्वार्टर में हो गई थी। बहुत जल्द ही अपनी काबिलियत के दम पर मैंने रोज डायर्स का दिल जीत लिया था और नम्बर टू की पोजीशन पर पहुंच गया था। ऐसा पहली बार हुआ था कि नम्बर टू पर दो लोग एक साथ पहुंचे थे।"

"दूसरा कौन था?"

"माइकल! वो रोज डायर्स का रिश्तेदार भी था और मुझसे सीनियर था। लेकिन मैंने अपनी काबिलियत से नम्बर टू की पोजीशन हासिल कर ली थी।"

"फिर तो प्रॉब्लम खड़ी हो गई होगी। क्योंकि नम्बर टू माफिया किंग का वारिस होता है। माफिया किंग के मरने या पद छोड़ने पर उसी को माफिया किंग बनाया जाता है। जबकि नम्बर टू की पोजीशन पर तुम और माइकल यानि दो लोग थे।"

"इसका उपाय भी रोज डायर्स ने निकाल लिया था।"

"भला वो कैसे...?"

"रिचर्ड नाम का एक पुरातत्व विभाग का अधिकारी अमेरिका सरकार की तरफ से अपनी टीम के साथ अफ्रीका गया था। रिचर्ड को एक पुरानी सभ्यता की खोज करनी थी—जो कि सातवीं सदी में आये भूकम्प में नष्ट हो गई थी। अफ्रीका के जंगलों में रिचर्ड ने जमीन की खुदाई करवाई तो एक प्राचीन शहर के अवशेष मिले थे। वहां एक टूटा-फूटा मन्दिर भी मिला था, जिसमें अकूत खजाना भी मिला था। खजाने को देख रिचर्ड की नीयत में खोट आ गया था। उसने अपनी टीम के तमाम लोगों को खाने में जहर देकर मार डाला था और खजाने को जंगल में ही दफनाकर वहां का नक्शा बना लिया था। अमेरिका वापस लौटकर उसने सरकार को ये रिपोर्ट दी थी कि अफ्रीकी आदिवासियों ने उसकी टीम को पकड़कर और आग में भूनकर खा लिया था—लेकिन वो किसी तरह बचकर आ गया था। रिचर्ड का इरादा बाद में जाकर किश्तों में उस खजाने को लेकर आने का था, लेकिन लकवा मार गया था उसे। मरते वक्त उसने अपने बेटे ब्राउन को उस खजाने के बारे में बतलाया था और उसे नक्शा भी दिया था। लेकिन ब्राउन में अफ्रीका जाकर खजाना लाने की हिम्मत नहीं थी। वो माफिया के लिये काम करता था। उसने खजाने का दस फीसदी हिस्सा लेने की शर्त पर अपने बाप रिचर्ड का बनाया नक्शा रोज डायर्स को दे दिया था। लेकिन बदकिस्मती से अगले ही दिन वो एक्सीडेन्ट में मारा गया था।"

"हाऊ सैड...बेचारा!"

रोज डायर्स ने मुझे और माइकल को उस खजाने के बारे में बतलाया था और ये राज भी खोला था कि उसे ब्लड कैंसर है, वो ज्यादा-से-ज्यादा तीन महीने तक ही जिन्दा रह पायेगा। रोज डायर्स ने हम दोनों से कहा था कि हम दोनों अलग-अलग टीम लेकर और अलग-अलग रास्ते से अफ्रीका जायेंगे। हम दोनों के पास ही नक्शे की कॉपी होगी। हम दोनों में से जो भी खजाना ला पाने में कामयाब होगा, वो ही उसकी कुर्सी पर बैठेगा—यानि खजाना लाने वाले की ही माफिया किंग के रूप में ताजपोशी होगी।"

"वैरी इन्ट्रेस्टिंग...!" यमराज के चौड़े सीने पर उगे लम्बे व घने बालों के गुच्छों से खेलते हुये बोली मोनिका, "वो खजाना लाने में तुम कामयाब हुये थे और माफिया किंग बन गये।"

"नहीं! ऐसा नहीं हुआ था। खजाना तो माइकल ने ही हासिल किया था।"

□□□

□□□

"मेरे ख्याल से आपको बाहर नहीं जाना चाहिये।" तेज बुखार में तप रही परवीन बोली, "असलम जीजू आ जायेंगे तो वो डॉक्टर को ले आयेंगे।"

"परवीन ठीक बोल रही है दुल्हा भाई...।" रेहाना भी बोली, जिसके घर में वो दोनों मेहमान के रूप में ठहरे हुये थे।

लेकिन रियाजुद्दीन उर्फ राजू ने इशारों से समझाया कि परवीन को तेज बुखार है, इसलिये डॉक्टर को फौरन ही बुलाकर लाना जरूरी है।

फिर राजू घर से निकला और डॉक्टर के क्लीनिक की तरफ चल दिया।

पीछे की तरफ से एक काले रंग की वैन आई।

उसका दरवाजा खुला और एक काली पोशाक तथा काली नकाब वाला बाहर निकला—जिसके हाथ में पिस्टल थी।

राजू ने उसे देखा।

वह पलटकर भागा, लेकिन!

धांय...धांय...!

दो धमाके हुये और दो गोलियां उसकी पीठ में पेवस्त हो गईं।

वह चीखकर सड़क पर गिरा और बुरी तरह तड़पने लगा।

नकाबपोश ने दो ही फायर किये थे कि सामने से सायरन बजाती पुलिस की जीप आ पहुंची। नकाबपोश तुरन्त ही वैन में जा घुसा।

ड्राइवर ने फुर्ती के साथ वैन को राउन्ड दिलाया और फिर वैन को धनुष से छुटे तीर की मानिन्द ही दौड़ा दिया।

□□□

□□□

"ये...ये क्या कह रहे हो तुम डियर?" मोनिका गहन आश्चर्य में पड़ी हुई बोली, "अगर उस खजाने को माइकल ने हासिल किया था तो फिर तो उसी को माफिया किंग बनना चाहिये था और उस खजाने का मालिक भी वो ही होना चाहिये। तुम तो मुस्करा रहे हो। जबकि मेरी कौतूहलता बढ़ी जा रही है। प्लीज, बताओ ना...क्या खेल खेला था तुमने...ऊं...ऊं...ऊं...।"

यमराज ने मोटे व स्याह होठों के शिकंजे में मोनिका के होठ जकड़ लिये और दस सेकेंड तक उनका रसास्वादन करने पर ही छोड़ा।

मोनिका की सांसें फूल चलीं और सीने पर बैठे विशालकाय सफेद कपोत उठने-गिरने लगे।

आंखों में वासना के सुर्ख रंग के कीड़े गिजगिजाने लगे।

लेकिन उसने स्वयं को नियन्त्रित किया और बोली—"प्लीज, बतलाओ ना डार्लिंग।"

"मैंने और माइकल ने हथियारबन्द लोग और खुदाई का सामान लेने पर अलग-अलग मोटरबोट और अलग-अलग रास्ते से सफर किया था। लेकिन मैं अफ्रीका पहुंचने पर अपनी टीम के साथ एक होटल में ठहर गया था। जबकि माइकल अपनी टीम के साथ खजाना हासिल करने को जंगल की तरफ कूच कर गया था।"

"तुम क्यों नहीं गये थे?"

"क्योंकि ये मेरे प्लान का हिस्सा था।"

"प्लान? क्या मतलब?"

"खजाने तक पहुंचकर उसे हासिल करना और फिर वापिस लौटना...बहुत ही जोखिम भरा काम था। बहुत ही खतरनाक जंगल था। गहरी खाइयां, पहाड़ी नदियां, दलदल, अजगर, एनाकोन्डा, जहरीले सांप, मकड़ियां, बिच्छू और जंगली जानवरों के साथ आदमखोर कबीलों की बस्तियां! मैंने माइकल

की टीम के एक आदमी मोन्टी को लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया था और उसे एक ट्रांसमीटर भी दे दिया था, जिसके जरिये हम दोनों के बीच बातें हो रही थीं। मुझे पता चल रहा था कि विक्टर की टीम कहां है और क्या कर रही है।"

"बहुत चालू हो तुम।"

"इसमें भला क्या शक है डार्लिंग! वो तो मैं हूं ही...तभी तो आज कामयाबी के सिंहासन पर बैठा हुआ हूं। खैर, माइकल खजाना हासिल करने में कामयाब हो गया था और वो वापिस लौट रहा था। मैंने उसे और उसके साथियों को मार दिया था। यहां तक कि मोन्टी को भी मार दिया था। खजाना हासिल करने पर मैंने अपनी टीम के लोगों को वायदे के अनुसार खजाने में से थोड़ा-थोड़ा हिस्सा सभी को दे दिया था। फिर अमेरिका लौट आया था।"

"क्या रोज डायर्स ने माइकल और उसकी टीम के बारे में नहीं पूछा था?"

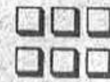
"मुझसे क्या पूछता? हम दोनों की टीमें तो अलग-अलग गई थीं। कई दिनों के इन्तजार के बाद भी जब माइकल और उसकी टीम वापिस ना लौटी तो रोज डायर्स ने ये समझ लिया था कि माइकल और उसके साथी अफ्रीका के जंगल में ही मर-खप गये होंगे। कुछ दिनों बाद ही रोज डायर्स मर गया था और मैं माफिया किंग बन गया था।"

"मानना पड़ेगा कि तुम बहुत चालाक हो। खैर अब अपनी प्रतिज्ञा और शादी के बारे में सोचो। अगर शादी नहीं होगी तो तुम्हारा वंश चलाने वाला कहां से आयेगा? मैं अपने भाई ज्वैल के साथ हिन्दुस्तान चली जाना चाहती हूं। यकीन करो...मैं तुम्हारी शर्त पूरी करके ही वापिस लौटूंगी।"

"नहीं...मना किया है मैंने!"

"नहीं, मैं जाऊंगी।"

"जाकर देखो...!" यमराज उसकी सुराहीदार गर्दन को हौले से पकड़कर बोला—"तुम्हें और ज्वैल को हिन्दुस्तान में ही जान से मरवा दूंगा।"



अधेड़ उम्र का पारस जैन!

कुल पांच फुट दो इंच लम्बा और जिस्म भी काफी पतला। खूब गोरा-चिट्टा और क्लीन शेव्ड चेहरे वाला, जिसके सिर के बाल एकदम सफेद थे, लेकिन उसने उन्हें मेहन्दी से रंगकर लाल किया हुआ था।

उसकी छोटी-छोटी व बिल्लौरी रंग की आंखें देखकर ही लगता था कि वो घाघ और काईयां किस्म का बन्दा था।

उन्हीं बिल्लौरी आंखों में कामयाबी की चमक लिये हुये वो पूरे जोश-ओ-खरोश में बोले जा रहा था—"मेरे मुवक्किल मिस्टर मुकेश सेठ कोई लम्पट या आवारा किस्म के नहीं हैं। ये एक इज्जतदार परिवार से ताल्लुक रखते हैं। इनके पिता बलवन्त सेठ जी वर्तमान में सत्ताधारी पार्टी के सांसद हैं। स्वयं मिस्टर मुकेश सेठ सत्ताधारी पार्टी के युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष हैं। ये बात दूसरी है कि जब इन पर बलात्कार और कत्ल का इल्जाम लगा तो पार्टी ने इन्हें निलम्बित कर दिया। इनके पिता ने भी अपने भोलेपन में इनसे ताल्लुक खत्म कर लिये। मिस्टर मुकेश सेठ एक खूबसूरत बीवी के पति और तीन वर्षीय बेटे के पिता हैं। इनसे ऐसी उम्मीद भी नहीं की जा सकती कि ये किसी लड़की को गुन्डों की तरह किडनेप करके किसी कब्रिस्तान में ले जायेंगे। उसके साथ बलात्कार करेंगे और फिर उसका कत्ल कर देंगे।"

अपनी जुबान को रेस्ट देकर पारस जैन ने पलटकर सोफिया, राजन, करतार सिंह और राजीव अरोड़ा के साथ बैठे केशव को देखा और यूं ही मुस्कराया कि मानो कहना चाह रहा हो कि तुम्हें शिकस्त का नमक चखाकर रहूंगा केशव पण्डित।

प्रत्युत्तर में केशव ने मुस्कराते हुये पारस जैन को यूं देखा कि मानो कह रहा हो—"जा बे! बहुत देखे हैं तेरे जैसे शेखचिल्ली।"

पारस जैन थोड़ा सकपकाकर जज साहब की तरफ पलट गया और केशव से खुन्दक खाये हुये बोला—"ये सब पॉलटिक्स

स्टंट है योर ऑनर! चूंकि मिस्टर मुकेश सेठ राजनीति में तरक्की करते जा रहे थे और आगामी चुनाव में विधायक का इलेक्शन लड़ने की तैयारियां कर रहे थे—इनका राजनैतिक करियर चौपट करने को ही इन पर झूठा-झूठा इल्जाम लगाया गया है। रियाजुद्दीन उर्फ राजू नाम का एक झूठा गवाह पैदा किया गया। लेकिन जब मैंने मिस्टर मुकेश सेठ का डिफेंस करने का ऐलान किया तो दुश्मनों को लगा कि मैं अदालत में राजू को झूठा साबित कर दूंगा तो उसको कत्ल कर दिया गया और उसके कत्ल का इल्जाम भी मिस्टर मुकेश सेठ पर थोपा जा रहा है। लेकिन कहावत है कि सच्चे आदमी का कोई साथ दे या ना दे—लेकिन भगवान जरूर देता है। डॉक्टर और एक्सपर्ट की रिपोर्ट अदालत के पास मौजूद है। डॉक्टर के मुताबिक मिस सुरभि को बलात्कार करने वाले का सीमेन या ब्लड ग्रुप ओनिगेटिव था जबकि मिस्टरण मुकेश गुप्ता का ब्लड ग्रुप ए पोज़ेटिव है यानि इनका सीमेन ग्रुप ए पोजेटिव ही है। रिपोर्ट ही साबित कर देती है कि मिस्टर मुकेश सेठ बलात्कारी या कातिल नहीं हैं। एक्सपर्ट की रिपोर्ट के मुताबिक भी कब्रिस्तान में या कब्रिस्तान के बाहर मिले दस नम्बर के जूतों की कम्पनी भले ही एक्शन की हो, लेकिन फुटमार्क्स मिस्टर मुकेश सेठ के जूतों से मैच नहीं करते। ना ही टायरों के मार्क्स ही इनकी गाड़ी से मैच करते हैं। घटनास्थल पर जो सिगरेट का टोंटा मिला, उस पर मेरे मुवक्किल के फिंगर प्रिंट्स नहीं हैं।"

दस सेकेन्ड का शॉर्ट ब्रेक लेने पर पारस जैन पुनः बोला—"सो योर ऑनर! ये बात साबित हो जाती है कि मिस्टर मुकेश सेठ एकदम निर्दोष हैं। मिस सुरभि के साथ बलात्कार किसने किया और किसने उसका कत्ल किया, ये तो भगवान ही जाने। पुलिस ने उसे पकड़ा ही नहीं। या फिर राजनैतिक दबाव के चलते वास्तविक मुजरिम को बचाते हुये मेरे निर्दोष मुवक्किल को फंसाने की कुचेष्टा की गई। मैं मिस्टर मुकेश सेठ की तरफ से अदालत से इन्साफ की गुहार कर रहा हूं। वैसे भी अगर किसी निर्दोष को दोषी करार देकर सजा सुनाई जाती है तो ये कानून का भी अपमान होगा और लोगों का कानून

पर से भरोसा उठ जायेगा। ये ना सिर्फ नाइन्साफी होगी, बल्कि पाप भी होगा। एक निर्दोष इन्सान के माथे पर कलंक का झूठा टीका लग जायेगा और उसके घरवालों को भी मानसिक वेदना और सामाजिक प्रताड़ना से दो-चार होना पड़ेगा। सो मेरी आपसे रिक्वेस्ट है योर ऑनर कि मिस्टर मुकेश सेठ को निर्दोष करार देकर बाइज्जत बरी कर दिया जाये।"

पारस जैन ने सिर झुकाकर जज साहब का अभिवादन किया और फिर बिल्लौरी आंखों से केशव पर व्यंग-बाण चलाते हुये अपनी सीट पर जा बैठा।

जज साहब ने नजर के मोटे लैंसेज वाले चश्मे से केशव को देखा और फिर गला खंखारकर बोले—"मिस्टर पण्डित! जो रिपोर्ट पेश की गई है, वो अभियुक्त को निर्दोष साबित करती है। क्या आप अभियुक्त के खिलाफ कोई सबूत या गवाही पेश कर सकते हैं?"

"यस, मीलार्ड!" उठा केशव और थोड़ा आगे बढ़कर बोला, "सबसे पहले मैं एक चश्मदीद गवाह को पेश करना चाहूंगा। जिसने अपनी आंखों से मिस सुरभि को बलात्कार और कत्ल की शिकार होते देखा था।"

"ये...ये मिस्टर पण्डित की कोई नई चाल है योर ऑनर!" पारस जैन अपनी कुर्सी से उठकर विरोध भरे लहजे में बोला, "पहले इनके और पुलिस के मुताबिक चश्मदीद गवाह राजू था। उसका कत्ल किया जा चुका है। अब मिस्टर पण्डित अपनी शिकस्त को फतह में तब्दील करने की गरज से किसी झूठे गवाह को पेश करना चाहते हैं।"

"मैं किसी झूठे गवाह को पेश नहीं कर रहा हूं मिस्टर जैन।" केशव पारस जैन की तरफ पलटकर सर्द व खुरदरे से लहजे में बोला, "वास्तव में ही मिस सुरभि के रेप और कत्ल का चश्मदीद गवाह है।"

"क्या मैं जान सकता हूं कि वो कौन है?"

"जरूर, जैन साहब...क्यों नहीं! जब वो अदालत में पेश होगा तो आप भी उसके बारे में जान जायेंगे।" कहने पर केशव

जज साहब की तरफ पलटकर बोला—"क्या मुझे उस गवाह को पेश करने की आज्ञा है मीलार्ड?"

"अवश्य! उसे पेश कीजिये।"

"थैंक्यू, मीलार्ड!" कहने पर केशव पलटा और दर्शक दीर्घा में बैठी एक काले बुर्के वाली को विटनेस बॉक्स में आने का इशारा किया।

वो बुर्के वाली उठकर विटनेस बॉक्स में जा पहुंची। केशव उसके करीब पहुंचकर बोला—"अदालत तुम्हारा चेहरा देखना चाहेगी। हां, डिफेंस लायर मिस्टर पारस जैन भी। मेहरबानी करके अपना ये बुर्का उतार दो।"

उसने बुर्का उतारकर अपने कन्धे पर रख लिया। सामने वाले बॉक्स में खड़ा मुकेश और उसका वकील पारस जैन, दोनों ही इस कदर चौंके कि मानो चिड़िया के अन्डे से डायनासोर को निकलते देख लिया हो।

"क्यों जैन साहब...?" केशव हैरान-परेशान से पारस जैन से सम्बोधित होकर बोला—"राजू उर्फ रियाजुद्दीन को देख आपके होश फाख्ता तो नहीं हो गये?"

❑❑❑
❑❑❑

"ऐसा...कैसे हो सकता है?" हैरान पारस जैन लुटा-पिटा-सा बोला—"राजू तो मर गया था। उसे गोलियां मार दी गई थीं। पुलिस ने उसका पोस्टमार्टम कराया था और फिर उसको कब्रिस्तान में दफन कर दिया गया था। फिर राजू जिन्दा कैसे हो सकता है भला? नहीं...ये राजू नहीं हो सकता।"

"ये राजू ही है मिस्टर जैन।" केशव पारस जैन की बौखलाहट का भरपूर मजा लेते हुये बोला, "हां, इसकी हत्या या कत्ल का ड्रामा जरूर किया गया था।"

"ड...ड्रामा?" पारस जैन चिहुंका।

कठघरे में खड़ा मुकेश भी चिहुंका।

अदालत कक्ष में मौजूद बहुत से लोग भी चौंके और हैरानी के साथ कौतूहलता में फंस गये।

"ये सब क्या चक्कर है मिस्टर पण्डित?" जज साहब भी अपनी उत्कंठा, दुविधा व जिज्ञासा को दबा नहीं पाये—"कत्ल के ड्रामे से आपका मतलब क्या है?"

"मैं बतलाता हूं मीलार्ड! राजू एक विशेष किस्म की जैकेट पहनकर अपने साढू के घर से डॉक्टर को बुला लाने के लिये निकला था। इसकी बीवी परवीन को तेज बुखार था। मैंने, मेरे सहायकों सजन शुक्ला, करतार सिंह और राजीव अरोड़ा ने काली पोशाक और नकाबें पहनी और एक गाड़ी से राजू का रास्ता रोका। मैंने बाहर निकालकर राजू पर पिस्टल तानी तो ये मेरे बनाये प्लान के मुताबिक ही पलटकर भागा। लेकिन मैंने इसकी पीठ पर दो गोलियां चलाई थीं। नकली गोलियां। उन नकली गोलियों ने शर्ट और जरकीन की ऊपरी पर्त में छिद्र कर दिये और जैकेट में भरा नकली खून तेजी के साथ बहा। उस इलाके की पुलिस को भी मैंने अपने साथ मिलाया हुआ था। पुलिस की गाड़ी ने मेरी गाड़ी का पीछा करने का ड्रामा ही किया था। उधर राजू ने भी मरने का ड्रामा किया था। पुलिस राजू को हॉस्पिटल ले गई और वहां डॉक्टर ने मेरे प्लान के मुताबिक राजू को मृत घोषित कर दिया था...फिर एक लावारिस लाश के चेहरे पर पहले से ही तैयार राजू का मास्क और विग लगाकर और राजू के ही कपड़े पहनाकर उसे राजू का रूप दे दिया गया था। उसी लाश का पोस्टमार्टम हुआ था और उसी को राजू के रूप में कब्रिस्तान में दफनाया गया था। राजू की बीवी परवीन इस हकीकत को जानती थी। उसने रोने—विलाप करने का ड्रामा ही किया था। आज तक राजू को मैंने छिपाकर रखा था।"

"लेकिन क्यों...?" कौतूहलतावश पूछ बैठे जज साहब, "आपने ये ड्रामा क्यों रचा मिस्टर पण्डित?"

❑❑❑
❑❑❑

"ये न्यूज दो बजे की 'मुम्बई स्पेशल' में लगनी है किशोर जी...। मेरी तबियत ठीक नहीं है। बुखार चढ़ा है। इसीलिये नीरज के हाथों ही फिल्म भिजवा दी है...थैंक्यू...।"

माधवी ने फोन बन्द करके मेज पर डाल दिया और बिस्तर पर कम्बल ओढ़कर लेट गई।

सोने के मूड से आंखें मूंदी ही थीं कि बेसिक फोन की घन्टी टिनटिनाने लगी।

लेटे-लेटे ही माधवी ने इन्स्ट्रूमेन्ट पर से रिसीवर उठाकर कान से लगाया और आंखें मूंदे-मूंदे ही अलसाई-सी आवाज में बोली—"हैलो...!"

"सत श्री अकाल पुत्तर जी। जे मैं मिस्टेक नी कर रइया तो तुस्सी माधवी हो ना?"

"सत श्री अकाल! आहो, आपने चंगा आइडिया लाया है मैं माधवी ही हूं माफी चाहन्दी हूं...मैं तुहन्नु पचाहण नी पाई हूं।"

"मैं जलन्धर तो रजिन्दर सिंह बोल रहा हूं...तुहाड्डा चाचा...।"

"ओ...पैरी पौणा चाचा जी...।"

"ज्यूंदी रह पुत्तर! रब तैनू खूब लम्बी उमर लाये। छेती तो तुहाड्डी कुड़माई ते शादी होवे। राजकुमार जा सोहणा बन्ना मिले तुहान्नू।"

"प्लीज, चाचा जी।" माधवी लजाकर बोली—"इन्नी जल्दी की है? हुणे तो मैं अपना कैरियर बणा रही हूं। खैर, चाची जी कैसी हैं?"

"ओ चंगी हैं। वाहे गुरु जी दे दर तो मत्था टेकने दे वास्ते अमृतसर गई है। मैं सोचया कि घणे दिन हो गये...प्राह जी तो गल्ला नी हुई—सो आज फोन कर दीता। किल्थे हैं रमाकान्त प्राह जी।"

"ओ कोर्ट विच गये हैं। ओल्थे इक मुकदमा चला रइया है। उन्हा दे शिष्य ते मेरे धर्म पाई केशव पण्डित मुकदमे दी पैरवी कर रइये हैं। मैनू हल्का बुखार सी...वरना मैं बी जान्दी। राजीव ओल्थे ही है। ओ केशव पा जी दे नाल चंगा कम कर रइया है।"

"कौन राजीव?"

"केड़ी गल कर रइये हो चाचा जी? मैं साढे राजीव दी गल कर रइयां।"

"भई...मैं तो साढे पतीजे ते पुत्तर रजीव नूं ई जाणता हूं।"

"उसी की तो गल कर रही हूं मैं।"

"मजाक करदी है अपने चाचा दे नाल? रजीव अपनी मम्मी कुलजीत दे नाल अमृतसर गया सी। कुलजीत ने मन्नत मांगी सी कि रजीव वकालत पास कर लेवांगा तो उसनूं नाल लेके अमृतसर जावांगी।"

"की...की गल करते हो चाचा जी...?" माधवी उठ बैठते हुये बोली, "राजीव तो एत्थो...मुम्बई विच हैगा। ओ केशव पाजी दे नाल उन्हों दे घर विच रह रइया ए।"

"नी पुत्तर! रजीव तो ऐत्थों ही है। भला ओ मुम्बई कासदे हो सकदा है?"

"आ...आप मजाक तो नहीं कर रहे?"

"अपणी पुत्तर नाल मजाक नी कर सकदा मैं।"

"ले...लेकिन कुश रोज पहिला आपने ही पापा जी नूं फोन किया सी। उनसे दसया सी कि रजीव नूं केशव पाजी दे नाल रहकर वकालत ते जासूसी के गुर सीखने हैं। पापा जी ने हां कर दी सी। फिर महीना पहिला राजीव एत्थे आया।"

"नी...ऐह नी हो सकदा माधवी पुत्तर।"

"मैं झूठ नी दस रइयां हन चाचा जी। रब दी सौ। ऐह सच है। राजीव आया। उसने इक फोटो बी हमें दिखलाई सी। उसमें वो चाची दे नाल सी। तभी हमें यकीन होया सी कि ओ राजीव ही है। पापा जी तें मैं राजीव नूं केशव पाजी दे कौल ले गई सी। केशव पाजी राजीव नू अपना चेला बनाने नूं राजी हो गये सी ते उन्होंने राजीव नू अपने घर विच रखया हन।"

"ओये रब्बा! ऐह की सुण रइयां हन? ओ कोई चार सौ बीस ही होगा। साडा रजीव नी हो सकदा ओ! साडी गल तो यकीन नी आन्दा ते मैं तुहान्नू रजीव दा मोबाइल नम्बर बतला रइया हन! हुणे ई उसनूं गल करके अपनी तसल्ली कर ले पुत्तर।"

दुविधा व असमंजस के तेज अंधड़ में घिरी माधवी ने राजेन्द्र सिंह से राजीव का फोन नम्बर लिया और तुरन्त ही मिलाकर उससे बात की। राजीव के साथ-साथ राजेन्द्र सिंह की बीवी कुलजीत कौर से भी बात हुई उसकी।

उसका मस्तिष्क मानो मकड़ी के जाल में उलझ गया।

"ऐह की चक्कर है...?" वह बुदबुदाई, "राजीव तो पंजाब विच ही है। तो फिर ये राजीव कौन है, जो केशव पाजी दे कौल रह रइया है...?"

□□□
□□□

प्रश्न भले ही जज साहब ने किया था, लेकिन जवाब पाने की आशा से कठघरे में खड़ा मुकेश, उसका वकील पारस जैन और अदालत कक्ष में उपस्थित अधिकांश लोग केशव को एकटक देखे जा रहे थे।

केशव ने जज साहब से सम्बोधित होकर जवाब दिया—"राजू की जान को खतरा था मीलार्ड! कुछ संदिग्ध लोग उस इलाके में राजू को ढूंढ रहे थे। ये रिपोर्ट मिलने पर मैंने राजू के कत्ल का ड्रामा रच दिया। ऐसा नहीं कि कत्ल का ड्रामा रचे बिना मैं राजू की जान नहीं बचा सकता था। लेकिन मैं मिस्टर जैन को लापरवाह कर देना चाहता था। ये लापरवाह हुये भी और मुझे इनके प्लान की जानकारी मिल गई।"

"क्या मतलब है तुम्हारा...?" पारस जैन पहले तो हड़बड़ाया और सकपकाया, फिर उठा और भड़ककर बोला, "कहने का मतलब क्या है तुम्हारा पण्डित?"

"मतलब समझने के लिये आपको एक वीडियो फिल्म देखनी होगी जैन साहब।"

"वीडियो फिल्म? कैसी वीडियो फिल्म?"

"मीलार्ड!" केशव जज साहब की तरफ पलटकर बोला, "इस केस की हकीकत को सामने लाने के लिये और मुकेश सेठ को मुजरिम साबित करने के लिये मुझे टी० वी० और डी० वी० डी० के माध्यम से एक वीडियो फिल्म दिखलाने की इजाजत दी जाये। साथ ही ये इजाजत भी दी जाये कि मैं मिस

सुरभि का पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर चन्द्रमोहन और फिंगर प्रिंट्स, फुटमार्क्स और गाड़ी के टायरों के मार्क्स की रिपोर्ट पेश करने वाले एक्सपर्ट जितेन्द्र वालिया को विटनेस बॉक्स में खड़ा करके ही फिल्म का प्रदर्शन करूं। क्योंकि फिल्म दिखलाने के बाद मुझे उन दोनों से कुछ सवाल भी पूछने हैं। क्या परमिशन मिलेगी मी लॉर्ड?"

"परमिशन ग्रान्टेड।"

□□□
□□□

कटे हाथों-पैरों वाली और झुलसे चेहरे वाली क्रान्ति के झुलसे होठों के मध्य सिगरेट फंसी हुई थी। वो कश मारकर नथुनों से धुआं उगलते हुये हॉल में लगे टी० वी० पर न्यूज देख और सुन रही थी। उसके करीब ही बैठी हट्टी-कट्टी शान्ता बाई भी सिगरेट पीकर वातावरण को प्रदूषित कर रही थी। क्रान्ति के सीने में तेज कम्पन होने लगा।

उसने शर्ट के गिरेहबान में ठूंठ जैसे हाथों को डालकर मोबाइल फोन निकाल लिया, जो कि वाइब्रेशन पर लगा होने की वजह से बुरी तरह कांप रहा था।

फोन की स्क्रीन पर उभरते नम्बर को देखने पर क्रान्ति ने फोन शान्ता बाई की तरफ बढ़ा दिया और आंखों-ही-आंखों में कोई इशारा किया।

फोन को गिरेहबान के भीतर सरकाकर शान्ता बाई उठी और क्रान्ति को अपनी पीठ पर लादकर बाथरूम में पहुंची।

चूंकि क्रान्ति अपाहिज थी और स्वयं बाथरूम या ट्वायलेट नहीं जा सकती थी, इसलिये जेल की महिला सुरक्षा-कर्मियों ने उन्हें रोका-टोका नहीं।

बाथरूम में पहुंच क्रान्ति को फर्श पर बिठाकर शान्ता बाई ने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया और फिर फोन निकालकर तथा उसका रिसीवर वाला बटन पुश करके क्रान्ति के कान से सटा दिया।

"हैलो...!" बोली क्रान्ति।

"मैं बोल रहा हूं मैडम जी।" दूसरी तरफ से उसका

वफादार और खैरख्वाह अंगारा ही बोल रहा था, "कैसी हैं आप?"

"मैं ठीक हूं। लेकिन एक बात तो बतलाओ अंगारा—अगर किसी चमत्कार से पारस जैन ने मुकेश सेठ को निर्दोष साबित कर दिया तो फिर अपना क्या होगा? अगर मुकेश को मुजरिम करार देकर सजा सुनाई जाये तो ही उसका बाप बलवन्त सेठ उसे जेल से फरार कराने की चेष्टा करेगा।"

"नहीं, मैडम जी! ऐसी बात नहीं है। पहली बात तो ये है कि पारस जैन भले ही कितना भी काइयां किस्म का वकील हो, लेकिन वो केशव पण्डित के सामने नहीं टिक पायेगा। भले ही उसने कुछ भी दावा किया हो, लेकिन ये आप भी जानती हैं कि केशव पण्डित मुकेश को मुजरिम साबित कर देगा। माना कि किसी चमत्कार से ऐसा नहीं भी होता तो...तो भी बलवन्त सेठ हमें जेल से निकालेगा। उसके आदमियों ने सुरंग बनानी शुरू कर दी है।"

"सुरंग?"

"यस, मैडम जी! एक अन्डर ग्राउन्ड गटर के भीतर से सुरंग को बनाना शुरू किया गया है। खुदाई में जो मिट्टी और मलबा निकलेगा—उसे गटर के पानी में साथ-के-साथ बहाया जा रहा है। सुरंग मर्दाना जेल और महिला जेल के नीचे तक बनेगी। सारा काम नक्शे के मुताबिक हो रहा है। नक्शा दोनों जेल बनाने वाले इंजीनियर से बनवाया गया है और वो इंजीनियर ही मोटी रकम के लिये सुरंग बनवा रहा है। इसलिये चूक होने की कोई सम्भावना नहीं है। आधी रात के बाद आपकी वाली बैरक और इधर मेरी और मुकेश सेठ वाली बैरक में मौखले बनाये जाएंगे। उन्हीं मौखलों से हमें सुरंग में उतरकर फरार हो जाना है।"

"अगर मुकेश जेल में ना भी हुआ तो भी...?"

"तो भी मैडम जी! क्योंकि आपने यमराज की शर्त को पूरा करके यमराज से शादी करने का दावा किया है। बलवन्त सेठ मुम्बई का माफिया डॉन है। और उसने इन्डिया के माफिया किंग से भी इस बारे में बात की। माफिया किंग ने यमराज

से कॉन्टेक्ट किया है। यमराज की तरफ से ही ये आदेश आया है कि आपको और मुझे फ़ौरन से पेश्तर जेल से आजाद कराया जाये और तुरन्त ही अमेरिका भेज दिया जाये।"

"अमेरिका...?" चौंककर बोली क्रान्ति—"अमेरिका क्यों?"

"वहां एक बहुत बड़ा सर्जन है। वो ऑपरेशन के जरिये कई अपाहिजों को ऐसे कृत्रिम अंग लगा चुका है जो कि असली अंगों की तरह ही काम करते हैं। आपका इलाज वो ही डॉक्टर करेगा और सारा खर्चा यमराज उठायेगा।"

"गुड...वैरी गुड...!" क्रान्ति का झुलसा चेहरा यूं ही चमक उठा कि मानो किसी बुझने को तैयार कोयले को तेज हवा देकर दोबारा सुलगा दिया गया हो। आंखों में भी चिराग रोशन हो चले। वो उत्साह से भरी हुई बोली, "इसका मतलब ये है अंगारा कि यमराज को मेरे अतीत के बारे में सबकुछ बताया गया और उसे यकीन हो चला है कि मैं उसकी शर्त पूरी कर सकती हूं?"

"बिल्कुल यही बात लगती है मैडम जी। तभी तो यमराज आपको अपने खर्चे पर अमेरिका बुलवाकर आपका इलाज करा रहा है। लगता है कि किस्मत हम पर मेहरबान हो चली है मैडम जी।"

"हां, यही बात है अंगारा।" क्रान्ति मारे खुशी के फूली नहीं समा रही थी, "तुम देखना...देखना तुम कि हाथ-पैर मिल जाने पर मैं क्या करती हूं। उस कुत्ते केशव पण्डित के दिमाग का बैन्ड बजाकर रख दूंगी। जो अदालत उसके लिये मन्दिर समान है, उसी में उसे कातिल साबित करूंगी मैं। जिस कानून को भगवान का दर्जा देता है वो...वो ही कानून उसे मुजरिम करार देकर फांसी की सजा सुनायेगा।"

"मुझे अब फोन बन्द करना होगा। मैडम जी अपना ख्याल रखियेगा।"

इसी के साथ दूसरी तरफ से अंगारा ने फोन काट दिया।

क्रान्ति ने कटे हाथों से मोटी-ताजी शान्ता बाई की कोहली भर ली और उसका गाल चूमकर बोली—"अपनी फरारी का

इन्तजाम होने ही वाला है शान्ता बाई। हम दोनों जल्दी ही खुली हवा में सांस लेंगे।"

"स...सच क्रान्ति बहन?"

"बिल्कुल सच।"

"तुम बहुत खुश हो! फोन पर अंगारा ने ऐसा क्या बतला दिया है?"

□□□

□□□

राजन, करतार सिंह और राजीव ने मिलकर अदालत कक्ष में टी० वी० और डी० वी० डी० प्लेयर लगाकर उनके कनेक्शन करा दिये और उन्हें ऑन कर दिया।

इसी बीच डॉक्टर चन्द्रमोहन और एक्सपर्ट जितेन्द्र वालिया मुकेश सेठ के सामने वाले कठघरे में आ खड़े हुये।

दोनों ही परेशान थे और पसीने-पसीने हो रहे थे।

टी० वी० स्क्रीन पर जो दृश्य उभरा, उसने डॉक्टर चन्द्रमोहन और एक्सपर्ट जितेन्द्र वालिया के साथ, पारस जैन भी बुरी तरह चौंका दिया और उन तीनों के चेहरों पर हवाइयां-सी उड़ने लगीं।

टी० वी० स्क्रीन पर चन्द्रमोहन और जितेन्द्र वालिया होटल के एक कमरे में सोफे पर बैठे हुये व्हिस्की की चुसकियों के साथ सिगरेट के धुएं भी उड़ा रहे थे। उनके सामने मेज पर व्हिस्की की और सोडा वाटर की चार बोतलें, उबले व कटे हुये अन्डे, तले मसालेदार काजू, सिगरेट की डिब्बी व माचिस के साथ हजार-हजार के नोटों वाली दो गड्डियां भी रखी हुई थीं।

मेज के पार बैठा हुआ था पारस जैन।

उसके दायें हाथ में व्हिस्की का गिलास था तो बायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा उंगलियों के मध्य सुलगी हुई सिगरेट फंसी हुई थी।

"आपको मेडिकल रिपोर्ट चेंज करनी है डॉक्टर...।" बोला पारस जैन, "ये तो क्लियर हो चुका है कि सुरभि को रेप करने वाले का सीमेन या ब्लड ग्रुप ओ निगेटिव है—जो कि मुकेश सेठ का है। आपको अपनी रिपोर्ट में मुकेश सेठ का सीमेन

ग्रुप ए पोजेटिव लिखना है। मिस्टर वालिया, आपको अपनी रिपोर्ट में यही लिखना है कि घटनास्थल पर मिली सिगरेट पर मुकेश सेठ के फिंगर प्रिन्ट्स नहीं हैं। ना ही फुटमार्क्स और गाड़ी के टायरों के निशान ही मुकेश सेठ के हैं। इस मामूली काम के लिये आप दोनों को दस-दस लाख रुपये मिलेंगे। एक-एक लाख रुपये एडवांस में दे रहा हूं।"

"आपका काम हो जायेगा वकील साहब।" डॉक्टर चन्द्रमोहन नशे में झूमते हुये बोला, "लेकिन केशव पण्डित बहुत चालाक है, वो हमारी हेरा-फेरी को पकड़ सकता है।"

"मुझे भी केशव पण्डित का डर है वकील साहब।"

"उससे घबराने की जरूरत नहीं। अगर वो ये मांग करेगा कि दूसरे डॉक्टर और एक्सपर्ट से रिपोर्ट तैयार कराई जाये तो अदालत जिन भी लोगों को रिपोर्ट बनाने को कहेगी—वो भी यही रिपोर्ट देंगे। उन्हें भी खरीद लिया जायेगा। अगर वो बिकने से मना करेंगे तो उन्हें धमकाया जायेगा। उनके परिवार वालों को उठवा लिया जायेगा।"

"क्या आप गुन्डों के भी सम्पर्क में हैं वकील साहब?"

"गुन्डों के सम्पर्क में तो रहना ही पड़ता है। आप दोनों को केशव पण्डित से घबराने की कतई भी आवश्यकता नहीं है। वो ये केस हारेगा...जिन्दगी में पहली बार हारेगा—पारस जैन से हारेगा।"

केशव का इशारा होने पर राजन ने टी० वी० और डी० वी० डी० प्लेयर बन्द करा दिया और कठघरे में पसीने से नहाये खड़े डॉक्टर चन्द्रमोहन और एक्सपर्ट जितेन्द्र वालिया से बोला—"तुम दोनों की पोल खुल चुकी है। अगर अपनी सजा को कम कराना चाहते हो तो अपने गुनाह कबूल कर लो।"

दोनों ने अपने गुनाह कबूलते हुये अदालत से रहम की फरियाद की।

पारस जैन और मुकेश की दशा 'काटो तो खून नहीं' वाली ही थी।

दर्शक दीर्घा में बैठी मुकेश की बीवी सुगन्धा का चेहरा भी बुझा हुआ था।

और फिर जज साहब ने मुकेश को मुजरिम करार देते हुये उसे सजा-ए-मौत की सजा सुना दी।

डॉक्टर और एक्सपर्ट को भी पांच-पांच साल कैद की सजा सुनाई—जबकि वकील पारस जैन को सुनाई...कड़ी फटकार!

❑❑❑

❑❑❑

नर्सिंग होम वाला वो कमरा—जिसमें आशीर्वाद एडमिट था।

आशीर्वाद के अलावा वहां पर सोफिया, चांदनी, राजन शुक्ला, करतार सिंह व राजीव मौजूद थे।

रमाकान्त और माधवी के साथ केशव भीतर दाखिल हुआ।

सभी को चौंकाते हुये केशव ने राजीव का दायें हाथ से गिरेहबान पकड़कर उसे उठाया और उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घूरने लगा।

सकपकाकर बोला राजीव—"क...क्या बात है गुरुदेव? आप मुझे यूं क्यों देख रहे हैं? क्या मुझसे कोई गलती हो...?"

"कौन है तू?"

"मैं...मैं राजीव...!"

केशव का हाथ हवा में लहराया और तड़ाक की आवाज के साथ राजीव के गाल से टकराया।

राजीव घुटी-घुटी-सी चीख के साथ फर्श पर जा गिरा!

"ये...ये क्या केशव?" सोफिया हैरत में पड़ी हुई बोली—"तुमने राजीव को थप्पड़ क्यों...?"

"राजीव नहीं है ये...।" चीखा केशव।

"क...क्या?"

सोफिया के साथ आशीर्वाद, राजन, चांदनी और करतार सिंह भी चौंके।

"हां, ये सच है...!" माधवी बोली—"ये राजीव नहीं है। जालन्धर से चाचा जी का फोन आया था। राजीव तो जालंधर में ही है और चाचीजी के साथ स्वर्ण मन्दिर में मत्था टेकने गया

है। मैंने राजीव से बातें भी की हैं। हकीकत तो ये है कि राजेन्द्र सिंह चाचा जी ने पापाजी को फोन किया ही नहीं था। किसी ने चाचाजी की आवाज में पापाजी से बात की थी और ये कहा था कि राजीव को केशव भाई का आसिसटेंट बनवा दें।"

"ओह...!" चांदनी होंठों के सामने हथेली करके बोली, "इतना बड़ा धोखा! ये बन्दा राजीव है ही नहीं?"

"हां, मैं राजीव नहीं हूं।" आंखों में आंसू भरे हुये और हाथ जोड़कर बोला वह—"मेरा नाम कपिल है। मैं राजीव का पड़ोसी और दोस्त हूं। राजीव के साथ ही मैंने लॉ किया। एल० एल० बी० पास करके वकालत की डिग्री ली। फिर मार्शल आर्ट सीखी और जासूसी की ट्रेनिंग भी ली। पण्डित जी का बहुत दिनों से फैन था...दीवाना था। इनके किस्से पढ़े और सुने। राजीव से कहा भी था कि वो मुझे पण्डित जी का शिष्य बनवा दे—लेकिन वो नहीं माना था। तब मजबूरन मुझे राजीव के पापाजी की आवाज में रमाकान्त अंकल जी से फोन पर बात करनी पड़ी और फिर राजीव बनकर आ गया। कुलजीत आन्टी जी के साथ एक तस्वीर भी खिंचवा ली थी मैंने—ताकि यहां सभी को यकीन दिला सकूं कि मैं राजीव ही हूं। मेरी नीयत में कोई खोट नहीं था। हां, पण्डित जी का शिष्य बनने का जुनून दिमाग पर सवार था। इनकी छत्रछाया में कुछ सीखकर कानून और देश की सेवा करनी चाहता था, चाहता हूं। गुरुदेव!" वह केशव के पैर पकड़कर गिड़गिड़ाने वाले लहजे में बोला—"मैंने रमाकान्त अंकल जी और आपके साथ जो छल-कपट किया, झूठ बोला...उसके लिये क्षमा कर दीजिये। चाहें तो मुझे कोई भी सजा दे दीजिये, लेकिन भगवान के लिये मुझे अपनी छत्रछाया से दूर मत कीजिये।"

"दफा हो जाओ यहां से।"

"न...नहीं! या तो मुझे जान से मार डालिये—या फिर माफ करके अपनी छत्रछाया में रख लीजिये।"

"सुना नहीं...?" चीखा केशव—"तुरन्त ही यहां से चला जा।"

"नहीं केशव बेटा!" रमाकान्त आगे बढ़कर और केशव के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—"माना कि इस मुण्डे ने झूठ बोला। छल-कपट किया। लेकिन तुम्हारा शिष्य बनने के लिये। कानून और मुल्क की सेवा का जुनून है इसमें। इसे माफ कर दो।"

"लेकिन गुरुजी।"

"क्या मेरी बात नहीं मानोगे तुम?"

कसमसाया केशव! फिर उसने कोट की जेब से फोन निकालकर रमाकान्त को दिया और कहा—"इस बात की क्या गारन्टी है कि ये अब भी सच बोल रहा है और ये राजीव का दोस्त और पड़ोसी कपिल है? आप अपने भाई या राजीव से इसके बारे में पूछताछ कर लीजिये।"

रमाकान्त ने फोन पर अपने भाई राजेन्द्र सिंह से बात की तो राजेन्द्र सिंह ने इस बात की तस्दीक की कि उसके पड़ोस में कपिल नाम का युवक रहता है, जिसके मां-बाप एक एक्सीडेन्ट में चल बसे थे। कपिल ने मेहनत-मजदूरी करके, मौहल्ले के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर, अखबार वगैरा बेचकर अपनी पढ़ाई जारी रखी और राजीव के साथ ही एल० एल० बी० की डिग्री हासिल की थी।

राजेन्द्र सिंह ने कपिल की जमकर प्रशंसा की और ये जानकारी भी दी कि कपिल लगभग दो महीने से घर पर नहीं था और उसके घर पर ताला लगा हुआ था।

रमाकान्त ने केशव को सारी जानकारी दी और कपिल को क्षमा करने को कहा तो केशव ने राजीव उर्फ कपिल को क्षमा कर दिया।

कपिल का चेहरा यूं ही खिल उठा कि मानो उसे 'भारत रत्न' मिल गया हो।

❑❑❑

❑❑❑

सुरंग बनकर तैयार हो गई।

आधी रात के पश्चात् लगभग एक ही वक्त पर उन दोनों

बैरकों में मौखले बनाये गये, जिनमें मुकेश और दैत्याकार अंगारा, महिला जेल में शान्ता बाई के साथ क्रान्ति थी।

वो चारों मौखले से सुरंग में उतर गये और फिर गटर में पहुंच गये।

"मैडम जी...मैडम जी!" क्रान्ति को देख अंगारा फूल-सा खिल गया और लपककर उसके करीब पहुंच गया—"ओह, मैडम जी! कितने दिनों बाद आपके दर्शन कर रहा हूं मैं। बतला नहीं सकता कि मैं कितना खुश हूं।"

"मैं भी बहुत खुश हूं अंगारा।" शान्ता बाई की पीठ पर सवार क्रान्ति बोली—"ये शान्ता बाई है। मेरी बहन...मेरी दोस्त। ये नहीं होती तो मेरा जेल में रहना मुश्किल हो जाता।"

"मैं तुम्हारा अहसानमन्द हूं शान्ता बाई।" अंगारा हाथ जोड़कर बोला—"तुमने मैडम जी की बहुत मदद की।"

"नहीं, अंगारा ये तो मेरा फर्ज था। इसमें अहसान वाली कोई बात नहीं है।"

इतने में मुकेश भी वहां आ गया तो अंगारा ने कहा—"ये मुकेश बाबू हैं मैडम जी।"

"मैं तुम्हारी अहसानमन्द हूं मुकेश! अगर तुम नहीं होते तो मेरा जेल से निकलना मुमकिन नहीं था।"

"नहीं क्रान्ति! ये तो तुम्हारी काबिलियत है। तुम्हारी शौहरत यमराज जी तक जा पहुंची है। उन्होंने ही तुम्हें जेल से निकालकर इलाज के वास्ते अमेरिका भेजने का हुक्म दिया है। हमें यहां से निकल लेना चाहिये। अगर पकड़े गये तो फिर हमारी सिक्योरिटी इतनी टाइट कर दी जायेगी कि हमारा आजाद होना नामुमकिन हो जायेगा।"

"मैडम जी को मैं लेकर चलूंगा शान्ता बाई।" कहने पर अंगारा ने क्रान्ति को अपनी पीठ पर लाद लिया और गटर के पानी में 'छप्पक-छप्पक' करते हुये तेजी के साथ आगे बढ़ने लगा।

मुकेश, शान्ता बाई और सुरंग तैयार करने वाले लोग भी तेजी के साथ आगे बढ़े चले जा रहे थे।



क्रान्ति ने अंगारा के जरिये बैंक के लॉकर में से गहने निकालकर बेचे और फिर उसके साथ ट्रेन से चेन्नई पहुंची।

चेन्नई से वे शिप के जरिये श्रीलंका पहुंचे। वहां पर माफिया के लिये काम करने वाले निकोलस ने दोनों के लिये नकली पासपोर्ट व वीजा के साथ अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन के टिकटों का बन्दोबस्त किया। दोनों वाशिंगटन पहुंचे तो माफिया का एक आदमी शानदार कार के साथ एयरपोर्ट पर ही हाजिर था।

वो दोनों को वाशिंगटन के सबसे बड़े हॉस्पिटल में ले गया। जहां पर ना सिर्फ विश्व-स्तर के कुशल डॉक्टर व सर्जन मौजूद थे, बल्कि इसी के साथ वहां पर फाइव स्टार होटल वाली सुविधायें भी उपलब्ध थीं।

ब्राउन वाटसन नामक सर्जन ने क्रान्ति का चैकअप किया और दावा किया कि वो उसे ऐसे कृत्रिम अंग लगायेगा, जो कि चिप्स व सेंसर की वजह से बिल्कुल असली हाथ-पैरों की मानिन्द ही काम करेंगे। यहां तक कि वो उंगलियों से भी असली उंगलियों के जैसा ही काम ले सकेगी।

ब्राउन वाटसन ने जब ये कहा कि हॉस्पिटल में मौजूद प्लास्टिक सर्जन कॉस्मैटिक सर्जरी से उसके झुलसे हुये जिस्म व चेहरे को पहले से भी ज्यादा खूबसूरत बना देगा तो क्रान्ति ने इन्कार कर दिया। उसने बोल दिया कि उसे प्लास्टिक या कॉस्मैटिक सर्जरी नहीं करानी है।

खैर, डॉक्टर ब्राउन वाटसन ने अपना काम शुरू किया। उसने ऑपरेशन द्वारा क्रान्ति के कटे हाथों व पैरों के साथ बिल्कुल असली मालूम पड़ते हाथ व पैर जोड़े।

चारों अंगों में कम्प्यूटर चिप लगी थी। हड्डियों की जगह स्टील्स की विभिन्न रॉड्स का इस्तेमाल किया गया था। मांस की जगह सिलिकोन और नसों की जगह रबर और प्लास्टिक की ट्यूब्स और इलेक्ट्रिक वायर्स लगी थीं।

क्रान्ति के मस्तिष्क का ऑपरेशन करके उसमें विशेष

किस्म के सेंसर्स लगाये गये, जिनकी मदद से वो अपने हाथों-पैरों को हिला सकती थी। कोहनियों, घुटनों, यहां तक कि उंगलियों को भी मोड़ सकती थी।

कुल मिलाकर कृत्रिम होने पर भी हाथों-पैरों को असली वालों की मानिन्द ही काम करने थे।

क्या पूछा आपने? मुकेश और शान्ता बाई का क्या हुआ?

वो दोनों हिन्दुस्तान में ही रह गये थे और उन्हें माफिया के हैडक्वार्टर पर या गुप्त ठिकानों पर रहकर माफिया के वास्ते काम करना था।




"ये...ये देखो अंगारा! मैं अपने पैरों पर खड़ी हूं। अपने हाथों से कोई भी काम कर सकती हूं। डॉक्टर ब्राउन वाटसन ने दावा किया है कि मैं थोड़ी प्रेक्टिस के बाद दौड़ सकती हूं—जम्प लगा सकती हूं। हाथों से बॉक्सिंग तक कर सकती हूं। ओह...अंगारा...ये...ये चमत्कार ही कर दिया डॉक्टर ब्राउन वाटसन ने! मुझे असली जैसे हाथ-पैर दे दिये। ये...ये देखो...मैं हाथों की उंगलियां हिला पा रही हूं। हाथों को कोहनियों से मोड़ पा रही हूं। कलाइयां घूम रही हैं। घुटने मोड़ पा रही हूं। पैरों की उंगलियां भी हरकतें कर रही हैं। ओह...यकीन नहीं होता। कभी ये कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा हो जायेगा। मैं...मैं मारे खुशी के पागल हुई जा रही हूं। अगर मैं किसी कन्ट्री या स्टेट की प्रिन्सेज होती तो हीरे-मोती लुटाती और जमकर जश्न मनाती। कहीं...कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूं? चिकोटी तो काटो जरा...! आई...दर्द हुआ...यानि मैं कोई ख्वाब...नहीं देख रही हूं। ये हकीकत है...सच्चाई है। बतला नहीं सकती कि मैं कितनी खुश हूं मैं। अरे...तुम्हारी आंखों में आंसू?"

अंगारा ने हथेली की पुश्त से आंसू पोंछे और फिर मुस्कराकर, लेकिन भर्राई हुई-सी आवाज में बोला—"ये...ये तो खुशी के आंसू हैं मैडमजी! आपको इस हालत में देखकर मैं कितना खुश हूं...आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं।"

क्रान्ति अंगारा के जिस्म से सट गई और कृत्रिम हाथों को उसकी पीठ पर पहुंचाकर उसके स्याह व मोटे-मोटे होठों को दीवानावार चूमते हुये बोली—"मुझे अन्दाजा है कि तुम कितने खुश हो। मुझसे भी ज्यादा तुम खुश हो। दुनिया में तुमसे बढ़कर मेरा कोई वफादार और शुभचिन्तक नहीं हो सकता।"

कमरे के दरवाजे पर नॉक होने पर क्रान्ति अंगारा से अलग हुई और बोली—"यस, कम इन।"

एक काले सूट वाला हाथों में बड़ा-सा बुके लिये हुये भीतर दाखिल हुआ। उसने क्रान्ति की तरफ बुके बढ़ाया और मुस्कराकर बोला—"कांग्रेचुलेशन मिस क्रान्ति! ये बुके मिस्टर यमराज जी की तरफ से है।"

क्रान्ति ने चौंककर बोली—"यमराज जी ने भेजा है ये बुके?"

"यस मिस क्रान्ति! प्लीज कबूल कीजिये।"

क्रान्ति ने असली मालूम पड़ते हाथों से बुके ले लिया और हर्षित भाव से बोली—"मिस्टर यमराज को मेरी तरफ से थैंक्स कहना।"

"वो आप ही बोल देना! आज शाम को सात बजे मिस्टर यमराज आपसे मिलने आ रहे हैं।"

❑❑❑
❑❑❑

बस... सात बजने ही वाले थे।

कमरे में व्याकुलता के साथ चहलकदमी-सी करते हुये क्रान्ति सिगरेट में कश लगा रही थी।

बेड के किनारे बैठा अंगारा भी सिगरेट फूंक रहा था।

"यकीन नहीं आ रहा है अंगारा। यमराज ने पहले बुके भिजवाया, फिर वो मुझसे मिलने आ रहा है। माफिया किंग मिलने आ रहा है। दुनिया का सबसे शक्तिशाली और अमीर आदमी मुझसे मिलने आ रहा है। इस बारे में तुम क्या कहोगे अंगारा?"

"यही कि हमारा भाग्य जोर मार रहा है मैडम जी।" सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये बोला अंगारा, "तभी तो

चमत्कार-पर-चमत्कार हुये जा रहे हैं। हम जेल से यूं ही निकल गये कि जैसे मक्खन से बाल निकाल लिया जाता है। बहुत आसानी से अमेरिका पहुंच गये। आपका ऑपरेशन भी कामयाब हो गया। सबसे बड़ा चमत्कार तो यमराज की मेहरबानियां हैं। उसी की कृपा से आपको हाथ-पैर मिले हैं।"

"लेकिन सवाल तो ये है कि यमराज मुझ पर इतना मेहरबान क्यों हो रहा है?"

अंगारा ने कुछ कहने के लिये मुह खोला ही था कि चार ब्लैक कमान्डोज हाथों में ब्रेनगन लिये हुये कमरे में दाखिल हुये।

उन्होंने कमरे के चारों कोनों पर कब्जा जमा लेने पर गनों का रुख क्रान्ति व अंगारा की तरफ कर दिया।

फिर काले सूट वाला वो युवक कमरे में प्रविष्ट हुआ जो कि दोपहर को यमराज की तरफ से बुके लाया था।

"ये लोग मिस्टर यमराज के सिक्योरिटी गार्डस् हैं! प्लीज, बुरा मत मानना मिस क्रान्ति! ऐसे ही चार कमान्डोज मिस्टर यमराज के साथ भी हैं—लेकिन वो कमरे के बाहर ही रुक जायेंगे! मिस्टर यमराज पधार रहे हैं।"

अंगारा बेड से उठ खड़ा हुआ। उसने और उसके साथ ही क्रान्ति ने भी सिगरेट के टुकड़ों को मेज पर रखी ऐश-ट्रे में बुझाकर उसी में छोड़ दिया।

दोनों की नजरें खुले दरवाजे पर टिक गईं।

यमराज कमरे में दाखिल हुआ।

❑❑❑
❑❑❑

यमराज के चेहरे पर ही नहीं, बल्कि उसकी चाल में भी रौब झलक रहा था।

लगा कि कोई हस्ती पधारी है।

चमचमाते हुये काले जूतों के ऊपर काली पैन्ट और सोने के बटनों वाला काला ओवरकोट!

सिर पर हैट और आंखों पर सोने के फ्रेम वाला काले शीशों वाला चश्मा!

अंगारा ने आगे बढ़कर उसके पैर छू लिये और फिर सीधा

होने पर हाथों को जोड़कर कृतज्ञता भरे लहजे में बोला—"खादिम का नाम अंगारा है।"

"जानते हैं हम...!"

"अगर मैं अपनी खाल के जूते बनवाकर आपके पैरों में पहना दूं तो भी आपके अहसानों का कर्ज नहीं उतार पाऊंगा। आपकी कृपा से ही हम यहां पर हैं और मैडम जी को नये हाथ-पैर मिले हैं।"

यमराज ने क्रान्ति को देखा!

क्रान्ति शेरनी की सी चाल में चलते हुये यमराज के सामने पहुंची और दायें हाथ को उसकी तरफ बढ़ाकर बोली—"हैलो, मिस्टर यमराज।"

अंगारा थोड़ा आशंकित हो चला कि क्रान्ति के व्यवहार से यमराज नाराज ना हो जाये।

लेकिन यमराज ने मुस्कराते हुये क्रान्ति के असली प्रतीत होते नकली हाथ से हाथ मिलाया और फिर बोला—"तुमसे मिलकर खुशी हुई क्रान्ति।"

"मुझे भी सर!"

"आओ, बैठते हैं।"

बेड के साथ ही कमरे में एक शीशे के टॉप वाली टेबल के चारों तरफ सोफा चेयर रखी हुई थी।

यमराज और क्रान्ति आमने-सामने बैठ गये, जबकि अंगारा हाथों को बांधकर खड़ा ही रहा। यमराज ने सिगरेट की डिब्बी व रत्नजड़ित लाइटर निकालकर एक सिगरेट सुलगाई—फिर डिब्बी व लाइटर क्रान्ति को दिये।

क्रान्ति ने एक सिगरेट सुलगा ली और बोली—"मैं आपकी शुक्रगुजार हूं सर! आपकी मेहरबानी से ही मुझे कटे हुये हाथों-पैरों से मुक्ति मिल पाई है। समझ में नहीं आता कि आपके अहसानों को कैसे उतार पाऊंगी?"

"नहीं, अहसान वाली कोई बात नहीं है क्रान्ति! इन्डिया में माफिया की बागडोर सम्भालने वाले माफिया चीफ नें हमें तुम्हारे बारे में काफी बतलाया। आम हिन्दुस्तानी लड़की को कोई घूरकर भी देख ले तो उसके होश फाख्ता हो जाते हैं।

थप्पड़ मार दे तो चींख मारकर रोने बैठ जाये। लेकिन तुम आम नहीं, खास हो। तेजाब से झुलसने पर, हाथ-पैर कटने पर भी तुमने हिम्मत नहीं हारी और अपने दुश्मन से इन्तकाम लेने के लिये छटपटाती रही। तुम ना सिर्फ बहादुर हो, बल्कि खतरनाक इरादों वाली माइन्डेड लड़की भी हो। हम तुम जैसी बहादुर लड़की की कद्र करते हैं। सबसे बड़ी बात तो ये कि तुम्हारा और हमारा दुश्मन एक ही है... केशव पण्डित।"

केशव का नाम सुन क्रान्ति की आंखों में खून-सा उतर आया।

चेहरा लाल-भभूका हो चला।

"टी० वी० पर आपका इन्टरव्यू देखा था सर।" फिर वो सिगरेट में कश मारकर और नथुनों से धुआं छोड़कर बोली—"हालांकि ये तो मालूम नहीं हो सका कि आपकी और केशव पण्डित की दुश्मनी क्या है और आप दोनों के बीच क्या-क्या हुआ था—लेकिन आपकी प्रतिज्ञा और शर्त के बारे में मालूम पड़ा।"

"मे आई कम इन...सर?"

दरवाजे पर हॉस्पिटल का सूटेड-बूटेड मालिक खड़ा दिखलाई पड़ा।

"यस, कम इन...!"

हॉस्पिटल मालिक भीतर आया। उसके साथ केन्टीन की खूबसूरत, शानदार ड्रेस वाली छह सर्विस गर्ल भी थीं—जिनमें से दो खूबसूरत कपड़े से ढकी हुई ट्रॉली को धकेलते हुये भीतर दाखिल हुईं।

कपड़ा हटाकर वो रेड वाइन शराब की बोतलें खोल ही रही थीं कि यमराज रोबीले लहजे में बोला—"नहीं, सर्विस की जरूरत नहीं। सारा सामान मेज पर लगा दो। हम जरूरी बातें कर रहे हैं।"

हसीनाओं ने मेज पर रेड वाइन की दो बोतलें, सोडा साइफन, आइस क्यूब्स वाला बॉक्स, भुने हुये मसालेदार काजू, पनीर के टुकड़े और चिप्स के साथ सोने के खूबसूरत खाली गिलास रख दिये और फिर वापिस चली गईं।

यमराज ने हॉस्पिटल मालिक से थोड़ा खुश्क लहजे में कहा—"हमें और कुछ नहीं चाहिएगा मिस्टर ब्राउन...।"

ब्राउन यमराज का अभिप्राय समझ गया। उसने सिर झुकाकर यमराज का अभिवादन किया और फिर कमरे से बाहर चला गया।



यमराज ने बुके लेकर आने वाले रोजर नामक युवक और अंगारा को भी बिठा लिया और फिर रोजर से पैग बनाने को कहा।

"चियर्स" की संयुक्त आवाज के साथ चारों ने सोने के गिलास आपस में टकराये और फिर एक-एक घूंट भरकर गिलास मेज पर रख दिये।

"क्रान्ति!" यमराज सिगरेट सुलगा लेने पर बोला, "तुमने प्लास्टिक सर्जरी कराने से इन्कार क्यों कर दिया?"

"इन्डिया में बहुत ही काबिल कॉस्मेटिक सर्जन हैं सर! मैंने उसका काम देखा है। मैं नहीं समझती कि दुनिया में उससे बढ़िया कोई प्लास्टिक या कॉस्मेटिक सर्जन हो सकता है। मुझे अपने जिस्म और चेहरे की सर्जरी उसी से करानी है।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी। वहां पर भी तुम्हारे इलाज का सारा खर्चा माफिया ही उठायेगी।"

"इतनी मेहरबानी किसलिये सर?" दिल की बात क्रान्ति की जुबान पर आ ही गई।

"क्योंकि तुम्हें हमारी शर्त पूरी जो करनी है।" कहने पर मुस्कराया यमराज।

क्रान्ति भी कहां पीछे हटने वाली थी। वो भी मुस्कराकर बोली—"क्या आपको विश्वास है सर कि मैं आपकी शर्त को पूरी कर सकती हूं?"

"ये तो नहीं कह सकते हम। लेकिन आज तक किसी भी मां की बेटी ने हमारी शर्त पूरी करने का बीड़ा नहीं उठाया। दावेदार तो ना जाने कितनी ही आई—लेकिन केशव पण्डित के बारे में तमाम जानकारियां मिलने पर वो पीछे हट गईं—या

ढीली पड़ गईं। उनके इरादों के नट-बोल्ट ढीले पड़ गये। लेकिन तुमने केशव के बारे में सबकुछ जानते हुये भी हमारी शर्त पूरी करने का दावा किया। अभी भी हम तुम्हारी आंखों में आत्मविश्वास के घुमड़ते हुये बादल देख रहे हैं। तुम पक्के और मजबूत इरादे वाली हो।"

"आपके इस विश्वास के लिये आभारी हूं। दावा कर रही हूं कि आपकी शर्त पूरी करूंगी।"

"तबियत खुश कर दी तुमने क्रान्ति! हम भी ये चाहेंगे कि तुम अपने दावे और वादे पर पूरी और खरी उतरो। हम तुम्हारी कामयाबी की कामना करेंगे।"

"लेकिन एक प्रॉब्लम आ सकती है सर।"

"वो क्या? बेझिझक बोलो।"

"हिन्दुस्तान का कानून लचर है। मैं केशव पण्डित को कातिल तो साबित कर दूंगी। लेकिन उसके पिछले रिकॉर्ड को देखते हुये हो सकता है कि अदालत या जज उसे फांसी की बजाय उम्रकैद की सजा सुना दे।"

"हां, इस बात की तो पूरी-पूरी सम्भावना है।"

गिलास उठाकर और रेड वाइन की घूंट भरकर बोला यमराज—"वहां आम कातिल को फांसी की बजाय उम्रकैद की सजा सुना दी जाती है। केशव तो देशभक्त टाइप का है। कानून का पुजारी भी है। उसे चाहे उम्रकैद की भी सजा ना मिले। लेकिन वो अदालत में कातिल साबित हो जाये...बस! उस हरामजादे की सारी ऐंठ और अकड़ निकल जायेगी। कातिल साबित होने पर वो जीते-जी ही मर जायेगा। हम तो इतने से ही खुश हो जायेंगे।"

"तो फिर समझिये कि केशव पण्डित कातिल साबित हो जायेगा।"

"गुड...वैरी गुड! क्या कोई प्लान बना चुकी हो?"

"नहीं...अभी नहीं! पहले प्लास्टिक सर्जरी से अपना चेहरा बदलवाना है। फिर मुझे हिन्दुस्तान में छिपकर रहने की जरूरत ना होगी। पुलिस का कोई डर ना होगा।

केशव के सामने भी पड़ूंगी तो वो साला मुझे पहचान नहीं

सकेगा। आवाज बदलने में माहिर हूं मैं। इन्डिया पहुंचकर केशव के दैनिक क्रिया-कलापों का अध्ययन करूंगी। उसकी जासूसी करूंगी या कराऊंगी। जो भी जानकारी मिलेगी, उसी के मुताबिक ही प्लान बनाऊंगी।"

"तो हम शादी की तैयारियां शुरू कर दें? क्या बोलती हो?"

हंसी क्रान्ति और फिर यमराज की आंखों में झांकते हुये बोली—"शादी करूंगी यमराज से।"

❑❑❑

❑❑❑

बलवन्त सेठ ने एक फार्म हाउस के सामने कार रोकी और बोला—"चलो, बहू! ये ही है मुकेश के दोस्त आर्यन का फार्म हाउस! तुम्हारे पति को भी रहने के लिये यही जगह मिली थी। मैंने कहा था कि हैडक्वार्टर पर रह ले। वहां पर तमाम सुविधायें तो हैं ही, डॉक्टर भी उपलब्ध हो जाता है।"

"वो डरे हुये थे डैडी जी।" बलवन्त की बहू सुगन्धा पीछे का गेट खोलकर अपने दो वर्षीय बेटे सौभाग्य को गोद में लिये हुये बाहर निकलकर बोली—"उन्हें डर था कि पुलिस या केशव पण्डित हैडक्वार्टर पहुंचकर उन्हें पकड़ लेंगे इसीलिये वो यहां पर रह रहे थे। क्या पता था कि बुखार हो जायेगा। खैर, हमारे साथ डॉक्टर साहब हैं ही। ये उन्हें दवाई दे देंगे।"

अगली साइड के दरवाजे से बाहर निकलकर आया अधेड़ उम्र का डॉक्टर बोला—"डोन्ट वरी एम० पी० साहब! मुकेश बाबू ठीक हो जायेंगे।"

"लेकिन मैं उसे यहां नहीं छोड़ने वाला।" बलवन्त फार्म हाउस की तरफ बढ़ते हुये बोला—"इस जंगल में ताजा खाना भी नहीं मिलता होगा। उसका दोस्त इतनी दूर सुबह-शाम तो खाना लेकर आने से रहा। मुकेश हैडक्वार्टर पर रहेगा।"

बलवन्त के पीछे सौभाग्य के साथ सुगन्धा और वैनिटी बैग लिये डॉक्टर भी चल रहा था।

बलवन्त सेठ ने दरवाजा पीटा और जोर से बोला—"दरवाजा खोलो मुकेश बेटा! मैं हूं।"

थोड़ी देर बाद मुकेश ने दरवाजा खोला।

तेज बुखार की वजह से उसने कम्बल ओढ़ा हुआ था, फिर भी वो कांप रहा था, कराह रहा था।

"कैसे हो जी आप...?" सुगन्धा रूआंसी-सी होकर बोली—"जब से अभिनव भइया ने बतलाया, मैं परेशान हूं। रात होने की वजह से सुबह होने तक रुकना पड़ा। लगता है कि बहुत तेज बुखार है आपको।"

मुकेश ने अपने बेटे को सुगन्धा से ले लिया और उसके गालों को चूमकर बोला—"सौभाग्य और तुम लोगों को देखकर आधा बुखार तो उतर गया। आइये, भीतर आइये।"

वो लोग भीतर दाखिल हुये।

सुगन्धा ने सौभाग्य को ले लिया और डॉक्टर बैग से स्टेथेस्कोप निकालकर मुकेश का चैकअप करने लगा।

"अब तुम यहां नहीं रहोगे मुकेश।" बलवन्त सेठ सिगरेट सुलगाकर बोला—"तुम्हें हैडक्वार्टर पर रहना होगा।"

"नहीं, डैडी जी। मैं मुम्बई नहीं जाऊंगा। आप ऐसा कीजिये कि किसी बढ़िया सर्जन से मेरे चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करा दीजिये। फिर मैं या तो विदेश चला जाऊंगा—या फिर यहीं पर किसी दूसरे शहर में रह लूंगा।"

"नरक के बारे में क्या ख्याल है तेरा?"

❑❑❑

❑❑❑

उक्त आवाज ने मुकेश के साथ बलवन्त, सुगन्धा और डॉक्टर को चिहुंका दिया।

दरवाजे पर खड़े केशव को देखकर उनकी दशा ऐसी हो गई कि अगर आरे से काटा जाये तो खून की एक बूंद भी ना निकले।

नाग-सा सूंघ गया उन्हें।

राजन, करतार सिंह और राजीव...नहीं...कपिल के साथ भीतर दाखिल हुआ।

"प...पण्डित जी आप।" बलवन्त सेठ पसीने-पसीने होकर बोला—"आ...आप...यहां?"

"तुम क्या समझ रहे थे?" केशव उसकी आंखों में झांकते हुये बोला—"मुकेश से सम्बन्ध तोड़ने, इसके लिये फांसी की मांग करने का ड्रामा करके मुझे बेवकूफ बना लोगे? मुकेश की गिरफ्तारी के साथ ही तुम्हें वाच किया जा रहा था। तुम एडवोकेट पारस जैन से मिले तो क्लियर हो गया था कि तुम भीतरखाने मुकेश के साथ हो। पारस जैन को पकड़कर वाच किया मैंने तो मेरे अन्दाजे पर यकीन की मुहर लगा दी कि तुम माफिया डॉन हो। तुम्हें पहले भी पकड़ सकता था। लेकिन मुकेश को भी पकड़ना चाहता था। तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारी बहू सुगन्धा को भी वॉच किया जा रहा था। फोन भी सर्विलांस पर डाले गये थे। लेकिन तुम लोग फोन पर मुकेश से सम्पर्क नहीं कर रहे थे—ना ही मुकेश के फोन आ रहे थे। अब तुम लोग यहां आये तो पीछा करते हुये मैं यहां तक आ गया। अब तुम्हारा और तुम्हारे लाड़ले का खेल खत्म! ये जेल जायेगा और फांसी पर चढ़ेगा। तुम्हारा भी यही हस्र होगा बलवन्त सेठ। लेकिन पहले तुम्हें तुम्हारे हैडक्वार्टर पर ले जाया जायेगा। ताकि तुम्हारे खिलाफ ठोस सबूत मिल सकें और तुम्हारे तमाम आदमी भी पकड़े जा सकें।"

बलवन्त सेठ ने पिस्टल निकालने के लिये कोट की जेब में हाथ डाला ही था कि केशव ने उसकी कनपटी पर ऐसा प्रहार किया कि वो बेहोश होकर फर्श पर टपक गया।

□□□
□□□

चूंकि माफिया डॉन केशव के कब्जे में था तो उसे उसके हैडक्वार्टर तक पहुंचने में कोई दिक्कत या परेशानी नहीं आनी थी।

बलवन्त सेठ ने अपने होटल के नीचे ही अपना हैडक्वार्टर बनाया हुआ था। उसने स्वयं के लिये होटल के ही एक कमरे से गुप्त रास्ता बनवाया हुआ था, जिसके लिये कमरे में एक स्विच दबाने पर दीवार में गुप्त रास्ता खुल जाना था और फिर लिफ्ट थी, जो कि नीचे हैडक्वार्टर तक पहुंचा भी देती थी और

नीचे से ऊपर भी ले आती थी। जबकि गैंग के बाकी लोगों के लिये दूसरा रास्ता था—

होटल के सामने सड़क के पार एक मन्दिर था और उस मन्दिर के कुऐं से हैडक्वार्टर के लिये गुप्त रास्ता बना था।

केशव बलवन्त की कनपटी पर रिवॉल्वर लगाये हुये था और साथ में राजन, करतार सिंह, कपिल और पुलिस फोर्स भी थी। सभी गुन्डों ने चुपचाप सरेंडर कर दिया।

दो दर्जन गुन्डे, नकली नोट और नकली नोट बनाने वाले कम्प्यूटर, स्केनर, अन्य उपकरण, नोट बनाने के लिये ब्रिटेन से आयातित कागज, भारी मात्रा में स्मैक, हथियार, गोला-बारूद भी पुलिस के हाथ लगा।

एक स्टील की आलमारी में नकदी, हीरे-जवाहरात और ऐसी फाइलें भी मिलीं, जिनमें बलदेव सेठ के लिये काम करने वाले लोगों के फोटो समेत नाम-पते दर्ज थे और बलवन्त सेठ को माफिया डॉन भी साबित कर रही थी।

बलवन्त सेठ की गिरफ्तारी के साथ ही सत्ताधारी पार्टी ने उसे निष्कासित कर दिया।

कोर्ट में केशव को बलवन्त सेठ को और उसके आदमियों को मुजरिम साबित करने में जरा-सी भी कठिनाई नहीं हुई। अदालत ने बलवन्त सेठ को उम्रकैद की सजा सुनाई तो बाकी मुजरिमों को भी उनके जुर्मों के मुताबिक सजा सुना दी।

मुकेश को तो पहले ही फांसी की सजा सुनाई जा चुकी थी।

□□□
□□□

"हलो...!"

"हमें केशव पण्डित से बात करनी है।" क्रोध से सराबोर औरतों जैसी पतली आवाज।

"केशव ही बोल रहा हूं।" बंगले से अटैच्ड अपने शानदार ऑफिस में बैठा केशव मोबाइल फोन कान से लगाये हुये बोला, "लेकिन आप कौन हैं मोहतरमा...?"

"ऐ...हम मोहतरमा नहीं हैं...। हम एम० सी० हैं।"

"एम० सी०?"

"माफिया चीफ हैं हम।"

"ओह...समझा...!"

"क्या समझा तू ओये पण्डित?"

"मैंने माफिया डॉन बलवन्त सेठ की खटिया खड़ी कर दी है तो तुम्हारा पलंग भी हिल उठा है और पलंग के हिलने से दिमाग भी हिल उठा है। मुझे धमकियां देने को फोन किया है...क्यों माफिया चीफ—मैं ठीक बोला ना? दो धमकियां, बहुत से लोगों से धमकियां सुन-सुनकर बोर हो चुका हूं! लेकिन तुम्हें निराश नहीं करूंगा। तुम्हें जो भी धमकियां देनी हैं, दे डालो—मैं सुन रहा हूं।"

"हम धमकी नहीं देते! चेतावनी भी नहीं देते। अपने दुश्मन को वार्निंग दिये बिना ही खत्म कर देते हैं।"

"कमाल है! मुझसे तो फोन पर बात कर रहे हो।"

"तेरे प्रति बहुत क्रोध था हमारे दिमाग में—इसीलिये फोन कर दिया। इसे अपनी खुशनसीबी समझ कि तू यमराज जी की मेहरबानी से अभी तक बचा हुआ है। वरना हम तुझे बुरी मौत मरवा देते।"

"जानबख्शी के लिये शुक्रिया...!" व्यंगभरे लहजे में बोला केशव, "लेकिन इस खाकसार पर इतनी मेहरबानी क्यों? मेरी तो तुमसे या तुम्हारे यमराज से कोई रिश्तेदारी भी नहीं है।"

"यमराज जी ने एक प्रतिज्ञा की थी—जिसके बारे में उन्होंने कुछ दिन पहले टी० वी० पर दिये इन्टरव्यू में भी बतलाया था। वो चाहते हैं कि कोई लड़की तुझे कातिल साबित करे और वो उस लड़की से शादी करें। यमराज जी ने हमसे कॉन्टेक्ट करके कहा कि उनकी शर्त या प्रतिज्ञा की वजह से तुझे कुछ ना कहा जाये। यमराज जी का शुक्रिया अदा करना कि उनकी वजह से तू अभी तक जिन्दा है। लेकिन तू बचेगा नहीं। यमराज जी की बीवी बनने के लिये ना जाने कितनी लड़कियां पागल हुई जा रही होंगी। उनमें से कोई तो कामयाब होगी ही। तू मुजरिम साबित होगा। अगर तुझे फांसी की सजा सुनाई गई तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर तुझे फांसी की

बजाय उम्रकैद की सजा मिली तो फिर हम तेरा खात्मा करेंगे। तुझे जेल से निकलवाना हमारे बायें हाथ का खेल है। हमारे आदमी तुझे जेल से निकालकर हमारे हैडक्वार्टर पर लायेंगे—हमारे सामने पेश करेंगे। फिर हम तुझे अपने हाथों से मारेंगे।"

"तो फिर ऐसा करते हैं कि मैं तेरे हैडक्वार्टर पर आ जाता हूं। पता बतला दे। या फिर मैं कहीं और आ जाता हूं। वहां से तेरे आदमी मेरे हाथ बांधकर, आंखों पर काली पट्टी बांधकर या मुझे बेहोश करके तेरे पास ले आयेंगे। फिर तू अपने दिल के अरमान पूरे कर...।"

"नहीं! हमने ऐसा किया तो फिर यमराज जी की शर्त का क्या होगा? जब कोई लड़की यमराज जी की शर्त पूरी करेगी और अगर तुझे फांसी की सजा नहीं मिली तो फिर तुझे हमारे हाथों ही मरना होगा।"

इसी के साथ दूसरी तरफ से माफिया किंग ने फोन काट दिया।

केशव ने चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली और नीली आंखों को सिकोड़कर ना जाने क्या सोचने लगा?



मानो दुनिया के सबसे बड़े कलाकार ने दूध में मक्खन, शक्कर, नमक, शराब, शहद और गुलाब की पत्तियों को डालकर खूब घोंटा हो और फिर उससे नारी-प्रतिमा का निर्माण किया और फिर दुनिया बनाने वाले ने प्रसन्न होकर उस प्रतिमा में प्राण फूंक दिये हों।

कमानीदार भौहें, बोझिल पलकों वाली बड़ी-बड़ी और गुलाबी डोरों वाली ऐसी आंखें कि कोई भी एक बार उनमें झांककर देख ले तो मदहोश होकर डूबता और खोता ही चला जाये।

अवध की सुबह और शाम की लाली लिये गाल, शहद व शराब के पात्र में पड़ी लाल गुलाब की पंखुड़ियों से होठ।

राजहंस से सफेद व मोतियों की सी चमक लिये हुये छोटे-छोटे खूबसूरत दांत, जो लबों से कपाट खुलते ही देखने

वाले पर एक साथ बत्तीस आकाशीय बिजली गिरा डालें।

लम्बी सुराहीदार गर्दन!

उन्नत, पुष्ट, गुदाज वक्ष व पतली कमर वाले कूल्हे।

चौंकियेगा नहीं...वो क्रान्ति ही थी।

हां, क्रान्ति!

झुलसे चेहरे व जिस्म से मुक्ति पा चुकी क्रान्ति!

ये कमाल था डॉक्टर सुभाष गुप्ता की सर्जरी का—जिसने क्रान्ति का काया-कल्प ही कर दिया था और क्रान्ति ने खुश होकर तयशुदा फीस के अलावा बतौर इनाम पांच लाख रुपये और दिये थे।

एक महीना पहले क्रान्ति अंगारा के साथ अमेरिका से वापिस हिन्दुस्तान लौटी थी।

यमराज ने अमेरिका में ही बतला दिया था कि केशव पण्डित ने मुकेश के साथ उसके बाप बलवन्त सेठ को भी पकड़कर कानून के हवाले कर दिया था और बलवन्त सेठ के साथ उसके तमाम आदमियों को भी गिरफ्तार कराके और अदालत में सजा दिलवाकर केशव ने जेल भिजवा दिया था—उन लोगों में अंगारा का जेल का साथी मांगीलाल और क्रान्ति की दोस्त शान्ता बाई भी शामिल थी।

यमराज ने क्रान्ति को बहुत मोटी रकम दी थी और कहा था कि उसे प्लास्टिक सर्जरी भी करानी है और माफिया चीफ की मदद से मुम्बई में माफिया का साम्राज्य दोबारा कायम करके उसे डॉन की कुर्सी भी सम्भालनी है।

हिन्दुस्तान आने पर क्रान्ति ने यमराज के दिये ट्रांसमीटर पर माफिया चीफ से कॉन्टेक्ट किया और माफिया चीफ ने अपने आदमी मुम्बई भेज दिये थे। उनकी और अंगारा की मदद से क्रान्ति ने नया हैडक्वार्टर बनाया और इधर-उधर से मुजरिमों को इकट्ठा करके गैंग खड़ा किया और अंगारा को अपना कमांडर बनाकर उसे गैंग की जिम्मेदारी सौंपकर डॉक्टर गुप्ता के नर्सिंग होम में एडमिट हो गई थी। अप्सरा का-सा रूप लेकर वो हैडक्वार्टर पर पहुंची। अंगारा ने उसके स्वागत की तैयारियां की हुई थीं। हैडक्वार्टर को इलेक्ट्रिक, पेपर और फ्लावर

डेकोरेशन के जरिये दुल्हन की मानिन्द सजाया गया था और कई खूबसूरत मेल-फीमेल डांसर भी बुलवा रखे थे।

जमकर जश्न मना!

गैंग के तमाम लोगों ने डांस और शराब के साथ कबाब का भी लुत्फ लिया और स्वयं भी डी० जे० की धुनों पर जमकर नाचे।

❑❑❑

❑❑❑

"आपने मुझे याद किया मैडम जी?"

क्रान्ति ने भैंसासुर से अंगारा को देखा, फिर अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ बोली—"हां! दरवाजा बन्द कर लो।"

अंगारा ने उसकी आज्ञा का पालन किया।

सफेद रंग की झीनी-सी नाइटी में थी क्रान्ति।

नाइटी के भीतर अन्य कोई वस्त्र नहीं।

उसने अंगारा को सामने बिठाकर उसके साथ चार लार्ज पैग पीये और सिगरेट की दो डिब्बियां भी खाली कर दीं।

फिर वो उठी और बेबाकी के साथ अंगारा की गोद में सिर रखकर लेट गई। उसकी मोटी गर्दन में कृत्रिम बाहें डालकर उसकी आंखों में झांकते हुये होठों को जीभ से तर करने लगी।

"मैं...मैडम जी...!" झिझकते हुये बोला अंगारा, "कहां आप और कहां मैं? आप हंसनी तो मैं बदशक्ल गिद्ध! आपके पहलू में तो दुनिया का सबसे खूबसूरत राजकुमार होना...।"

क्रान्ति ने उसके स्याह व मोटे होठों पर हथेली रखी और फुसफुसाती-सी बोली—"जब मैं झुलसकर, हाथ-पैर खोकर डायन-सी बदसूरत हो गई थी तो तुमने मुझसे मुंह नहीं फेरा। एक वफादार सेवक और सच्चे दोस्त का उदाहरण पेश करते हुये मुझे खूब प्यार दिया। रेगिस्तान में उगे बबूल के पेड़ समान मेरे हुस्नो-शबाब को प्यार किया, अपनी मर्दानगी से सराबोर किया। प्यार की एक-एक बूंद को तरसती मेरी जवानी के मुरझा चले बाग पर सावन का बादल बनकर बरसे। अब इस बदले हुये जिस्म पर भी पहला हक तुम्हारा ही है। तुम्हारी वफादारी का इनाम। मुझे अपनी बाहों में उठा लो और बिस्तर पर ले चलो। आज की रात कयामत की रात होनी चाहिये। हसीन

और यादगार रात...कम ऑन अंगारा!"

और फिर अंगारा उसे बाहों में उठाकर बिस्तर पर ले गया और फिर...।

रात कब गुजर गई...पता ही नहीं चला!

लेकिन सुबह चौंका देने वाली और सोच में डाल देने वाली खबर लेकर आई।

गैंग के होटल के मैनेजर ने फोन पर क्रान्ति को खबर दी कि अमेरिका से मोनिका और ज्वैल नामक भाई-बहन आकर होटल में ठहरे हैं और दोनों स्वयं को यमराज का खासम-खास बतला रहे हैं।

❑❑❑
❑❑❑

क्रान्ति ने अंगारा को बैठ जाने का इशारा किया। सिगरेट में कश लगाकर हवा में धुंएं के ढेर सारे छल्ले छोड़ने पर वो बोली—"मैंने होटल के कमरे में माइक्रोफोन लगवा दिया था। ये व्यवस्था भी कर दी थी मोनिका और ज्वैल के दरमियान होने वाली तमाम बातें रिकॉर्ड होती रहें। मैंने जो टेप भेजी थी, उसे सुना मैंने और पता चल गया कि उस कुतिया का यहां आने का मकसद क्या है।"

"क्या मकसद है मैडम जी?"

"वो यहां यमराज की शर्त पूरी करने आई है।"

"क्या मतलब...?"

"मतलब ये कि वो केशव पण्डित को कातिल साबित करके यमराज से शादी करने की फिराक में है। तुम मुस्कराये क्यों अंगारा?"

"मोनिका की कम-अक्ली है मैडम जी...वो उस सुसरे केशव पण्डित को जानती नहीं कि वो कितना हरामी है। मोनिका के बस का रोग नहीं ये। यमराज की शर्त को तो आप...सिर्फ आप ही पूरी कर सकती हैं। आप ही पूरी करेंगी मैडम जी।"

"कम्पीटीटर को कभी कमजोर करके नहीं आंकना चाहिये अंगारा।" गम्भीर भाव से बोली क्रान्ति—"ये भी तो हो सकता है कि मोनिका का ऐसा कोई दांव लग जाये कि वो यमराज

की शर्त पूरी कर जाये। फिर अपना तो खेल ही खराब हो जायेगा। दुनिया का सबसे शक्तिशाली और अमीर आदमी अपने हाथ से निकल जायेगा।"

"ऐसा नहीं हो सकता मैडम जी।" पूरे आत्मविश्वास के साथ बोला अंगारा, "मोनिका अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकती। उसके पास आपकी टक्कर का दिमाग है ही नहीं।"

"चलो, माना कि वो अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पायेगी—लेकिन वो केशव पण्डित को अपने जाल में फंसाने की चेष्टा तो करेगी। उसकी चेष्टा से अपना प्लान तो प्रभावित हो सकता है। उसकी किसी हरकत ने केशव को होशियार कर दिया तो अपना गेम भी खराब हो सकता है। मैं नहीं चाहती कि मेरी और केशव की जंग के बीच में कोई भी आये।"

"तो फिर क्या करना है मैडम जी? हुक्म कीजिये।"

मानो कोई इच्छाधारी नागिन ही फुंफकारकर बोली—"मोनिका और उसके भाई ज्वैल को खत्म कर दो। लेकिन पूरी होशियारी के साथ। दोनों का कत्ल होटल में नहीं होना है। वो होटल से बाहर हों...तभी उन पर प्राणघातक हमला होना चाहिये। यमराज को ये मालूम नहीं होना चाहिये कि उन दोनों को हमने ही मारा है। अपने आदमियों को मवालियों के रूप में भेजना। वो दोनों बहन-भाई को लूटकर मारेंगे तो यही समझा जायेगा कि दोनों मुम्बई के लुटेरों का शिकार हो गये। हमारी बात समझ में आ रही है ना?"

❑❑❑
❑❑❑

और फिर क्रान्ति के प्लान के मुताबिक ही काम हुआ। मोनिका और उसका भाई ज्वैल एक मॉल में मूवी देखकर पैदल ही होटल लौट रहे थे।

आठ मवाली टाइप के चाकू, पिस्तौल, मोटर साइकिल की चेन, चॉपर व हॉकीधारी गुन्डों ने दोनों को घेर लिया और 'माल' मांगा।

दोनों ने विरोध किया तो उनको हॉकी, चेन से पीटा गया और फिर पिस्टल से एक-एक गोली भी मार दी। फिर उनके

पर्स और गहने वगैरा लूटकर वो लोग भाग निकले।

तमाशाई उनसे पहले ही भाग निकले थे।

खून से लथपथ दोनों भाई-बहन सड़क पर पड़े तड़पते रह गये।

लगभग घण्टेभर पश्चात् पुलिस की गाड़ी आई। कानूनी लिखा-पढ़ी के पश्चात् मोनिका और ज्वैल की लाशों को पोस्टमार्टम के लिये भिजवा दिया गया।

❑❑❑
❑❑❑

गोल्डन कलर के सूट वाले उस खूबसूरत युवक के चेहरे पर फ्रेन्चकट दाढ़ी थी और आंखों पर जो सन ग्लासेज वाला चश्मा था, वो सोने के फ्रेम वाला था।

हाथों की आठों उंगलियों में बेशकीमती नगीनों वाली अंगूठियां थीं।

कुल मिलाकर वो बहुत अमीर मालूम पड़ता था।

शाही अन्दाज में ही वो 'राधे लाल ज्वैलर्स' के आलीशान शोरूम में प्रविष्ट हुआ।

"वेलकम सर...!" काउन्टर के पीछे मौजूद सेल्समैन उसके व्यक्तित्व से इम्प्रेस होकर प्रोफेशनल स्माइल के साथ बोला—"व्हाट कैन डू आई फॉर यू सर?"

"मुझे कुछ खूबसूरत और अच्छी कीमत वाले डायमंड्स खरीदने हैं। बढ़िया-से-बढ़िया क्वालिटी वाले डायमंड्स दिखलाइये।"

"अवश्य सर! क्या लेंगे आप...ठन्डा कि गरम?"

"नो, थैंक्स!" वह शालीनता के साथ बोला—"शाम को मुझे अपनी मंगेतर से मिलने जाना है और उसे डायमंड्स गिफ्ट करने हैं। प्लीज, आप डायमंड्स दिखलाइये।"

"अवश्य, सर!"

सेल्समैन ने काउन्टर के एक ड्राअर से लाल सनील का डिब्बा निकालकर काउन्टर पर रखा और खोला।

झिलमिलाते, चमचमाते हुये सौ के लगभग बेशकीमती हीरे!

"हमारे शोरूम में ये सबसे बढ़िया...टॉप क्लास क्वालिटी डायमंड्स हैं...सर...!"

सर ने कोट में से पिस्टल निकालकर सेल्समैन पर फायर कर दिया...धांय!

"आ...आह...!" सीने से निकलते खून को हथेलियों से रोकने की चेष्टा करते हुये सेल्समैन ने हमलावर को आश्चर्य व अविश्वास भरी नजरों से देखा और फिर भरभराकर गिर पड़ा।

बाकी सेल्समैन, सेल्सगर्ल और कर्मचारी चीखते-चिल्लाते हुये इधर-उधर भागने लगे तो कुछ काउन्टर, मेज और कुर्सी के पीछे जा छिपे।

हमलावर ने डायमंड्स का डिब्बा उठा लिया और हवा में फायर करके तेज आवाज में बोला—"खबरदार! कोई गड़बड़ी नहीं करेगा! कोई शोर-शराबा नहीं...अगर मेरे करीब आने या मुझे पकड़ने की हिमाकत की तो भूनकर रख दूंगा।"

उसे किसी ने रोकने-टोकने की जुर्रत नहीं की, लेकिन...।

इत्तफाक की ही बात थी कि वो शोरूम से बाहर निकला और उधर पुलिस की वैन एक पान वाले की दुकान पर आकर रुकी। चार हवलदार और एक सब-इन्सपेक्टर दुकान पर पहुंचकर अपने वास्ते पान लगवाने लगे और सिगरेट सुलगाकर कश मारने लगे।

उधर सिक्योरिटी गार्डस् ने हमलावर पर बन्दूकें तानी ही थीं कि उसने दोनों के सीने में एक-एक गोली उतार दी।

गोलियों के धमाके और गार्डस् की चीखें सुनकर पुलिस वाले चौंके।

हालात समझते ही वो हथियार सम्भालकर हमलावर की तरफ दौड़े।

हमलावर ने एक फायर किया...धांय!

"आहऽऽऽ!" सीने पर गोली खाकर सब-इन्सपेक्टर सड़क पर गिरा और छटपटाने लगा।

हमलावर ने खाली हो चुकी पिस्टल को कोट की जेब में रखा और दूसरी पिस्टल निकालकर बाकी चार पुलिसवालों पर भी फायर कर दिये।

गोली खाने पर भी जख्मी सब-इन्सपेक्टर ने सड़क पर जा गिरी रिवॉल्वर उठाकर हमलावर पर फायर झोंक दिया...धांय!

हमलावर के कन्धे से खून की पिचकारी छूटी, लेकिन वो चीखा नहीं। जबड़ों को कसकर उसने सब-इन्सपेक्टर पर एक गोली और चला दी और फिर वहां से भाग निकला।

□□□

□□□

"आप टी० वी० स्क्रीन पर जिस युवक की फोटो देख रहे हैं, इसकी शक्ल पर मत जाइये। देखने में भले ही ये किसी ऊंचे खानदान का शरीफ आदमी लगता हो—लेकिन ये बहुत ही खतरनाक मुजरिम है। इसका नाम महेश त्यागी है। ये रहने वाला वो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिला गाजियाबाद का है, लेकिन इसका कार्य-क्षेत्र दिल्ली रहा है। वहां के हरेक थाने में इसकी हिस्ट्री शीट खुली हुई है। इसने ना जाने कितने कत्ल,अपहरण और बलात्कार किये। ये दो साल पहले गिरफ्तार हुआ था और दिल्ली कोर्ट ने इसे फांसी की सजा सुनाई थी। लेकिन अदालत में ही इसने एक पुलिसवाले की रिवॉल्वर छीनकर उसे गोली मार दी थी और फिर सजा सुनाने वाले जज को ही कवर कर लिया था और उसे बन्धक बनाकर भाग निकला था। बाद में जज की लाश ही मिली थी और महेश त्यागी गायब हो चुका था...।"

होटल के कमरे में क्रान्ति और अंगारा के सामने बैठकर सिगरेट पी रहे महेश त्यागी के होठों पर मक्कारी भरी मुस्कान थी।

जबकि कमरे के कोने में रखे टी० वी० पर न्यूज रीडर बोले जा रही थी—"दो साल बाद ये शख्स मुम्बई में दिखलाई दिया—वो भी एक बड़ी वारदात के साथ! इसने लारेंस रोड पर राधेलाल ज्वैलर्स के शोरूम में सेल्समैन को गोली मारकर पच्चीस करोड़ रुपये कीमत के हीरे लूट लिये। इसने ज्वैलरी शोरूम के दो सिक्योरिटी गार्डस् को ही नहीं, बल्कि एक सब-इन्सपेक्टर समेत पांच पुलिसवालों को भी मार दिया। कुल मिलाकर आठ

कत्ल और पच्चीस करोड़ के हीरों की लूट! महेश त्यागी के कन्धे पर गोली लगी है। पुलिस सभी हॉस्पिटल्स, नर्सिंग होम और सर्जन के क्लीनिक में पहुंची, लेकिन महेश त्यागी का कोई पता नहीं चला। महाराष्ट्र सरकार ने इस पर दस लाख रुपये का इनाम घोषित किया है।"

क्रान्ति ने रिमोट उठाकर टी० वी० ऑफ कर दिया और फिर रिमोट मेज पर रखकर व्हिस्की से भरा गिलास उठा लिया।

"ये इत्तफाक की ही बात है कि तुम हमारे होटल में ठहरे...।" व्हिस्की की घूंट भरकर बोली क्रान्ति—"मैनेजर ने तुम्हें पहचाना और हमें इन्फॉर्म कर दिया। हमारे गैंग में शामिल होकर हमारे लिये काम करोगे?"

"क्यों नहीं मैडम! अंगारा जी ने मुझे आपके बारे में जो बतलाया—उससे मैं काफी इम्प्रेस हुआ हूं। आप जैसी हस्ती की छत्र-छाया में काम करना मेरा परम सौभाग्य ही होगा! लेकिन कानून से बचने के लिये मुझे अपना हुलिया चेंज करना होगा! प्लास्टिक सर्जरी तो महंगी पड़ेगी। फेस मास्क, विग और कॉन्टेक्ट लैंसेज से ही बात बन जायेगी।"

"तुम चाहोगे तो प्लास्टिक सर्जरी हो जायेगी। डॉक्टर सुभाष गुप्ता हमारी समझ में दुनिया के सबसे अच्छे प्लास्टिक सर्जन हैं। हमारी सर्जरी भी उसी ने की थी। देख लो...हमें क्या से क्या बना दिया उन्होंने। ठीक है...अब तुम हमारे साथ हैडक्वार्टर चलोगे। अंगारा तुम्हें सारे काम समझा देगा। अच्छा ये तो बतलाओ कि दिल्ली से गायब होने पर तुम कहां रहे?"

मैं राजस्थान चला गया था मैडम! वहां मेरे मामा जी बहुत बड़े गैंगस्टर हैं। उनके साथ ही काम कर रहा था। लेकिन मुझे अपने दुश्मन से बदला लेना था—इसीलिये मुम्बई चला आया। सच बात तो ये है कि किसी के अन्डर में काम करना पसन्द नहीं है मुझे! लेकिन मेरा वो दुश्मन चालाक भी हैं और बहुत ताकतवर भी है। सो मुझे उससे टक्कर लेने के लिये आप जैसी हस्ती की जरूरत है। मेरे पीछे आप और माफिया की ताकत रहेगी तो मौका मिलते ही केशव पण्डित को पटखनी दे दूंगा।"

"केशव पण्डित!" चौंका अंगारा।

... ना चौंकी और बोली—"केशव पण्डित से क्या दुश्मनी है तुम्हारी?"

"दिल्ली में उसी हरामजादे ने ही तो मुझे पकड़कर पुलिस के हवाले किया था।" महेश त्यागी का चेहरा ही नहीं, स्वर भी सुलग उठा, "उसे मालदार आसामी समझकर रिवॉल्वर दिखलाकर उसे लूटने की कोशिश की थी। कम्बख्त ने ना जाने कब मुझसे रिवॉल्वर छीन ली थी और मुझ पर पिल पड़ा था। उसके हाथ-पैर सिन्नी फैन की पंखड़ियों जैसे तेज चल रहे थे। चाहकर भी उसका मुकाबला नहीं कर पाया था। हड्डी-पसली तुड़वाकर बेहोश हो गया था। होश में आया तो पुलिस कस्टडी में था। तभी से उस हरामजादे से इन्तकाम लेने को तड़प रहा हूं। अंगारा जी ने बतलाया है कि आपकी और केशव पण्डित की पुरानी अदावत है। यानि हम दोनों का दुश्मन एक ही है। आपकी मदद से मैं केशव पण्डित का काम तमाम कर दूंगा।"

"नहीं! काम तमाम नहीं करना है उसका। हमें यमराज जी की शर्त पूरी करनी है। केशव को कत्ल के इल्जाम में फंसाना है। दिमाग तो दौड़ा रही हैं हम, लेकिन अभी तक कोई बढ़िया प्लान नहीं बना पाई हैं।"

"दिमाग तो अपना भी बहुत तेज चलता है मैडम! खपाऊंगा दिमाग को...शायद मैं कोई बढ़िया प्लान बनाने में कामयाब हो सकूं। प्लान चाहे आप बनायें या मैं—लेकिन उस प्लान में मेरा रोल जरूर रखियेगा। आपका अहसानमन्द रहूंगा मैं...।"

क्रान्ति ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने घूंट-घूंट करके गिलास की तमाम व्हिस्की खत्म की और फिर सिगरेट सुलगाकर बोली "चलो त्यागी! अब हमें चलना चाहिये। बाकी की बातें हैडक्वार्टर पर चलकर होंगी। मिल-जुलकर प्लान बनायेंगे और केशव पण्डित को अपने जाल में फंसायेंगे।"

□□□
□□□

"आओ त्यागी...भीतर चले आओ।"

महेश त्यागी क्रान्ति के बेडरूम में प्रविष्ट हुआ! सफेद

नाइटी...झीने कपड़े वाली...भीतर दूसरे कपड़े के नाम पर एक धागा तक नहीं!

बिस्तर पर ही उठकर बैठ गई वो।

पीठ को बेड की पुश्त से टिकाकर पैर फैला लिये और बोली—"ऐसी क्या बात थी कि तुमने रात के साढ़े दस बजे हमसे मिलने की ख्वाहिश जाहिर की? फोन पर बोले कि जरूरी काम है, तुरन्त ही मिलना है...सो हमने बुलवा लिया तुम्हें। बोलो क्या बात है?"

"आपके लिये खुशखबरी है मैडम जी। मैंने ऐसा प्लान तैयार कर लिया है कि केशव पण्डित को कत्ल के इल्जाम में फंसाया जा सकता है।"

"रियली...!" क्रान्ति ने कृत्रिम पैरों को सिकोड़कर पहलू बदला और पैर बेड से नीचे लटकाकर उत्साह से भरी हुई बोली—"अगर ऐसा है तो तुरन्त ही अपना प्लान बतलाओ। जल्दी से...हम सुनने को बेकरार हैं। बैठ जाओ।"

महेश त्यागी सोफे पर बैठ गया और अपना प्लान समझाने लगा।

क्रान्ति आंखें बन्द करके पूरे मनोयोग से उसका प्लान सुन रही थी और समझ भी रही थी।

महेश त्यागी के होठ बन्द हुये और क्रान्ति की आंखें खुलीं।

वह उठकर महेश त्यागी के करीब पहुंची और उसका कन्धा थपथपाकर बोली—"तुम्हारा प्लान ठीक-ठाक ही है। अगर उस पर ज्यों-का-त्यों अमल हो जाये तो केशव पण्डित फंस सकता है।"

"वो फंसेगा मैडम...गारन्टिड फंसेगा। आप मेरे प्लान पर अमल करके तो देखिये।"

"हम इस प्लान की बाबत सोचेंगी। अभी तुम एक काम करो। सामने बार-काउन्टर है और बगल में ही फ्रिज में आइस-क्यूब्स हैं। तुरन्त ही दो लार्ज पैग तैयार करो।"

महेश त्यागी ने उठकर दो लार्ज पैग तैयार किये। घण्टे भर में उसने चार तो क्रान्ति ने पूरे आठ पैग उदरस्थ किये और

दोनों ने संयुक्त रूप से सिगरेट की दो डिब्बियां फूंक डालीं।

अचानक ही क्रान्ति उठकर महेश त्यागी की बगल में जा बैठी और उसके गले में बाहों का हार डाल दिया।

"मैं...मैडम...ये क्या...?"

"घबराता क्यों है?" क्रान्ति उसके होठों के करीब होठ लेजाकर फुसफुसाई—"तू जवान मर्द और हम जवान औरत! रात का वक्त और तन्हाई! तूने बढ़िया प्लान तैयार किया है—जिसके लिये तेरे को इनाम तो मिलना ही चाहिये। हमारे हुस्नो-शबाब से बढ़कर कोई इनाम हो सकता है क्या? झिझक मत! हमारे साथ बिस्तर पर चल और अपना इनाम वसूल ले।"

महेश त्यागी पहले तो हिचकिचाया, लेकिन फिर क्रान्ति को बाहों में उठाकर बेड पर पहुंच गया।

और फिर कमरे में सांसों का वो तूफान उठा कि जिस्म गरमाकर पिघलने लगे। पसीने की बरसात होने लगी।

क्रान्ति ने उस खेल में महेश त्यागी को पास कर दिया और उसे शाबाशी भी दी।

□□□
□□□

केशव के नौकर-नौकरानी रणछोड़ सिंह और लच्छो परमार सब्जी मन्डी से सब्जियां खरीदकर लौट रहे थे कि एक कार वाला दोनों को ठोककर चला गया।

केशव के पड़ोसी ने दोनों को नर्सिंग होम पहुंचाया और केशव को भी फोन कर दिया।

केशव सोफिया के साथ तुरन्त ही हॉस्पिटल पहुंचा और डॉक्टर से कहा कि रणछोड़ सिंह व लच्छो के इलाज में जरा-सी भी कोताही नहीं होनी चाहिये—बढ़िया इलाज होना चाहिये, भले ही कितना भी खर्चा हो जाये।

इत्तफाक से नर्सिंग होम वही था, जहां पर कि आशीर्वाद भी एडमिट था।

मरहम-पट्टी के पश्चात् रणछोड़ सिंह व लच्छो को आशीर्वाद वाले रूम में ही शिफ्ट कर दिया गया। केशव और सोफिया घर वापिस लौट रहे थे कि अचानक ही एक खूबसूरत

युवती कार के सामने आ गई।

केशव ने जब ब्रेक मारे तो कार और युवती के दरमियान मात्र छह इंच का ही फासला था—यानि टक्कर नहीं हुई थी फिर भी युवती बेहोश हो चुकी थी। उसे कोई चोट भी नहीं आई थी।

केशव ने उसे उठाकर कार की पिछली सीट पर लिटाया, जहां सोफिया ने युवती के चेहरे पर बिसलेरी की बोतल से ठन्डे पानी के छींटे मारे और उसके होश आने पर थोड़ा पानी भी पिलाया। बुरी तरह खौफजदा युवती ने अपना नाम रीता बतलाया। साथ ही ये भी बतलाया कि वो अनाथ है और दिल्ली अनाथ आश्रम में रहती थी। वहीं रहने वाले एक अनाथ लड़के मनोज ने उसको मुहब्बत के जाल में फंसाया और उसकी खूबसूरती का हवाला देकर फिल्मों में हीरोइन बनाने के ख्वाब दिखलाकर मुम्बई लाया था, लेकिन उसको कोठे पर बेचकर भाग गया। इससे पहले कि इसकी इज्जत पर कोई आंच आती, वो कोठे से भाग निकली थी। लेकिन कोठे के गुर्गे उसके पीछे पड़ गये थे और उसी हड़बड़ाहट में वो कार के सामने आ गई थी।

सोफिया ने अपना और केशव का परिचय देने पर रीता को ऑफर दिया कि वो उनके घर में नौकरी करे। उसे अच्छी सेलरी मिलेगी—साथ ही रहने को कमरा, कपड़े और खाना-नाश्ता सब मिलेगा।

रीता ने तुरन्त ही हामी भर दी।

हामी भरती भी क्यों नहीं—उसका मकसद यही तो था।

वो माफिया के लिये काम करती थी। उसका असली नाम भी रीता ही था, लेकिन वो क्रान्ति के हुक्म पर केशव के घर में दाखिल हुई थी।

□□□
□□□

"आपने मुझे बुलाया मैडम?"

सिंहासन-नुमा कुर्सी पर विराजमान क्रान्ति ने महेश त्यागी को देखा और फिर बैठ जाने का इशारा किया।

छोटे से हॉल में रखी बीस कुर्सियों में से अगली कतार वाली कुर्सियों में से एक पर बैठ गया महेश त्यागी और क्रान्ति को सवालिया नजरों से देखने लगा।

डॉन वाले हुलिये में ही थी क्रान्ति!

काली पैन्ट, काला ओवरकोट, आंखों पर गोल्डन फ्रेम वाला काला चश्मा और सिर पर हैट भी काले रंग का।

नकली पैरों में असली लैदर के चमचमाते हुये काले जूते।

"त्यागी...!"

"यस, मैडम...!"

"ये लो...!" क्रान्ति ने ओवरकोट की जेब से एक सी० डी० निकालकर दूर से उछालकर महेश त्यागी की गोद में डाली और फिर बोली—"रीता ने अपना काम शुरू कर दिया है। उसने पूरी सावधानी और होशियारी बरतते हुये हैन्डी कैम से केशव की वीडियो फिल्म तैयार करके भेजी थी। उसी फिल्म की सी० डी० तैयार कराई है हमने। इसे तुम्हें बार-बार देखना है। इस बात पर ध्यान देना है कि केशव के बोलने, चलने, बैठने, उठने, मुस्कराने, खाने-पीने, सिगरेट सुलगाने, सिगरेट पीने वगैरा-वगैरा का तरीका क्या है, कैसा है? फिर तुम्हें जमकर प्रेक्टिस करनी है। सिर्फ मास्क लगाने, मेकअप वगैरा करने से ही तुम केशव नहीं बन जाओगे। तुम्हें उसकी हर हरकत की भी कॉपी करनी होगी।"

"मैं कर लूंगा मैडम!"

"उसकी आवाज की नकल कर लोगे?"

"बिल्कुल, मैडम...!"

"लेकिन हमें यकीन कैसे हो?"

"आप ही बोलिये मैडम।"

"हमारी आवाज की कॉपी करके बतलाओ।"

और फिर महेश त्यागी ने क्रान्ति की आवाज की हू-ब-हू कॉपी करके उसे हैरत में डाल दिया।

"गुड...वैरी गुड! तुम तो किसी की भी आवाज की नकल करने में माहिर हो।"

"थैंक्यू, मैडम!" महेश त्यागी ने सिर झुकाकर आभार

व्यक्त किया और फिर बोला—"मैं केशव पण्डित की हर तरह से नकल कर लूंगा। लेकिन मुझे उसके फिंगर प्रिंट्स, जूते और रिवॉल्वर भी चाहिये। खास करके सबसे पहले तो केशव पण्डित के फिंगर प्रिंट्स चाहिये। उसके फिंगर प्रिंट्स वाले दस्ताने बनाने में वक्त भी लगेगा और मेहनत भी करनी होगी।"

रीता केशव द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं पर से फिंगर-प्रिंट्स ट्रेस करके जल्दी ही हमारे पास भेज देगी। उम्मीद है कि कल तक केशव के फिंगर प्रिंट्स आ जायेंगे। रीता सब्जी मन्डी में सब्जी खरीदने आयेगी और हमारे आदमी को केशव पण्डित के फिंगर प्रिंट्स के नमूने दे देगी। ये सी० डी० भी उसनें इसी तरीके से हम तक भिजवाई है।"

"जूते और रिवॉल्वर?"

"पहले हमें बली का बकरा तो मिल जाये। फिर कत्ल की तारीख, समय और स्थान मुकर्रर किया जायेगा। तब रीता हमें केशव पण्डित की रिवॉल्वर, जूते भी दे देगी और काम हो जाने पर वापिस केशव के घर पर पहुंचा भी देगी। अभी तुम इस सी० डी० को देखो और केशव की तमाम हरकतों की नकल करो। देखने वालों को लगना चाहिये कि तुम केशव पण्डित ही हो।"

"बिल्कुल लगेगा...केशव पण्डित भी अगर मुझे देखेगा तो उसके दिमाग की फिरकनी बन जायेगी।"

"गुड...वैरी गुड! हम केशव पण्डित से फोन पर बात करेंगी और उसे चैलेंज करेंगी कि हम यमराज की शर्त पूरी करने वाली हैं—उससे बचा जा सके तो वो बच जाये।"

"क्या ऐसा करना ठीक होगा मैडम? केशव पण्डित सावधान हो जायेगा। फिर हमारा प्लान फ्लॉप भी हो सकता है।"

"नहीं होगा! हम केशव को ये कहने का मौका नहीं देना चाहती कि वो धोखे में मारा गया—या उसकी पीठ पर वार किया गया। हम चैलेंज देकर यमराज की शर्त पूरी करेंगी और केशव को कोई भी सफाई देने का मौका नहीं देंगी। वो खिसियानी बिल्ली की तरह खम्भा नहीं नोच पायेगा। उसे अपनी शिकस्त

कबूलनी होगी और क्रान्ति के दिमाग का लोहा मानना ही होगा। हम शिखंडी बनकर नहीं, अर्जुन बनकर अपने दुश्मन को शिकस्त देंगी।"

□□□
□□□

केशव अपने शानदार और ए० सी० युक्त ऑफिस में बैठा एक केस की फाइल पढ़ रहा था कि शीशे के टॉप वाली टेबल पर रखे मोबाइल फोन से 'सारे जहां से अच्छा...हिन्दोस्तां हमारी' वाले गाने की मधुर धुन उभरने लगी। उसने फोन उठाकर स्क्रीन पर उभरे नम्बर को देखा , जो कि उसके लिये अन्जान ही था।

रिसीव वाला हरा बटन दबाने पर फोन कान से लगाने पर बोला–'हैलो...कौन?'

"मैं बोल रही हूं...हरामजादे!"

मानो किसी की प्रेमिका ने 'हाय जानू' बोल दिया हो, इसी अन्दाज में बुरा मानने की बजाय झील-सी नीली आंखों वाला मुस्कराया और बोला–"काफी दिनों बाद तुम्हारी आवाज सुन रहा हूं। ऐसी भी क्या नाराजगी थी कि इस बीच याद ही नहीं किया? क्या हम इतने गैर हो गये हैं? मुझे तो ये डर सताने लगा था कि कहीं तुम्हें कुछ हो ना गया हो। तुम्हारी कोयल-सी मीठी आवाज सुनकर कितनी खुशी हो रही है...बयान नहीं कर सकता।"

"क्या बात है...बहुत मस्ती सूझ रही है।" दूसरी तरफ से मानो कोई इच्छाधारी नागिन ही बोली हो, "कोई बड़ी लॉटरी लग गई है क्या?"

"तुम्हारा मुझसे बात करना किसी लॉटरी से कम है क्या?"

"मुझ पर इतना मेहरबान कैसे हो रहा है तू? मैं वो ही क्रान्ति हूं–जिसे तूने तेजाब से झुलसाया था और अपाहिज कर दिया था।"

"अगर तुम गन्दे-गन्दे काम करोगी तो सजा तो मिलेगी ही। अगर तुम स्वयं को कानून के हवाले करने जैसा बढ़िया काम करोगी तो तुम्हें इनाम में बढ़िया वाली लकड़ी की वो गाड़ी दूंगा, जिसमें बैठकर कोढ़ी या अपाहिज भिखारी भीख मांगते हैं।"

"केशव पण्डितऽऽऽ!"

"इतना तेज क्यों चीख रही हो? फेफड़े फट गये तो? हाथ-पैर तो पहले से ही नहीं हैं। खफा होने की क्या बात है? चलो, तुम भी क्या याद रखोगी। तुम्हें एक बुर्का भी दूंगा–ताकि तुम अपने बदसूरत जिस्म को छिपा सको। तो स्वयं को कानून के हवाले कब कर रही हो? अरे, मैं तो भूल गया कि तुम्हारे पैर नहीं हैं। तुम पुलिस स्टेशन तक कैसे पहुंचोगी? ठीक है...तुम ये बतला दो कि कहां पर हो? मैं तुम्हें लेने आ जाता हूं और कार में बिठाकर ही लाऊंगा।"

"अपनी बर्बादी को लाने की तैयारी कर साले...।"

"छीः! गन्दी बात! औरतों को गाली नहीं देनी चाहिये।"

"फोन पर सिर्फ गाली ही दे सकती हूं कुत्ते। लेकिन बहुत जल्द तुझे बर्बादी की प्लेट में खून के आंसू सजाकर दूंगी।"

"मन्जूर है। तुम मेरे घर आओगी–या मुझे तुम्हारे पास आना होगा?"

"ना मैं आऊंगी और ना ही तुझे आना पड़ेगा! मौत और तबाही के लिये किसी को कहीं आने-जाने की जरूरत नहीं पड़ती। तबाही और मौत स्वयं चलकर अपने शिकार तक पहुंच जाती है। मैं तबाही को तेरा एड्रेस देकर तेरे पास भेजूंगी।"

"यानि तुम्हारी दुम सीधी नहीं होगी। इतना कुछ होने पर भी सुधरी नहीं।"

"लेकिन तुझे जरूर सुधार दूंगी कमीने।" दूसरी तरफ से क्रान्ति मानो अंगारों पर लोटते हुये ही बोल रही थी, "ऐसा सुधारूंगी कि सात जन्मों तक भी भूल नहीं पायेगा। डर मत, जान से नहीं मारूंगी।"

"जान बख्शने के लिये बहुत-बहुत शुक्रिया!" केशव मखौल उड़ाने वाले अन्दाज में बोला, "वैसे इतनी बड़ी तोप कब से हो गई तुम? कहीं ऐसा तो नहीं कि यमराज जी लम्बी छुट्टी पर चले गये हों और भगवान ने यमराज की कुर्सी पर तुम्हें ही बिठा दिया हो।"

"टोंट मत कस ओये पण्डित।"

"तो फिर क्या करूं?"

"तेरे बुरे दिन शुरू होने जा रहे हैं। मैं चाहती तो गुपचुप तरीके से अपना काम कर सकती थी। लेकिन नहीं...पीठ पर वार नहीं करेगी क्रान्ति। धोखे से हमला नहीं करेगी। अपने दुश्मन को खुला चैलेंज देकर सबक सिखायेगी। तुझे होशियार करके ही इन्तकाम लूंगी।"

"लगता है कि तेरा दिमाग अपनी जगह से हिल गया है। या फिर उसके नट-बोल्ट ढीले हो गये हैं। तू अगर चाहे तो मैं तुझे किसी मेंटल हॉस्पिटल ले जाकर नट-बोल्ट टाइट करा दूंगा।"

"मैं पागल नहीं हुई हूं। मेरा दिमाग अपनी जगह पर है। उसके नट-बोल्ट भी कसे हुये हैं...।"

"फिर तुम किस दम पर मुझसे इन्तकाम लेने की बात कर रही हो? कौन-सी जादू की छड़ी तुम्हारे पास है, जिसके दम पर मुझसे इन्तकाम लोगी तुम?"

"तूने यमराज का नाम तो सुना ही होगा?"

"हां, सुना है, वो दुनिया का सबसे शक्तिशाली और दौलतमन्द मुजरिम माना जाता है।"

"सिर्फ माना ही नहीं जाता, बल्कि वो दुनिया का सबसे शक्तिशाली और दौलतमन्द मुजरिम है। दुनियाभर के मुजरिम उसके सामने सिर झुकाते हैं।"

"क्या वो यमराज तेरा रिश्तेदार निकल आया है?"

"रिश्तेदार तो नहीं है, लेकिन मेरा सगेवाला बनने जा रहा है वो।"

"भला वो कैसे?"

"उसकी और मेरी शादी होने वाली है। यमराज की बीवी बनने जा रही हूं मैं।"

"या तो तू बावली हो गई है, या फिर यमराज का भेजा घूम गया है। तेरे हाथ-पैर कटे हुये हैं। पूरा जिस्म तेजाब से झुलसकर बदसूरत हो चुका...।"

"यमराज को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे तो बस

उस औरत से शादी करनी है, जो उसकी शर्त पूरी कर देगी। जानता है कि क्या शर्त है उसकी? जो कोई भी केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित करके फांसी की सजा दिलवा देगी...यमराज उसी के साथ सात फेरे लेकर उसे अपनी धर्मपत्नी बना लेगा। मैं इस शर्त को पूरी करूंगी पण्डित। एक महीने के भीतर तू अदालत में कातिल साबित होगा और जज तुझे फांसी की सजा सुनायेगा...ये चैलेन्ज है मेरा ओये दिमाग के जादूगर! जिस कानून का पुजारी है तू...वो कानून ही तुझे कातिल करार देकर फांसी के फन्दे पर चढ़ायेगा।"

प्रत्युत्तर में केशव हंसा!

"ऐ...हंस क्यों रहा है तू साले?"

"हंसू नहीं तो क्या तेरी मूर्खता पर विलाप करूं? तू समुद्र के सारे पानी को एक ही घूंट में पी जाने जैसी ही बात कर रही है।"

"मुझमें इतनी कूव्वत है कि समुद्र के सारे पानी को पी सकती हूं।"

"लेकिन ख्वाब में। अपने देश में ख्वाब देखने पर कोई टैक्स नहीं लगता है। लेकिन ऐसे ख्वाबों को किसी दूसरे को बतलाकर अपना मखौल नहीं उड़वाया करते। वाकई में तुझे मेंटल हॉस्पिटल की जरूरत है। मुम्बई में ऐसा मेंटल हॉस्पिटल भी है, जहां पर कि इलाज का कोई पैसा नहीं लगता। तेरे लिये वो ही ठीक रहेगा।"

"मेंटल हॉस्पिटल की जरूरत तो तुझे पड़ेगी ओये पण्डित...!" दूसरी तरफ से क्रान्ति मानो प्रत्येक शब्द को जबड़ों की चक्की में गेहूं के दानों की मानिन्द ही पीसते हुये बोली, "जब तू अदालत में कातिल साबित होगा और खुद को निर्दोष साबित नहीं कर पायेगा तो तेरा सारा जादू गायब हो जायेगा और दिमाग ठप्प पड़ जायेगा। मैंने तुझे चैलेंज देकर अपना फर्ज पूरा कर दिया। अगर मेरे कोप से बच सकता है तो बच जाना...बाय...!"

"लेकिन मेरी बात...हैलो...।"

लेकिन दूसरी तरफ से फोन काटा जा चुका था। गुलाबी

होठों पर मुस्कान का वर्क सजाये हुये केशव ने चारमीनार मार्के वाली सिगरेट सुलगा ली और रिवॉल्विंग चेयर की पुश्त से सिर का पृष्ठ भाग टिकाकर कश-पर-कश मारने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

बिल्लौरी आंखों वाला इन्सपेक्टर अनिल यादव सूचना पाते ही अपने कुछ मातहतों के साथ घटनास्थल पर पहुंचा था।

एक हरे रंग के शानदार बंगले के बाहर चालीस वर्षीय व्यक्ति की लाश पड़ी थी।

उसके जिस्म में पूरी छह गोलियां उतारी गई थीं। उस हरे बंगले पर तो ताला लगा हुआ था। अनिल यादव ने एस० आई० और हवलदारों को भेजकर आस-पड़ोस वालों को बुलवा लिया और उनसे पूछताछ की।

हर किसी का एक ही जवाब था कि सो रहा था। फायरिंग सुनकर उनकी नींद टूटी। वो और उसके परिजन मारे खौफ के बिस्तरों में ही दुबके रहे। बाद में खिड़की खोलकर या घर की छत पर जाकर देखा तो सिर्फ लाश ही देखने को मिली--कातिल नजर नहीं आया था। मौहल्ले की चौड़ी गली ही थी, इसलिये वहां ट्रैफिक ही चलता था। मौहल्ले का कोई बन्दा ही स्कूटर, बाइक या कार से आ जाये तो आ जाये। सो इस वक्त वो सम्भावना कम ही थी कि किसी ने उस कत्ल को होते देखा होगा।

चूंकि इलाके के लोगों ने मृतक की शिनाख्त नहीं की थी, इसलिये सम्भावना यही थी कि मृतक उस इलाके का ना होकर दूसरे किसी इलाके का ही रहने वाला था।

अनिल यादव ने केशव के गुरु रमाकान्त की बेटी माधवी को फोन कर दिया।

माधवी टी० वी० चैनल की टीम के साथ आ पहुंची। उसने कैमरे के सामने हाथ में माइक लिये हुये कत्ल की बाबत बतलाया और साथ ही लाश को भी दिखला दिया।

अनिल यादव ने माधवी को बुलाया ही इसलिये था कि उसके टी०वी० चैनल पर लाश को देखकर उसके घरवाले,

रिश्तेदार या जान-पहचान वाले उसके पास आयेंगे और उसे मृतक के बारे में पूरी जानकारी मिल जायेगी।

सुबह-सवेरे ही अड़तीस वर्षीय महिला अपनी पन्द्रह, तरेह, ग्यारह और नौ वर्षीय बेटियों के साथ रोते-बिलखते हुये, विलाप करते हुये आ पहुंची। साथ में उसके कुछ पड़ोसी भी थे।

उस महिला का नाम अनीता था, जो कि टी० वी० पर अपने पति दिनेश की लाश को देखकर ही पुलिस स्टेशन आई थी।

अनिल यादव ने अनीता से पूछताछ की तो मालूम पड़ा कि दिनेश एक स्पेयर पार्टस् बनाने वाली फैक्ट्री में मैकेनिक की नौकरी किया करता था। लगभग तीन साल पहले वो अपनी चारों बेटियों के साथ अपने मायके गई हुई थी तो उसके पीछे दिनेश एक कालगर्ल को घर ले आया था। उसके बाद उसकी तबियत खराब रहने लगी थी तो चैकअप के पश्चात् दिल दहलाने वाली रिपोर्ट मिली कि वो लाइलाज एच० आई० वी० पोजेटिव का शिकार हो चुका है। इलाज चला, लेकिन वो एड्स की बीमारी से कमजोर होता चला गया था और फैक्ट्री में काम करने के योग्य नहीं रह गया था—लिहाजा उसे फैक्ट्री से निकाल दिया गया था।

सालभर से बेरोजगार था दिनेश।

अनीता सिर्फ पांचवी क्लास पास थी—सो उसे कहीं भी नौकरी मिलने का सवाल नहीं उठता था। वो लोगों के घरों में झाड़ू, चौका-बर्तन व कपड़े धोने का काम करती थी। उसकी बेटियां लेडिज टेलर्स के यहां से कपड़े लाकर काज, बटन, तुरपाई करती थीं।

बड़ी मुश्किल से चारों बेटियों की पढ़ाई और घर का खर्चा चल पा रहा था—ऊपर से दिनेश का इलाज भी चल रहा था।

दिनेश शाम के बाद घर से बाहर नहीं निकलता था। लेकिन कल वो दोपहर को घर से निकला तो फिर वापिस ना लौटा। मालूम नहीं कि वो रात के दो बजे घर से दस किलोमीटर दूर उस अन्जान मौहल्ले में क्यों गया था। और उसे किसने कत्ल कर दिया था?



और अभी-अभी हमें जो खबर मिली है, वो यूं तो पूरे देश को ही चौंका देगी, लेकिन मुम्बई के निवासियों को तो बुरी तरह चौंका डालेगी।

टी० वी० स्क्रीन पर मौजूद न्यूज रीडर स्वयं ही आश्चर्य तथा अविश्वास से घिरी दिखलाई पड़ रही थी—"थोड़ी देर पहले ही किसी बुर्केवाली महिला ने एक बच्चे के हाथों एक सी० डी० हमारे स्टूडियो में भिजवाई। उस सी० डी० में जो फिल्म है वो अविश्वासनीय है। लेकिन वीडियो फिल्म को भी तो नहीं झुठलाया जा सकता। कल हमने आपको दिनेश शर्मा के कत्ल का समाचार दिया था, जिसे मोहन नगर की गली नम्बर चौदह में छह गोलियां मार दी गई थीं। चार नाबालिग बेटियों का पिता दिनेश शर्मा नेहरू नगर का रहने वाला था और एड्स का मरीज था। उसी दिनेश शर्मा के कत्ल से सम्बन्ध रखती फिल्म ही हम आपको दिखलाने जा रहे हैं। कृपया दिल थामकर ही इस फिल्म को देखियेगा। तो ये रही वो फिल्म...।"

और फिर टी० वी० स्क्रीन पर से न्यूज रीडर का चेहरा विलुप्त हो गया और हाथ में चाकू लिये दिनेश शर्मा दिखलाई दिया, जो कि सामने खड़े काले सूट वाले व्यक्ति से बोल रहा था—"अगर अपनी जान की खैर चाहते हो तो अपनी अंगूठियां, घड़ी उतारकर मुझे दे दो। जेब में पर्स भी होगा—वो भी निकालकर दे दो।"

"किसी महिला का फोन आया था कि उसके ससुराल वाले दहेज के लिये उसको मारने की चेष्टा कर रहे हैं। किसी तरह उसने खुद को कमरे में बन्द कर लिया है। मैंने उससे कहा था कि दूरी ज्यादा होने की वजह से मुझे उसके घर तक पहुंचने में देरी हो जायेगी, इसलिये वो पुलिस को फोन कर दे। लेकिन वो बोली थी कि मोबाइल की बैट्री डाउन है। मुझसे बात करते-करते बैट्री की वजह से उसका फोन बन्द हो गया था। उसके बतलाये पते के मुताबिक ये हरे वाला बंगला होना चाहिये।"

"लेकिन बंगले के फाटक पर तो ताला लगा है।"

"वो तो मैं भी देख रहा हूं प्यारे। शायद किसी ने मुझे बेवकूफ बनाया था। खैर, तुम ये बोलो कि मुझे क्यों लूटना चाहते हो तुम? देखने में तो भले और शरीफ आदमी मालूम पड़ रहे हो।"

"था तो शरीफ ही...!" हाथ में चाकू लिये हुये दिनेश शर्मा खुरदरे-से लहजे में बोला, "लेकिन मैं एड्स का मरीज हूं। इस जानलेवा बीमारी की वजह से मुझे नौकरी से निकाल दिया गया। अब तो इतनी कमजोरी आ गई कि मेहनत-मजदूरी कर ही नहीं सकता हूं। मेरी बीवी और चार बेटियां मेहनत-मजदूरी करके खर्चा चला रही हैं। बेटियों की स्कूल की फीस नहीं गई। उनका नाम काट दिया जायेगा। मजबूर होकर मैंने चाकू उठा लिया। दिन से रात हो गई—लेकिन कोई शिकार नहीं फंसा। तुम पहले शिकार हो। नई कार से आये हो, मालदार लगते हो। तुम्हें लूटकर बेटियों की फीस भर सकूंगा और मकान का साल भर से रुका हुआ किराया भी भर सकूंगा।"

"कल सुबह मेरे घर आ जाओ। मैं तुम्हारी मदद करूंगा। तुम्हें ऐसी नौकरी भी दिलवा दूंगा कि तुम्हें कोई मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। लूटपाट करना अच्छी बात नहीं। जुर्म करोगे तो जेल जाना पड़ेगा। फिर तुम्हारी बीवी और बेटियों का क्या होगा।"

"बकवास नहीं ओये! चुपचाप मुझे अपनी अंगूठियां, घड़ी और पर्स समेत जेबों का सारा माल दे दे—नहीं तो चाकू मार दूंगा।"

"तुम चाकू नहीं मार सकते मुझे। जानते नहीं हो कि मैं कौन हूं?"

"तो तुम शराफत से नहीं मानोगे। कोई बात नहीं मैं तुम्हें कत्ल कर देता हूं। तुम्हें मारकर तुम्हारा माल लूटकर चलता बनूंगा।" कहने पर दिनेश चाकू को लहराते हुये आगे बढ़ने लगा।

काले सूट वाला स्वयं को बचाने के लिये पीछे हटने लगा और बोला, "ऐ भाई...मान जा—वरना तू बहुत पछतायेगा।

अगर मैं अपनी पर आ गया तो तुम्हारी खाल में भुस भर दूंगा।"

इतने में दिनेश ने सड़क पर पड़ी आधी ईंट उठा ली और कोटवाले पर खींच मारी।

ईंट उसके कन्धे पर लगी तो हौले से चीखकर उसने कोट की जेब से रिवॉल्वर निकाल ली और दिनेश शर्मा पर तानकर बोला—"रुका जा! अगर तू आगे बढ़ा तो भून डालूंगा। जान की खैर चाहता है तो फौरन ही पलटकर भाग...।"

लेकिन दिनेश चाकू को हवा में हमला करने वाले अन्दाज में उठाकर काले सूट वाले पर झपट पड़ा।

धांय...धांय...धांय...!

धांय...धांय...धांय...!

लगातार छह गोलियां चलीं।

मारे पीड़ा के चीखते दिनेश शर्मा के सीने और पेट पर बने छह सूराखों से धुएं की लकीरों के साथ खून की पिचकारियां निकलती दिखलाई पड़ीं।

"समझाया था ना तुझे...!" सूटवाला क्रोध से भरा हुआ बोला—"लेकिन नहीं माना तू! मुझे गोलियां चलाने पर मजबूर कर ही दिया।"

दिनेश शर्मा सड़क पर गिरा और तड़पने लगा।

सूटवाला पलटा! तो उसका चेहरा दिखलाई दिया!

केशव पण्डित!

हां, केशव ही था वो।

उसने कोट की जेब में रिवॉल्वर रखने के बाद पैर से ठोकर मारकर सड़क पर पड़े दिनेश शर्मा के चाकू को नाली में पहुंचा दिया। फिर कोट की जेब से चारमीनार की डिब्बी व गोल्डन कलर का लाइटर निकालकर एक सिगरेट सुलगा ली और नजदीक ही खड़ी सफेद रंग की मारुति कार की तरफ बढ़ा।

कार की नम्बर प्लेट पर अंकित नम्बर भी साफ-साफ नजर आया।

केशव ने कार का ड्राइविंग साइड वाला गेट खोला और भीतर सीट पर बैठकर गेट बन्द कर लिया।

कार स्टार्ट की और उसे दौड़ा दिया।

फिल्म बनाने वाले ने कैमरे को घुमाया तो बैक साइड में लगी प्लेट पर नम्बर दिखलाई दिया।

इसी के साथ फिल्म खत्म और टी० वी० स्क्रीन पर न्यूज रीडर का चेहरा दिखलाई दिया।

□□□

□□□

एक कमरे में बैठे क्रान्ति, अंगारा और महेश त्यागी सिगरेट के साथ रेड वाइन पी रहे थे और मुंह का स्वाद ठीक करने के लिये मसालेदार तले हुये काजू भी चबा रहे थे।

तीनों की नजरें टी० वी० पर थीं, जिस पर न्यूज चैनल चल रहा था।

इन्सपेक्टर अनिल यादव ने पुलिस कमिश्नर के ऑफिस में जाकर अपना इस्तीफा दे दिया। वहां मौजूद हमारे संवाददाता कुमार स्वामी ने इन्सपेक्टर अनिल यादव से इस्तीफे का कारण पूछा तो उन्होंने जवाब दिया—

टी० वी० स्क्रीन पर उदास चेहरे वाला अनिल यादव दिखलाई पड़ा, जो कि बोल रहा था—"हालांकि पण्डित जी मुझे दोस्त का दर्जा देते हैं—लेकिन वो मेरे लिये गुरु का दर्जा रखते हैं। जब भी कोई उलझा हुआ केस सामने आया तो पण्डित जी ने ही मेरी मदद की। इन्वेस्टीगेशन करके उन्होंने मुजरिम को सबूतों के साथ पकड़कर मेरे हवाले किया। उनके साथ रहकर मैंने बहुत कुछ सीखा। खास करके इन्वेस्टीगेशन के बारे में। मैं आज जो कुछ भी हूं...सब उनकी ही बदौलत! बहुत अहसान हैं उनके मुझ पर।"

"लेकिन आप कानून के रखवाले हैं यादव साहब, किसी भी मुजरिम को गिरफ्तार करना आपका फर्ज बनता है।" पूछने पर रिपोर्टर ने माइक को अनिल यादव के मुंह के सामने कर दिया।

"पण्डित जी कानून के पुजारी हैं। उनके दुश्मनों को छोड़ कोई भी व्यक्ति नहीं मानेगा कि वो छोटा-सा भी जुर्म कर सकते हैं। उन्हें किसी ने साजिश का शिकार बनाया है। हथियारबन्द मुजरिमों से पण्डित जी निहत्थे ही निपटने में माहिर हैं। जबकि

दिनेश शर्मा तो मुज़रिम भी नहीं था। वो पहली मर्तबा लूट की वारदात करने निकला था और उसके पास चाकू था। उसके हाथों में ए० के० छप्पन भी होती तो पण्डित जी स्वयं को बचा ले जाते और दिनेश शर्मा से ए० के० छप्पन भी छीन लेते। वो किसी भी कीमत पर दिनेश शर्मा को गोलियां नहीं मारते। एक निर्दोष व्यक्ति को गिरफ्तार करने का गुनाह मैं नहीं कर सकता, इसीलिये इस्तीफा दे आया हूं। उस फिल्म में कोई नकली पण्डित है।"

"लेकिन वीडियो फिल्म में पण्डित जी की कार भी दिखलाई गई है।"

"कार भी नकली है। सफेद रंग की कार पर पण्डित जी की कार वाले नम्बर की प्लेट लगा देना कौन-सी बड़ी बात है।"

"लेकिन पण्डित जी जैसे कानून के इतने बड़े खिलाड़ी को कोई कैसे फंसा सकता है?"

"साजिश रचने वाले ने पण्डित जी का इस्तेमाल कहां किया? पण्डित जी तो अपने घर पर सो रहे होंगे। नकली कार और नकली पण्डित का इस्तेमाल करके वीडियो फिल्म बना ली गई। पण्डित जी कोई भगवान या अर्न्तयामी तो हैं नहीं कि उन्हें पता चल जाता कि उनके खिलाफ फिल्म तैयार की जा रही है। वो अदालत में स्वयं को निर्दोष साबित कर देंगे। ये चैलेंज है मेरा... ।"

"तो ये थे इन्सपैक्टर यादव, जो कि पण्डित जी को मुजरिम मानने को कतई भी तैयार नहीं हैं। यहीं पर पुलिस कमिश्नर मिस्टर देशमुख भी मौजूद हैं। आइये उनसे बात करते हैं।" कहने पर संवाददाता हाथ में माइक लिये हुये चन्द कदम चला और अधेड़ उम्र के पुलिस कमिश्नर के पास पहुंचकर बोला—"इन्सपेक्टर यादव ने पण्डित जी को निर्दोष बताते हुये इस्तीफा दे दिया, ताकि उन्हें पण्डित जी को गिरफ्तार ना करना पड़े। आपका क्या ख़्याल है देशमुख साहब?"

"मैं पण्डित जी को व्यक्तिगत रूप से जानता हूं। मैं ही क्या...मुम्बई के तमाम लोग जानते हैं उन्हें। मेरा दिल नहीं मानता कि पण्डित जी किसी की हत्या कर सकते हैं।"

"पण्डित जी ने हत्या की या नहीं, इसका फैसला तो अदालत ही करेगी। क्या आप अपने दायित्व का निर्वाह करेंगे?"

"अपने कर्तव्य का पालन तो करेंगे ही। मैंने एस० पी० हितेश कुलकर्णी को आदेश दे दिया है कि वो पण्डित जी को हिरासत में ले लें। पण्डित से पूछताछ की जायेगी और फिर पुलिस इन्वेस्टीगेशन करेगी।"

"शायद पण्डित जी स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिये स्वयं ही इन्वेस्टीगेशन करें। क्या पुलिस उन्हें इन्वेस्टीगेशन करने की छूट देगी?"

"ये मामला कत्ल का है। पुलिस को ये अधिकार नहीं है। इसके लिये पण्डित जी को अदालत से ही परमिशन लेनी होगी। ये अदालत के हाथ में है कि वो पण्डित जी को जमानत देती है कि नहीं? एक्सक्यूज मी।"

"तो ये थे कमिश्नर देशपाण्डे।"

क्रान्ति ने रिमोट उठाकर टी० वी० का वॉल्यूम जीरो पर कर दिया और रेड वाइन की घूंट भरकर बोली—"हम नहीं समझती कि अदालत केशव को इन्वेस्टीगेशन करने का मौका देगी। तुम्हारा क्या ख्याल है त्यागी?"

"अगर अदालत पण्डित को मौका दे भी दे तो वो साला कुछ भी नहीं कर पायेगा मैडम।" दिनेश त्यागी ख़ाली गिलास मेज पर रखकर और सिगरेट में कश मारकर बोला—"आपने निम्मी बनकर पी० सी० ओ० से पण्डित को फोन किया। तब आप बुर्के में थीं। आपने केशव को विश्वास दिलाया कि आपकी जान खतरे में है और आपके ससुरालिये आपकी जान लेने पर आमादा हैं। आपने ये भी बोल दिया था कि आपके मोबाइल की बैट्री खत्म होने वाली है। केशव आपके बतलाये पते पर पहुंचा। उस मकान में रहने वाला परिवार अमेरिका गया हुआ है। केशव वहां पहुंचा तो बंगले के फाटक पर ताला लगा हुआ पाया। मैंने स्पेशल गन से केशव की गर्दन पर ऐसा पिन चलाया, जो कि बेहोश कर देने वाली दवा से भरा था। केशव बेहोश हो गया था। उसे मैंने करीब ही खड़ी अपनी कार में डिक्की में बन्द कर दिया था। फिर वीडियो कैमरा ऑन हुआ और मैं

केशव पण्डित के रूप में दिनेश शर्मा के सामने पहुंचा।"

अपनी बात को रोक महेश त्यागी ने बोतल उठाकर खाली गिलास में वाइन डाली और सोडा या पानी मिलाये बिना ही उसकी घूंट भरने पर बोला—

"जैसा कि मैंने आपको पहले भी बतलाया था कि दिनेश शर्मा ने समन्दर में डूबकर खुदकुशी करने की चेष्टा की थी, लेकिन मैंने उसे बचा लिया था। दिनेश ने अपनी एड्स की बीमारी और घर की माली हालत के बारे में बतलाया था। उसे दस हजार रुपये देकर उसके घर तक छोड़ने गया था मैं। इसके पीछे मेरा मकसद यही था कि जरूरत पड़ने पर दिनेश शर्मा का इस्तेमाल करूंगा। सो वो मौका भी आया। दस लाख रुपये के बदले दिनेश शर्मा अपनी जान देने को राजी हो गया। केशव के रूप में मैंने उसे गोलियां मार दीं और फिर केशव की कार में बैठकर वहां से जाने का नाटक किया। वीडियो कैमरा बन्द होने पर मैंने बेहोश केशव को उसी की कार में बिठा दिया था। वहां पर रीता भी मौजूद थी। उसे मैंने केशव के जूते और रिवॉल्वर दे दी थी। रीता ने जूते और रिवॉल्वर केशव के कमरे में रख दिये होंगे। केशव का बेटा आशीर्वाद नर्सिंग होम में एडमिट है और सोफिया की ड्यूटी आशीर्वाद के पास रहने की थी। इसलिये रीता को केशव के बेडरूम में दाखिल होकर रिवॉल्वर और जूते रखने में कोई दिक्कत नहीं हुई होगी! रीता ने हमें केशव के फिंगर प्रिंट्स उपलब्ध करा दिये थे और मैंने वो फिंगर प्रिंट्स दस्तानों पर ट्रेस कर दिये थे और वो दस्ताने पहनकर ही दिनेश को गोलियां मारीं। जानबूझकर दिनेश के खून पर पैर रखे, ताकि केशव के जूतों के सोल पर खून लग जाये। रिवॉल्वर और कार पर केशव के ही फिंगर प्रिंट्स पाये जायेंगे। केशव चाहे जितने भी जोर लगा ले, लेकिन वो खुद को निर्दोष साबित नहीं कर पायेगा।"

"लेकिन मैडम जी!" काफी देर से चुप बैठा अंगारा बोला—"केशव को अगर रीता पर शक हो गया तो वो रीता से हकीकत उगलवा लेगा और उसे बतौर गवाह इस्तेमाल कर सकता है।"

क्रान्ति होठों पर कुत्सित किस्म की मुस्कान सजाकर बोली—"वो जिन्दा होगी तो ना? उसका राम नाम सत्य हो चुका होगा।"

"क...क्या मतलब?"

"मतलब ये कि रीता खुदकुशी कर चुकी होगी। तुम तो जानते ही हो कि रीता को ब्लड कैंसर था और वो कई बार खुदकुशी करने की इच्छा जाहिर कर चुकी थी। लेकिन हमने उसको रोका हुआ था।"

"ले...लेकिन रीता के खुदकुशी करने पर तो केशव को ये कहने का मौका मिल जायेगा कि उसके खिलाफ साजिश रचने वाले ने रीता का इस्तेमाल किया और फिर उसको मार दिया।"

"केशव को ऐसा कोई मौका नहीं मिलने वाला है अंगारा! रीता ने सूसाइड नोट में लिखा होगा कि उसे ब्लड कैंसर था, जिसकी तकलीफ उससे बर्दाश्त नहीं हो रही थी—इसीलिये वो खुदकुशी कर रही है। रीता ने भीतर से दरवाजा बन्द करके अपनी कलाइयों की नसें काटी होंगी। यही साबित होगा कि उसने खुदकुशी की है। केशव ये साबित नहीं कर सकता कि रीता का कत्ल किया गया है। वो रीता पर कोई इल्जाम लगा भी ले—लेकिन साबित कुछ नहीं कर पायेगा। हमने और त्यागी ने बहुत सोच-समझकर प्लान बनाया था, जिस पर ज्यों-का-त्यों अमल हुआ है। केशव दिनेश शर्मा का कातिल साबित होगा ही होगा और उसे सजा भी मिलेगी। हमारी शादी दुनिया के सबसे अमीर और शक्तिशाली आदमी यानी यमराज के साथ होकर ही रहेगी। बस, देखना ये है कि केशव कब तक मुजरिम साबित होता है और उसे क्या सजा मिलती है?"



एस० पी० हितेश कुलकर्णी केशव के घर पहुंचा तो केशव ने उससे सवाल किया कि अनिल यादव क्यों नहीं आया?

कुलकर्णी ने अनिल यादव के इस्तीफे की बाबत बतलाया तो केशव ने अनिल यादव को फोन किया और उसको अपनी

सौगन्ध देकर कहा कि वो कमिश्नर के पास जाकर अपना इस्तीफा वापिस ले और तुरन्त ही उसको हिरासत में लेने के लिये उसके घर पर चला आये।

केशव ने चांदनी से कहा कि वो रीता को चाय बनाने को बोले।

चांदनी ही एस० पी० कुलकर्णी, उसके साथ आने वाले पुलिस वालों और केशव के लिये चाय, नमकीन और बिस्किट लेकर आई। उसने बतलाया कि रीता के कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द है और कई बार पुकारने पर भी उसने कोई जवाब नहीं दिया।

केशव ने पहले पुलिसवालों के साथ चाय पी और फिर रीता के कमरे पर पहुंचा। उसने रीता को पुकारा भी और दरवाजा भी पीटा—लेकिन भीतर से कोई जवाब नहीं मिला।

केशव ने एस० पी० कुलकर्णी को बुलवा लिया और कोई गड़बड़ी होने की आशंका व्यक्त की।

कुलकर्णी ने दो हवलदारों को दरवाजा तोड़ने का हुक्म दे दिया।

हुक्म का पालन हुआ।

भीतर रीता की लाश मिली।

उसने सोफिया की साड़ी का फन्दा बनाकर और स्टूल पर चढ़कर साड़ी के दूसरे सिरे को सिलिंग फैन के साथ बांधकर स्टूल को गिराकर फांसी खा ली थी।

उसने सुसाइड नोट में यही लिखा था कि वो ब्लड कैंसर की मरीज है और उससे तकलीफ बर्दाश्त नहीं हो रही, इसलिये वो आत्महत्या कर रही है। चूंकि दरवाजा भीतर से बन्द था और कमरे में दाखिल होने के लिये दूसरा कोई जरिया नहीं था,इसलिये कत्ल की कोई सम्भावना नहीं थी। इन्सपेक्टर अनिल यादव आ गया। उसने दावा किया कि केशव निर्दोष है और उसे किसी ने अपनी साजिश का शिकार बनाया है।

लेकिन केशव ने उसे समझा-बुझाकर और अपनी सौगन्ध देकर कहा कि वो अपना कर्तव्य निभाये और उसे हिरासत में लेने के साथ ही उसके घर की तलाशी भी ले।

मन मारकर अनिल यादव ने साथ आये सब-इन्सपेक्टर तथा दो हवलदारों के साथ तलाशी ली तो केशव के बेडरूम में लकड़ी की आलमारी से एक रिवॉल्वर और एक जोड़ी ऐसे जूते मिल गये, जिनके तलवों पर खून लगा हुआ था।

अनिल यादव ने कहा कि रिवॉल्वर और जूते रीता ने चुराये होंगे और नकली केशव द्वारा दिनेश शर्मा का कत्ल करने पर रिवॉल्वर और जूते केशव की आलमारी में रखे होंगे—फिर केशव को फंसाने वाले ने ही रीता को मारकर खुदकुशी का रूप दिया होगा। लेकिन एस० पी० कुलकर्णी ने ये दावा किया कि रीता ने खुदकुशी ही की थी—उसका कत्ल होने की कोई सम्भावना नहीं थी।

अनिल यादव को दिल पर पत्थर रखकर केशव को हिरासत में लेना ही पड़ा।

सोफिया और चांदनी ने विरोध किया तो केशव ने दोनों को डांट दिया और अनिल यादव के साथ पुलिस स्टेशन चला गया।

❑❑❑
❑❑❑

व्यवधान के लिये क्षमा करें!

हम केशव पण्डित एवं आशीर्वाद पण्डित के उपन्यासों में उच्च कोटि का कथानक व प्रकाशन देते आये हैं। हमारी मेहनत व लगन तथा आपके सहयोग व आशीर्वाद के फलस्वरूप ही आज 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का नाम उपन्यास जगत में डंका बजा रहा है। आप 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यासों को पढ़कर सराहते हैं तथा आगामी उपन्यास की बेचैनी के साथ प्रतीक्षा करते हैं।

इसका कारण क्या है?

कारण बड़ा ही स्पष्ट है। जब आप उपन्यास पढ़ते हैं तो समय व पैसा खर्च करते हैं तथा बदले में अच्छे व उच्च कोटि के कथानक की आशा रखते हैं। 'केशव पण्डित' के सभी एक सौ पन्द्रह उपन्यास एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के चौदह उपन्यास आपकी कसौटी पर सदैव ही खरा सोना साबित हुए हैं।

तभी तो उपन्यास जगत में आज 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' एवं 'धीरज पॉकेट बुक्स' तथा 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का स्थान सर्वोच्च है।

आपको अच्छी तरह ज्ञात है कि आशीर्वाद पण्डित के मात्र सोलह उपन्यासों ने तहलका मचा दिया है। आशीर्वाद पण्डित का पहला उपन्यास 'दस साल का वकील' जब 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित हुआ तो उसने सफलता के अनगिनत रिकॉर्डों को तोड़ दिया।

आशीर्वाद पण्डित का दूसरा उपन्यास 'कानून का बाप' 'धीरज पॉकेट बुक्स' में प्रकाशित हुआ तो उसने बड़े-बड़े लेखकों के छक्के छुड़ा दिये। आशीर्वाद पण्डित का तीसरा उपन्यास 'बेटा हिन्दुस्तान का', चौथा उपन्यास 'छः फुट का नेवला', पांचवां 'दो पैरों वाला बम', छठा उपन्यास 'दिमाग का चैम्पियन' व सातवां उपन्यास 'अर्जुन ललकारे कृष्ण को', आठवां उपन्यास 'आधा जोकर आधा मदारी', नौवां उपन्यास '24 घण्टे का जादूगर', दसवां उपन्यास 'लोमड़ी का दूध' ग्यारहवां उपन्यास 'तू पण्डित मैं शनिचर', 'बेटे से बड़ा है देश', राधा गोरी मैं क्यों काला', 15 बम पाकिस्तान खत्म, 'कर लो लंका फतह' प्रकाशित हो चुके हैं। आशीर्वाद पण्डित का सतरहवां उपन्यास चक्रव्यूह में फंसा भारतपुत्र शीघ्र ही 'धीरज पॉकेट बुक्स' में प्रकाशित होगा।

हमारी सफलता से बौखलाकर अन्य प्रकाशक लंगड़े घोड़े पर सवार होकर सफलता की मन्जिल स्पर्श करने के लिये निम्न स्तरीय तरीके अपनाने पर विवश हो गये हैं।

'केशव पण्डित' के नाम का लाभ उठाने के लिये वे छद्म नामों को जन्म देकर आपको धोखा देने के प्रयास में लीन हैं।

परन्तु 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा उन मिलते-जुलते नामों वाले लेखकों में कितना अन्तर है, ये उन लोगों की सफलता से ही स्पष्ट हो गया है। परन्तु फिर भी यदा-कदा कुछ पाठक भ्रम का शिकार हो जाते हैं। वो 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के भुलावे में दूसरे किसी भी उपन्यास को पढ़ सकते हैं तथा फिर अपना माथा पीट लेने पर विवश हो सकते हैं।

सो हमने आपकी सुविधा के लिये 'केशव पण्डित' के उपन्यासों के टाइटल-कवर के ऊपर भी 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम देना शुरू कर दिया है। कृपया आप 'केशव पण्डित' का उपन्यास लेते समय उपन्यास के कवर पर 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम अवश्य देख लें, ताकि आप माथा पीटने से बचे रहें।

आपका प्यार व आशीर्वाद ही 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' की सफलता की गारन्टी है। आप 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' व 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' देखकर उपन्यास खरीदेंगे तो आपको निराश नहीं होना पड़ेगा। हम दावे के साथ आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके पैसे व समय का समुचित प्रतिफल मिलेगा।

बस इतना ध्यान रखें कि एक सौ सत्रह बेहतरीन उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' के पूर्व प्रकाशित 117 उपन्यास तथा नये उपन्यास अब केवल दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित होते हैं, अन्य कहीं से नहीं!

तथा आपके चहेते 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यास भी दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से ही प्रकाशित होते हैं। अन्य कहीं से नहीं।

धन्यवाद!

प्रकाशक
धीरज पॉकेट बुक्स एवं
तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स



जज साहब ने खचाखच भरे अदालत कक्ष को और फिर कठघरे में खड़े केशव पण्डित को देखा। फाइल खोली और फिर उसमें लिखे मैटर को पढ़ने लगे–

"केशव पण्डित पर लगाया गया इल्जाम साबित होता है। मिस्टर पण्डित के घर से इनकी लाइसेंसी रिवॉल्वर मिली। बैलेस्टिक रिपोर्ट के मुताबिक दिनेश शर्मा को उसी रिवॉल्वर से छह गोलियां मारी गई थीं और उस रिवॉल्वर पर सिर्फ केशव पण्डित के ही फिंगर प्रिंट्स पाये गये हैं। केशव पण्डित के जूतों के सोल्स पर दिनेश शर्मा का खून लगा पाया गया। वीडियो फिल्म में भी केशव पण्डित दिनेश शर्मा को गोलियां मार रहे हैं और फिर जिस कार में बैठकर जा रहे हैं, वो भी इन्हीं की है। केशव पण्डित ने अपने बचाव में कहा कि इनके पास उस रात किसी निम्मी नामक औरत ने अपने घर का पता बतला कर ये कहा था कि उसके ससुरालिये उसकी जान लेने की चेष्टा कर रहे हैं। ये निम्मी की मदद के लिये गये थे—लेकिन निम्मी ने जिस बंगले का पता बतलाया था, उसके फाटक पर ताला लगा हुआ था और तभी दिनेश शर्मा ने इन्हें लूटने की चेष्टा की थी। केशव पण्डित के असिस्टेंट राजन शुक्ला ने ये बात साबित की कि किसी बुर्केवाली ने एक पी०सी०ओ० से निम्मी बनकर फोन किया था। इसी के साथ राजन शुक्ला ने ये भी कहा कि केशव पण्डित के घर में रीता नाम की जो युवती रह रही थी, उसी ने नकली केशव पण्डित को केशव पण्डित की रिवॉल्वर और जूते दिये थे और कत्ल के बाद रीता ने ही केशव पण्डित की आलमारी में रिवॉल्वर और जूते रख दिये थे। लेकिन राजन शुक्ला इस सवाल का तसल्लीबख्श जवाब नहीं दे सके कि रिवॉल्वर और जूतों पर केशव पण्डित के फिंगर प्रिंट्स कैसे आये? क्योंकि फिल्म में कत्ल कर रहे केशव पण्डित के हाथों में दस्ताने नजर नहीं आये हैं। राजन शुक्ला का ये तर्क भी मान्य नहीं हुआ कि रीता का कत्ल हुआ था। रीता ने खुदकुशी ही की थी। उसने सूसाइड नोट लिखा कि वो ब्लड कैंसर से पीड़ित थी। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के मुताबिक भी रीता को ब्लड कैंसर था। दूसरे रीता ने भीतर से दरवाजा बन्द करके ही खुदकुशी की थी। सो ये नहीं माना जा सकता कि रीता को किसी ने अपनी साजिश के लिये इस्तेमाल किया था और फिर उसे कत्ल कर दिया था। केशव पण्डित ने अदालत से रिक्वेस्ट

की थी कि उन्हें स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिये जमानत दे दी जाये। लेकिन सरकारी वकील ने विरोध करते हुये कहा था कि केशव पण्डित स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिये कोई गड़बड़ी कर सकते हैं और दूसरी बात ये कि केशव पण्डित के खिलाफ पर्याप्त और ठोस सबूत हैं। सो अदालत ने केशव पण्डित की दरख्वास्त को रद्द कर दिया था। अदालत केशव पण्डित को मुजरिम मानती है और एक सप्ताह बाद यानि तेरह अगस्त को सजा सुनायेगी।"

अदालत कक्ष में मौजूद सोफिया, राजन, करतार सिंह, चांदनी, रमाकान्त और माधवी के साथ-साथ इन्सपेक्टर अनिल यादव और बाकी चाहने वालों के चेहरे उतर गये और आंखें भीग चलीं।

केशव का चेहरा कतई सपाट था।

जबकि अदालत-कक्ष में महेश त्यागी के साथ बैठी क्रान्ति बहुत खुश थी और फुसफुसाते हुये बोली—"हमारी साजिश कामयाब हो गई त्यागी! अदालत ने केशव को मुजरिम मान लिया। अगले हफ्ते इसे सजा भी सुना दी जायेगी। ये भी हो सकता है कि इसे फांसी की सजा ना मिले। अगर मिले भी तो ये हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में अपील करके फांसी की सजा को उम्रकैद में तब्दील करा सकता है।"

"उस सूरत में मैं इसे नहीं छोड़ूंगा मैडम।" महेश त्यागी फुंफकारकर बोला—"जान से मार दूंगा।"

"चिन्ता क्यों करते हो तुम? इसे उठवा लेंगे और तड़पा-तड़पाकर ही मारेंगे। वो मौत देंगे कि इसके फरिश्ते भी मारे खौफ के बेहोश हो जायेंगे।"

□□□
□□□

"हैलो!"

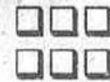
"हम बोल रहे हैं...यमराज!"

"ओ, सर...आप...!" मारे खुशी के क्रान्ति गैस के गुब्बारे की मानिन्द ही उड़ते हुये बोली—"मु...मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि आ...आपने मुझे फोन किया है...ओ माई गॉड...!"

"अब तुम कोई मामूली लड़की नहीं रही हो क्रान्ति... ।" दूसरी तरफ से यमराज की आवाज आ रही थी, "तुम हमारी होने वाली बीवी हो।"

"रि...रियली सर? ल...लेकिन अभी तक केशव को सजा नहीं सुनाई गई है।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता डार्लिंग। केशव को अदालत ने मुजरिम तो मान ही लिया है। हम यही तो चाहते थे। कानून का पण्डित अदालत में कातिल साबित हो गया। वो अदालत को मन्दिर और कानून को भगवान मानता था। उसके भगवान ने उसके मन्दिर में ही उसे मुजरिम करार दे दिया। वो जीते जी मर गया होगा। उसे अपनी हरेक सांस में मौत की कीलें ठुकी हुई महसूस हो रही होंगी। अगर उसमें जरा-सी भी गैरत बाकी बची होगी तो चुल्लूभर पानी में डूबकर मर जायेगा। तुमने अनहोनी को होनी करके दिखला दिया क्रान्ति। सूरज को पूरब की बजाय पश्चिम से उगाकर दिखला दिया। समन्दर के पानी को फूंक मारकर सुखा दिया। हिमालय पर्वत को उठाकर दूसरी जगह रख दिया। कितनी आसानी से तुमने हाथी को चूहा बनाकर दिखला दिया। मान गये तुम्हारे दिमाग को। हमें इस बात का गर्व रहेगा कि तुम जैसी हसीना हमारी बीवी बनी है। हां, हसीना! हमारे जासूस ने तुम्हारी तस्वीरें भेजी थीं हमारे पास। वाकई में उस डॉक्टर ने कमाल कर दिया। उसने अपने हुनर से तुम्हें स्वर्ग की अप्सरा बना दिया। तुम तुरन्त ही अमेरिका चली आओ डार्लिंग। हम तुमसे तुरन्त ही शादी कर लेना चाहते हैं। वहां का काम अंगारा सम्भाल लेगा। तुम कल ही आ जाओ। फिर हम धूमधाम के साथ शादी करेंगे। अमेरिका के सबसे महंगे और आलीशान होटल में बहुत ही धूमधाम से अपनी शादी होगी। शादी हिन्दू रीति-रिवाज से ही होगी। यहां पर पण्डित भी है और शादी का सारा सामान भी मिल जायेगा। हॉलीवुड की हीरोइनों का मेकअप करने वाली ब्यूटीशियन तुम्हारा मेकअप करेंगी और तुम्हें दुल्हन बनायेंगी। वर-माला होगी, सात फेरे होंगे और फिर तुम डोली में बैठकर हमारे महल में पहुंचोगी। तो तुम कल ही आ रही हो ना डार्लिंग?"



महेश त्यागी के साथ क्रान्ति वाशिंगटन के एयरपोर्ट पर उतरी।

काली जींस, गोल्डन कलर की एम्ब्रायड्री वाली काली शर्ट में बहुत ही खूबसूरत लग रही थी वह। आंखों पर चढ़े काले चश्मे ने तो उसकी खूबसूरती में आठ चांद ही लगा दिये थे।

काली शर्ट के ऊपर सफेद रंग के सूट में महेश त्यागी भी जम रहा था।

यमराज के खास आदमी रोजर ने और उसके साथ आई एक दर्जन खूबसूरत अमेरिकन हसीनाओं ने बुके देकर क्रान्ति का बहुत ही शानदार ढंग से स्वागत किया।

एयरपोर्ट से बाहर निकलने पर सौ आदमियों वाले बैन्ड ने मधुर धुन बजाई और हवा में परवाज करते पीले रंग के हेलीकॉप्टर ने फूलों की बारिश कर डाली।

दुनिया की सबसे महंगी, खूबसूरत और शोरूम कन्डीशन वाली पचास कारों का काफिला खड़ा था। हरेक कार के साथ दो-दो ए० के० छप्पन धारी कमान्डोज खड़े थे।

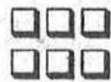
"ये सब क्या है रोजर...?" क्रान्ति बौखलाई-सी बोली—"इतना ताम-झाम किसलिये?"

"आप कोई मामूली औरत नहीं हैं मैडम जी।" रोजर पूरे आदर के साथ सीने पर हाथ रखकर और सिर को झुकाये हुये बोला—"दुनिया के सबसे शक्तिशाली और अमीर इन्सान की धर्मपत्नी बनने जा रही हैं आप। यहां पर कई गाड़ियां हैं, और हेलीकॉप्टर भी हैं। आप ही बतलाइये कि कौन-से वाहन से चलना पसन्द करेंगी आप?"

"हेलीकॉप्टर से मैडम।" महेश त्यागी फुसफुसाया।

क्रान्ति ने बोल दिया कि वो हेलीकॉप्टर से जाना पसन्द करेगी।

रोजर का इशारा हुआ और हेलीकॉप्टर नीचे सड़क पर आ गया।



"वेलकम क्रान्ति डार्लिंग...!" अपने शानदार हॉल में मौजूद यमराज ने उठकर क्रान्ति के संगमरमरी जिस्म को भारी-भरकम, बाहों में भर लिया और उसके कपोलों को चूमकर बोला—"हम बेताबी के साथ तुम्हारा इन्तजार कर रहे थे। एयरपोर्ट से यहां तक पहुंचने में कोई तकलीफ तो नहीं हुई?"

"कैसी बात करते हैं सर! आपने ढेरों खूबसूरत और नई कारों के साथ हेलीकॉप्टर भी भेजा। मेरे स्वागत के लिये बैन्ड-बाजे के साथ पुष्प-वर्षा करने वाली टनाटन किस्म की लड़कियां भी थीं। ऐसा स्वागत तो किसी वी० आई० पी० का ही किया जाता है।"

"तुम हमारे लिये अमेरिका के राष्ट्रपति से भी ज्यादा खास हो डार्लिंग...।" यमराज क्रान्ति को वारी हो जाने वाली नजरों से निहारते हुये बोला, "अपनी प्रतिज्ञा की वजह से हमने अभी तक शादी भी नहीं की थी। चिन्ता होने लगी थी कि अपना वंश आगे बढ़ भी पायेगा कि नहीं। हम पिता बनेंगे भी कि नहीं। तुमने हमारी शर्त पूरी कर दी। हमारे जानी दुश्मन को कानून के हथियार से मार दिया और हमारा दिल जीत लिया। अब हम पति-पत्नी बनने जा रहे हैं। अब तुम हमें सर नहीं कहोगी और आप भी नहीं। हमारा नाम लोगी और आप की बजाय तुम बोलोगी।"

"लेकिन सर!"

"नो सर...यमराज! ये हमारा हुक्म भी है और इच्छा भी है। अरे हां, ये युवक कौन है?"

"ओह, सॉरी सर! ये महेश त्यागी है। सिर्फ खतरनाक ही नहीं है ये, बल्कि ब्रिलियंट माइन्डेड भी है। केशव को फंसाने में त्यागी ने भी मेरी बहुत मदद की। ये ही नकली केशव बना था।"

"नमस्कार, यमराज बाबू...।"

"नमस्कार! क्रान्ति ने तुम्हारी प्रशंसा की है तो तुममें कुछ-ना-कुछ काबिलियत जरूर होगी। वक्त आने पर तुम्हारी काबिलियत का इम्तहान लिया जायेगा।"

"कबीर दास जी कह गये हैं कि काल करे सो आज कर

आज करे सो अब। क्यों ना अभी मेरी काबिलियत की परीक्षा हो जाये?"

"नहीं, अभी कोई जरूरत नहीं। अभी तो हमें अपनी शादी की तैयारियां करनी हैं।"

"अजी भाड़ में गई शादी...। फैसला तो अभी होगा। चलो मुकाबला करो मुझसे।"

"क्या बकते हो? होश में तो हो ना?"

"होश में तो तुम नहीं हो यमराज। होश में होते तो मुझे पहचान चुके होते। हुलिया ही तो बदला है लेकिन आवाज तो वो ही है।"

"क्या मतलब?" यमराज आंखों को सिकोड़कर बोला—"तुम्हारी आवाज जानी-पहचानी सी तो लग रही है...तुम...तुम?" अचानक ही यमराज की आंखें फैलने लगीं।

आंखों के साथ-साथ चेहरे पर भी आश्चर्य तथा अविश्वास के भाव परिलक्षित होने लगे।

महेश त्यागी मुस्कराया।

"तु...तुम...?" यमराज चिहुंककर बोला—"ले...लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? तुम यहां पर...और वो भी क्रान्ति के साथ। नहीं...तुम केशव नहीं हो सकते। केशव की आवाज बनाकर बोल रहे हो...केशव तो जेल में है। उसे अदालत ने मुजरिम करार दिया है। ये सब क्या है क्रान्ति? ये बन्दा केशव की आवाज निकालकर हमारे साथ मजाक क्यों कर रहा है?"

"ये मजाक नहीं कर रहे हैं यमराज...।" क्रान्ति मुस्कराकर बोली—"ये पण्डित जी हैं। हन्ड्रेड परसेंट केशव पण्डित। ये यहां पर तेरा बैन्ड बजाने के लिये आये हैं।"




"तु...तुम...!" यमराज अचरजभरी दृष्टि से क्रान्ति को देखते हुये बोला, "तुम भी हमारे दुश्मन का फेवर ले रही हो क्रान्ति? मत भूलो कि ये हमारा ही नहीं, तुम्हारा भी दुश्मन है। इसी ने तुम्हें तेजाब से झुलसाया था। तुम्हारे ये नकली हाथ-पैर इसी की बदौलत ही हैं।"

मुस्कराई क्रान्ति और देखते-ही-देखते उसने नकली हाथों और पैरों को खोलकर फर्श पर फेंक दिया—भीतर उसके असली हाथ-पैर थे...खूब गोरे-चिट्टे!

"यानि तूने असली हाथ-पैर पर नकली हाथ-पैर चढ़ाये हुये थे?"

"सिर्फ हाथ-पैर ही नहीं, विग और फेस मास्क के नीचे भी असली केश और चेहरा है।"

कहने पर उसने विग और चेहरा भी उतार दिया।

"तू...तू...!" यमराज चौंककर बोला—"तू तो केशव पण्डित की बीवी...।"

"सोफिया पण्डित ही हूं मैं...।" कहने पर कुछ देर पहले तक क्रान्ति बनी सोफिया महेश त्यागी बने व्यक्ति से बोली—"बेहतर होगा कि तुम भी अपने वास्तविक रूप में आ जाओ केशव।"

उसने विग और मास्क के साथ आंखों पर चढ़े कॉन्टेक्ट लैंसेज भी उतारकर फर्श पर फेंक दिये और फिर चारमीनार की डिब्बी व गोल्डन कलर का लाइटर निकालकर एक सिगरेट सुलगा ली।

कश लगाकर हैरान-परेशान से खड़े यमराज के चेहरे पर धुएं का गोला दागकर व्यंगपूर्ण लहजे में बोला—"दुनिया का सबसे शक्तिशाली और अमीर आदमी लुटा-पिटा-सा नजर क्यों आ रहा है? मुझे और सोफिया को देख तेरे हाथों के तोते क्यों उड़ गये? कहीं...बारह साल पहले वाली वो धुलाई तो याद नहीं आ गई—जो मैंने की थी?"

हैरत व उलझन के जाल से निकलकर क्रोध के वृक्ष पर चढ़ते हुये वह बोला—"मैं नहीं जानता कि तूने कौन-सा खेल खेला है और कैसे खेला है? लेकिन तूने यहां आकर अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी गलती कर दी है। शेर की गुफा में घुस आया तू! तेरा शिकार होना ही होना है।"

"चुप ओये!" केशव की बजाय सोफिया यमराज को लताड़कर बोली—"शेर की गुफा में दाखिल होने वाला अनाड़ी नहीं, खिलाड़ी होता है। वो शेर का शिकार करने के इरादे से

ही उसकी गुफा में दाखिल होता है और उसका शिकार भी करता है, लेकिन तू शेर नहीं है—गीदड़ है! केशव के हाथों कितना पिटा था तू...क्या भूल गया?"

"तेरी तो...।" यमराज दांतों को पीसते हुये सोफिया पर झपटा ही था कि सोफिया एक तरफ हट गई और केशव बायीं हथेली से यमराज के गले को दबोचकर उसके चेहरे पर घूंसे और पेट पर घुटनों के ताबड़-तोड़ प्रहार करते हुये बोला—"जरा दरवाजे को भीतर से बन्द कर लो सोफी डार्लिंग! कोई डिस्टर्बेंस नहीं चाहता मैं।"

सोफिया ने स्टेनलैस स्टील के भारी-भरकम तथा मजबूत दरवाजे को भीतर से बन्द कर लिया।

यमराज को बुरी तरह मारते हुये बोला केशव—"तेरे घर में ही घुसकर तेरी धुलाई कर रहा हूं मैं और तू मुकाबला भी नहीं कर रहा है। तू कोई मामूली आदमी नहीं है। तू दुनिया के सबसे बड़े क्रिमिनल ऑर्गेनाइजेशन माफिया का सुप्रीम बॉस है। किस गधे ने तुझे माफिया किंग बना दिया? तू तो मुम्बई की गली का मवाली भी बनने के काबिल नहीं है।"

थप...थप...थप!

तभी बाहर से दरवाजा थपथपाया गया—

"ऐ दरवाजा खोलो...मैं रोजर बोल रहा हूं।" बाहर से तेज आवाज आई—"यहां के हरेक हिस्से में कैमरे लगे हुये हैं। कन्ट्रोल रूम में लगे टी० वी० पर मैंने सब देखा। तू केशव पण्डित है और साथ में क्रान्ति नहीं, तेरी बीवी सोफिया है। अगर दरवाजा नहीं खोला तो दरवाजा तोड़ दिया जायेगा। मेरे साथ पचास से भी ज्यादा हथियारों से लैस गुन्डे हैं। तुझे और तेरी बीवी को गोलियों से छलनी-छलनी कर दिया जायेगा।"

"अब आई तेरी शामत!" यमराज नाक व मुंह से बहते खून को पोंछकर बोला—"रजिया फंस गई गुन्डों में। मेरे आदमी तेरा कीमा बना देंगे।"

केशव मुस्कराया—और फिर सोफिया को इशारा किया।

सोफिया ने पर्स में से पिस्टल निकालकर यमराज पर तान दी।

"ओये रोजर...!" केशव तेज आवाज में बोला—"जाकर कन्ट्रोल रूम में देख, तेरे बॉस यमराज की जान मेरी मुट्ठी में है। अगर दरवाजा तोड़ा गया तो यमराज को फौरन ही गोली मार दी जायेगी। कुछ देर बाद मैं अपनी मर्जी से दरवाजा खोलकर यमराज के साथ बाहर निकलूंगा। कोई आदमी तो क्या...अगर चूहे का बच्चा भी दिखलाई पड़ा तो यमराज को यमलोक में भेज दूंगा। अब दरवाजे पर दस्तक नहीं होनी चाहिये। कोई धमकी या आवाज भी नहीं आनी चाहिये। ये भले ही माफिया का हैडक्वार्टर हो...लेकिन यहां पर वो ही होगा, जो मैं चाहूंगा...केशव चाहेगा...समझ में आ गया कि नहीं?"

❑❑❑
❑❑❑

फर्श पर बैठा यमराज रह-रहकर कराहे जा रहा था। बुरी तरह जख्मी था वह—इतना जख्मी कि उसे हॉस्पिटल के बेड की आवश्यकता थी।

केशव और सोफिया सोफे पर विराजमान थे।

चारमीनार की सिगरेट फूंकते हुये केशव बोला—"तेरे दिमाग में ढेरों सवाल फन काढ़े हुये फुंफकार रहे होंगे। उन सवालों के जवाब ना मिले तो तू पागल हो सकता है। जबकि मैं नहीं चाहता कि तू पागल हो। चाहता हूं कि तू अपने होशो-हवास में फांसी पर चढ़े। क्रान्ति ने प्लान बनाया और मुझे दिनेश शर्मा के कत्ल के इल्जाम में फंसा दिया था। अदालत ने भी मुझे मुजरिम करार दे दिया था। तू खुश हो गया। जश्न भी मनाया होगा तूने और क्रान्ति के साथ शादी करने की तैयारी कर ली थी। क्रान्ति को फोन करके उसे अमेरिका बुलवाया...लेकिन अमेरिका आई सोफिया और साथ में केशव। वो भी क्रान्ति और महेश त्यागी के रूप में। ये सब कैसे हो गया? सोच-सोचकर ही तेरा दिमाग कुम्हार की चाक की मानिन्द ही घूम रहा होगा। तेरे दिमाग को ठीक-ठाक रखने के लिये मैं तुझे सारी बातें बतलाऊंगा, तेरी तमाम दुविधाओं को दूर करूंगा। लेकिन उससे पहले तुझे एक काम करना है।"

कराहते हुये यमराज ने चेहरा उठाकर केशव को यूं ही देखा कि मानो जवाब पाने के लिये उतावला हुआ जा रहा हो।

"तुझे जिहाद-ए-तालिबान के सरगना मुल्ला नसरूद्दीन से अभी कॉन्टेक्ट करना है और उसको यहां पर बुलाना है।"

❑❑❑
❑❑❑

मानो सोते हुये आदमी के ऊपर बर्फ-सा ठन्डा पानी डाल दिया गया हो।

यूं ही हड़बड़ाया यमराज और आश्चर्य में पड़ा हुआ बोला—"तु...तुम मुल्ला नसरूद्दीन को कैसे जानते हो?"

"हिन्दुस्तान के तमाम दुश्मनों को जानता हूं मैं। मैं तो मिशन फिफ्टी के बारे में भी जानता हूं।"

मानो केशव के दस सिर उग आये हों।

मानो केशव कुतुबमीनार के साइज का हो गया हो। मानो केशव का चेहरा नृसिंह भगवान की मानिन्द ही सिंह का अर्थात् शेर का हो गया हो। ऐसे ही अचरजभरी नजरों से उसे देखा यमराज ने और कौतूहलता के हिन्डौले में झूलते हुये ही बोला—"क्या जानते हो तुम मिशन फिफ्टी के बारे में...आह...?"

"यही कि एक दिन, एक ही वक्त में हिन्दुस्तान के पचास शहरों में एक साथ शक्तिशाली बम ब्लास्ट किये जायें। इस काम के बदले उस मुल्ला नसरूद्दीन ने तुझे पचास अरब डालर की मोटी रकम देने को कहा है। मुल्ला नसरूद्दीन आजकल अमेरिका में ही रह रहा है। चल, उसको तुरन्त ही यहां बुला।"

"ले...लेकिन मैं उससे ट्रांसमीटर पर ही कॉन्टेक्ट कर सकता हूं।"

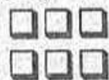
"तो क्या दिक्कत है? सोफिया, यमराज जी को खास आभूषण पहनाया जाना चाहिये। अपना पर्स दो...डार्लिंग।"

सोफिया ने अपना पर्स केशव को थमा दिया—उसने यमराज पर पिस्टल तानी हुई थी।

केशव ने पर्स में से शक्तिशाली बम की बैल्ट निकाली और यमराज के पेट पर बांधते हुये बोला—"मैं भारत सरकार की तरफ से ही यहां आया हूं। भारत सरकार ने अमेरिकी सरकार से बात कर ली थी—इसीलिये हम पिस्टल और बम

वगैरा ला पाने में कामयाब रहे। ये रिमोट बम है प्यारे। अगर फटा तो तुझे गैस के गुब्बारे की तरह ही फाड़कर रख देगा! इसलिये खुद पर कन्ट्रोल रखना और अपने गुन्डों को भी कन्ट्रोल रखने को बोल देना! वैसे वो लोग टी० वी० पर सब देख ही रहे होंगे...।" केशव कमरे में लगे कैमरे की तरफ देखते हुये बोला—"अगर किसी ने भी जरा-सी गड़बड़ी की तो मैं यमराज को उड़ा दूंगा। हमारे रास्ते में कोई भी नहीं आना चाहिये। किसी की मनहूस शक्ल भी नजर नहीं आनी चाहिये।"

केशव ने पर्स में से बम से ताल्लुक रखते रिमोट को भी निकाल लिया और यमराज से बोला—"चल...वहां चल, जहां ट्रांसमीटर है। मुल्ला नसरूद्दीन से बात करके उसे फौरन ही यहां आने को बोल! कोई भी बहाना बना देना। उसे कोई हिन्ट मत देना। उसे जरा-सा भी शक नहीं होना चाहिये। अगर वो नहीं आया तो इसका खामियाजा तुझी को भुगतना पड़ेगा। ये बात समझ में आ गई है ना प्यारे?"



कमरे का दरवाजा खोलकर यमराज बाहर निकला। केशव के हाथ में रिमोट था तो सोफिया के हाथ में पिस्टल थी, जो कि यमराज की खोपड़ी को अपने निशाने पर लिये हुये थी।

किसी ने रास्ता ना रोका।

कोई सामने भी ना आया।

यमराज कन्ट्रोल रूम में पहुंचा और वहां उसने ट्रांसमीटर पर मुल्ला नसरूद्दीन से सम्पर्क किया और उससे कहा कि उसने 'मिशन फिफ्टी' का बहुत ही जोरदार प्लान बना लिया है, वो उसके पास आकर प्लान सुन ले और कोई सलाह देनी चाहे तो दे दे।

मुल्ला नसरूद्दीन ने बोल दिया कि वो उसके पास आ रहा है।

फिर केशव और सोफिया यमराज के साथ पूरे हैडक्वार्टर में घूमे।

एक बड़े गोदाम में ढेर सारे हथियार और बम थे।

केशव ने कई बमों में एक ही टाइम सैट करके उन्हें स्टार्ट कर दिया और फिर यमराज को उसी कमरे में ले आया, जहां पर यमराज की जोरदार धुनाई की थी।

यमराज को फर्श पर बिठाकर केशव सोफिया समेत सोफे पर बैठ गया। चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली और कश मारकर यमराज से सम्बोधित होकर बोला—"इससे पहले कि तेरा दिमाग मारे सस्पेंस के फट जाये, मैं शॉर्टकट में तुझे सारी बातें बतला दूं। तेरी प्रेमिका मोनिका अपने भाई ज्वैल के साथ हिन्दुस्तान पहुंची थी। वो तेरी शर्त पूरी करके यानि मुझे कानून के शिकंजे में फंसाकर तुझसे शादी करना चाहती थी—यमराज की बीवी बनना चाहती थी। लेकिन उसके इरादे क्रान्ति को मालूम पड़ गये थे और उसने मोनिका, ज्वैल को मरवा दिया था।"

"क्रान्ति ने...?" चौंककर बोला यमराज, "ले...लेकिन उन दोनों को तो लुटेरों ने मारा था।"

"नहीं वो क्रान्ति के आदमी थे। तुझे बेवकूफ बनाने को ही ऐसा ड्रामा किया गया था कि मोनिका और ज्वैल को लुटेरों ने लूटा और मार दिया। ये इत्तफ़ाक की बात ही थी कि मैं उधर से निकला। तब ज्वैल मरा नहीं था। मैं उसे अपनी गाड़ी में लादकर हॉस्पिटल के लिये चला। ज्वैल को ये लगा कि उस पर और मोनिका पर तूने हमला कराया था। मोनिका ने तुझसे कहा होगा कि वो तेरी शर्त पूरी करने के लिये हिन्दुस्तान जायेगी। तूने उसे धमकी दी होगी कि अगर वो हिन्दुस्तान गई तो तू उसे मरवा देगा।"

"मैं...मैंने तो ऐसे ही बोल दिया था।"

"चाहे जैसे कहा था! बहन मोनिका की मौत पर ज्वैल बहुत क्षुब्ध था। उसने मुझे मुल्ला नसरूद्दीन और मिशन फिफ्टी के बारे में बतला दिया था और फिर दम तोड़ दिया था। मैंने उसकी लाश को वापिस घटनास्थल पर ही डाल दिया था। मिशन फिफ्टी ने मुझे परेशान कर दिया था। क्योंकि पचास शहरों में बमों का ब्लास्ट होना बहुत बड़ी तबाही की बात थी। प्रधानमन्त्री जी से बात की मैंने तो उन्होंने मुझसे कहा कि मैं कुछ भी करके मिशन फिफ्टी नाकाम कर दूं, मुझे कुछ भी करने

का अधिकार होगा। तब मैंने तुझ तक पहुंचने का प्लान तैयार किया।"

"वो क्या?" पूछा यमराज ने।

"जेल से फरार होने पर क्रान्ति माफिया डॉन बन चुकी थी और वो तेरी शर्त पूरी करके तुझसे शादी करने को मरी जा रही थी। दिल्ली में मैंने महेश त्यागी नाम के बदमाश को पकड़कर कानून के हवाले किया था। नसीब का मारा वो मुझसे बदला लेने के लिये मुम्बई आया। उसने जुहू बीच पर मेरा रास्ता रोक लिया और मुझ पर रिवॉल्वर तान दी। वो नहीं जानता था कि केशव को रिवॉल्वर से मारना मुमकिन नहीं। मैं उसकी छहों गोलियों से बच गया और फिर उसे बेहोश करके अपने घर ले गया था। उसे तहखाने में रखा और अपने चेले राजीव उर्फ कपिल को मास्क और मेकअप के जरिये महेश त्यागी बनाया। कपिल ने मेरे प्लान के मुताबिक ही एक ज्वैलरी शॉप में जाकर हीरे लूटे। उसने सेल्समैन, सिक्योरिटी गार्ड्स् और कुछ पुलिसवालों की हत्या की। लेकिन वो सब ड्रामा था। किसी की हत्या नहीं हुई थी। नकली गोलियां थीं और नकली खून था। कपिल जानबूझकर माफिया के होटल में ठहरा। वहां से क्रान्ति और अंगारा महेश त्यागी बने कपिल को अपने साथ अपने हैडक्वार्टर पर ले गये। वहां कपिल ने मुझे कानून के शिकंजे में फंसाने का प्लान बतलाया, जो कि क्रान्ति को पसन्द आ गया था।

क्रान्ति के गैंग की एक लड़की रीता अपनी तरफ से चालाकी से मेरे घर में दाखिल हो गई। उसने मेरी वीडियो फिल्म और फिंगर प्रिंट्स क्रान्ति या महेश त्यागी बने कपिल तक पहुंचाये। कपिल ने मेरे फिंगर प्रिंट्स वाले रबर के दस्ताने तैयार करने का नाटक किया। मेकअप से वो केशव पण्डित भी बन गया। मेरे द्वारा पहले से ही सैट दिनेश शर्मा को उसने अपने प्लान में शामिल करने का ड्रामा किया। क्रान्ति को ये बताया कि दिनेश शर्मा को एड्स है और उसकी माली हालत ठीक नहीं है। इसलिये वो मोटी रकम के बदले अपना कत्ल करवाने के लिये राजी हो गया। जबकि दिनेश को एड्स नहीं था। ना

ही वो गरीब था। वास्तविकता ये है कि वो सी० आई० डी० इन्सपेक्टर है।"

"ओह...ओह...समझा!" यमराज कराहते हुये बोला, "तुम्हारे चेले ने दिनेश शर्मा का नकली कत्ल किया था?"

मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला और फिर बोला, "हां, तेरा अनुमान ठीक है यमराज। दिनेश शर्मा का नकली खून हुआ था और फिर मास्क और विग और उसके कपड़ों के जरिये एक लावारिस लाश को उसका रूप देकर पोस्टमार्टम कराया गया था और अन्तिम संस्कार किया गया था। क्रान्ति ने मुसीबत-जदा औरत बनकर मुझे घटनास्थल पर बुलाया था और वहां महेश त्यागी बने कपिल ने मुझे बेहोश करने का ड्रामा करने पर दिनेश शर्मा को मारने का नाटक किया था। रीता ने उसे मेरी रिवॉल्वर और जूते लाकर दिये थे और फिर काम होने पर रीता ने जूते, रिवॉल्वर मेरे कमरे में रखकर आत्महत्या कर लेनी थी। लेकिन रीता को हिप्नोटिज्म करके मैंने अपनी तरफ मिला लिया था। वो सूसाइड नोट लिखकर कमरे में बने गुप्त रास्ते से निकल गई थी और राजन ने उसी गुप्त रास्ते से एक लावारिश लाश को फांसी पर लटका दिया था, जिसे मेकअप, मास्क, विग और रीता के कपड़ों से रीता का रूप दे दिया था। फिर कोर्ट में मैंने जानबूझकर अपना बचाव नहीं किया और अदालत ने मुझे मुजरिम करार दे दिया। जबकि दिनेश शर्मा जीवित है। गवाह बनने को तैयार रीता भी जीवित है। यानि मैं खुद को निर्दोष साबित कर दूंगा।"

"ओह...ओह! सारी बातें मेरी समझ में आ रही हैं। लेकिन तुमने क्रान्ति की जगह अपनी बीवी का इस्तेमाल कब किया? क्रान्ति कहां है?"

"अदालत में मुझे सजा होते देखने के लिये क्रान्ति गई थी। उसके साथ महेश त्यागी के रूप में कपिल था। कपिल क्रान्ति को बेहोश करके मेरे घर ले गया था और उसको तहखाने में कैद करके रखा गया है। फिर क्रान्ति की जगह सोफिया ने और कपिल की जगह मैंने ले ली थी और दोनों यहां आ पहुंचे। मानते हो ना अपने दिमाग को?"



छत पर बने हेलीपैड पर मुल्ला नसरूद्दीन का हेलीकॉप्टर उतरा तो वहां पर यमराज पहले से ही मौजूद था।

फिर सोफिया के साथ केशव भी सामने आ गये। दोनों बाहें फैलाये यमराज की तरफ बढ़ रहे मुल्ला नसरूद्दीन ने केशव को देखा तो चिहुंककर बोला–"तु...तुम...?"

"हां, मैं...!" सोफिया को यमराज के पेट पर बन्धे बम का रिमोट थमाकर केशव उसकी तरफ बढ़ते हुये बोला–"मुझे देखकर झटका लगा ना? तेरे मिशन फिफ्टी की वजह से ही मुझे लम्बा गेम खेलना पड़ा और यहां आना पड़ा।"

"क...क्या मतलब...आह...!"

केशव ने घूंसा मारकर मुल्ला नसरूद्दीन का गला पकड़ लिया और हिंसक लहजे में बोला–"मतलब समझकर क्या करेगा तू ओये मुल्ला? बस इतना ही समझ ले कि तेरा मिशन फिफ्टी फ्लॉप हो गया और तेरा भी बैन्ड बजने वाला है।"

और फिर केशव कयामत बनकर ही मुल्ला पर टूट पड़ा।

उसके हाथ-पैर हथौड़े की चोट की मानिन्द ही मुल्ला नसरूद्दीन के जिस्म पर पड़ रहे थे और मुल्ला नसरूद्दीन की पीड़ाभरी चीखें चारों दिशाओं में गूंज रही थीं।

केशव के हाथ-पैर तभी रुके–जब मुल्ला नसरूद्दीन अधमरा हो गया।

तब केशव यमराज से मुखातिब होकर बोला–"अब तू ये बतला कि भारत में माफिया चीफ कौन है?"

यमराज चुप!

केशव का हाथ घूमा और यमराज के सूजे हुये चेहरे से तड़ाक...की आवाज के साथ टकराया तो घुटी-घुटी-सी चीख के साथ यमराज के मुंह से निकल पड़ा–"द...दशरथ सिंह।"

"दशरथ सिंह...!" केशव चौंककर बोला–"एम० एल० ए० और विपक्षी पार्टी का नेता?"

"हां...वो ही...आह...!"

"लेकिन माफिया डान बलवन्त सेठ के बेटे मुकेश ने

दशरथ सिंह की बेटी को रेप करके मार दिया था तो उसने कानून की मदद क्यों ली? माफिया चीफ होने की वजह से वो मुकेश को स्वयं भी तो सजा दे सकता था?"

"तु...तुमने उसकी बेटी के केस में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी थी...आह...सो दशरथ सिंह ने यही फैसला कर लिया था कि वो कानून के जरिये ही मुकेश को सजा दिलवायेगा।"

"लेकिन उसने तो क्रान्ति और अंगारा के साथ मुकेश को भी जेल से मुक्त करवाया था।"

"वो इसलिये...क्योंकि मेरा हुक्म था।"

"छोड़! मुकेश और बलवन्त तो फांसी पर चढ़ेंगे ही। अब तू हमारे साथ इस हेलीकॉप्टर से एयरपोर्ट चलेगा और फिर हिन्दुस्तान चलेगा! लेकिन उससे पहले ट्रांसमीटर पर माफिया चीफ उर्फ दशरथ सिंह को बोल कि वो अपने अड्डे पर पहुंच जायें और अंगारा को भी अपने पास बुलाकर तेरा इन्तजार करे।"

यमराज पेट पर बन्धे बम की वजह से मजबूर था।

उसने ट्रांसमीटर पर दशरथ सिंह को बोल दिया कि वो अपने हैडक्वार्टर पर रहे और अंगारा को भी अपने पास बुलवाकर उसका इन्तजार करे।

फिर केशव, सोफिया और यमराज हेलीकॉप्टर में सवार हुये। केशव ने हेलीकॉप्टर को स्टार्ट किया और माफिया के हैडक्वार्टर के ऊपर ही उड़ाने लगा।

कुछ देर पश्चात् उसके द्वारा सैट किये गये टाइमबम ब्लास्ट होने लगे।

धड़ाम...धड़ाम...धड़ामऽऽ!

कर्णभेदी धमाके के साथ माफिया का हैडक्वार्टर उड़ने लगा।

देखते-ही-देखते हैडक्वार्टर मलबे के ढेर में तब्दील हो गया।

उस मलबे में यमराज के आदमियों के साथ मुल्ला नसरूद्दीन की लाश भी दफन हो चुकी थी।

फिर केशव हेलीकॉप्टर से एयरपोर्ट पहुंचा और वहां से ऐरोप्लेन के जरिये हिन्दुस्तान पहुंचा।

फिर पहुंचा माफिया चीफ यानि दशरथ सिंह के हैडक्वार्टर पर—लेकिन उसने यमराज से कहा कि वो अकेला ही हैडक्वार्टर के भीतर जायेगा।

यमराज अकेला ही हैडक्वार्टर के भीतर गया और केशव ने रिमोट का बटन दबा दिया।

धड़ामऽऽऽ!

कर्णभेदी धमाके के साथ हैडक्वार्टर ही नहीं उड़ा, बल्कि यमराज, अंगारा और दशरथ सिंह भी उड़ गये।

फिर केशव और सोफिया घर पहुंचे।

वहां तहखाने में कैद क्रान्ति को केशव ने यमराज, मुल्ला नसरूद्दीन, अंगारा और दशरथ सिंह की मौत की जानकारी दी।

क्रान्ति अंगारा की मौत से विचलित हुई—बल्कि वो पागल-सी होकर केशव को गालियां देने लगी।

राजन, करतार सिंह और कपिल ने क्रान्ति की अच्छी-खासी ठुकाई कर डाली और उसके नकली हाथ-पैर उतार दिये।

फिर क्रान्ति को पुलिस के हवाले कर दिया गया।

—समाप्त—

"मम्मीऽऽऽ! पापाऽऽऽ!"

अपने सुन्दर चेहरे को हथेलियों से ढांपकर वह लगातार चीखती चली गई।

दो मिनट बाद पैंतीस वर्षीय सुन्दर सजीला युवक दौड़ते हुये उसके कमरे में पहुंचा और उसके कंधों को पकड़कर झंझोड़ते हुये व्याकुलता में भरकर बोला—

"क...क्या हुआ ज्योति! तुम इस तरह चिल्ला क्यों रही हो?"

"व...वो द...दीदी!" आंखें बन्द किये हुये तथा मारे दहशत के थर-थर कांपते हुये, एक हाथ को चेहरे से हटाकर एक तरफ इशारा करते हुये ज्योति नारंग कंपकंपाते हुये-से लहजे में बोली—"च...चोरों ने उसे चाकुओं से गोद डाला है। वो तड़फ रही है। उ...उसे बचा लो पापा। डॉक्टर के पास ले चलो। जल्दी करो पापा...नहीं तो वह...वह मर जायेगी।" कहने पर वह जोर-जोर से रोने लगी।

"ये तुम्हें अचानक क्या हो गया ज्योति?" परेशान-सा

"यमराज और मेरी शादी होने वाली है केशव ! यमराज की बीवी बन
जा रही हूं मैं–।"

"या तो तू बावली हो गई है, या फिर यमराज का भेजा घूम गया है। हाथ-पैर कटे हुए हैं। पूरा जिस्म तेजाब से झुलसकर बदसूरत हो चुका है

"यमराज को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे तो बस उस औरत शादी करनी है, जो केशव पण्डित को अदालत में कातिल साबित क फांसी की सजा दिलवा देगी, यमराज उसी के साथ सात फेरे लेकर अपनी धर्मपत्नी बना लेगा। मैं इस शर्त को पूरा करूंगी पण्डित ! महीने के भीतर तू अदालत में कातिल साबित होगा और जज फांसी की सजा सुनायेगा...ये चैलेंज है मेरा ओये दिमाग के जादूग जिस कानून का पुजारी है तू...वो कानून ही तुझे कातिल करार दे फांसी के फंदे पर चढ़ायेगा...।"



60/-



